No. 28 Uttaradhyana Sutra

(347 Leaves)

ROYAL ASIATIC SOCIETY BOMBAY BRANCH LIBRARY

उत्तराध्ययन सूत्र १

॥र्दणा॥ पूर्वसंयोगमातादि।पाबलजसंयो गमश्वरादि।बाह्यसंयोगद्रव्यादिअभ्यं तर कर्मादि रहित तेहनउ॥ अगारघरते सिद्धाइवर्जित नथीतेहनउ भिक्षु साधुनउ विनयनीतिमार्गप्रकटक रिस्यउंहउं अनुक्रमिइंसांभलि शिष्यमुझकहताथ तिइ

॥र्दणा॥ संजोगाविप्पमुक्कस्स अणगारस्सिक्खुणो विणयंपाउकरिस्सामि आणुपुव्विंसुणेह

१ मर्यादासहितगुरुनावचनआज्ञा तेहनउनिर्देशप्रमाणनउकारण॥ गुरुनीदृष्टिइंचूकमनउवइस इ गुरुनाअंगिताकारसा वइसहितसावउता एहवउसाधुतेविनीत कहियइउप्फ

हमे १ आणानिद्देसकरे गुरूणमुववायकारए इंगियागारसंपन्ने सेविणीइत्तिवुच्चई

२ गुरुनीआज्ञानउभंजक गुरुथीवेगलउवइसइ कार्यथकीबीहतउ गुरुथीविपरीत प्रवर्त्तइ तत्वमार्गनउ अजान तेहअविनीतकहिइ कुलबालकवत् २

२ आणाअनिद्देसकरे गुरूणमणुववकारए पडिणीए असंबुद्धे अविणीइत्तिवुच्चई २ ज

जिमकुहिइकानेकु निरीनइ काढियइसर्वघरआंगणा दिकथकी इमदुष्टआचारीगुरुनइप्रत नीकअनइ वाचालनइगच्छथकीका ढियइ ४ कण नी

हासुणीपूइकन्नी निक्कसिज्जइसव्वसो एवंदुस्सीलपडिणीए मुहरीनिक्कसिज्जई ४ कण

कुकसीबांडीनइ॥ विष्टाखाइभुंडसूयर॥ इमदुशीलआचारछां डीनइ पापइआचारिप्रवर्त्तइए गअज्ञानी ५ सांभली नइ

कुंडगंचइत्ताणं विट्ठंभुंजइसूयरे एवंसीलंचइत्ताणं दुस्सीलेरमईमिए ५ सुणिया १

पामइसावकातेरीनइ न्याइ भुंडसरीखेन इन्याइ नरमनुष्य नइदृष्टांति इ विनयनइविषइथापिवउआ त्मा इछतउवांछतउआपणाआ त्मानइहित ६ तेह कार

भावंसाणस्स सूयरस्सनरस्सय विणएठविज्जअप्पाणं इच्छंतोहियमप्पणो ६ तम्हा

णथकीविनयप्रतिवउ करिवउ शीलसंयमलहियइजेहवि नयथकी आचार्यनइपुत्र समान मोक्षनउ अर्थी बाहिरिनकाढियइकिहांईगच्छ थकीतेवरउजघाइ ७ अति। शयस

विणयमेसिज्जा सीलंपडिलभेजओ बुद्धपुत्तनियागट्ठी ननिक्कसिज्जइकण्हुई ७ निसं

उपशांतकुअवाचाल लवलवनकरइ आचार्यादिकनइसमीपि इंसदासर्वदा अर्थियुक्तसहितसूत्रसिद्धां तसीखइ निरर्थककामशास्त्रादिव र्जइ ८ गुरइ क

तेसियामुहरी बुद्धाणंअंतिएसया अट्ठजुत्ताणिसिक्खिज्जा निरट्ठाणिउवज्जए ८ अणु

शिक्षादियइ सीखवतउकोपन करइ क्षमासेवइपंडितसाधु क्षुद्रबालकअथवापासत्थान उसंसर्गपरिचय हासउंतथाक्रीडानकरइ ९ क्रो ध

सासिउनकुप्पिज्जा खंतिंसेविज्जपंडिए खुड्डेहिंसहसंसग्गिं हासंकीडंचवज्जए ९ मा

तथाचंडालिइंहिंसादिनकरिव उ घणउंस्त्रीकथादिनबोलि वउ कालिइसूत्रादिभणीनइ तिवारपछिएकांतिइअर्थचिंतवइए कलउभावथकउरागद्वेषरहितध्या थकउध्याइप्रत्युत्पन्नकारहिं तथानकर्मवतउ॥

यचंडालियंकासी बहुयंमायआलवे कालेणयअहिज्जित्ता तओझाइज्जएगगो १०

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

२

कदाचित् क्रोधकीधउ गु रु यइ ए छिइ ॥ उलवइ नदी जेमइ वधीकीध उ कहीइ ॥ कीधउ कहइ नउकीधउ ना कहइ ॥ अणकीधानेकीधउ न कहइ

आहच्चचंडालियंकट्टु ननिण्हविज्जकयाइवि कडंकडित्तिभासिज्जा अकडंनोकडिति

११ साधुगलीयार घोडानीपरिइं वारवार कहवानवांछइ ॥ तिमगुरुना वचनवार वार नवांछइ ॥ चाबकनउदेषीजांतिवंतघोडउ ॥ कुटिलाई पणउंवर्जइ तिमविनीतपुण ॥ १२ गुरु ना

य ११ मागलियस्सवकसं वयणमिच्छेपुणो २ कसंवदट्ठुमाइन्ने पावगंपरिवज्जए १२ अ

वचनआमानता अविचारबोलता कुसितआचारी कोमलगुरुनइ पुणकोपवंतकरइ एहवा शिष्य ॥ चित्तनइवित्तिचालइ शीघ्रकार्य करिवइ समर्थ एहवा सुशिष्य

णासवाथूलवयाकुसीला मिउंपिचंडंपकरितिसीसा चित्ताणुयालहुदक्खोववेया प

प्रसन्नचित्तकरइ कुनिश्चइ कोपवंतगुरुनइ पुण १३ गुरुइ अणबोलाव्यउ कांइन बोलइ ॥ तथा आचार्यइ पूछ्यउ जूठउ न बोलइ ॥ क्रोधकुपनउतउ निफल करइ

सायएतेहुदुरासयंपि १३ नापुट्ठोवागरेकिंचि पुट्ठोवानालियंवए कोहंअसच्चंकु

प्रियतथा अप्रियवचनसांभलीवि तिधरइ रागद्वेषनाणइ १४ रागद्वेषरहितआत्मावसिकरिवउ आत्मानिश्चय सांतेइ षिइ जीपाइ जीपतां दोहिलउ ॥ आत्मादमं

व्विया धारिज्जापियमप्पियं १४ अप्पाचेवदमेयव्वो अप्पाहुखलुदुद्दमो अप्पादंते

सुखीथाइ ॥ ॥इहलोकइ॥ परलोकइ पणि १५ सलउ मिइजे आत्मादमिवउ संयमइकरी तथा तपइ करीनइ पर अनेरे दमेखेदमपमानउ गुरुनइ परमपीमउ बंधनरा

सुहीहोइ अस्सिंलोएपरत्थय १५ वरमेअप्पादंतो संजमेणतवेणय माहंपरेहिंदमंतो बं

सडीइंक तथा बधइंमारि किइ करीन १६ प्रत्यनीक अहितपणउं आचार्यनउ तउं मनउं काणइ एहवउं वचनइ ॥ अथवा कार्यइ पणि ॥ आवी प्रगटवा अथवा रहस्य एकांत ॥ नकरि

धणेहिंवहेहिय १६ पडिणीयंचबुद्धाणं वायाअदुवकम्मुणा आवीवाजइवारहस्से नेवकु

वउकइयइपणि ॥ १७ नावइ जिमणइ पासइ आमलि अनवइसी नवइसीइ ॥ इ ॥ आगलि आमलि नवइसी अपीनवइसीइ ॥ कृत्यआचार्यनइ पूठिइ नउठीचणनसंघटीइ ॥ आपणउंढीचणइ गुरुनउ पाटिइ सूतांबइठां गुरुनउ वचनसांभलीइ नही ॥

ज्जाकयाइवि १७ नपक्खओपुरओ नेवकिच्चाणपिट्ठओ नजुंजेऊरुणाऊरं सयणेनोपडिस्सुणे ३

॥गुरुआगलिपल्हथी पणि न बइसइ १८ बिहुंहाथिइ पालठी न वालइ ॥ पगलांबा करीनइ पणि साधु ॥ नबइसइ गुरुनइ समीपि १९ आ

१८ नेवपल्हत्थियंकुज्जा पक्खपिंडंवसंजए पाएपसारिएवावि नचिट्ठेगुरुणंतिए १९ आ

चार्यइ बोलाव्यउ छतउ ॥ आणबोल्यउ न रहइ कदायइ पणि गुरुनउ आदेशातै प्रसादकरीवांछइ ॥ मोक्षनो अर्थी ॥ पासइ आवइ गुरुप्रतिइं मउणवंदामि जीइम कहीसइ २०

यरिएहिंवाहित्तो तुसिणीउनकयाइवि पसायपेहीनियागट्ठी उवचिट्ठेगुरुंसया २०

२

आचार्यइं वारवार तेडी आसणि बइठउ कइयइ पणि बोलीनइ आसन पइठउ जिहां गुरु तिहां आवी पद्म
एकवार ते नइ॥ ऊतरइ ।दिधीरसाधु कहइ ते सांभलइ २१ बद्ध
कावइ

आलवंते लवंते वा न निसीइज्ज कयाइ वि चइऊण आसणं धीरो जओ जुत्तं पडिस्सुणे २१ आ

दिकइ बइठउ सूत्र अर्थीन ॥पाटि इं संथारइ बइठउ सूत्रादि गुरु समीपि विषमासनि सत्रादिक पूछइ हाथ बेजोडी
पूछइ॥ न पूछइ कइयइ पणि आवी बइठउ पूछउ मीनइ २२

सणगओ न पुच्छिज्जा नेव सिज्जागओ कयाइ वि आगम्मुक्कुडुओ संतो पुच्छिज्जा पंजलीउडो २२ ए

इम विनयसहित सूत्र अनइ अर्थ उभय पूछता शिष्यनें संभलावें जिह वउ सांभल्यो जीवादि
शिष्यनें बेऊइ कहइ गुरुसमीपिं २३ नाथ्यरूप

वं विणयजुत्तस्स सुत्तं अत्थं च तदुभयं पुच्छमाणस्स सीसस्स वागरिज्ज जहासुयं २३ मुसं परि

मृषा न बाइ न बोलइ अवधारिणी सावद्य अनुमोदिनी भाषा मायादिक परिहरइ ॥कणिहीबिइंतं साधु
साधु बी जें कार्यथिलातिकरि नादोषपरिहरइ हामर्वदा २४ सावद्य पापकर्म बो
सत्त

हरे भिक्खू न य ओहारिणिं वए भासादोसं परिहरे मायं च वज्जए सया २४ न लविज्ज पुट्ठो साव

लइ निरर्थक मर्मकतउं आपणइ अर्थि परनइं बिहुनइ अर्थि पणि का लोहरादिक नी कि बिघरनी
नही बदाहिमा हष्टिइं काण अर्थिइं थविना पणि॥ २५ विषइ परनइ विषइ संधि वि
हि

ज्जं न निरट्ठं न मम्मयं अप्पणट्ठा परट्ठा वा उभयस्संतरेण वा २५ समरेसु अगारेसु संधीसु २

३

राजमार्ग एकलउ साधु एकली स्त्री नर आलापवा जे मुझनइ बुद्ध आचार्य शीतल वा अथव
नइ विषइ स्त्री साथि इं॥ २६ तनकरइ सीषयइ बइ वनिइं कठिन उ

य महापहे एगो एगित्थिए सद्धिं नेव चिट्ठे न संलवे २६ जं मे बुद्धाणुसासंति सीएण फरुसेण व

वा मझनइ ला एहवउं सावधान थकउ शि अनुशासन गुरुनी आ पाहु आ आवरिवानी वे हित न
नइं सत्कार हि इ किवा बासासलइ आदरें २७ तेकं हव जे वबवी मामणा रणनिवारणा उकार
ल नइ इकर उतम।

ा मम लाभो त्ति पेहाए पयओ तं पडिस्सुणे २७ अणुसासणमोवायं दुक्कडस्स य चोयणं हियं तं

ण ते मानइ बु द्वेषनउ कारण उ इ असा हितकारी जाणइ मातनय र कठिन क्षांति करी न द्वेष उ का
हिवंत शिष्य धुर्त शिष्यनइ॥ २८ हितबुध तव नजाण इ जे गुरुनी सीष रन इ

मन्नई पन्नो वेसं होइ असाहुणो २८ हियं विगयभया बुद्धा फरुसं पि अणुसासणं वेसं तं होइ

मूढ मूर्षन गुरुनी सीष ते कमाश्र बालटि तथा पउं बणइ अ ते वली विगचि थिर ते साधु वार प्रयोज
इ नइ शुद्धि कर्मनी पदवा २९ ासणि बइसइ॥ नी चइ गाद्दर इउ उठइ नही न विना
नादि.नो .कारक द्र॥

मूढाणं खंतिसोहिकरं पयं २९ आसणे उवचिट्ठिज्जा अणुच्चे अकुए थिरे अप्पुट्ठाई निरुट्ठा

न उ एहवउ आस हाथ पगादि निद्रा नइ कालइ विहरवा कालिइं वेलाइं जा निद्रा विहरी पाछउ व अका
बइ णि बइसइ कनी विष्टारहि ३० जाइ साधु लइ॥ नेप हिज इणादिक
न॥

ई। निसीइज्जप्पकुक्कुए ३० कालेण निक्खमे भिक्खू कालेण य पडिक्कमे अकालं च विव

४

नवव क
जाणी कालिइं जतेते कालयो परिपाटी घरनी त्रिलिइं तथा साधु दीधउ आहार प्रतिरूपमानइ वेषइ
मीनइ पक्रिया करइ ३१ भोजनु करता नीपातिइं तेलो दिकनिदोषइ क्षिवरइ ।निर्दोष आहार वीहरीनइ

ज्जित्ता कालेकालं समायरे ३१ परिवाडीए न चिट्ठिज्जा भिक्खुदत्तेसणं चरे पडिरूवेणएसित्ता (

मानो कालिइं सिद्धांत गोचरीइं गयउ आ तवेगलान अतिदूर अनेरा गृहस्थनी सिक्षा रागद्वेषादि कलत्र क्रम तेसिक्षा
पेत नीरीतिइं आहार ३२ करइ मतनरहेइ चरनी दृष्टिगोचरि नरहे उरहइ सिक्षानइ अर्थिं गय चइनइ

मियं कालेण भक्खए ३२ नाइदूरमणासन्ने नन्नेसिं चक्खुफासउ एगोचिट्ठिज्ज भत्तट्ठा लंघि

उलंघीनइ घरमा कंचउमा नीचउ उहर अतिदू अतिवेगलउन निर्दोष परनइ अर्थिं नी विहरइ संयत
हिनपइसइ अ॥ ३३ लइ तथा इसिक्षानव कन्त गृहइ सिक्षार्थिं पनउ आहार॥

यातं नइक्कमे ३३ नाइउच्चेवनीएवा नासन्ने नाइदूरउ फासुयं परकडं पिंडं पडिगाहिज्ज संज

ता अल्प असार बीज शालिय उपरिढा पामइ ढा एहवइ ठामिं संयतसा यतनसउं उ ।सीझी दिअ कृ
क ३४ जीवरहित मुखरहित किइ किंजरा टाट आत्मा क्षम कुभोजन रसराट अक पनाषतउ ३५ म

ए ३४ अप्पपाणप्पबीयंमि पडिछन्नंमि संवुडे समयं संजए भुंजे जयं अपरिसाडियं ३५ सु

उकीधउ रूमउपच्च रूडउ के रूडउ इ सलइम् सलइनी रूडी एकना सावद्यसपापवच रतिपामइ
वीवाद उपकवान घउलात रसउधन उवइरी पनो रूउ एहवा नवजइपरिहरइ ३६ पंडित शिष्य

कडित्ति सुपक्कित्ति सुछिन्ने सुहडे मडे सुनिट्ठिए सुलट्ठित्ति सावज्जं वज्जए मुणी ३६ रमए पंडि

५

सीषदे जातवंत घोडानइ सी बालक नशिषनइ गुरु सी जिम गलीयार घोडान ३७ टाकरचाइ चपेटा मुमट व
ता गुरु षदेतउ जिम वाहकउ षदेतउ श्रम पामइ॥ इशीषदे तउ असमार ३७ उइमजन घइवइमज च

एसासं हयंभद्दंव वाहए बालं सम्मइ सासंतो गलियस्सव वाहए ३७ खड्डुया मे चवेडा मे अ

निइ आक्रो शंडइ करीमा कल्याणकारी शिक्षा तंम पापदृष्टी कुशिष्य एहवु पुत्रनी परि भाईनी परि इच्छा साधु
मइवइ रइवइमजनइ १ षवा [illegible] तकरी मानै ३८ इमजनइ तीलानी परिइ शि

कोसाय वहायमे कल्लाणमणुसासंतो पावदिट्ठित्ति मन्नई ३८ पुत्तो मे भायणाइत्ति साहू

कल्याणकारी क पापदृष्टी कुशिष्य आत्मा सीषवीत दासपणउं कोपनवमावइ आवा आपणा आ
रीगुरुनइ मानइ नइ उ करी मानइ ३९ यथा गुरुनू मानइ पणि

कल्लाणमन्नई पावदिट्ठीउ अप्पाणं सासंदासत्तिमन्नई ३९ न कोवए आयरियं अप्पाणं

शिष्य कोपनवमावइ बुध आचार्य नउउ। नकुइवली वचनरूपीया आचार्य गुरु को आजाणीनइ प्रती(
पघातनउ करणहार नकु परणानउ वा बपहार॥ ४० नकु

पिनकोवए बुद्धोवघाई न सिया न सिया तोत्तगवेसए ४० आयरियं कुवियं नच्चा पत्ति

उइति मथ प्रसाद कोधरूप अग्निकुपनउपउं कुहइ एउ नहीं कर क्षमादि धर्मइ कृपराअउपडि बुध आ
वंत करइ वइ हाथजो मीनइ ... ४१ लेहणादि व्यवहार आचार चा

एणपसायए विज्झविज्ज पंजलिउडो वइज्ज न पुणत्तिये ४१ धम्मज्जियं च ववहारं बुद्धेहा

५

र्या। इ आद तेआचरतउआचार सुशिष्यगहीनिंदानउ मननउरूप वचनिइक जाणीनइ आ
रूनउसदाकाल पामे ४२ नउकार्य लोकार्य वा

परियंसया नमायरतोववहारं गरहंनाभिगच्छइ ४२ मणोगयंवक्कगयं जाणित्ताय

र्यगुरुनउ तेकार्यसुशि वचनिइं पवइकरिव नीपजाव अणबेल्या सदा उतावलउ उद्य
सुशिष्य अयइहइ करीनइ इकरीनइ इकरइ ४३ उ जइ

रियस्सउ तंपरिगिज्झवायाए कम्मुणाउववायए ४३ वित्तेअचोइएनिच्चं खिप्पंहवइसुचोइ

सर्व जेहवउंगुरुइ ललउं कार्यप्रयो करइ सदा विनीत नाकार्य जाणवि नम बुधिवंत लोकमाहिएहवीकीर्त्ति
त कहलउं जउ काल ४४ इ साधु जइ

इए जहोवइट्ठंसुकयं किच्चाइंकुव्वईसया ४४ नच्चानमइमेहावी लोएकित्तीसिजायए

जइकार्यकर्त्तव्यसर्वनउम उतप्राणीनउघानकी पूज्यआचार्यजेहनइ प्रम तत्त्वज्ञानी पूर्विइसंघ्याविणाचानक जमजगतीपृथिवी॥ ४५ नजइ णा१ नयपरिचितकी

हवएकिच्चाणंसरणंभूयाणंजगईजहा ४५ पुज्जाजस्सपसीयंति। संबुद्धापुव्वसंथुया।

तेगुरुप्रम आपस्य विपुल अर्थमोक्षनउ तेविनीतपूजनी संसयजेनेटालणहार गुरुनामननी।
नहवा इ घणउ दायकश्रुतसि ४६ करणाम्प्रजेहना अथवा विनयवंतपुरुष रुचिइचालइ

पसन्नालाभइस्संति विउलंअट्ठियंसुयं ४६ सपुज्जसत्थेसुविणीयसंसए मणोरुईचिट्ठ

५

कर्मठनीसंपदा।
अथवाकर्मकार्य तपबा सामाचारी समाधिचित्तनउय महातेज पंचमहाव्रतआरंभया तेविनीतदेवविमा
रूपदशाविधसामा रैखद दशाविधय कायपणइतणइ वंतजइ लीनइ ४७ नवासीगंधर्वज्यो
चारीसहितरहइ॥ तीनी आश्रवरुंधाजेणे ति षीआ

इकम्मसंपया तवोसमायारिसमाहिसंवुडे महज्जुईपंचवयाणिपालिया ४७ संदेवगंधव्वमणु

दिइमनुष्यवक्र बांमीनइ मलरुधिरादिपंक सिद्धकर्म सासतउवली वाअथ थोडाकर्म महाऋ एहवउम्हत्तक
वर्तादिकइपूजि देहशरीर वीर्यादिपूर्वकीउप रहितथा संसारमांहि वादेवता रूपरज॥ द्धिवंत॥ हउंगुरुशिष्यन
तजइ॥ नउ॥ इ॥ नवइ॥ थोइ॥ इ कहिवइ

स्सपूइए चइत्तुदेहंमलपंकपुव्वयं सिद्धेवाहवइसासए देवेवाअप्परएमहिड्ढिए त्तिबेमि ४८

॥विनयश्रुतअध्ययनउअर्थ संपूर्णहवउ॥ १ सांभल्या हेआउखावं भगवंतमुं इमकह्यउ॥ इणिसिद्धां बावीसप
श्रमइ॥ तशिष्य॥ हमावंतइ॥ तिनिश्चइ

॥विणयसुयज्झयणंसमत्तं॥१॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुबावीसंपरि

रीसह॥ श्रमणत भगवंतमहि महावीरइ॥ काश्यपवंश प्रकास्या जेसाधु सांभलीनइ जाणीनइ जीपी समर्थप
पस्वीइ॥ मावंतइ गोत्रइ॥ इ॥ णइपरा

सहा समणेणंभगवया महावीरेणं कासवेणंपवेइया जेभिक्खूसोच्चानच्चाजिच्चाअभिभू

भवी भिक्षाचरीगोच विचरतां फरस्या संयमइशरीरइ त्रासइवइकेहा बावीसपरीसह॥ तपस्वीइ
मइ रीइमुषइ हणाइनहीं॥ तेनिश्चइ

यभिक्खायरियाए परिव्वयंतोपुट्ठोनोविहन्निज्जा कयरेतेखलुबावीसंपरीसहा समणेणं
य

भगवंतम महावीर संयमनइशरीरइ गुरुकहइ ए बावीसप संयमनइशरीर तेहकहइ देसविशेषइसूभन
हिमावतइ इ॥ हणाइनही॥ हतेनिसुणइ॥ रीसह॥ इहणाइनही॥ इवइ॥ इदिगिंछाकहइछे
भगयामहावीरेणं नोविहन्निज्जा इमेतेखलुबावीसंप नोविहन्निज्जा तंजहा दिगिंछापरीस

६

भूखनउ परिस है१॥ ॥तृषानउ परीसह२॥ टाढिनउप रीसह३॥ तापनउपरी सह४॥ डांसमसानउ परीसह५॥ वस्त्ररहितन उपरीसह६ संयमविषइअरा तेअरतिनउ परीसह७॥
हे१ पिवासापरीसहेप२ सीयप०३ उसिणप०४ दंसमसयप०५ अचेलप०६ अरइप०७

स्त्रीहावभावादि करइतेस्त्री॥ विहारनउप रीसह९॥ स यच्छमिनउपरी सह१०॥ शीय्यानउपाश्रयन उपरीसह११॥ आक्रोसनिर्भछना नउपरीसह१२॥ वधप्रहारन उपरीसह१३॥
॥इत्थीप०८ चरियाप०९ निसीहियाप०१० सिज्जापरीसहे११ अक्कोसप०१२ वहप०१३

याचवानउप रीसह॥१४ अलाभनउ परीसह१५ रोगनउपरि सह॥१६ त्रिणनातृणस्प र्शनउपरीसह१७ मलनउपरी सह१८॥ सत्कारपुरस्कारनउ परीसह१९॥
जायणाप०१४ अलाभप०१५ रोगप०१६ तणफासप०१७ जल्लप०१८ सक्कारपुरक्कारप०

प्रज्ञाज्ञाननउपरीस ह२०॥ अज्ञानपणा नउपरीसह २१॥ दंसणसम्यक्त्व नउपरीसह२२ परीसह२२नउ ढुंढू आय णउ॥ काश्यपगोत्रीयमहावी रइ प्रकासी॥
१९ पन्नाप०२० अन्नाणप०२१ दंसणप०२२ परिसहाणंपविभत्ती कासवेणंपवेइया।

६

तेसेउ हूं नइ कहिस्युं। ॥अनुक्रमिइ सांभलउ मेम जकहतापति॥ १ क्षुधासूषइ व्याप्यउ छेह नउशरीर॥ बलादि तपस्वी साधु संयमब लनउधणी॥ फलादि छेदइन ही॥
तंसेउदाहरिस्सामि आणुपुव्विंसुणेहमे १ दिगिंछापरिगएदेहे तवस्सीभिक्खुथामवं फल्लिंदे

आपणापाहि छेदावइनही अमिइप चइनही आपणा हिपचावि २ काकजंघा नामा नीगांठि जाणीपातलीसरिषुं हुइ छइ इसउ नसाजालइ व्याप्यउ॥ मातप्रमाण इजाणइ अन्न
नछिंदावए नपएनपयावए २ कालीपव्वंगसंकासे किसेधमणिसंतए मायन्नेअसणपा

पाणी नउ॥ अनाकुलचित्त एहवउथ कउ विचरइ॥ ३ तिवारपछीफरिस्यउ थाइ॥ सचित्तपाणी संयमलाज नीडगंछाक रइ॥ काचउपाणी नपीइ विषइसाव धा नइ त्रिणि उका
णस्स अदीणमणसोचरे ३ तउपुट्ठोपिवासाए दुगुंछीलज्जसंजए सीउदगंनसेविज्जा विय

लावल्याएहवाति दीषनइ विषइव्याल इल वाघव नेस्यु॥ ४ लोकनोआविजाइ छेदाण थाइ वापंथमार्गनइ विषइ घणउपीडा णउशरीर॥ घणीतृषा लागीछे हुनइ॥ कंकसुकाइवा लागाएहवउ सुख॥ दयाम णारहित उ॥ तेसहइपरी
डस्सेसणंचरे ४ छिन्नावाएसुपंथेसु आउरेसुपिवासीए परिसुक्कमुहेदीणे तंतितीक्खेपरि

सह॥ ५ ग्रामानुग्राम संसार स्नानम निविचर वीविरहित मनू रमलोज नरो द्वत शीतताढि करसइ कदासीयालइ॥ सर्व्वप्रयत्नीवेलाअतिक्रमी साधुतातढ यी बीहितो अनेबाधानुजाइ॥ सांभली नइ गणधर अलंका रक्तणी जिनशासन सिद्धांत ६ नथी मांक
सहे ५ चरंतंविरयंलूहं सीयंफुसइएगया नाइवेलंमुणीगच्छे सुच्चाणंजिणसासणं ६ नमे

७

रहताढिनव निवा शरीर नीचविवासमीनइ नवहवं अग्निसेववंता ॥एहवउंसाधुनचीतवइ करई सिलादिकन
रणआवादि॥ ताढिनवरापणहारकां पत्र॥ नही॥ ७ इपरीतापइ
बला . दि नथी॥

निवारणं अत्थि छवित्ताणं न विज्जए अहं तु अग्गिं सेवामि इइ भिक्खू न चिंतए ७ उसिणं परियावे

क बाह्रिरिपरिसेवइअ ग्रीष्मनइतघाशरदकां माता ताढवघाइइ अव्हइताप बुद्धिवंत स्नान अंगो
री स्वतरइघाइअत्यं तपी लनइसूर्यनइपरिताप मनवांछइ॥ ८ इपीमत्र साधु हलि
मत्र दु॥

णं परिदाहेण तज्जिए घिंसु वा परितावेणं सायं नो परिदेवए ८ उण्हाहितत्तो मेहावी सिणाणं नो
आ

प्राघइवां गात्रशरीरपाणीइछांटइ वीजणइआत्माशरीरन डांसमसइवीनइफरि समभाव महामुनि जिम
वइनही नही॥ वीजइ वाउनघालइ॥ स्पर्शव्रतउ॥ इ साधुरहइ नाग

विपत्थए गायं नो परिसिंचिज्जा न वीइज्जा य अप्पयं ९ पुट्ठो य दंसमसएहिं समरे व महामुणी नागो

हस्तीसंग्राम नाशी सूरघईपराक्रमफोरवीजीपइ तेमांसमसा तेमांसदिक मनिपणिद्वेषसा उदासीना घा
षेमस्तकनइविष परशत्रुप्रतिइतिमसाधुडांस १० नइत्रासप नइवारइन वनकरइ॥ वधरीनइ णी
इ॥ ममा जीप इ॥ मा. मइ नही इ॥ जी

संगामसीसे वा सूरो अभिहणे परं १० न संतसे न वारिज्जा मणं पि न पओसए उवेहे न हणे

वनाघा तेणइघाईतइ मांस घणजूनइवस्त्रइकइ होइस्यइंहउं अचेलव अथवाकोइदेशपइतेणइवस्त्र
णहणइ अनइलोही॥ ११ ऊतइ॥ स्त्रहीन॥ सहितऊस्यउं
नही॥

पाणे भुंजंते मंससोणियं ११ परिजुण्णेहिं वत्थेहिं होक्खामि त्ति अचेलए अदुवा सचेलए होक्खं ७

एहवउंसाधुनचिंतवइ १२ एकदाष अचेलवस्त्र अथवासचेलवस्त्रसहि एउनयपकारिधर्मन ज्ञानवंत
स्यावि हितपणिहा तपणिएकदाऊइ॥ हीहितजाणी॥ साधुता

इइ भिक्खू न चिंतए १२ एगया अचेलए होइ सचेले आवि एगया एयं धम्मं हियं नच्चा नाणी नो

इतापआवइ ग्रामाउग्रामिइविचरता साधुनइ परिग्रहरहित संयमविषइअरतिअ तेसहइ अरतिप
वितानकरइ १२ नइ॥ मातापउइ॥

परिदेवए १३ गामाणुगामं रीयंतं अणगारं अकिंचणं अरई अणुप्पवेसे तं तितिक्खे परी

रीस अरतिनइपविदेइवे पापथी पापध्याननीआ धर्मनइविष आरंभ थोकेयुपकीउपसम संग
ह॥ १४ लीकरीनइ॥ विरम्य ताराघ्रउजेणइ इरतिपामइ थीनिवर्त्तु उसाधुयंममारगिवा १५ लेप

सहं १४ अरइं पिट्ठओ किच्चा विरए आयरक्खिए धम्मारामे निरारंभे उवसंते मुणी चरे १५ संगो

नवका मनुष्यनइजि जेतलीलोकनइविषइम हावसावइवसिकरइजे एहवाणइपहवइतेहनउ एहवउंजी
रणएम मझेषासाथी उष्पणी तिर्यचणीदेवांगना हनइएहवीजाणीवइजाए नलवचास्त्रि॥ १६ चीनइ
रूप॥ नइ॥ रिक स्त्री॥ अहितकरइ॥

एस मणुस्साणं जाओ लोगंमि इत्थिओ जस्स एया परिन्नाया सुकडं तस्स सामन्नं १६ एयमा

दुधिवंतसाधु मोहजालकवरासा तेणीस्त्रीजातिइसंयमघ धर्मप्रतिइचालइस्त्री रागद्वेषरहि प्रधानसं
रीषीस्त्रीजाति॥ कीहणाइनही॥ देषीआत्मागवेषीरायइ १७ हतुएकल यमवंत

दाय मेहावी पंकभूया उ इत्थिओ नो ताहिं विनिहन्निज्जा चरिज्ज त्तगवेसए १७ एग एव चरे लाढे

८

जीपीनइ बावीसइ परीसह गामनइ विषइ वा अथ वाणीआना राजानी राज १८ गर्वरहित संयमविषइ नक

अलिह्यपरीसहे गामेवानगरेवावि निगमेवारायहाणिए १८ असमाणोचरेभिरकू नय

रइ॥ ग्रामादिकन संबंध अणकरतउ गृहस्थ एकइ वामिनरहइ अ स्मसाननइ वि सूनाघ वृक्षनइ मू
उममतापणउ मोकलामावि धवा अनियतविहरइ॥ १९ षइ॥ रनइ विषइ॥ लइ पासइ॥

कुद्यापरिग्गहं असंसत्तोगिहत्थेहिं अणिकेउपरिव्वए १९ सुसाणेसुन्नगारेवा रुरकमूले

एकलउरा हाथपगादिकइ पामूईवे त्रासपमाडइ नही तिहांतेसाधुनसिज्या उपसर्गमनुष्यादिकना
गादिरहित छात्रणकरतउ बइसइ॥ परकें दिरादिकनइ २० यकरतानइ॥ कीधाऊपजइ तेअहियासइ॥

वएगओ अकुक्कुओनिसीइज्जा नयवित्तासएपरं २० तत्थसेअच्छमाणस्स उवसग्गाभिधारे

शंकाआणीबीहतउ नजाइ ऊठीनइ अनेरी सज्या उवशीतादिरहितअव तपनउकारणहारसाधुवा
तेथानक मूकीनइ॥ यनूमिइ अतिइ॥ २१ उत्तीतादिसहितशय्या सवेताहिषमुखमूहिवास

ए संकाभिओनगछिज्जा उट्ठित्ताअन्नमासणं २१ उच्चावयाहिंसिज्जाहिं तवस्सीभिरकूथामवं

सज्ञायनी वेलामर्यादाउलं पापदृष्टी कुत्सिम स्त्रीपशुपंडकरहितउ साताक अथवाअ तउएकरा
घीनइ नजाइ॥ हूइइ पाडुइविषवादइ॥२१ पाथयजहीनइ॥ री॥ साताकरी त्रिमंबधिउ सुखतथा

नाइवेलंविहन्निज्जा पावदिट्ठीविहन्नई २२ पइरिक्कुवस्सयंलद्धुं कल्लाणंअदुपावगं किमेगरा ८

८

दुखसयउंकरि एहवउंतिहांविचारी ॥रेमुंडउजनइधिगआक्रोस साधुतेमिथ्यातीप्रतइ क्रोधइधगधगाय बाल
सइ कांईनही सुखतथाऊखअहियासइ २३ करइ परमिथ्यातीसाधुप्रतें कषायकोपइ धगध मानथाइतउसरि अज्ञान
कर इ॥ गइ व उथाइ मूर्षनइ

इक्करिस्सइ एवंतत्थहियासए २३ अक्कोसिज्जपरोभिरकु नतेसिंपडिसंजले सरिसोहोइबालाणं

॥तिणिकारणिसाधु कोपन २४ सांभलीनइ परुषकठोरभाषा संयमईकरइ ग्रामइंद्रिय मोनकरतउ वएहा अव
करइ॥ नीगइ एहवा धनइकाटस गणनाकरइ

तम्हाभिरकुनसंजले २४ सुच्चाणंफरुसाभासा दारुणागामकंटया तुसिणीउउवेहिज्जा

तेऊवचनमनमाहान २५ किणिहीपराणादिकहइ मनचित्तमाहिद्वेषन क्षमाधर्मसाधवाप्रति साधुक्षमारूप
करइ॥ णउकोपनकरइसाधु॥ करइ॥ इसमईजाणीनइ

नताउमणसीकरे २५ हउनसंजलेभिरकु मणंपिनपउसए तितिरकंपरमंनच्चा भिरकूधम्मं

धर्मजचीत तपवंत आंत दमी एहवानइहणइ कोअ नथीज्ञानरूपजीवनउनास इमजोईवि साधु॥
वइ॥ २६ रहित इंद्रिय नार्यकिहांईयामविष चरइ॥

विचिंतए २६ समणंसंजयंदंतं हणिज्जाकोइकत्थई नत्थिजीवस्सनासुत्ति एवंपेहिज्जसंजए

२७ दोहिल निश्च अहोलो साधुनइ तिहाइंव सर्वआहारादितेसा नहोइ कांई मलीवस्तुषअ गोच
उ इ कोनित्य नेतानइ॥ धुनइयाच्याउंजहोइ णयाच्यउ॥ २८ रीइ
जीवजीवि

२७ दुक्करंखलुभोनिच्चं अणगारस्सभिरकुणो सव्वंसेजाइयंहोइ नत्थिकिंचिअजाइयं २८ गोय

८

गृहस्थनइ घरि पइठो साधु पाणी हाथ सिकोडीनइ काजि आघउ न करइ॥ ॥श्रेयसलउ गृहस्थावास इति जे हाथ ॥एहवउं साधु न चीतवइ॥ २९ परगृहस्थना घरनइ विषइ आहार गवेष

ग्गपविट्ठस्स पाणी नो सुप्पसारए सेअ अगारवासुत्ति इइ भिक्खू न चिंतए २९ परेसु घासमेसि

णइ॥ आहारादिक सहित जिहइ नीपनइ थकइ॥ लाधइ आहारइ वा अणलाधइ॥ न पश्चाताप करइ हर्ष विषाद नाणइ पंडित साधु ३० आज आहारादिक न लहउं॥ अपि संभवनाइ आ

ज्जा भोयणे परिनिट्ठिए लद्धे पिंडे अलद्धे वा नाणुतप्पिज्ज पंडिए ३० अज्जेवाहं न लब्भामि अवि ला

हारादिकनउ लाभ थाए कालि जिकोई एहवउं विचारइ॥ ३१ अलाभ परीसह तेहनइ पराभवइ नही ३१ जाणीनइ रूपनउ रोगादि दुःख॥ फोडादिकनी वेदना इं करवी ऊपनउ॥

भो सुए सिया जो एवं पडिसंचिक्खे अलाभो तं न तज्जए ३१ नच्चा उप्पइयं दुक्खं वेयणाए दुहट्टिए

दीणपणा रहित थका बुद्धि थिर करइ व्याधिइं फरस्यउ तिहां दुख अहियासइ॥ ३२ रोगनउ प्रतीकार अभिनंदइ अनुमोदइ नही समाधिपणइ रहइ न करावइ चारित्ररूप आत्मानउ गवेषक॥ एहवु निश्चइ तेहमा धर्म॥

अदीणो थावए पन्नं पुट्ठो तत्थहियासए ३२ तेगिच्छं नाभिनंदिज्जा संचिक्खत्तगवेसए एयं खु तस्स

नउ साधु पणइ॥ जे साव(द्य) उपचार न करइ अनेरा पासि करावइ ३३ वस्त्र रहित नइ रूक्षा आहार नाथइ नाहारने साधुनइ तपना करणहारनइ डाभ प्रमुख तृण ऊपरि सुता बइसतानइ

सामण्णं जं न कुज्जा न कारवे ३३ अचेलगस्स लूहस्स संजयस्स तवस्सिणो तणेसु सयमाण ९

जे गात्र शरीरनी विराधना पीडा॥ ३४ आतपतम कानइ पडिवइक री॥ अतुल घणी घाइ वेदाना॥ एहवउं जाणीनइ सेवइ

स्स हुज्जा गायविराहणा ३४ आयवस्स निवाएणं अउला हवइ वेयणा एवं नच्चा न

राखइ नही तंतुजव स्त्रादि॥ तृणना तर्ज्या पीडा साधु॥ ३५ कामनाया पामउ आ ब्रह्मचारी शरीर॥ बुद्धिवंत आस्था नमर्यादावंत पंकइ लीन हजइ मलिन रजइ मलिनइ करी॥ ग्रीष्म तापइ तथा कालनइ

सेवंति तंतुजं तणतज्जिया ३५ किलिन्नगाए मेहावी पंकेण व रएण वा घिंसु वा परि

परिताप इकरी॥ साता सुख परिदेवइ वां छइ नही॥ ३६ अहियासइ॥ कर्मनी निर्जरा विचारतनइ मलसहित वस्त्र आर्यनइ धर्म प्रधानवे जां लगी शरीर नउ भेद।वि

तावेणं सायं नो परिदेवए ३६ वेएज्ज निज्जरापेही आरियं धम्मणुत्तरं जाव सरीरभे

नाश तां लगी पजस्ता कवि न मल जइ॥ कायाइ अहियासइ॥ ३७ नमस्कार करिवउ॥ ऊंचा थाइ यवउं इम ऊठवउ॥ स्वामी राजादिक करइ आहारादिकनी निमंत्रणा प्रार्थना जीको भि संत विस

उत्ति जल्लं काएण धारए ३७ अभिवायणमब्भुट्ठाणं सामी कुज्जा निमंतणं जे ताइ

नेवा दिवादि कसेवइ॥ तेहनइ मुनि साधु ईहइ वांछइ नही॥ ३८ सकारा अपमानइ उपगरणा धवि कषाय न करइ अणउलखीतइ नाबीजउनवा घरे विहरइ॥ सारा आहार विष इलोलन करइ॥

पडिसेवंति न तेसिं पीहए मुणी ३८ अणुक्कसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए

मधुरमादिक नइ विषइय धवांबान करइ मधुर नइ अधीरा गिद्धेषइय अज्ञानापन करइ बुद्धिवंत॥ ३९ मेंअ पूर्वइं अधिइं अज्ञान इत्तकर्मइ निश्चइ मइं पूर्वइं कर्म ज्ञानआवरइए इवां कीधां छइ॥ जिणि का

रसेसु नाणुगिज्झिज्जा नाणुतप्पिज्ज पन्नवं ३९ से नूणं मए पुव्वं कम्मा नाणफला कडा जे

१० रणि हउं नाम तुम्हइं पूछ्यो उ कतरदइं जाणउ॥ पूछिउ किणही जिहां तिहां गोचरी आदिक विषइ ४० एतला पछी पर्छइ उदय आविस्यइ कर्म अज्ञानफल एहवां कीधां छइ तिणि आबाधाकाल पहिलो

णाहं नाभिजाणामि पुट्ठो केणइ कण्हुई ४० अह पच्छा उइज्जंति कम्मा नाणफला क

डा सउ एवं मइं वंआत्मा नइ आश्वा सतावइ जे ताहरां कीधां क मइं स्वयम् करी जाणीनइ कर्मनाउ पराज्या फल ४१ मोहणी पाम्यउ एहल्यणी नरथं कउ सरूपउ॥ मैथुन थकी पापजाणइं इं यमनइ कहुइं सं वृत्ता तनि

डा एवमस्सासि अप्पाणं नच्चा कम्मविवागयं ४१ निरट्ठगंमि विरओ मेहुणाओ सुसंवु

वर्थ क जे हवउं धर्म नउ तत्व साक्षात पण टनजाणइ॥ जे धर्म कल्याण उत्तनउ हेतु॥ अथवा पाप अशुभनउ हेतु॥ ४२ तप महा नशादि उपधान सिद्धांत संबंधी आंबिलादि आ बलीनइ॥ एकमासादिक प्रतिमा

डो जो सक्खं नाभिजाणामि धम्मं कल्लाणपावगं ४२ तवोवहाणमादाय पडिमं पडि

ण साधनी आदरीनइ एणि क्रियाइं अथम व पणइ विचरता थका छद्मस्थ ज्ञान नाआवर णटलइ नहीं॥ ४३ नथी निश्चइ परलोक स बांतर॥ ऋद्धि लब्धि रूप पणि तपस्वीनइ नथी॥ अथ॥

वज्जओ एवंपि विहरओ मे छउमं न नियट्टई ४३ नत्थि नूणं परे लोए इड्ढी वावि तवस्सिणो अ १०

वाउ पवापवासादिक कष्टि इहउं वंचिउ एहवउं साधु न चीतवइ॥ ४४ पूर्वइं जिन तीर्थे करइआ हिवणां छइ जिन तीर्थंकर महाविदेह विषइ॥ अथवा निश्चइं जिन ज

दुवा वंचिओमित्ति इइ भिक्खू न चिंतए ४४ अभू जिणा अत्थि जिणा अदुवावि भविस्स

सइ मृषा ते गार्तथ एहवउं कहता हवा एहवउं साधु न चिंतवइ ४५ एकेह्या ते परीसह सर्व॥ काश्यपगोत्रीय इस महावीरइ प्रकास्या जि कोई

ई मुसं ते एवमाहंसु इइ भिक्खू न चिंतए ४५ एए परीसहा सव्वे कासवेण पवेइया जे भि

साधु संयम थकी हणाइ नहीं फरस्यइ किणही परी सहइ गोचरी प्रमुख इ एहवउं श्रुधर्मं बूझति कहइ छइ ४६ परीसह नामा अध्ययन नउ अर्थ संपूर्ण हवउ॥२ च्यारि परम अंग मोक्ष ना धिवाना अंग तपरमाग

क्खू न विहन्निज्जा पुट्ठो केणइ कण्हुई त्तिबेमि ४६ परीसहज्झयणं २ चत्तारि परमंगाणि

दोहिला छइ॥ इणि संसार नइ विषटजीव नइ मनुष्यपणउ१ श्रुतिसिद्धांत नी मनुष्यपणउ२ कवि३ संयम नइ विषइ बलउ रीरनउ वीर्य जीव संबंधी१ फा . र विवउ॥ अवतस्या संसार नइ विषइ अणकार अलंकार॥ नेक

दुल्लहाणीय जंतुणो माणुसत्तं सुई सद्धा संजमंमि य वीरियं १ समावन्नाण संसारे ना

प्रकार गोत्र ब्रइ एहवी कु तियादिक जाति वर्ण नइविषइ॥ कर्मता नावरणीयादिक नाना विध घणे प्रकार करीनइ॥ कृतु अष्ट॥ विस्तरीनइं रणहारी प्रजा जोनि थान कपरी जीव २ एकदा शुभ कर्म नइ विषइ ए जीव देवलोक सुधर्मादिक विषइ उपजइ॥

णागुत्तासु जाइसु कम्मा नाणाविहा कट्टु पुढो विस्संभिया पया २ एगया देवलोगेसु

नर
रत्नप्रभादिकं विषइएजी एकदाअसुरकुमारनीनिक आपणइकीधइ सरागसंयमादिककर्मइकरीदेवतानीमहा ३ एकदाउपयोगइक्षत्रि तिवा ॥तिनइविष
वाएकप्रस्तावि क्रमपजइ यविषइजाइ॥ र्त्नादिकइ नारकीनी संयमादि यराजाथाइ रपछी इजाइ१॥
कनैविराधि बइअ.सुरनी

११ निरएसु विएगया एगया आसुरंकायं आहाकम्मेहिं गछई ३ एगया खत्तिउ होइ तउ

तेजीवचंडा अधमजाति तिवारपछी वलीपतंगीउ वलीकुंथूउ कीडीते इमअआवर्त्तफिरतीआव प्राणी
लथाइ यणिजाइ कीडउबेइंद्री चउरिंद्रिजाइ इन्द्रियपणिथाइ ४ इछइवाजीवयोनिविषइ दकर्म

चंडालवुक्कसो तउकीडपयंगोय तउकुंथु पिवीलीउ ४ एवमावट्टजोणीसु पाणि

इकरी मइलाअधमथ नथीउद्वेगपाम संसारनें सर्वसमस्तअर्थसारआश्र कर्मनीसंगतिइकरीजीवदुः ॥कीराजउवे
याथका तात्तमिवाथकी विषेजिम दि तथाधनसुवर्णादिक्ष ५ खीथयाथिका॥ गनपामइ॥२

णो कम्मकिब्बिसा ननिविज्झंति संसारे सव्वट्ठेसु वखत्तिया ५ कम्मसंगेहिं संमूढा दु

ड्षीयाथका बहुघणीवेद मनुष्ययोनिटालीनइनारकादि कर्मइहणाइबे प्राणिजीव॥ अनुक्रम।कर्मनइक्ष
नाजन्मादिसंबंधीजेहनइ उयोनिविषइ॥ मनुष्यपंणइ ते संसारीजीव ६ यइअनुक्रम कर्मनइउ एआसइएतला

क्खियाबहुवेयणा अमाणसासु जोणीसु विणिहम्मंति पाणिणो ६ कम्माणंतुप

इअरक। अनुक्रमिइं कदाचित जीवशोधिनिर्मलपणउंपाम पामइ॥ मनुष्यपणउं॥ मनुष्यनउ
लविघाय रथका॥ ७

हाणाए आणुपुव्वी कयाइउ जीवासोहिमणुप्पत्ता आययंति मणुस्सयं ७ माणुस्सं ११

विग्रहदेहल सांभलिवउंधर्मनउंदोहि लेधर्मसांभलीनइपडिवज तपअनइक्षमातथाअ कदाचितध
हीनइ लउंजइ॥ इआदरइ॥ हिंसादया॥ ८ र्मनउं

विग्गहंलद्धुं सुईधम्मस्स दुल्लहा जंसुच्चापडिवज्जंति तवंखंतिमहिंसयं ८ आहच्चस
सांभलिव श्रद्धाधर्म परमदोहिली सांभली न्यायमार्गसम्य बहुघणाउत्थाथाइबइमोक्ष सांभलिवउंवळाश्र
उंलाधउं॥ नीवाछा॥ थइ॥ नइ क्त्वादिमोक्षपंथ मार्गथकीजमालीप्रमुखवत् ९ थकीमनुष्यपणउंत था

वणंलद्धुं सद्धापरमदुल्लहा सुच्चानेआउयंमग्गं बहवेपरिभस्सई ९ सुइंचलद्धुंस
श्रद्धा संयमपालिवारूपवीर्यव घणाजीवरोचवता सद्दा नथीधर्मपडिवजताश्रे मनुष्यनइरुचि श्र
द्धानइ लीदोहिलउंजेहलणी॥ हतापणि॥ णिकादिवत् १०

द्धंच वीरियंपुणदुल्लहं बहवेरोयमाणावि नोयणंपडिवज्जए १० माणुसत्तंमिआ
व्यउ जिकोधर्मसांभलीनइ पतवंतसंयमनइविषइ आश्रवसंवर्यापइव बुद्धिकषाय कुक्षरज
द्धियइसद्दहइ॥ वीर्यलहीनइ॥ उकर्मरजनिवारइ॥ ११ रहितजइ मोक्षप्रतिसा

याउ जोधम्मंसुच्चासद्दहे तवस्सीवीरियंलद्धुं संवुडेनिद्धुणेरयं ११ सोहीउज्जुयभूय
वधा क्षमादिकधर्मरत्नइनि समाधिरूपमोक्षउत्कृष्ट घीइसीच्याउजिमअ निवांछिइकर्मनाकार
नत स्वच्छपणइरहइ॥ प्रपामइ॥ ग्निअधिकदीपइ॥ १२ णमिथ्यात्वादिक
इ॥

स्सधम्मोसुद्धस्सचिट्ठई निव्वाणंपरमंजाइ घयसित्तव्वपावए १२ विगिंचकम्मणोहे

संयमविनययसनउकारण जे पार्थिवरूपअदारिकशरीर संसाधकी उंची दिशिइं ॥संसारमांहिरहइ तउविराहस्यनाचउदमादिकइकरी\\ छांडीनइ\\ मोकलाइ\ १३ नाथकारवतचारित्र शीलआचारइ
करी\\

१२ तं जं संसं विणुरवंतिप पाढवंसरीरं हि उइं पक्कमई दिसि १३ अविमालिमे दिसी जे हिं जस्स

इंदियसुखिदइकारीमानइजेअरद मन्नता अउ ववसउजनही एबवं \\२ यरूदेवताउत्तरोत्तरवडलवन मर्यादिनीपरिइंमहाऊजलादीयताजेतेवत\\ ११ ॥उणइआणादी देवतासंघार्थि धवइ\\ दिकामनइ जेहवी कामनावांछातेहवी रूपविकुर्वणानी शक्तिवंत कल्प

उत्तरउत्तरा महासुक्का वहियंता १४ अणियादीवकामाणं कामरूवविउव्विणो उइं

देवलोकविषइर घणासर्वअनइवरसनासयहइ\\ मागरोपमघणाजइताल गी\\ १५ तेदेवलोकवि जेह वाकर्म बहुवसीनइ तेहवाइंद्वादि नातीम जहदेवताआउनइक्षइचि व्यावका\\ पाम इ

कप्पेसु चिठंति अब्बावाससयावरू १५ तत्थ च्चिउ जहाठाणं जरका आउरकप च्चुया उविं

मनुष्यनीयोनिगति तेदसप्रकारलोगनेलोगीजइ १६ ग्रामवा आवासा रूपउ घोडादि दास पालीया एवारिकाम मी\ दिउ\\ सोनउ चेडा २४ अगिवाष
रूपउ

तिमाणुसं जोणिं सेदसंगे विजायए १६ खित्तंवत्थुहिरण्णं पसवो दासपोरिसं चत्तारिका

मास्कंधस्यर जेऊलनेविषइजइतेजलनइविषइतेऊपजइ १७ मनिमान्या न्यातिस्वजन वंतघाइ३\\ लक्ष्मीउच्चमो उच्चगोत्र४ गुणइश समनीक रोगरहितनीरोगइ\\ महाविद्याबुद्धि

मरवंधाणि तत्थसेउववज्जई १७ मित्तवं नायवं होइ उच्चागोए य वन्नवं अप्पायंके महाप

१२

वंत विनयवंत यसवंत बलवंत १८ लोगवी मनुष्यनाशाहादिनइ काममोग सर्वप्रकारइं अपूर्व जावज्जी वलगी सर्वज्ञविशिष्टद्यधर्मनइ धर्मनइविषइ\ केव

न्ने अभिजाए जसोबले १८ भुच्चा माणुस्सए भोए अप्पडिरूवे अहाउयं पुव्विंविसुद्धसद्धम्मे केव

लकलंकरहितबोधि जिनधर्मनीप्राप्तिपामी नइ\\ १९ चारित्रअंगपूविलाहोहि लोकालीनइ\\ संयमसाधनीविरतिपाम्बिवलीनइ\\ बारहेहतपइधतहाला कर्मनाअंशविलाग सिद्धइमास्थे

ल्लबोहि बुज्झिया १९ चउरंगं दुल्लहं मत्ता संजमं पडिवज्जिया तवसा धुयकम्मंसे सिद्धे

तत्रसदा का सुधर्मस्वामिजंबूप्रतिकहइइ महत्ते कहइ\\ २० चउरिंगियनामाअध्ययननउअर्थसंपूर्णहवउ ३ ॥इंहनइसमाप्तिलइसंधा इनहीआउषउत्रूटोकानी परि इ पहवउंजाणीधर्मन इविषइप्रमादनकरिवउ जराइव्यापउ मरणव्यापइ जीवनं

हवइ सासए त्ति बेमि २० चउरंगिज्जअज्झयणं ३ असंखयंजीवियमापमायए जरोवणीय

जनिस्तइनथीकोई मरूपकीत्राणशरण पहवउंविशेषिइजाणिजनलोक प्रमादवंतथइ कणउवि तर्हेइ\\ घणुंसोहिनाकरणहारअज याणपथीनिवर्त्तानथीनरकगति इ अहइ स्पइ जाग्मइ\\ १ ॥जेकरसुणादि पापकर्मइं

स्स उनत्थि ताणं एवंवियाणाहि जणे पमत्ते कंनुविहिंसा अजयागिहिंति १ पावकमेहिं

करीधनउपार्जीने अमृतअमृततुल्य बहइबहइ अमतिनघाऊमतिन घाअप्रततघाअप्रतन लानइ बांधीनइ तेधन\\ पासमरीषास्त्रीवधुप विषयप्रवृत्त्यानुमत वैरनावंधाणाथकानरकगतिइं

धणंमणुस्सा समाययंती अमइंगहाय पहाय ते पासपयट्ठिए नरे वयराणुबद्धा नरयं उ

जाइ २ तेनचोरजिमसंधिमात्रनइमुखिइ पोतानइकर्मिइ वेदियइ पाप नरक इणिप्रकारि प्रेत्य इहलोकिप
गह्यउ\\ रणहार प्रजालोक जीउ रलोक

१२ वंति ३ तेणेजहासंधिमुहेगहीए सकम्मुणाकिच्चइपावकारी एवंपयापिच्चइहंचलोए

\\केधाजेपापकर्मतेनोगयाविनासो २ संसारनइविषइआव्याअनइ साधारणमाहरइपरनइ जेकरइपाप
करनजइछूकेटे वारवनजइ\\ पराउत्रकलत्रादिकनइअर्थिइ एधनजसाइइमजाणी कर्म

कडाणकम्माणनमुरकअत्थि ३ संसारमावन्नपरस्सअट्ठा साहारणंजंचकरेइकम्मं क

तेताहराकीधाकर्मनाफलनउ जेहनइअर्थिकर्मकीधातेबां \\वित्तइद्रव्यइकरीकीधाकर्म इहमनुष्यलो
नइ वेदकालतेगविवानाअवसरइ धवस्वजनबांधवपणउंपाप ४ नउत्राणरक्षणनलहइपामइ कविषइ\\
विषइ\\ विहचिवानइ\\ नहीप्रमादवंत\\

म्मतेतउस्सउवेयकाले नबंधवाबंधवयंउवेंति ४ वित्तेणताणंनलभेपमत्ते इमंमिलोएअ

अथवापरलोक समकितरूप अनंतनवसंबंधीय नैमायिकसमकितादिमोहमा इयकीनिद्रातावथकीप्रमादजो
अमप्रावनइवि दीवइनावइ मोहनीयविषइ थदीवउअणदीठामरीषोथाइ ५ कसूतइवासे निद्रानिवारीनावधी
थइ\\ सम्यक जागइ म

डुवापरत्था दीवप्पणठेवअणंतमोहे नयाउअंदठुमदठुमेव ५ सुत्तेसुआवीपडिबुद्ध

जमजीवि विश्वासनकपंमितसुक्कनली जिणइघोरनिर्दयमरवेअबलनि भारंडपंषीदोरकादिकदेषीजाणइ
तम्मधरी २६ २ प्रज्ञाबुद्धिजेहनी यमुहूर्तनिरंतर बलिशरीर पाताबइतेअप्रमत्तवाजेइहिमसाधपमा दनकरइ
तहवा

जीवी नवीससेपंडियआसुपन्ने घोरामुहुत्ताअबलंसरीरं भारंडपरकीवचरप्पमत्तो ६ १३

वालइसंयममा दोषथकीसंकात जिकांईश्रद्धस्मनउपरिचयप्रमादते ज्ञानादिलाभघणउपजाणइजां लगइ
र्गनइविषइ उथकउ पाउनीपरिइंबंधननाकारणमानत गीतांलगीजीवतव्यआहारादि शरीर
गीजे. मसारनपंषी\\ कइ वधारइ\\ थकी.

चरेपयाइपरिसंकमाणो जंकिंचिपासंइहमन्नमाणो लाभंतरेजीवियवूहइत्ता पच्छा

\\शरीरनउवि निर्जराअजाणतउजाणीअण आपणउंछंदउसंधवइपरूनी घोमउजिमशिषायहणोसीषवा एहकारण ॥उवारीमुकव
छेमकरइ\\ मणकरीआवकर्मरूपमलमय× आकाइउवरीइमोक्षपामइ उवमेपाषर नोधरणहारजइहबांर थकीघणां लहइ\\

परिन्नायमलावधंसी ७ छंदंनिरोहेणउवेइमुरकं आसेजहासिरिकयवम्मधारी पुव्वाइंवा

सर्वथणांवरसलग तेहअप्रमादथकीसाधकउतावल जेपरुषपहिलउंअप्रमत्तनजइ एहउपमाशास्व
इवालइप्रमादरहि उमोक्षिपजावइ\\ ८ तेणंवइमपछइनलहइ जेइमकहइ तवादीनीजे
त\\ इपवइ ध . म करिस्यइ

साइंचरप्पमत्तो तम्हामुणीखिप्पमुवेइमुरकं ८ सपुव्वमेवंनलिभेज्जपच्छा एसोवमास १

हउंमरणनहीपा तेपछइविषादपामइआवष कालमरणनइ ढोइदीधे तिणिअवसरिनसकइ
मउं इशिथिलजइथकइ थकइशरीरनउभेदमरणजइ ९ धनकषायादिकजवा
इम जोणी थमा हटा लइ हूप वि

सयवाइआणं विसीयईसिढिलेआउंमि कालोवणीएसरीरस्सभेए ९ खिप्पंनसक्केइवि

वेकपा तिणिकारणथकीमतु धर्मकरेगामी साचोंजाणीलो शत्रुमित्रसमा आत्माइयितितघापा प्रमादर
मिवउ नायसंयमविषइउद्यम× नेकामभोग कष्टाणीमात्रनइ नुपणइमहात्म पथकीरापतउवालि हित १०
जीवपूर

विगमेउं तम्हासमुट्ठायपहायकामे समिच्चलोगंसमयामहेसी अप्पाणरंवरअप्पमत्तो १०

\\वंतथइ\\ २२की

ग
वारंवारमोहनइगुणकारी नानाप्रकारक्ष साधु संयममार फरसइत्यादिकफरसइ आम तेफरसनइवि
शब्दादिविषयजीपताबइ रूपादि नइ गिविचरतान् ?नानारूपता षइसाधु
२ वण हार
१८ मुहूंमुहूंमोहगुणेजयंतं अणेगरूवासमणंचरंतं फासाफुसंतीअसमंजसंच नतेसुभिरकू
मनइकरीद्वेष ११ विवेकीनामननइमंद घणानइलोभ तेहवारूपामधुरादिकनइ एहवंजाणीक्रो
धीमननकरइ अज्ञानकरइशब्दादिक मोहियामणहार विषइमननकरिवउ धनकरइ
मणसापउस्से ११ मंदायफासाबहुलोहणिज्जा तहप्पगारेसुमणंनकुज्जा रखिज्जकोहं
माननइअहंकारवि मायानसेवइ परिहरइलो १२ जेकारिमीबुद्धिना तुछअसारव तेरागद्वेषइकरी
णइज्जानकरइ नकरइ भनइ कारणहारतवन वचनाबोलण सहितजाणिवा
जाणइ हारएहवापरवादी
विणइज्जमाणं मायंनसेवपयहिज्जलोहं १२ जेसंखयातुछपरप्पवाई तेपिज्जदोसाणुगया
परवश एअन्यतीर्थीसर्वअधर्मइसउ ईबइवाबइ जालगीशरीरन सुधर्मस्वामीक्र एतलइअसंखियना
कहिय गंबाकरिवायोग्य ज्ञानादिक उछेदमरणअथ इसूतिकहइछइ माअध्ययनचउ
इ गुण वामोजु जूतालगी मइतुकहउंउ
परज्झा एएअहंमुत्तिदुगंछमाणो कंखेगुणेजावसरीरभेउत्तिबेमि १३ इतिअसंखयंचउ
पानीअर्थसं संसारसमुद्र तेनवपरंपरा रागादिरहित तिहांमनुष्य केवल एसंसारि तव्वजीवप्र
वर्णहवउ ४ बइविधइ रूपमहानेघ× तएकगोतम×रीसकियेरिमसाविषम× ज्ञानइश्वनीउपदेश तिकहताइवा
थंसमत्तं ४ अन्नवंसिमहोहंसि एगेतिन्नेदुरुत्तरे तत्थएगेमहापन्ने इमंपन्हमुदाहरे १ १५
॥पवाहतेहविषइ॥ मादितस्या॥ इएकमहावीरादि॥ ज्ञावंतं॥

बइएआगे बिहुंथानक कह्यातीर्थं मरणांतआवषा एकअकामबालमर सकामपंडितमरणब बालअज्ञा
लकहीसइ जिहांजीव करइपिपि नाअंतविषइक्त ण १जउवली १ नीनइ
ते रहइ नपडेउपा या
संतिमेयदुवेठाणा अरकायामारणंतिया अकाममरणंचेवसकाममरणंतहा २ बालाणं
विषयादिवांछा मरण असकृतवार पंडितसा अणसणादि। उत्कृष्टउतउकेवलीनइ तेबिहुंमरणमाहिआपहि
इमरइतेअकाम कहीइ वारहुइ धनइ कइसहितसकृ सकृतएकवारहुइ २ लउअकाममरणप्रथाव
।समरण हुइ क
चअकामंतु मरणंअसइंभवे पंडियाणंसकामंतु उक्कोसेणंसयंभवे ३ तत्थिमंपढमंठाणं
।महावीरनामातीर्थंकर कामसज्ञातथाकंदर्पविषइ घणउं ।हिंसादिकक्रूरउ जेगृद्धलोलीकाशब्दादिर एकको
इदेषाडिउ मूढलोलीजिमअज्ञानी इकरइतउलसउ ४ भोगरसादिक्रिणिनइविषइ ईक्ररक
वत. इ र्मी
महावीरेणदेसियं कामगिद्धेजहाबाले भिसंकूराइंकुव्वई ४ जेगिद्धेकामभोगेसु एगेकू
कूटनरगादि मईनथीदीठो परलोक इष्टिइंदीठीप्रत्यक्षरति पोतानइहाथिवशिआ। कालांतरइकप्सइजेते
गतिइजाइ वउ भवांतर सातासुखलाधा ५ थयाएदेषीताकामभो अनागतकहियइ
ग
डाइगछई नमेदिठ्ठपरेलोए चखूदिठाइमारई ५ हथागयाइमेकामा कालियाजेअणाग
कवणजाणइपरलोकरूप बइवाअथवोवलीनथी ६ जिमलोकभोगनउसंगकरइ एहवउंबालअज्ञानीधी
कर्मनाफल बइतिमलोकनइसाथिहुंहउउ वाइपणउंकरइ॥
ण हाइसउ
या कोजाणइपरेलोए अथिवानथिवापुणो ६ जणेण सद्धिंहुरकामि इइबालेपगभई

कामभोगनइरागिइंकरी केशनइमातादहपरलो तेकामभोगनारागथकीते त्रसनइ थावरपनइवि द्रव्यअर्थ
नइ करीपामइ ७ मनवचनकायाइदंडइहणइ विषइ षइ नइअर्थि

१५ कामभोगाणुराएणं केसं संपडिवज्जइ ७ तओ से दंडं समारंभई तसेसु थावरेसु य अट्ठाए

स्वजनादिक वृतजीवनासमूहने हिंसाकरइ मृषावादी मायावी चाडीउ धूर्त खाइ मद्य मांस
नाप्रयोजनविना हणइ ८ बालअज्ञानी बोलइ

अणट्ठाए भूयगामं विहिंसई ८ हिंसे बाले मुसावाई माइल्ले पिसुणे सढे भुंजमाणे सुरं मंसं

श्रेयरूपकरीनइमा कायाइमातउद्धतबलवं वित्तद्रव्यनइविषइलो रागद्वेषिविहुंकर्म शिशुनाग
नइ ९ वचनइमातउद्धत सीस्त्रीनइविषइलोभी तकर्मसंचइ अलसीया

सेयमेयं ति मन्नई ९ कायसा वयसा मत्ते वित्ते गिद्धे य इत्थिसु दुहओ मलं संचिणई सिसुनागु

इंमाटीमाहिर तेकर्मरूपमलइफरस्य आगरोगीतथापहवेदना अतीतबीहतउपरलो हिंसादिककर्मकी
इमाटीघाइ १० अथतिकअतीसारादिक भइ कपरलवथकी धाअयिण

व्व मट्टियं १० तओ पुट्ठो आयंकेणं गिलाणो परितप्पई पभीओ परलोगस्स कम्माणुप्पे

संता सांभल्याछइ नरकस्थान अनाचारीनइछेनरकादि अज्ञानीपापकर्मना अतिघणीनादितापादिक
रतउ ११ नीनइपामइ कगति करणहारनइ जिहांनरकगतिइंवेदना

हिणो ११ सुया मे नरए ठाणा असीलाणं च जा गई बालाणं कूरकम्माणं पगाढा जत्थ वेयणा १५

दिनाघातक

१२ तेगतिविषइकपजिवाना जेहवींबमेहनितुमकइ जेहवांकर्मकीधांतेहवंइक तेपछइआतपइमीणइप जि
घातक सांभल्युं मिइनरकिजाइतउतउतउ रितापकरइकूरइ १३

१२ तत्थोववाइयं ठाणं जहा मेयमणुस्सुयं आहाकम्मेहिं गच्छंतो सो पच्छा परितप्पई १३ ज

कटगाडलानवचेमणहा समपाधरापणादि मोटवामारा पाषाणइसहितविषम अक्षधरीभागइथकइजो इगिइहरतिइं
रखाणनउथकउ कसूतिवामीनइ मार्ग गृहीतवउ ककरइ १४ कर्माइदिकुमनइ

हा सागडिओ जाणं समं हिच्चा महापहं विसमं मग्गमोइण्णो अक्खे भग्गंमि सोयई १४ एवं धम्मं वि

अतिक्रमी हिंसादिकअधर्मपडिवा बेलअज्ञानीमरणनइ धरीभागइतिमसमाप्तितइजो तउरोगादिकपनानंतर
नइ जीआदरी मुखिपहुतउ ककरइतिमतेशोककरइ १५ रतेमरणदूकनइआव

उक्कम्मं अहम्मं पडिवज्जिया बाले मच्चुमुहं पत्ते अक्खे भग्गेव सोयई १५ तओ से मरणंतंमि

बालअज्ञानीसंत्रासपामइ अकामबालमरणइम जिमधूर्तेजूआरीकलिनाएक एअकामबालमरण अज्ञानी
इनरकनाभयथकी ई रइ ढालइजीतउ आव १६ मूर्खनइ

बाले संतस्सई भया अकाममरणं मरई धुत्ते वा कलिणा जिए १६ एयं अकाममरणं बालाणं

कह्यातीर्थं एकसाअनंतरसकाम पंडितनइ सांभलउमुझ मरणअपिते पुण्यवंत जिमसूत्र सांभल्युतउकह
करइ मरण कहताथतिइ १७ जीवितपणि नइ

तउपवेइयं एत्तो सकाममरणं पंडियाणं सुणेह मे १७ मरणंपि सपुण्णाणं जहामेतमणुस्सुयं

कषायरहित अश्वनाव चारित्रिया वसिआत्मा एहवतं मरणमर्वमाधवनहन एहवतं मरणसर्वआगा जिणि
निर्मलमरण रहित नह बहंजेहनह १८ होइ कोइएत्यवंतनहहोइ रीश्रावकनहनहोइ अनो

विप्पसणमणाघायं संजयाण वुसीमओ १८ नइमंसव्वेसु भिरकूसु नइमंसव्वेसुगारिसु नाण

कशीलव्रतसांगइ गृहस्थ विषमगहनआचारवंतचारि ब्रइइकेकअप्रबुखाणीति ॥गृहस्थदेशविरतीसंयम
कह्या त्रयाबोल्या १८ श्रावरअन्यतीर्थीथकी इत्तरप्रधान॥

सीलाअ गारत्था विसमसीलायभिरकुणो १९ संतिएगेहिंभिरकूहिं गारत्थासंजमुत्तरागा

सर्वगृहस्थथकीदेविरत साधुतेवृरासंयमनाधर वस्त्रनउ चर्मथ नेमरहि जटानउ संघाटी मस्तकमुं एयुसक
१घकी एहारजकष्टाजाणिवा २० राषिवउ हिख वउ वधारिव बस्त्रनी नाविवउ मेंसंसार

रत्थेहियसव्वेहिं साहवोसंजमुत्तरा २० चीराजिणंनगणिणं जमीसंगाभिमुंडीणं एयाणि

चीराषिस्यइनही जाचारी दीक्षावंतनइक पिंडोलिउपारक अनाचा नरकथकीनमुंका साधुवाअथवा
नइ पापतत्नहराखा २१ इपिंडइलीवइ री इ

वितात्ताणं एति दुस्सीलंपरियागयं २१ पिंडोलएवदुस्सीले नेगाउणमुच्चई भिरकाएवागिह

गृहस्थ प्रधानव्रतनउ देवलो गृहस्थसामायिकसमक्रभतदे श्रद्धावंतश्रावककायाइ पोसहआहारादित्यागरूप
पालकजाइ कथति २२ ग्राविरतिरूपनानिःश्रंकितका मनिइवचनिइफरसइसे अजुआलइअंधारइविजुं
लिइस लिवनअगु वृताति वइ विरी.मइहि वस.कइ

त्तावा सुव्वएकमईदिवं २२ अगारिसामाईयंगाइ सहीकाएणफासए पोसहंदुहओपरकंप १६

॥दकतेअंगश्रुति॥

दिवसइनघाइतउ
गतिनीहाणिनक २३ एणीसीघइव्रतनइसेविवइ गृहस्थावासि प्रधानवंत मुकाइ जविपर्वतदारि जाइयइमनालोक
रइराविइघणकरइ वसताइपण वंत कशरीरथकी

गराइनहावए २३ एवंसिरकासमावन्ने गिहवासेविसुव्वए मुच्चईछविपव्वाउ गच्छेजरकसलो

देवलोकत्र अथएतलानंतरआश्रवर विजंगतिमाहिएकगति सर्वदुखनिवारीसिद्ध वाअथवादेवतामहा
तिइ २४ हितसाध तजइ जइ रुद्धिवंतजइ

लोगयं २४ अहजेसंवुडेभिरकू दोण्हंअन्नयरेसिया सव्वदुरकपहीणेवा देवेवाविमहड्डिए

अत्तरप्रधानमिथ्यात्वअं कांतिअधिकअत्तक नस्यायक्षदेवताइंकरी आवासवि यशकीर्ति दीर्घआ
२५ धकाररहित मिइसुधर्मादिकइ ·मान वंत २६ उ

२५ उत्तराइंविमोहाइं जुइमंताणुपुव्वसो समाइन्नाइंजरकेहिं आवासाइंजसंसिणो २६ दीहा

वंत संपदावंत अतिदीपता इच्छाइनरूपी जाणियइहिवनांकपनाउ वलीऱघणाअर्चिमालीय तेहवा
वकुर्वइ इमदावर्णकांतिइसहित र्यसरीषीकांतिवंत २७ घान

उयाइड्ढिमंता समिद्धाकामरूविणो अहुणोववन्नसंकासा भुज्जोअच्चिमालिप्पभा २७ ताणि

कनइ विषइजाइ सीषीकरीनइसंयमाउ साधुवाअथवागृहस्थ जेवइपरिनिष्टतकषा
तेदातपाउप्रकारआ यआतिरहित २८ नीद्ध

ठाणाणिगच्छंति सिरिकित्तासंजमंतवं भिरकाएवागिहत्थेवा जेसंतिपरिनिव्वुडा २८ तेसिंसुच्चा

तोलीपरीक्षी
नाघातकसां संजमवंत इंद्रियदमी संत्रासइनासइनहीमर आचारवंतसाधुसिद्धांता २९ नइबालमरणघणी
सवीनइ त रावंत णआवइ दकनाजाण पंडितमरणअधि
क विशेष

१७ सहज्झयाणं संजयाणं वुसीमउ नसंतसंतिमरणंते सीलवंताबहुस्सुया २९ तुलिंविसेसमा ॥या

जाणी दयाधर्मयतीनवधर्मक्षमा प्रसन्ननिर्मल मर्यादावं तथाचतकषायरहि तिवारपछीकालमर श्रद्धा
नइ॥ दरीनइक्षमाइंकरी पणउसेवइ तसाधु तआत्माइंकरी ३० णआवइ वंत॥

दाय दयाधम्मस्सखंतिए विप्पसीएयमेहावी तहाभूएणअप्पणो ३० तउकालेअभिप्पेए सद्धी

तेहवउत गुरुन निवारइ हामरणआव्या तेदेहनउबांछिवउ अथएतलानंतरक्षमि घातकरतउविणा
यथीत्रपन इसमी उत्तहरोमकंपो बांछइमलेषनानइअ ३१ इमरणअवसरआव्यइं सतउमध्यइकार्मण
उ पि थाइ मुकाटउ वसरि बाह्यउदा

तालिसमंतिए विणएज्जलोमहरिसं भेदंदेहस्सकंखए ३१ अहकालंमिसंपत्ते आघायायसमु

रिक सकामपंडितमरणइ नक्कपरिहाछडि एकइं सुधर्मत्वा एतलइअकामसकामनामाअध्ययन
त्रारी मरइ नीरुपादपोपगमन साधु मिजबर्ग ३२ पंचमातउअर्थसंपूर्णहवउ॥ ५ ॥सहवंकहइ॥
र इणिइणमरणमाहि कहइइस
अनरउ

स्सयं सकाममरणंमरई तिण्हमण्णयरंमुणि त्तिबेमि ३२ इतिअकामसकाममरणिज्झयणं ५

जेतलामिथ्यात्वइसहितअ सघलाइतेदुःखनाज दालिद्राधिकइपीडाइ संसारअनंतानइ विद्या पंडितअ
विद्याधाउविद्यादिअथव पजावणहारदुखनापा घणीवारमूढमूर्ख विषइ १ नीते विद्याव
वि त्यार हितपुरुष १ मणहार जइ त

जावंतिविज्जा पुरिसा सव्वेतेदुक्खसंभवा लुप्पंतिबहुसोमूढा संसारंमिअणंतए १ समिक्खपंडिए १७

पीजी पाशत्र एकेंद्रियादिज आपणपइसत्यसंयमग रतवकायविषइमि माता पिता स्नुषाबेटा ना ना
इति १नासं रतिपंथघणाज वेषइ त्रत्नावआणइ २ नीस्त्री ई
णका बंध ६
रति

तम्हा पासजाइपहेबहू अप्पणासच्चमेसिज्जा मित्तिंभूएसुकप्पए २ मायापियाण्हुसाभाया भ

र्या पुत्र उदारना तेमातादिकमजनइ बेदनादिपामतानइपो एहवउअर्थ पोतानी पोकिवा मिथ्यात्व
क्षपना नाणरक्षासणीसमर्थकोइ नही तानइकर्मइ ३ वेलउअर्थ बुद्धिइ २ इ॥ थपावी

ज्जापुत्ताय उरसा नालंतेममताणाय लुप्पंतस्ससकम्मुणा ३ एयमट्ठंसपेहाए पासेसमियदं ॥सप

॥घवामावत नइ बेदिंविषय स्वजनादि नवांछइपहिलानउ गाइ घोड मणिम कान बलदा घरना पालि सर्वए बां
पामउदर्शनजे अ४ बांधा नास्नेहराग परिचयएमादरइथाक ४ उ रकतां नात्रा दि क्षपना यार॥ मीस
णइ॥ रगमवासी द सरण

सणे छिंदगेहिंसिणेहंच नकंखेपुव्वसंथवं ४ गवासंमणिकुंडलं पसवोदासपोरिसं सव्वमेयंच

यमया देवताथ ईकामरूवा थावरघ दासादिज धन धान्य घरवाथ पच तानइ कर्मअसिद्ध दुःखथकी
लीनइ वइतेहवारूपकरइएहव ५ रथमुष गमपरियु री करीनइ मुका
थाइसिअहोशिष्य

इत्ताणं कामरूवि भविस्ससि ५ थावरंजंगमंचेव धणंधण्णंउवक्खरं पच्चमाणस्सकम्मेहिं नालंदु

विवासमर्थजइ धन अलमआत्मानइसनन देखीनइथा पियवाल एहवउंजाणीनइथणइ भयउअनइवेरद्वेषथ
नहीं ६ इविषइसुखदुःखसर्व णीजीवन अआत्माजी जीवनाप्राण कीनिवर्त्तीउथकउ
सर्वइ वउ जेहनइ किणा इ

क्खाउमोयणे ६ अज्झत्थंसव्वउसव्वं दिस्सपाणेपियायए नहणेपाणिणोपाणे भयवेराउ उवरए
॥साधुइनिश्चयनहन्यान

१८

धनाधिक नरकनउका नल्यइरणमात्रपणि आत्मानीदुगंछा आपण गृहस्थइदीधउभोजन इणिसंसारि
७ ग्रहवउ॥ रणदे षीनइ अदत्त करइजेएजीवअ पापनइ आहारभुंज इकरइ ८ इकेक पुंल
नविनारहितसर्के विषइ दिक

७ आयाणंनरयंदिस्स नाइएज्जतणामवि दोगंछीअप्पणोपाते दिन्नंभुंजिज्जभोयणं ८ इहमेगेउम

एहवु आणपच्चषीनइप हिंसादि आपणामन जाणीनइअ शरीरमनतास थुंका ९ कहइज्ञानजक परंक्ति कर्मनउबं
उमानइ वषाणकीधुवि कपाप नउआचार तुलवइज सर्वदुःखथकी इ मूषकीधुकाइस्युं थाकउ धअनइकर्म
ना इनही

न्नंति अपच्चक्खायपावगं आयरियंविदित्ताणं सव्वडुक्खाविमुच्चई ९ भणंताअकरिंताय बंधमुक्ख

नउमोक्षएका एहवउंवचनवीर्यथी आत्मानइआ सासना संस्कृतादिकचित्रविचित्र नउकिहांथकीमंत्रादिकु
इवउथापइ रवीकरीनइ मीषवइ १० भाषाबोलीकर्मथकीराषइ वद्यानउसीषिवउत्राणत
नही णी कइ

पइन्निणो वायावीरियमित्तेणं समासासंतिअप्पगं १० नचित्तातायएभासा कउविद्याणुसासणं

हिंसादिकपापकर्मविषै आपणा पंडितमाननाधर जिकोईअन्यतीर्थीया वर्ण रूपसुंदरादि मनिइ काया
इविविधदुःखथका नी णहारमुणीनीसेवा ११ नादिकइशरीरइविषै गोरा सर्वसर्वइ इ
नकरइ आसक्त करागी दि

विसण्णापावकम्मेहिं बालापंडियमाणिणो ११ जेकेइसरीरसत्ता वण्णेरूवेयसव्वसो मणसाकाय

वचनिइ तेसघलाइदुःखइहलो पाम्यामोटउजन्मजरादि अनंतसंसारनइवि तेकारणथकीसर्वसंसारमां
करी कादिकनांउत्पाजनथा १२ रूपीउअधमार्ग षइ हिंसामणरूपभावदिशिजोइ
इदुःखीथाइ नइ

वक्केणं सव्वेतेदुक्खसंभवा १२ आवण्णादीहमद्धाणं संसारंमिअणंतए तम्हासव्वदिसंपस्स १८

× नx

अप्रमत्त संयममा १३ संसारथकीबाहिरिमोक्ष नवांबइविषयादिराग पूर्वलांकर्मषपाविवा शरीरसंसारथक
थकउ प्रवर्तिइ उमोक्षजाणीनइ कदियइ नणी उद्धरइधर्माहार ग्रं
करी

अप्पमत्तोपरिव्वए १३ वहियाउड्ढमादाय नावकंखेकयाइवि पुव्वकम्मक्खयट्ठाए इमंदेहंसमुद्ध

ण १४ अलगां कर्मनाकारणमिथ्या कालक्रियाक संयमा मात्रापरिमाण अन्नपाणी गृहस्थइकीधउपोतान
ले करी बादिक रिवाउनेअवसरवा पिछिलें नउ इअर्थितलहीनइभषइ १५
बनउ आहार

रे १४ विगिंचकम्मुणोहेउं कालकंखीपरिव्वए मायंपिंडस्सपाणस्स कडंलद्धूणभक्खए १५

घीगुलवस्तुषनीसंनि लेपमात्रथोडीपणिसा जिमपंषिउपांषमात्रले तिमसाधुरधउपगरणले निर्दोषआहार
धिवासीनराषइ धु ईउमइ ईनिरीहथकउप्रवर्त्तइस्मा १६ यदइ
न धु पवि

संनिहिंचनकुव्विज्जा लेवमायायसंजए पक्खीपत्तंसमादाय निरविक्खोपरिव्वए १६ एसणासमि

संयमवं ग्रामादि अनियतवा प्रमादरहितगृहस्थ पिंडपातभिक्षाविह इमतेभगवंतक प्रधानकेवल ज्ञा
त विषइ सीप्रवर्त्तइ थकी रइ १७ हताहवा ज्ञानवंत न
म

उलज्जू गामेअणिअउचरे अप्पमत्तोपमत्तेहिं पिंडवायंगवेसए १७ एवंसेउदाहुअणुत्तरनाणीअ

केवलदर्शी उत्तमकेवलज्ञानदर्शन अरिहंत सिद्धार्थरा महावी विशालारा भगवंतइ सुधर्मस्वामि कुइनि ॥इइइमदउक
न नाधरणहार ज्ञातनपुत्र र णीनउपुत्र कह्यउं जंबूप्रतिक १८ ग्रंथि हउ॥

णुत्तरदंसी अणुत्तरनाणदंसणधरे अरहानायपुत्तेभगवंवेसालीए वियाहिएत्तिबेमि १८ ढुत्त

यआचारध्ययनबहानउ अर्थसंपूर्ण ॥जिमआदेशपरूणउउ कोइकपोषइ एलकबो उदनतंडुलादि तत्कजवस
हवउ॥ ६ देसीनइ कमानइ मुंगमाषादियइषवारवइ

१८ नियंठीयारस्सअध्ययनंसम्मत्तं ६ ॥जहाएसंसमुद्दिस्स कोइपोसिज्जएलयं उयणंजवसंदिज्जा

पोषइपोतानाआंगणा तेसोजनथ पुष्ट समर्थ मेदइजस्य मोटउपेट प्रीणित विस्तारपाम्य परूणानइ वांछ
नइविषइ १ कीतेबोक्ल बुउ उ ट संउष्ट उदेह
मनु

पोसिज्जाविसयंगणे १ तउपोपुट्ठेपरिवुढे जायमेदेमहोदरे पीणिएविउलेदेहे आएसंपरिकंखए

इ जिहांलगीनावइएपरूणउ तिहांलगीजीवइतेउ हिवंआवइपरूण मस्तकछेदिनइधणीस जिमतेनिश्च
२ रूणउ षीउ इ २ तेहिपरूणउतोजानक
२इ

१ २ जावनएइआएसे तावजीवइसेदुहं अहपत्तंमिआएसे सीसंछेत्तूणभुज्जई ३ जहासेख

इबोकम परूणानइवांछतउज इमबालअ अधर्मदुष्ट ईहइवांछइ नरकन हिंसाक अज्ञानी मार्गिलो
उ कहियइ ज्ञानी वाछुवछेते उआउषउ ४ २इ जूठउबोलइ

लुउरब्भे आएसाएसमीहिए एवंबालेअहंमिट्ठे ईहईणरायाउयं ४ हिंसेबालेमुसावाई अद्धाणं

कनइलूटइ अनेरानउआण चोर माया कहितउ हरणहरइ धूर्त स्त्रीनाविषयनइविष कारमणा धनादिप लोगव
दीधउहरइ कूडीवा वंचनाति रव ५ इलोली दिमुहाआ रियहवंत तउषा
वड

मिविलोवए अन्नदत्तहरेतेणे माईकण्हुहरेसढे ५ इत्थीविसयगिद्धेयमहारंभपरिग्गहे भुंजमा १९

साध्रुपात्रादिकलेईनइंगिरीदवक एषणासमितिनिर्दोषआहार ग्रामनगरनइविषेअनित्य विषयादिप्र
उपभोगवईसाधुकमा यहइजू कहितंसमयवंतवे वासतउअकरणहारव मादरहित
१६ साधु रेनिरीहषईप्रवर्त्तइ प्रमत्तेहिंग

समादाय ॥ निरविक्खोपरिव्वए ॥१५॥ एसणासमिउलज्जू गामेअणियउचरे । अप्पम

हस्थिकी पिंडपानसिकातिगवेसएकहि एहवउसेतेहव गवंतउदारकेजकहिनोदवोगुरु प्रधानकेवलकदर्श प्र
वांगवेषणाकरिविचरइ १७ मोटुकेवलज्ञानवंतविशेषविषयादकतेज्ञानक नवंतुसामान्यग्राह धान
लइ कोदर्शन ज्ञी

त्तोपमत्तेहिं ॥ पिंडवायंगवेसए ॥१६॥ एवंसेउदाहु अणुत्तरणाणी ॥ अणुत्तरदंसी ॥ अणु

नजनइदर्शनधरउनितेहना इंद्रादिकनीपूजाजनइयोग्यइ तरिहंतीर्थंक विसालानगरीनाश्रावि सीलीजीमा वं कहइनिर्ग्रंथीय
धरणहारछे २ज्ञातपुत्रसिद्धार्थक्षत्रियसिद्धार्थराजातेहनापुत्र मध्यउवासिसीलीपिआवंत तेणइने आचार्यनेजउ
भगवंतऐश्वर्यवंतश्रीमहावीरदेवजेहजेव गवंतइकहउउइमहुंकहुधर्मस्वा
जनि कदइ मि

त्तरणाणदंसणधरे । अरहाणायपुत्तेसयवं ॥ वेसालिएवियाहिए त्तिवेमि ॥१७॥ इति ।

अर्थलहमाहनउाबउ जहाजिमपाप्यकहितपपउरूणा कोइकपाषइएवेरवोइएतेलयेबो उयणकहितासातल
नइउदेसीनइंअस्तवीकल्पनइ कहानइंजेपरकुणुआयुइजिमा बसुनाउडाहिकदेइव
६ ह्यु इ

खुड्डागनियंठिज्जं ॥ ६ ॥ जहाएसंसमुद्दिस्स । कोइपोसिज्जएलयं । उयणंजवसं

क्षुल्लिकातइअध्ययन्
नइनिर्ग्रंथपणुकं
ध्यननिर्ग्रंथपणउ।
रमननिपग्रहन
इक्षणतथारसगड
नेकल्पक्रुडइणिसं
बंधइउरस्त्रीयादि
पावहप्रानमूवके
माताम्हउरत्रीयाइ
ध्ययनकरइइस्फुट
३

२०

काइ आदर सहित पोतानां घरनइ आंगणइ तेवा जन घणी तरहे बोकड तेमां सइ वस्यु समर्थ हुइ मद इं से सघउ मोटउ उदर पीणित संपुरुष माता बांधित थाइ वपु ति बल विसाल देहने
१

दिज्जा । पोसिज्जा विसयंगणे १ तउ से पुट्ठे परिवूढे जायमेए महोदरे पीणिए विउ

हुउ आएसं कहितां पर कुणनइ परि कथइ कहितां वांछइ जिहां लगे नावइ पर कुणउ तिहां लगइ जीवइ ते बोकड उ दुखीयउ हिवइ आव्यइ थि कउ पर णउ हुइ
२

ले देहे । आएसं परिकंखए २ जाव न एइ आएसे ताव जीवइ से दुही । अह पत्तंमि आ

मस्तक छेदीनइ धणी सहित पर कुणउ जोजन करइ जे हिम ए ते ओषडु निमइवो करइ प्राणीकु पुणनइ वांछइ जे दहणीक ल्यउ डइ तेह दयाणी कुनि बांछ नउ जकहीइ तवंइ मूर्ख ज्ञान अज्ञानी मुख अधर्म इष्ट । जूठउ इजे नरइ ग
३

एसे सीसं छित्तूण भुंजई ३ जहा खलु से उरब्भे आएसाए समीहिए एवं बाले अहि

ईहइ वांछइ नरकनउ आउ जे प्राणीइं हणइ अज्ञानी मूर्ख मार्गनइ विषइ लोकनइ लूंटइ अनेरइ आप्या दीधा विना लिकार णि जे दवी वेहिवालीइ मुसावाई जुठुं बोलणहार इइ हइ चोर इ चोरी करी आजीविका करइ दीरइ इनेदवी जगति दोर ४

म्मिट्ठे ईहई नरयाउयं ४ हिंसे बाले मुसावाई अद्धाणंमि विलोवए अन्नदत्तहरे २८

मा॰ई परनइ ववइ कहिनउ दद रिस्यु उएदवउ विन वइ धूतारवा का आचारनउ धणी ५ स्त्रीनां विषयनइ विषइ लोभीउ करमणाउ मुष महारंभनुं कर णहार धनादि संचय परिग्रह वंते सोंगवउ थाउ मद रादि मां स

णे माई कण्णुहरे सढे । ५ इत्थीविसयगिद्धे य महारंभपरिग्गहे भुंजमाणे सुरं मंसं

मांस जे दीइ र स अमर्षवि कउ परं परजीवनइ दमइ अकाम मर्य इ थव तुंतिपरमद ६ वेम करानउ मास पव चीरणा वीपरिकरु करीने दमनउ मो जी षाणहार मोलउ पेरछ्युउं बड इ जेहनउ पे वयपाम्पउं बइ आणि तलोही जेहनउ एहवा कर्मनि उकरणहार आव षउ जीवितनउ नरकनइ विषइ वांछइ

परिवूढे परंदमे ६ अयकक्करभोई य तुंदिल्ले चियलोहिए आउयं नरए कंखे ।।

जहा जिम आकुणनइं बाकरउ वांछइ आसन सुखासनादि करियाव पर षाट आदि यान वाहिनि इ सुष विलइ ज्य उक्षपकाम शब्दादि कजुं जियाने गवीकरीनइ आस्थानइ दर्व नि दुःखउपा वीएउ उएहवउ धननउ छोडीनइ
७

जहाएसं व एलए ७ आसणं सयणं जाणं वित्तं कामे य भुंजिया दुस्साहडं धणं हिच्चा

मिथ्यात्वादिकइं घणउ ऊपराजी तेह करज ष्टि की कर्मइं करी गुरु वर्द्धमान कालनां इत्यकुसुष आवकर्म रुपरज बंध जेह नइं जारी जउ कहीइ जीव पाकउपी वर्तेतनेने विषेसाव धान बोकडनी परि पाकुणउ आव्यइ
८

बहुं संचिणिया रयं ८ तओ कम्मगुरू जंतू पच्चुप्पन्नपरायणे अय व्व आगयाए

मरणांतमरण आव्यइ आकुकरइ हुउं पापी विषयघणाकर्या दिवइ किहा जाण्यउ ९ | तेहजोककरूपानंतरआउषानइ क्षयहउइ | अलगइथयउविकउदेहथकी घणाजीवनउहणणहार | असुरइकर्मनोकरणहारते हनीजेदिशि

ऽ ॥ मरणंतम्मि सोयई ॥९॥ तओ आउपरिक्खीणे चुयादेहं विहिंसगा । आसुरीयं

तिनरकतिहांजाइकर्मइकरीपरवशितमअंधकार अज्ञानी | गच्छतिजाइकर्मइकरीपरवशितमअंधकारदृष्टांतकहइछइ यथाइ | रूपइयाकउडी एकनइहेतुकारणइ | सहस्रकानीवासली हारइनीगमइनरमइ | अपथ्यरूपअंबानउफलखाइनइ राजागवीखाई

दिसं बाला गच्छंति अवसा तमं ॥१०॥ जहा कागिणीए हेउं सहस्सं हारए नरो । अपत्थं अंब

केइकराजाराज्यसघलागमाडयुंतेमरण पामउअंबानउहष्टांतसोगवउत्तउकरइ ११ | एहवाएमकहीआवसरीषा मनुष्यसंबंधियाकामभोग | देवतासंबंधियाकामभोग आगलिइंअल्पबली ॥ | सहस्रगुणाघणा कारइगुणीइं

गं भुच्चा राया रज्जं तु हारए ॥११॥ एवं माणुस्सगा कामा देवकामाण अंतिए । सहस्सगु

गुणाघणीवा २ | एहवाआउषातथाकामभोगादिककरीबहुदिव्यदेवतासंबंधीया थका १२ | अनेकघणाजेवासवरसनेदसपयुतनइदीअनेकदेवतानाआयुषावरसनावरसकाअनेकअसंख्यातकहीइनेवउरामीआयषु = देवतानीस्थितिसागरोपमप | जेपूरूपनइजुकनेशसिहतेयतांशिष्यसतपदेवहवेउपदेवी सोपमप्रमुख ॥ २१

णिया भुज्जो । आउं कामा य दिव्विया ॥१२॥ अणेगवासानउया । जा सा पन्नवओ ठिई । जा

ण उद्धवकरियइतिवारइतियुनउइं = ४

तेआकअनइकामदेवतानोडीयंतिकहतांहार छइयुबुद्धिनाधणीतेहवात एजपअनुष्ठानअणकरतां ॥ | कामभोगविषयइंजीताथि कामउत्तरसमाहिकरणीआ उपथिकामरुपावीसनेआउ निआउवर्षसतनाऊकइ १३ | जिमकेइकत्रिणिवाणीया | मूलकाढिनाइअनीरासिलेई पोतानाघरथी आमांतरिगया व्यापारभणी

णि जीयंति दुम्मेहा । ऊणे वाससयाउए ॥१३॥ जहा य तिन्नि वणिया । मूलं घित्तूण नि

थाइनरउइमूल महिनलाभलईआ व्यो तेघरनावणिया ॥

तिहांगयानंतरएकइव्यव्या पारकरतांपइऊपामाहिजेहइ लाभनथाज्ञानदर्शनचारित्र मरागपणेपालीमरीदेवता× | बीजोएकमूलगयमायोलेइआवीलाभअधिकोनहोत्यावी | तेहत्रिणिमाहिल्योएकवाणियोमूलगीनीमीपणिहारीन ४ | घरिआ वीतिहांजिहांथकीचाल्योहतेतदवाणीउ ५

गया । एगोऽत्थ लहए लाभं । एगो मूलेण आगओ ॥१४॥ एगो मूलं पि हारित्ता । आगओ तत्थ

व्यवहारनइविषेजिमएहवोपमादृष्टांतजाणिवउं | ऐवंकहितांइमधर्मनइंविषेपणिजाणवो ॥ | मनुष्यनोमनुष्यहउइते मूलमायावाणीयानीपरिइंमरलयणादिकनेगुणांकरीनइं १५ | जालदेवतानीगतिकइणनावतान्यानदर्श

वाणिओ । ववहारे उवमा एसा । एवं धम्मे वियाणह ॥१५॥ माणुसत्तं भवे मूलं लाभो

नव्वारितमरा हिंसादिकसमाचरीमनुष्य नरकगतितिर्यंचगतिरूपजवि नरकनीतिर्यंचनीएबिएगति
गमनमादिके रूपमूलनेछेदइंजीनियाको ज्ञेनिश्चेकइनेमूलहारीआव्यो बालअज्ञानीमूर्खनर
जेदेवगतिथाइते एतलेमनुष्यपणोगयइथ तेमनुष्यनीपरि नइं॥
मूलसहितलाभ केजीवनइं १६
वंतपुरुष सरीखो॥

देवगई भवे। मूलच्छेएण जीवाणं। नरगतिरिक्खत्तणं धुवं॥१६॥ दुहओ गई बालस्स।

आवेषामेवधमहारंभ देवतापणोअनइं जेहसणीजिह्वालोलताइंकरी तेदेवनरनीविगतिहास्या
परिग्रहादिकमूलथव मनुष्यपण लोलताकंमासादिकलंपटवि थिकीसदासर्वदाहेतु
मकारणछेजेबिहुनेगति त्र छेलंपटतथासठविस्वा इस्युः
मइ समायतकारक १७

आवई वहमूलिया। देवत्तं माणुसत्तं च। जं जिए लोलयासढे॥१७॥ तओ जिए सइं होइ।

बिहुप्रकारेनरकगति दोहिलुंकेहतेतेहने अद्धाकालानइंघणाइअतिक्र इणिप्रकारि
तिर्यंचगतिरूपदुर्गति नीकलिवी मेथुणपणतलेअनंतकाले तोलपणेहा
गयोथिको पुण स्योदेवताम
१८ नुष्यपणोए

दु। ओ विहं दोग्गइं गए। दुल्लहा तस्स उम्मग्गा। अद्धाए सुचिरादवि॥१८॥ एवं जियं

२२

इवोबाल गुणदोषविचारीनेबालमूर्खपंडित मूलिकधनसरीखोतेमूलरा मनुष्यनीयोनिइंआवेगयपणाठो
पणेआ वचकहनोविचारीविषेजिताअजोजीवे पणहारवाणीयासरीखापवे नीपंडितपणोसेविवायकी॥
लोचीनइं धूतारीनही संतिएसेलहे

सपेहाए। तुलिया बालं च पंडियं। मूलियं ते पवेसंति। माणुसं जोणिमिंति जे॥

नास्यशिक्षानक प्रकृतिसवनाविइसइकविनी जेनरगृहस्थघरमांहिरहितार्थिकाउ आवेमनुष्यनीयोनिइ कर्मसत्यएताव
हितानथासुव्रतगा नादिथप्रकारेरूपविविधव एमसुव्रताकरइतोकलाउत्तम तिइंजेसणी नाजिएजेदवा
हिइअणुव्र ता कारेशिक्षाइंअभ्यासकरीइ कर्मकियांमेतेह
दिकनंहिंवाजिण १९ रुचिशिक्षाशइइचरूणआसेव नाफललहइए
कारणइंगृहगामे
वनाशिष्यावंतआ
णुव्रतदेवगतिलहे
=२

॥१९॥ वेमायाहिं सिक्खाहिं। जे नरा गिहिसुव्वया। उविंति माणुसं जोणिं। कम्मंस

निश्चयकर्मआदिश्री जेहमनुष्यनेविसालशीक्षाछे जे तेहमूलमनुष्यपणाथिकीअइ सदाचारवंतअणुव्र
जाणिवोहवेनिश्चइ शांकानकरिवीसम्यकसुह क्रियाअतिक्रमीनेआघातीक ताद्रिकवइस्नागुण
थिकीप्राणीजीव अणुव्रतमहाव्रतधरिवा व्यापक पक्षिजिवाइपति
२० त्रोषसहिता॥

च्चा हु पाणिणो॥२०॥ जेसिं तु विउला सिक्खा। मूलियं ते अइच्छिया। सीलवंता सवी

परसविडाकस्यउंकरस्य। एहवादीनपणारहितपाम इदेवगतिपडेछउ॥ एहवउदीनपणइरहि तनिक्कसाधकनइं अनइगृहस्थनइंववली विनाणीयाजीणीनइं किमनुवि नर्कइंज

२१

नन्नास्माटाय ममा।अदीणाकंतिदेवयं २१ एवंअदीणवंभिरकं।अगारिंचवियाणिया।कहं

इमेजीपिउजहिवउंए हवउदेवअनइमउ ष्यु॥ इंद्रियादिकइंहारीतअजा णइंअविउमहीकरी। नइंजाणइज २२ जिमऊ एहाभताअणीनइं विषइंरहउपाणीनउबिंदु उनेद समुद्रपाणीइसघाति इसवइतिवारइमोटउंअ तरपडइ

२३

च्चिमेलिस्कं।जिद्धंमाणोनसंविदे।२२। जहाकुसग्गेउदयं।समुद्देणसमंमिणे

इमकोइकरागीमनुष्यसंबंधि यावकबर्यादिकनाकामभो अछइ देवतानइकामभोगनेपासइमि वइबराबरिलेषइवइरानउविवा रणाकरताभेदुअंतरजाणवउ २३ डाभनाअणीनापाणीनाबिंदुयामा नएहवंमनुष्यनाकामभोगतोछइ गाछइ घोणुआ उषानउ

एवंमाणुस्सगाकामा।देवकामाणअंतिए।२३ कुसग्गमित्ताइमेकामा।सन्नि २३

पोतविकइ केहनउहेतुकारणआ गलिकरीआश्रयीनइं आणपाम्याधर्मनितंपामवउतेयोग पाम्याधर्मनुंपालिवउतेक्षेमतेयोग क्षेमजाणतउनथी मनुष्यनवनइंविषइकामभो गघकीनथीअसमस्यातेह मनुष्यनइं

२४

रुद्धंमिआउए।कस्सहेउंपुराकाउं।जोगक्खेमनसंविदे।२४।इहकामानियट्टस्स।

आत्मानाअर्थमाहतघाद वनोमुषनअपराधीइनाभइ सुखासाभलीनइंपाछवलीनइंने यायकन्यायमुक्तमार्गनउमार्ग जिणिवलीनइहाकामभोगसिद्ध नभांतलीयतोथइवालीकर्मनुवार पडइ॥ एहनरभवेन विषेकामभ

२५

अत्तठेअवरज्झई।सुच्चानेआउयंमग्गं।जंभुज्जोपरिभस्सई।२५।इहकामनि

धाकीनिवर्त्ये तेनेदनइ॥ आत्मानाअर्थस्वजोकादिक विणसइनहीसाबनारहइ॥ मेहनइऊदारिकदेह नइत्यजिनेकरीअल पणनेईकरीनइ॥ थाइदेवताएहवउंमइंसांभल्युंउं श्रीगुरुथिकोकामभोगजालनआ जानकपरिसमुद्रजलअनइडाभ नाअणीनाबिंदुयानउदृष्टांतजा णिवउ॥ ऋद्धिसुव र्णादिका जुईदहनी कांतिजमा

यट्टस्स।अत्तट्ठनावरज्झई।पूईदेहनिरोहेणं।भवेदेवित्तिमेसुयं २६।इड्डीजुई

परा(क्रम) करीकुडउ आऊजीवतव्यसुषइ चुक्कोवलीजिहांएतलोबानांछेमनु नउनिहांतेहआवीनइऊ बालअज्ञा
वणीगारपणादिक इविषयपामिबाषकी फलवननइविषइ पजइ नीनउंय।
अणुत्तरप्रधानअत्यंत २७ स्पदय।
सजाकुइ।।

 कुसोवचो।आउंसुदमणुत्तरं।चुक्कोउद्धमाणुस्सए भोए।तउसेउववज्जई २७।बा

अज्ञानपणउं विषयलंपटाईरूपअधर्मपडिवजी विबाधर्मीनइंधर्मअधर्मजिहनइं नरकनिर्वंवदुर्यंति
जीनइंअंगीकरीनइं इहबान्नुंछइतेदुरुप इऊपजइं

लस्सपस्सबालत्तं अहम्मंपडिवज्जिया।विच्चाधम्मअहम्मिठे।नरएसुउव

बुद्धिवंतपरीसहइंअणाजणहवाधीरनउंदषि क्षमादिकसर्वउत्तमउ कजीनइंअधर्मधर्म
धीरपणउंबुद्धिइंसोवइपरीसहईडोल धानधर्मनइअनुके वाल्हानउधणी।।
इनहीतिहनइधीरकहीयइ।। डेपवर्तीनानइ।।
२८

वज्जई।२८।धीरस्सपस्सधीरत्तं सव्वधम्माणुवत्तिणो।विच्चाअहम्मंधम्मिठे

देवगतिनइविषइऊ ऊलीयाणंतोलीनइविचारीनइं अबालपंडितनउपंडितपणउं मजीनइछांडीन
पजइ अपंडितपणउमूर्षनउ।। पंडितनउजउजाणचवपटइ इंअपंडित।।
२९ २

देवेसुउववज्जई।२९।तुलियाणंबालभावं।अबालंचेवपंडिए।चइऊणबा

पंडितपणउंआदरइमुनीकहीइसाधएहव मानमुएलडाअध्ययननउअर्थानशमाणकस्यउ।।इवई नव्ला।
उकहउसुहधर्मास्वामिजंबूप्रतिइकहइ लहअध्ययननिहांविषयत्यागकस्यउतेतउलोरहि वांघा।
वइ तनइंकुइइणिकारणिआठमउकपिलऋषिनउअ नकुक
३० ध्ययनकहइइहइतिहांकपिलनीकथाजाणवी।। नइप

लभावं।अबालंसेवईमुणित्तिबेमि।३०।एलइज्जाज्झयणंसम्मत्तं।७।अध

रिसवइअथिरहेतउंथि मितपनही एहवासंसारनइविषि किसुउंनामसंसारनाइकुकइते जेणेअसुठानइ
कीसमयादिककालथी तिणिअ षइआगिरनाडुःख कर्मक्रियानुष्ठानसपउडइ।। कीधइअविरुतेर
की माउवइ घणाछइजिहां।। कादिकइथतिन

वेअसासयंमी।संसारंमिदुक्खपउराए।किंनामहुज्जतंकम्मयं जेणाहंदु।

इविप्रेनजा
त्रं

विसषेवलीसंसारिविकरीठो
मीनइंपूर्वसंबंधमातापिता
१ दि

सहरागनकरेकिहांइवाह्यतथाअ
अंतरवस्कनइविषइ

सेहरहितषेमनध
धरइपुत्रकलत्रा

उत्रा।स्।८।५ गाइंनगच्छिज्जा।१।विजहित्तुपुव्वसंजोगं।नसिणेहंकहंचिकुव्विज्जा।असिणेह

२५

मातापितादिकस्नेहनाक
रणहारनइविषइ

मननातापवमुष्टहांतेदोषपरलोकिनर
कगमनादिपदोषतेदोषप्रदोषथीमूकाइ
निश्च्छ

निवारपणीविशेषथीजाणेतेज्ञान
सामान्यपणेजाणेतेदर्शनिएणाव
२ ताकेवलज्ञानकेवलदर्शननेतेणं
एकंसयो

हिय
पथ्य
नाउ

सिणेहकरेहिं।दोसपउसेहिंमुच्चएभिक्खू।२।तोणाणदंसणसमग्गो।हि

कारहिततेहलणीतथानिश्रेयस
करीइमोक्षतेहलणीसर्वजीवन
इं

तेवोरनइंआवकर्मथीमूंका
विवानइंअर्थिइं

ताभेकहेमुनिवरमाधक्रमोहिगछानक
पितवारित्रमोहनायकर्मइरहितयथा
ख्यातचारित्रवंत

यनिस्सेसायसव्वजीवाणं।तेसिंविमोक्खणठाए।भासईमुणिवरोविगयमोहो २५

सर्वबाह्यअभ्यंतरग्रथन
मिथ्यात्वाग्रंथकलहना
३ कारणथीकलहक्रोध
वकारः

बाकिनवावितेनथाविधनेहवोकर्म
नेबंधनोहेतुभिक्षुसाधु

सर्वकामजातवाछादिकवि
षइसमस्तनविषइ

जोतुविचारतोतेणकर्मनो
फलपासूयोलेपाइ

३।सव्वंगंथंकलहंच।विप्पजहेतहाविहंभिक्खू।सव्वेसुकामजाएसु।पासमाणोण

नहींकर्मेकरीत्रा
इजीवरक्षानोका
रण

भोगजगृद्धिनाकारणथीआमि
षमांसनेकाजआत्मानाद्रूषण
थकीदोषनेदोषनेविषेविमग्न
४ कहितांविशेषेकरीबूडा

हितअनेमोक्षनीबुद्धिथीविपरी
तो

बालअज्ञानीमंदग
धर्मप्रतिइआलसू
वकीमूढमोहेव्या

लिप्पईताई।४।भोगामिसदोसविसण्णे।हियनिस्सेयसबुद्धिवुच्चत्थे।बालेयमंदा

प्तुवि
तेजेव
नेप्रा

बंधाइकर्मेकरीकेहनीपरिंमाषीनीपरि
श्लेषमिश्लेषलेनेविषद्राणतावताजिममाषी
श्लेष्माइंकरीबंधाइतिमगृहवुपणबुद्ध
५

दुःखिकष्टमूकीइअमसत्पुरु
षीसनाकामभोगसंसारीनइ
विषइ

नहींसुखंबडाइविषमहितअ
नीपरेंअधीरअपंडितपु

६

मूढे।बज्झईमच्छियावखेलम्मि।५।दुप्परिचयाइमेकामा।नोसुजहाअधीर

रुषइं अथवा ज्ञानादिक वलीसंनिवेसु व्रत मला अहिंसादिक व्रत छे जेहना ए हवा साधु जे संसार विषेवर्ग समारंभे के हनीय रि जिम वाणीया प्रवहणे अतरसमु द्र तरेइं ६ कुगतिना णी श्रमकरे ते श्र मण आपणे श्रमण हवोइ केक अन्यतीर्थी वयमा णा कहितां

उत्त।सूटीप पुरिसेहिं।जहिंसंतिसुव्वयासाहू।जेतरंतिअतरंवणियावा।५।समणामुएगेवय

जीवना प्राणानो वध न्याग मृगनी परि अजाणतां प्राणी कहे हो प्राणक हे कि मेवध मंद मिथ्यादृष्टि नर किजाइ विवेकहीन नरकयामी इएहवी पाप दृष्टि करी सर्वजीवने हणीइ अने ये लुबोक मुंहोमी इएहवीइ ७

२६

माणा।पाणवहंमियाअयाणंता।मंदानरयंगच्छंति।बालापावियाहिंदिट्ठीहिं।७।

निश्चे नहीं प्राणीनो वध अनुमो दे तो करता करावि वानो कहि वं ते किस्यो वइ मूंकाइं कदाइं केको इ एक काल ने विषे शारीर तथा मन संबंधिया दुः ख थी छूटके पामइ एहवो आरिहंत तथा आ चार्यें कह्यो जेणें श्री अ रिहंत आ चार्ये इमो

नहुपाणवहंअणुजाणेमुच्चिज्जकयाइसव्वदुक्खाणं।एवायरिएहिंअक्खायं।जे २५

आगल्य कहु छे ते आचार्य श्री जिनशासन रूप श्री धर्मकह्यो साधु ८ इंद्रियबलादिक प्राण हणे नहीं करावि वु अनुमो दिवो तो नहीं जिम मृषा वादेलइ जे प्राण न हणे ते सुमिति वंत कहीइ ताइ जीव नो रक्षपाल क ग्रुणकहीइ एतला कहाने त र पाप रूप क

हिंइमोसाहुधम्मोपण्णत्तो।८।पाणेयनाइवाइज्जासेसमीइत्तिवुच्चईताई।तओसेपाव

मे नीकली जाइ जिम पाणी थल थी जगत्रय लोक ने आश्रय रह्या जे त्रस प्राणी ९ त्रसनाम कर्म ने उदय त्रस बेंइंद्रियादिक थावरनाम कर्म ने उदय थावर पृथ्वी प्रमुख

यंकम्मं।निज्जाइउदयंवथलाओ।९।जगनिस्सिएहिंभूएहिंतसनामेहिंथावरेहिंच

तिम दंड इं नहीं दंडना नइं अनुमोदे नहीं मन इं करी काया इं करी नइं निर्दोष शुद्ध आहारादिक ना नही तेह ने विषे आरं भ दंड पीडा न करे १० नी एषणा ते जाणी नइं ते ह एषणा ने वि षइ साधु आ

नोतेसिमारभेदंडं।मणसावयसाकायसाचेव।१०।सुद्धेसणाओनच्चाणंतत्थठवि

त्माठवति दोषनिवारी संयमयात्रानइ अर्थइं ग्रासकवलादिआहारपानिणषइ गवेषइ।। सरसमधुरादिकरनइ विषइं गृद्धनथा इसिद्धावरराग द्वेषरहित भोजनकरइ ११ प्रांतनीरसअ। न्नपाणी आ। दिक सेवइ अर्द्ध

उत्ता०सू०टीप

ज्जसिरकू अप्पाणं। जायाए घासमेसिज्जा। रसगिद्धे णसिया भिरकाए ११ पंताणि

इआहारइ चेवपद चूरणीनणी सीतलनपिंडआहारतथा पुराणउ राणडूनाधणावरसनराध्याकु ल्माषउदड।। अथवाबुक्कसमगउडदनोनदीया नवेनीपनउअनकोरिमाअमुषउ लोकउडवालउवणादिकवाएदवा अवेरापणिनीरसअन्न शरीरनानिर्वाहिनणी निसेवइआहारइवो रसुंदरणअनिनीरस संयगानीनणी ४२

२९

चेवसेविज्जा। सीयपिंडं पुराणकम्मासं। अडुवक्कसं पुलागं वा। जवणट्ठाए निसेव

नणीएहवो नकदी यइ उरुषादिकनांसुलक्षणलक्षण विचारकइजेदशास्त्रनइ विषइलेदशा स्त्रउनामउणलक्षणकहीइस्वप्नसु १२ हिणानाफलनाशास्त्र तथाअंगविद्यामस्तककुरिकिवादिक नाफलनाशास्त्रववलीजेप्रयुंजइय कामइआगलिकहेसकाविषेसनला वइ।। नहीकुनिस्चयइते हनइश्रमणसाध कहीयइ।।

एमंथु १२ जे लरकणं च सुविणं च। अंगविज्जं च जे पउंजंति। न हु ते समणा वुच्चंति ए

२७

इहजन्मनविषजीवतव्यनप्र सरइअनियमीनेवमित्र णकरीनइ कष्टथयाविकुनाणकाउपणाअ ममाधिकैलेपुधानमनवचनका यसंबंधियायोगव्यापारथी नेका मका गना

वं आयरिएहिं अरकायं। १३ इह जीवियं अणियमित्ता। पब्भट्ठा समाहिजोएहिं। ते

रसनेविषेगृद्धअथवा कोइककथाकुंथणीकि यानुष्ठाननेवलिइं कुयुजेअसुरकुमारनीनिकायजा तिविशेषमाहिइं १४ तेअसुरनीनिकायथी नीकलीनइ वीगभोगाखवजी वयोनिसंसार माहिपणाय

कामभोगरसगिद्धा। उववज्जंति आसुरे काए। १४ तत्तो वियउवट्टित्ता। संसारं ब

विषउतिनेमंजातआ गतिकरइ घणाकर्मरूपलेपैकरीनेली पाणाथकानइतेहनइ पालविआरिहंतनाधर्मनोपामिवोअ स्पनदोहिलोतेजीवनइसंसारमांहि कमि णाद गेजे आल। कम १५

हुं अणुपरियडंति। बहुकम्मलेवलित्ताणं। बोही होइ सुदुल्लहा तेसिं १५ क

यपाताल मनुष्य सर्व वस्तुए भरी सइ बउर धरा जप्रमाण॥ धन धान्यादिक रीय रि बूर्ण सउर जिण इद्रादिक एक कोइ कन्या राधक करणी॥ तेणइ पणि ते संतोष पाइ नही नतइ एहवउ उदर भरवा अशक्य मर्मणकन्या

उत्रासू॰टाप कसिणंपि जो इमं लोयं । पडिपुन्नं दलिज्जा इक्कस्स । तेणावि से न संतुस्से । इइ दु

मानउ घणानउं किस्यउ कहिवउ जिम जिम लाभ इच्छानी प्राप्ति तइ तिम तिम लोभ वाधइ आदिकनी अधिकी थाइ लाभ थकी लोभ ऊपजइ तेणइ लोभ वाधइ एहवा मास पोठरी एहवा सा नइ

२८

१६

प्पूरए इमे आया । १६ । जहा लाहो तहा लोहो । लाहा लोहो पवड्ढई । दोमासक

रत्तिकी धड्ढउ कार्य तेसउ तानी कोडी इं पणिन हउत्तउ सयउ जिणि कारणि वाला वधारी इं निमत्तावइ ज्ञानादि जीवितव्यनी ग्रहणारि राषिसी नी परि राषिसी एहवी स्त्री नइ लोभ न करइ॥ सुवर्णसरिषामांसपिंड सरीषा स्तन वाइं जेहनां ढूंढ़ थयनइ विषइ वषलपणा इ करी अनेक वासि वित्तइ उड २७

एककयं कोडीए विन निट्ठियं । १७ । नो रक्कसीसु गिज्झिज्जा । गंडवच्छास्वणेगचि

२८

जेहना जे स्त्री कुलवंत पुरुषनें लोभावी लालचई थाई भोगादिक संबंधि यउ पेलि क्रीडा करें दासनी परि जिम रेउ अविषरे काम करि इत्यादिक १८ नारी स्त्री ते हनें विषे गृद्ध न थाइ अनाचार करे सततु पुरु ष

त्तासु । जाउ पुरिसं पलोभित्ता खेलंति जहा व दासेहिं । १८ । नारीसु नो पगिज्झि

स्त्रीनइं विविध परिइं गांसी इण रवोत्र णगार करहाइं साध्यो जाणीनइं शुद्ध चर्यादिक धर्म विनि श्चेइ कद जोक परलोकि सार जाणीनइं तेह धर्मनइ विषइ थापे साधु अप्पणं। आ त्मा प्रति इं विषे क परि ग्रह लिंग ग्राषनें गांसि वें करी

ज्जा । इत्थी विप्पजहे अणगारे । धम्मं च पेसलं णच्चा । तत्थ ठविज्ज भिक्खु अप्पाणं

इणें प्रकारें सर्वे क्रियानि र कारि इयवंती धर्म कस्यो॥ कपिल यतीकेवली इनें केवलि विशुद्ध निर्मल प्रज्ञा बुद्धिनो धणी तरिस्ये संसार समुद्र जिण इ ऊरें ते धर्म जे पर धर्म करिस्य इ

१७ १९

। १९ । इइ एस धम्मे अक्काए । कविलेणं च विसुद्धपन्नेणं । तरिहिंति जेउ काहिंति

तेणिं आराध्या सफल कीधा इहलोक परलोक इह लोकि सुजोइं अविद्ध परलोकि मोक्ष पामिइ इम में कहुं सुधर्मास्वामि जंबूप्रतिइं

कपिलकेवली भाषित अध्ययनो अर्थ कह्यो लेशमात्र थी ॥

निर्लोभ तणउ फल कपिलाध्ययन ॥ निर्लोभि हुइ ते नमिराजर्षिनी परि हुइ तेह भणी नमिप्रव्रज्याध्ययन कहइ छै ॥

२०

उत्ता॰सू॰८॥९ तेहिं आराहिया दुवे लोगम्मि त्ति बेमि ॥२०॥ इति काविलीयं अज्झयणं अट्ठमं सम्म

चवीनइं देवलोक थकी मरण पामी । जे प० नत्र अवतर्यउ मनुष्यलोकनइ विषइ । उपसमाव्यउ छइ उदय नथी आव्यउ दर्शनमोहनीय कर्म जेहनउ ॥

२८

त्तं ॥ चवइऊण देवलोगाउ उववन्नो माणुसम्मि लोगम्मि । उवसंतमोहणिज्जो ॥ सर

संसारइ हर्षतिवसंवेगजाति निर्जरी ते प्रतिइ ॥ जातिस्मरण नइं जन्म संभारी नइं भगवंत बुद्धिवंत हुउ । पोतानी जनव ज्ञानें जाण्य छउ । अनुत्तर प्रधान चारित्र धर्मनइ विषइ । पुत्रनइ थापीनइ राज्यनइ विषइ ॥

१

ईपोराणियं जाइं ॥१॥ जाईसरित्तु भयवं । सहसंबुद्धो अणुत्तरे धम्मे । पुत्तं ठवित्तु रज्जे २८

घरथकी नीकलइ नमि इस्यइ नामि राजा । ते नमि नामइं राजा देवलोकनइ सरिषा एहवा । प्रधान अंतःपुरमांहिं रहिउ प्रधान भोग । भोगवीनइं नमि राजा

२

अभिनिक्खमई नमीराया ॥ सो देवलोगसरिसे । अंतेउरवरगउ वरे भोए ॥ भुंजि

तत्त्वज्ञाण कामभोग छांडइ ॥ मिथिला नगरी अनइ राजनगर जनपद देश छांडी सहित प्रतिइ । बल सैन्य हाथी घोडा आदिक अंतःपुर पटराणी आदिक परिजन परिवार सर्व प्रतिइ ॥

३

त्तु नमीराया । बुद्धो भोगे परिच्चयई ॥ मिहिलं सपुरजणवयं बलमोरोहं च परिय

छांडीनइं नीकल्यउ दीक्षा लीधी । एकांत असाधारण कर्म अनुवर्ति छइ जिहां ते एकांतकरी मोक्ष तेहनइं अधिष्ठित हुउ भगवंत ज्ञानवंत छइ । कोलाहल कलह आक्रंदादिक हुउ जिहां सर्व स्थानकनइ विषइ ॥

४

णं सव्वं । चिच्चा अभिनिक्खंतो । एगंतमहिट्ठिओ भयवं ॥४॥ कोलाहलगभूयं आ

हृतउहृयउमिथिलानगरीनइ निवारइंराजअथवस्थावी नमिएहवइनामइराजाइंक ऊथउउद्यमवं
विषइनमिराजाइदीक्षालेईनइ नीतराजरिषिकामकोथलो थाइथिकीघरथिकीनीकल तऊइराजरिषि
थिकइ नहर्षमानमरवाग्याथकी नइथिकेहृऊवइ॥ ५

सीमहिलाइपव्वइंतंमि। तईयारायरिसिंमी। नमिंमिअभिनिरकमंतम्मि ५ अभुट्ठियं

पवज्यादीक्षानेहरूयजेस्थान सुधर्मइड्वालाणनइ एहवअग्गलिकही किंकहितांअप्र
ज्ञानादिकेंगुणनउथामितन रूपइंवेषइअावीनइ सइरुपप्रनतेहवच इतुविधारइनो
मलनुनेहरधनिइ॥ बोलतहृत ६ रहरिषिआन

रायरिसिं। पव्वज्जाठाणमुत्तमं। सक्कोमाहणरूवेणं। इमंवयणमब्बवी॥६॥ किंनुभोअ
मिथिलानगरीन घणइलोकनइकोलाहल सांसलीइछइउद्वेगनइ रुदनादिकआवासनइविष
इविषइ॥ इकरीव्यापितछइ ऊपजावइएहवाशब्द इअनइसामानघरनइवि
षइ

७

ज्जमिहिलाए। कोलाहलगसंकुला। सुव्वंतिदारुणासद्दा। पासाएसुगिहेसुय ७ एय

३०

एअर्थएतावतापूर्वेबोली पवअवयरूपहेउअन्य नेहप्रश्नकस्यानंतर देवइप्रतिइंएहवउकहितउ मिथि
ववनमांसलीनइ थायहइनहीएकारणते नमिराजऋषीश्वर हृउजेआगलकहीसइ॥ ला
णविद्धंइवेरूपथकउ

८

हेउकारणदियं वनकेहाघातार्नं पुरूनाथापर्की॥ हउनागहवा॥ तउनोपडवो॥ हहानतनोमलवो॥ धा॥पइनोसमा॥ घनाकरिवो॥ एपांचहेतुएकरी मइप्रस्याथको॥ वथवेराथवाल्ये

मट्ठंनिसामित्ता। हेऊकारणचोइओ। तउनमीरायरिसी। देविंदंइणमब्बवी ८ मिहि
नगरीनइविषयत्रपुष्पादिक शीतलताहीवाहइजिहां पांनफूलइसहित घणारवमनुष्यादिकनइघणा
लउवयसमूहतेहनइविषे. मनोरमएहवइनामइजि नछइ॥ गुणजेहनाएतावताघणानइफ
उसाथकतेचैत्यतेहउत्रचैत्यउ हांलोकनामनरमतेमनो लादिकइउपकारीसदासर्वदाए
स्थावथकी रमक हीइ॥ अलकारसणी ९

लाएचेइएवच्छे। सीयच्छाएमणोरमे। पत्तपुप्फफलोवेए। बहूणंबहुगुणेसया॥९॥
वायरइअरहइपरह इलांथेत्रिईटिप्रुथनउस इःरकपाम्यातथासरण एहवापरूआक्रंदइंउको
इहलावइ॥ मूहातहनइविषइंयोग्य रहितपीनपाम्याथका॥ लाहलकरइंछइहेविप्र
लवनचैत्यसरणीकहरहइ वीया

वाएणहीरमाणंमि। चेइयंमिमणोरमे। दुहिआअसरणाअत्ताएएकंदंतिभोखगा।

एहअर्थमांनलीनइ हेतुअनेकारणेप्रेर्यो थकउ निवारपछीनमिराजऋषि प्रतइ देवइंद्रइणइवचनआगलि कह्यउंपनेदकहइछइ ११

११ एयमट्ठंनिसामित्ता हेउकारणचोइउ तउनमीरायरिसि देविंदोइणमब्बवी ११
आवतुम्हअग्निनेवा आबलेछेअग्निइंवायु देइहगवनुंअंतःपुरराणीव काइणथकोअंकोरतणीनथी करइ रमंदिरघरतेमाटइ र्गनइतिणिकारणइ अवलोकतानथीजोता १२

एसअग्गीयवाऊय एयंडज्झइमंदिरं भयवंअंतेउरंतेणं कीसणंनावपेक्खह १२
एहवोअर्थसांभलीन हेतुअनेकारणेप्रेर्योथको निवारपछीनमिराजऋषि इंद्रप्रतिइमबोलतो हुउ १३ सुखेजि मरुइ निमइ

एयमट्ठंनिसामित्ता हेउका रणचोइउ तउनमीरायरिसी देविंदंइणमब्बवी १३ सुहं
मोगैइस्योजेजीवोछु जेमाहरेनथीकांइअल्पमात्रज्ञानादि मिथिलानगरीदाझतांथ नथीमाहरूंबलतुंअंतःपु
राणाधारोछ्या बिनापरमार्थिकीआपणुंकांइनथी कांबलतोथको रादिककांइ तेमाटइ

वसामोजीवामोमो जेसिंमोनत्थिकिंचण महिलाएडज्झमाणीए णमेडज्झइकिंचण

गएकाढियानोअर्थ पछेतआपणीवस्तु षापुढोआगलानो त्रुत्थापढीगगा हेतुनेहेतुपकरीने पानानोपडसाबाक रीगगा२गा अनेहष्टानतकरीइ जणिकरीहेतुसाध करीगगा३गा अनित्यपणथकरुं गनिहेतुदृष्टान्त साधाकरीइगगा४गा अनित्यकनाग्र समाननकहीइंज णेहेतुदृष्टान्तकथ नेकरीनेआपणा वस्तुसाधाकरोगगा पाइअनित्यागलो नीवस्तुत्यापवी तेप पणबोलि करी नइ

त्यजीछेस्त्रीपुत्रजे णइ एहनापालिवानांकरसणादिकव्यापार नथीजेहनेभिक्षावृत्तेंलहवामाफक न पियवाल्होनथीकाइपदार्थजे हनेरागनाअणकरवामाटइ अप्रियअण ल्होपणिनथी कोइपदार्थह १५ ५

१४ चत्तपुत्तकलत्तस्स निव्वावारस्सभिक्खुणो पियंनविज्जएकिंचि अप्पियं
बहुगुणनकरिवो माफकनइ घणोसुखनिश्चइमुनिसाधुने रूडक्याण घणोरनथीजेहनेनथाभिक्षा इंद्रियदंतिदमइ समस्तबाह्यअभ्यंतरपरिग्र हरहितनइतथा १५

पिनविज्जए १५ बहुंखुमुणिणोभद्दं अणगारस्सभिक्खुणो सव्वओविप्पमुक्कस्स
अनित्यहेतुकजीणइ वोकीतत्वतोतदनइ एहवोअर्थसांभलीनइ हेतुकारणेप्रेर्योथको निवारपछीनमिराजऋषि प्रतइकहिइ १६

एगंतमणुपस्सउ १६ एयमट्ठंनिसामित्ता हेउकारणचोइउ तउनमिरायरिसिं
देवइंद्रइणवचनबोलो लतोहुउ १७ प्राकारगढधूलिमयपाषा ईटप्रमुखकरावीनइगगा गोपुरनगरीपोलिअथवाप्राकारने आगलिकमाडादिकपुलनअट्टा लकागढऊपरिरक्षाकाजगमले नइ कटकनेपाछिगलनीपाछो फाईकाष्ठतणीसिलामार वाजंत्रयंत्र

देविंदोइणमब्बवी १७ पागारंकारइत्ताणं गोपुरट्टालगाणिय उस्सूलगसयग्घी

तातिवारपंच जाउ एदिक्षा लीधा अथवा क्षत्रियराजन्   १७   एहवो अर्थ सांभली   न हेतुकारणिं प्रेर्यथको   नमिराजा तिवारपछी श्रीनमिराजा सक्र प्रतें कहे

उ तउगछसि खत्तिया । १८ । एयमठंनिसामित्ता हेऊकारणचोइउ । तउनमीरा ३२

इंद्रप्रतिं इमकहे एहवो बोल्या नमिराजा   १८ श्रद्धारूप नगरी अस्ति ... करी ... तपसंवर ... आगल ... क्षमारूपि ... गढ ... तप संयमरूपी ... करवारूप ... रूडोगढ ... करी ... ते ... त्रिगुप्तिरूप ... वैरी ... ते ... क्रोधादिक ...

यरिसी देविंदंइणमब्बवी १९ । सद्धंनगरंकिच्चा । तवसंवरमग्गलं । खंतिंनिउणपा

मार्दव ... तिणि अहंकारादिक ... जीवनावीर्य ... उत्साह ... करी ... धर्मवंत ... करीनइं ... नइं ...

गारं तिगुत्तंदुप्पहंसगं । २० । धणुंपरक्कमंकिच्चा । जीवंचइरियंसया । धिइंचकेयणं

... मनवचनकाया ... रखवाला ... करी ... कर्म ... तप ... वाण ... क्रिया ... सहित ... कर्मरूप ... ३१ ... ३२ ...

णंकिच्चा सच्चेणपलिमंथए २१ तवनारायजुत्तेणं भित्तूणंकम्मकंचुयं मुणीवि ३२

कर्मसंग्रामरहित ... संसारथी ... मुकाइ   २२   एहवो अर्थ सांभली   इ   हेतुकारणिं प्रेर्योथको   मिराजप्रतीं मिराजा कहे

गयसंगामो भवाउपरिमुच्चई २२ । एयमठंनिसामित्ता । हेऊकारणचोइउ तउन

प्रतें   इंद्र एहवो वचन बोल्या क्रिया   २३   प्रासाद ... घर ... करावी ... वर्द्धमान घर ... करावीनइं ...

मिरायरिसिं । देविंदोइणमब्बवी । २३ पासाएकारइत्ताणं । वद्धमाणगिहाणिय

वालग्गपोइया ... करावीनइं ... तउ निवारपछी ... नमि ... खत्रिय राजवी   २४   एहवो अर्थ सांभलीनइं   हेतुकारणें प्रेर्यथ ...

वालग्गपोइयाउय । तउगछसिखत्तिया । २४ । एयमठंनिसामित्ता हेऊकारणचो

को   तिवारपछी नमिराजा ऋषीश्वर   इंद्रप्रतिं इम कहेता हुआ   २५   संशय ... करे ... जे ... मार्ग ...

इउ तउनमीरायरिसी । देविंदंइणमब्बवी । २५ संसयंखलुसोकुणई जोम ।

नइ मुझनें तो संदेहनचोजिणि समकितादि कर्म कृनो कारण धा भिवा थिकी इणिंका रणिं जिंदा उजाबुं वांछिअइ निहां करइमा मयोक दिसा छा श्रय श्रामानो श्रा श्रम छां न। कश्रवबा श्रास तु गम २६ एहवा श्रर्थ सांभलीनइ

॥७॥ग्रा८॥ गच्छणई घरा उद्देवणं उ मिहिला। तेउ कृविक्क सासयं २६। एयमट्ठं। निसामि

हेतुकारणे प्रेर्यो थिकउ तउ निवारपडीन मिरा इरू देविंदु इंद्र एहवो वचन बो लतो हउ २७ श्रन्युतमुझ संबा धीरुवर प्रति इं रीकरणि दियथका श्रागलानमारीन

३२ त्ता हेऊकारणचोइउ। तउ नमिरायरिसिं। देविंदो इणमब्बवी। २७। आमासे ले

सर्वरवृत्ति इ समनी गाठिका पीनें इच्छा लिइ नगरसंबंधिया लोकनें क्षेमक यइ एहवा चारनें वारीनइ त्याणकरीनइ निवारपडीजाए श्रदो क्षत्रिय २८

महारय गविसेणय तक्करा नगरस्स खेमकाऊण। तउ गच्छसि खत्तिया। २८

एहवो श्रर्थ सांभलीनइ हेतुकारणें प्रेर्यो थिको निवारपडीनमिराजऋषी प्र २ इंद्र प्रतिइ एहवो बोल

एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइउ। तउ नमीरायरिसिं देविंदो इणम ३२

नाऊ या २९ मणापूकार तु नि श्रयम निरपराधी श्रज्ञानगर्व प्रमुख दंड नेदज्ञान्या गनिग्रह प्रमुख उगोइ मुष पूर्व प्रज्ञ गाइइ चोरीना श्रकरणहारनें श्रका रीकही इते हम नुष्यलोकनें वि षेवेदीना मा प्रमुख बंधाइइ मुंकाइ छइ वी रीप्रमु

ब्बवी २९ असयं तु मणुस्सेहिं। मिच्छादंडो पउंजई। अकारिणोत्थ बज्झंति। मुच्च

षनाकरणहार क्रूरयणा थी श्रवबा श्रलहिवाथकी ३० एयण एहवा पूर्वोक्त श्रर्थ प्र नइ सांभलीनइ हेतुश्रनें कारणें बोइउ प्रे र्यो थिको नतनिवारपडी श्रीन मिराजऋषी प्रति

ईकारगो जणो। ३०। एयमट्ठं निसामित्ता। हेऊकारणचोइउ। तउ नमिराय

नइ देवतानो इंद्र श्रकेइ तेहवा रवत बालतो हुउ ३१ जेकोई वलत्पार्थिव वरुव डा बश्रपति मोटा राजा तु झन ६ नथीनमस्कार करतो हेन राधिपहे राजा श्रापणाव संनहवउरी

रिसिं। देविंदो इणमब्बवी। ३१। जे केइ पत्थिवा तुब्भं। नानमंति नराहिवा। वसे ते

नइ श्रापी नइ तउ निवारपडी तुं जाए धर्मक रिवा श्रहा क्षत्रिय ३२ एहवो श्रर्थ सांभलीनइ हेतुकारणे प्रेर्यो थिको॥

ठावइत्ताणं तउ गच्छसि खत्तिया। ३२। एयमट्ठं निसामित्ता। हेऊकारणचोइउ

उत्तरा०सु०टा०

तिवारपछीनमिराजऋषि इंद्रप्रतेंएहवोबोल्या ३३ जेसुभटकोईसुभटदशलाषसुभटनें संग्रामनेविषे माहिंएकलोथिको दुर्जयजिपनजी पोतानात्मा

तउनमीरायरिसी।देविंदंइणमब्बवी।३३।जोसहस्संसहस्साणं।संगामेदु

निवारीजय अनेएकदिशिअपिइएककोइकजा तेहजीपणहारनेंदशलाषनाजीप आपणोआत्मासाथियुद्धक वादल्यइ पणाआत्माजीपयापथिकीनिवारी वाधिकीपरमउत्कृष्टजयवादजी स्थिरोपथिकीआत्मानिग्र

२४ नइ पवाजा लिवो ३४

ज्जएजिणे।एगंजिणेज्जअप्पाणं।एसमेपरमोजउ।३४।अप्पाणमेवजुज्झा

हे किस्योतेउकनेबाह्यथिकीवैरी आपणपेंआपणाआत्मानेंचे तपसंयमादिकेंजीपी पांचइंद्रिय जाराजीदिकसाथियुद्धकरीक वयरपूरणीसरीतइ नइंमोक्षप्रतिइंपामइ ३५ श्रोत्रादिक री

हिं।किंतेजुज्झेणवज्झउ।अप्पाणमेवअप्पाणं।जइत्तासुहमेहए।३५।पंचिंदि ×सि×

क्रोधरी मानअहंकारमायापरनेंवंचवोतेह लोभकिजीयाइंअनेआत्माकहि सर्वइंद्रियादिक म वतबावलीलोभनेंबांधएतलावबली तोमनपतलावेवयरपूरणीसली आत्माजीवजीतेव

याणिकोहं।माणंमायंतहेवलोहंच।दुज्जयंचेवअप्पाणं।सव्वमप्पेजि २४

जिंकीधेंजी एहवोअर्थप्रतिइंसांभली हेतुअनेंकारणेंप्रेरयाथि तउतिवारपछीश्रीनमिराज देवतानो तेवारेंजीत्यो नइं को ऋषिईश्वरप्रतिइं इंद्रएह धन ३६

एजियं।३६।एयमट्ठंनिसामित्ता।हेउकारणचोइउ।तउनिमिंरायरिसिं।देवि

वचनबोलेता यजावीनेंअनेरापाहिविपुल तोडानकरावीनेंश्रमणनिर्ग्रंथ ब्राम्हणनेगाइंलेंसिदे ऊत ३७ करीइंविस्तीर्णमोटायज्ञ घणापसादिकब्राम्हणनइ इ इनेसज्जादिकदेखो गवीनेंअन्नलीनेंआपण

दोइणमब्बवी।३७।जइत्ताविउलेजन्ने।भोइत्तासमणमाहणे।दच्चासुच्चाअजि

पयक्क तउतिवारपछीतोजाएधर्म एहवोअर्थपूर्वलोप्रतिइंसां हेतुकारणेप्रेरयाथिको तिवार करीन नइअर्थिइंअहेशुत्रियरा नलीनइ पछीन इ जा ३८ मिराज

ठाय।तउगच्छसिखत्तिया।३८।एयमट्ठंनिसामित्ता।हेउकारणचोइउ।तउ

ऋषिस्वर देवेंद्रइंद्रप्रतिइंइमबोल्या जेकोईदागारदशलाखद्रम्मेंएकम मासमासप्रतिइंएत तारवा ३९ दसगुणाकरीइंएतलेदसलाख लीगाइदीइदांनबुद्धि

नमीरायरिसी।देविंदंइणमब्बवी।३९।जोसहस्संसहस्साणं।मासेमासेगवं

उत्त्राध्या०

३५

क॰ नइ तदद्दाता र(छि)कीवा रिक्षमोर नीयते क्रया यत्रामं आश्रवह कीतमरिवुने संयमते श्रेयसो॰ यद्यपि केहनं कादृदानं दत्तु ऊड तुद्युण संयम तस्मात् एततसंयम निरवद्य यागादिकमावद्यमक रयत एहवो पूर्वलो अर्थ विचा रमासलीनइ हेतु अनेका रणे चोइयो ते

संसनीय

दए। तस्सावि संजमो सेओ। अदिंतस्स वि किंचणं। ४० एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकार

णचोइओ। तओ नमी रायरिसी। देविंदो इणमब्बवी। ४१ घोरासमं विहत्ताणं, अन्न

पत्थेसि आसमं। इहेव पोसहरओ। भवाहि मणुयाहिवा। ४२ एयमट्ठं निसामि

त्ता हेऊकारणचोइओ। तओ नमी रायरिसी देविंदं इणमब्बवी। ४३ मासे मा

३५

से उ जो बालो। कुसग्गेणं तु भुंजए। न सो सुयक्खायधम्मस्स। कलं अग्घइ सोलसिं

४४ एयमट्ठं निसामित्ता। हेऊकारणचोइओ। तओ नमिं रायरिसिं। देविंदो इण

मब्बवी। ४५ हिरण्णं सुवण्णं मणिमुत्तं। कंसं दूसं च वाहणं। कोसं वड्ढावइत्ताणं

तओ गच्छसि खत्तिया। ४६ एयमट्ठं निसामित्ता। हेऊकारणचोइओ तओ नमी

मिराजऋषि देविंद्रप्रतिइमकहइ ४७ जो नाना प्रकारनां रूपानां पर्वत कैलासनी परि मोटा हिंगला कीधा होइ कदाचित तिहां केलास मेरु समान लाख योजनप्र

राया रिसिं देविंदं इणमब्बवी ४७ सुवण्णरुप्पस्स उ पव्वया भवे सिया हु केलाससम

माण तेवली असंख्याता एकबे नर लुब्ध पुरुषनइ तृप्ति नकरइ तेणइं तेणे इच्छा वांछा ऊइ निश्चइ आकाश समाणी
पिण अख्यात छ मेरु प्रबल तो नाना रूपा तिहि गले कल्पना वर्णा तथा अनंतर न पामाइ जेहनो एहवी छइ ४८
न हुआ तो इम मतोष ऊपडि सर्वकारणाछै

मा असंखया नरस्स लुद्धस्स न तेहिं किंचि इच्छा हु आगाससमा अणंतया ४८

छाघिवी शालि जव प्रमुख सर्व धान्य तथा रूपा प्रमुख धातु गाइ वृषभ जे सिंघोना हाथाति गेंमदित प्रतिपूर्ण नहीं समर्थ नाहने इबाहरिवानणीपक लोने एवं गाथारंक दोतेजाणीनेत पार जेदे भेदइ

पुढवी साली जवा चेव हिरण्णं पसुभिस्सह पडिपुन्नं नालमेगस्स इइ विज्जा

नमा आर्गे ४९ एहवो अर्थ हवे किस्यं जलीनइ हेतुकारणे प्रेर्यो थिको तउ तिवारपछी नमिराजऋषि प्रति इंद्र देवेंद्र

तवं चरे ४९ एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ तओ नमी रायरिसिं दे

ऋकडहवोवचनबो लतो कयउ ५० आश्चर्य छइ जे तो एह रोगउ एह वा कामनो गवर्यासी मीइबे हेपार्थिव हेराजवी नेगांमी ते अद्भुता कामनो गवांछइ पार्थिव गुण आश्चर्य मोरउ

विंदा इणमब्बवी ५० अच्छेरगमब्भुदए भोए चयसि पत्थिवा असंते कामे पत्थसि

कोणउ फनेइहादोष जिणें संकल्प अधिक अधिकी जेनागनी वांछा तेणे तउ विविध प्रकार हणाइछइ ५१ एहवो अर्थ मांसलीनइ हेतुकारणे करी प्रेर्यो थिको तिवारपछी नमिराज ऋषी उत्तर दिइ

संकप्पेण विहन्नसि ५१ एयमट्ठं निसामित्ता हेऊकारणचोइओ तओ नमी रायरि

देविंद्र प्रति इम बोलता कया ५२ देहमां हिं एहवो बाण जिम शल्य तिम सघणी बाधा कय जावे ते शल्य कहीइं तिम शल्य सरीषा कामनो विषतालपुटादिक प्राण हरइ तिम ते सरीषा कामभोग जाणि वा कामभोग आशीविष सरीषा अका मकाह नोका मउ षड्क्ष्या एहवा सपान परज्या मनुष्यादिक मनुष्य तिम कामभोग जाणिवा ७३
गवइ

सी देविंदं इणमब्बवी ५२ सल्लं कामा विसं कामा कामा आसीविसोवमा कामा

करमाश्रनवाकतो ६ णधा कामभोग ने प्रार्थता वांछतो जेहो अकामा करतां काम अणपाम तां अनेरो ताव करतां जउ लिजाइ अधो दिश नरक ने विषे जाइ काविकरी नइतथा मान इअहंकार जीवने अधम नी थी गति ऊइ हीनप्रकारम इ माया परनो वंचिवा नो एकरा

पत्थेमाणा अकामा जंति दोग्गइं ५३ अहे वयइ कोहेणं माणेणं अहमा गई माया

गतिनुं रुंधनतिर लोभथकी इहलोक परलो आजीनें मूकीनें कृतिमहा माहण क तरखै क्रियरूप विकु
नुधति घातविना कनें विषइ भय ऊपजै एक आत्मा नो रूप र्वीनें वनकरीइंद्र पण
जाइए नाउई उ
५४

२७ गइपडिग्घाउ। लोभाउ दुहउ भयं ॥५४॥ अवउज्झिऊण माहणरूवं वेउव्विऊण इंद॰

वांदइ स्तवउं जें स्तवि रहवे मधुरमीठइ कानने अहो मोटो आश्चर्य जे ते जीतो अहो मोटो
स्तवतउ स्तुति करतो सुखकारी इसा वचनइं करीने अतिशय स्यों क्रोध अनमता आश्चर्य जे
थकउ इं राजा प्रति इं क्रोध नामो तिणि तें मान हरा
५५

त्तं। वंदइ अभित्थुणंतो इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥ अहो ते निज्जिउ कोहो। अहो ते

खु जिमु कजीवतां घ अहो मोटो आश्चर्य जे माया निरा अहो मोटो आश्चर्य ति लोभ अहो घणो आश्चर्य
र्कि मवले ते मानम करी निवारी ते वे रीनें कष्ट देउ गाढ वसि कीधो ते निश्चितिउ जे संसा कारी ताहरो सरल
कीधउ कोग दिक वोर निवारवा प्रमुख मा र वभारदी क्षालें स्पे इमक हो सा वसा कृत लोमड
यानकी श्री गुणश्री स्यों नहीं तिणि इ ५६ पणो तेह नाउ नरे

माणो पराजिउ। अहो ते निरक्किया माया। अहो ते लोभो वसीकउ ॥५६॥ अहो ते अज्ज २७

वर्थकी अहो ते आश्चर्यकारी ताह अहो ते आश्चर्यकारिणी ताहरी अहो आश्चर्यकारिणी ते ताहरी मुक्ति इहां म
त स्पर्थ कसा क्र स्लो जे मुक्त आवी श्रधान क्षमा जे मणीमं इ डइ व निलेभिता उत्तम मन लोजिणें देह कष्ट परि नुष्य
इ घिक विलव कीधु ते उधन्य वन बोल्या पिण ते समर्थ उतराध्या पिण तुकने ममता नहीं ५७ जनें वि

वं साहु। अहो ते साहु मद्दवं। अहो ते उत्तमा खंती। अहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥ इहं सि

षे गुणवंत उ परलोकि परलव पिहोइसि लोकनें विषे उत्तम मकोहिउ सिद्धिमोक्ष रूप ते थानक जाए सिनी एवं उ
उत्तम इह नगव इज्य नउ स्वामी॥ उत्तम प्रधान एहवा जे ह स्या रज कर्म रूप रज इणे रहित थकउ वैसाप
ठाणु नकगाम ५८ संस्कृति

उत्तमो भंते। पिच्छा होहिसि उत्तमो। लोगुत्तमुत्तमं ठाणं। सिद्धिं गच्छसि नीरउ ॥५८॥ एवं अ

स्तवतांइं नमिराजऋषि प्रतेंन ली श्रधाइ प्रदक्षिणा देतो थकि वार २ घणो २ शक्र इंद्र वांदतो हउ
ना॰ नाउइ उ

भित्थुणंतो। राइरिसिं उत्तमाइ सद्धाए। पायाहिणं करंतो। पुणो पुणो वंदई सक्को

ते वांदीनें पगवरणाइ परनें पगकेरहवा चक्र अंकुश इत्यादि लक्षण एहवा आकाशनें विषें उ ललित
५९ नइं वंतउ मुनिवर नमिराज ऋषीस्वरना पडगयउ देवलोक विलास
गमी करतां

५९। तो वंदिऊण पाए। चक्कंकुसलक्खणे मुणिवरस्स। आगासेणुप्पइउ। ललि

उत्त॰सू॰टा॰

२८

केवलज्ञान ऊपनो कांननो आभरण नमिराजऋषि नमावे नमू साक्षात् प्रत्यक्ष थईनेमुख तजी परिहरीनेघर
जेहनो एहवो शक्र सिरीरी मुगु सावनाइ वशी करे आत्मान मेइइंद्र ब्रोइयो कहतां उ मंदिर विदेहनामादे
टनुं धारक ६० परआहंकार न करइ मोथिको शमुधरणी अथवा य

यं वव उक्कमइ तिरीडी ॥ ६० ॥ नमी नमेइ अप्पाणं । सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं

जीनेमि चारित्रनेविषेसावधान नकेवलज्ञान मिकरतो हुतो एहवो पंडित निश्चय शास्त्रनाजाण नेथकथे
थिला प्रयोग करनमाधर्मनेवि ६१ करेव ज्ञानका क्रिकरतालूया अत्यासवंतक्रियानाकरण अतिशये
षइश्रिविउ करस्ये पुराम बुद्ध तत्त्वनाजाण मि हारराहवामहोत विवरूण
थ्यारहि ना

वइदेही । सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ६१ ॥ एवं करंति संबुद्धा । पंडिया पवियक्खणा । विणि

नेनिवर्तेपोगात्र जहाजिम वेहनमि एहवे नामे राजऋषी सूरए नमिरहव्याध्ययननो अर्थ दुम
अतिकामभोग वोमेकहो श्रीसुधर्मास्वामी जंबूप्रति इंकहुंछुं लेशमात्रथीकहाउ दुक्र
षी ६२ ९ नोप

यंति भोगेसु । जहा से नमी रायरिसि त्ति बेमि ॥ ६२ ॥ नमिपव्वज्जाज्झयणं ॥ ९ ॥ दु

नर्को दिवसपकुं नेत पारो पाके दिवसकी रात्रि दिवस एहवो मनुष्यनो जीवतव्य आउ छोए मअन्य इमजा
गऊपते भोलो थई अडि नाम मूहने अतिक्रमे निवर्ते जीवनोपुरोराराविदिवसनासमूहने अति णीहेगो
म इ कर्मवेदे अंप जीवपदेशथी लुठ थाइ नमगोत्र

मपत्तए पंडुरए जहा । निवडइ राइगणाण अच्चए । एवं मणुआण जीविय समयं २८

नाधणीइद्र निसमयमा कुसअग्रनाअग्र अणीनी पानेवि थोमात्रकालरहे अरहो फरहो एहवो
त्र मोपाइक्काल प्रमादनक १ वेजिम शरदकाल संबंधी ब्रायनउ हालतो अति अल्पकालस्थिति मनुष्य
रिवउं बिंदू मारे एहनी उपमा नोजीवि

यं गोयम मा पमायए ॥ १ ॥ कुसग्गे जह ओसबिंदुए । थोवं चिट्ठइ लंबमाणए । एवं म

नव्य आउखुं जाणि एहवो जाणी अहो गोतम समयमा एणेन्याइं अल्प कालसंबंधी आउ जीवितमोप
वउ त्र पिणप्रमादनकरिवो २ घानेविघ्रणा बताडह्यो निरुपक्रम क्रम आउषा
आउखुं जाणिवउ नेविघ्नघणाउ

णुयाण जीवियं । समयं गोयम मा पमायए ॥ २ ॥ इइ इत्तरियम्मि आउए । जीवियए ब

अपायविघनत्र एहवो जाणीने जीवथकी अलगाक एहवो जाणी हे गोतम समयमात्र दोहिलो छेपणु
बमानादि पष्का रइ रज कर्म पूर्विलां कीधां आप पणि प्रमाद न करिवुं ३ निश्चे अवुण
रछइजिहां ण

हुपच्चवायए । विहुणाहि रयं पुरे कडं । समयं गोयम मा पमायए ॥ ३ ॥ दुल्लहे

वंतनेमनुष्यनुंजनव घणे कालेपुण्यतो घोफेकाले किस्योक जिणिंकारणिंगाढा टालीदोहिला एहवो जाणी
अवनार हिके सघलाइ प्राणी जीवने तेस्यानणी सकी येएहवा विपाक उदयआव्या हे गोतमत
कर्मना फल मनुष्यनी गतिनिवारण एकसमय दा॰२४

खलु माणुसे भवे । चिरकालेण वि सव्वपाणिणं । गाढा य विवाग कम्मुणो । समयं

मा त्रु पणि प्रमाद न क करिश गौतम उ ४ | एजीव काल अंतर इम रीनइ छिद्दीनो शरीर पामी थिको | उत्कृष्ट पणि जीव पृथिवी पणि सं वसइ कहितां रहइ तउ | काल असंख्याता असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी

उत्ता। स। १०। प। गोयम मा पमायए ॥४॥ पुढविक्कायमइगउ । उक्कोसं जीवो उ संवसे कालं संखाई

णीलगी २९ | एहवो हे गौतम जाणी समय मात्र पुण प्रमाद न करिवो अप्रमत्त रहिवउ ५ | एजीव काल अंतर संसार माहि लमतां अप्काय पाणी नुं शरीर मरी नइ पाम्यो | उत्कृष्ट पणि जीव प्राणी निकाय माहि वसइ रहइ तो | काल असंख्याता तेह सर्व

यं समयं गोयम मा पमायए ॥५॥ आउक्कायमइगउ । उक्कोसं जीवो उ संवसे । कालं सं

कहउ तिम जाणिवो | इम जाणी हे गौतम समय मात्र पणि प्रमाद न करिवो अप्रमत्त पणे वर्त्तवउ ६ | काल अंतर इ जीव संसार माहि लमतां तेउ अग्नि नु शरीर मरी न | पाम्यो थको उत्कृष्टो जीव अग्नि मां हि रहइ

संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥६॥ तेउक्कायमइगउ । उक्कोसं जीवो उ २९

काल असंख्यात उ तेह पूर्वे कह्यउ तिम उ जाणिवु ॥ | एहवउ जाणी हे गौतम समय मात्र पुणि प्रमाद न करिवउ ७ | काल अंतर इ जीव समतां वाउकाय नु शरीर पाम्यउ थकउ ॥ | उत्कृष्टउ जीव

संवसे । कालं संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥७॥ वाउक्कायमइगउ । उक्को

वाउकाय मा हि रहइ | काल असंख्यात उ ते पूर्व इ कह्यउ तिम उ जाणव उ | एहवउ जाणी न इ हे गौतम समय मात्र पणि प्रमाद न करिव उ ८ | काल अंतर इ जीव संसार माहि लमता वनस्पती न उं का

सं जीवो उ संवसे । कालं संखाईयं समयं गोयम मा पमायए ॥८॥ वणस्सइका

य शरीर मरी न इ पाम्यउ थकउ | उत्कृष्ट उ जीव वनस्पती माहि रहइ | काल अनंत उ अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाद इ जाणिवउ जे दुरंत दुःखि अनंत वेदना पामीइ ॥ | एहवउ जाणी हे गौतम समय मात्र पणि प्रमाद न करिवउ अप्रमत्त रहिवउ ॥

यमइगउ । उक्कोसं जीवो उ संवसे । कालं मणंतदुरंतं समयं गोयम मा पमा।

फरसअनइंजीसणवइंजेहनइंते हवेबेंद्रियकहियइजजोकूंसषका १९ लांतरिइंजीवसंसारमांहिसमता

उत्कृष्टउजीवबेइंद्रियमांहिरहइ

कालसंख्यातएहवीसंज्ञाछइ तेसंख्यावरसनासहस्रादिक लगीरहइ

षिकाबेंइंद्रियनाश रीरनइंपामउजी व=१

उत्तासपाट॥ यए।१९ बेइंदियकायमइगउ। उक्कोसंजीवोउसंवसे। कालंसंखिज्जसन्नियं

८०

एहवउजाणीहेगोतमसमयमात्र पणप्रमादनकरिवउअथमत्तर लिखउ॥

फरसजीसनाकछइजेहनइंतेतेइं द्रियकहीयइकीडीप्रमुखका लांतरिसंसारमांहिसमताएजीवते इंद्रियनउशारीरपामुं॥

उत्कृष्टउंजीवतेइंद्रियमां हिरहइ॥

२०

।समयंगोयममापमायए।२०तेइंदियकायमइगउ। उक्कोसंजीवोउसंव

कालसंख्यातअसंख्यातावरसना सहस्रलगीरहइ॥

एहवउंजाणीनइंहेगोतमसमय मात्रपणप्रमादनकरिवउ॥

फरसजीसनाकनेत्रछइजे हनइंतेचउरिंद्रकहीइभ्रम रप्रमुखकालांतरिसंसारमां

२१

से।कालंसंखिज्जसन्नियं।समयंगोयममापमायए।२१।चउरिंदियका। ८०

हिसमताजीव चउरिंद्रियनुंश रीरपामउछइक उ

उत्कृष्टउजीवचउरिंद्रियमांहिरहइ

कालसंख्यातअसंख्यातावरस नासहस्रलगइरहइ॥

एहवउंजाणीहेगोतम समयमात्रपणप्रमा दनकरिवउ

यमइगउ।उक्कोसंजीवोउसंवसे।कालंसंखिज्जसन्नियं।समयंगोयममा

फरसजीसनाकनेत्रकानछइजेह नइंतेपंचेंद्रियकहीइमनुष्यतिर्यंचा दिककालांतरसंसारमांहिसमतार

२२ पंचेंद्रियनुंकायशरीरपामुं॥

उत्कृष्टउजीवपंचेंद्रियमांहिरहइ

कोइएकभवप वंनजीवसात सवसंख्याता

पमायए।२२।पंचिंदियकायमइगउ;उक्कोसंजीवोउसंवसे;सत्तठभव।

आठभवसातभव। असंख्यातआ ऊयानुयुग लीयासंबंधिय उ॥

एहवउंजाणीहेगोतमसमयमात्रपण प्रमादनकरिवउ

देवतानारकीनइंविषइदेव नारकीपणुंमरीनइंपामतउब कउ

उत्कृष्टउंजीवदे वनारकीमांहि वसइरहइ॥

२३

गहणे।समयंगोयममापमायए।२३।देवेनेरइयमइगउ;उक्कोसंजीवो

इक्कक भवग्रहणकरइ नारकी अवीनारकीथाइदेवतानीअवीदेव तानघाइतिनादतात्र्याउषात्रमाण= एहवउंजाणीहोगोतमसमयमात्र पणिप्रमादनकरिवउ॥ १४ एमछएसवीपृथवीप्रमुषनिर्यचादिकनइविषइकायजि वउनेनववकुहीइणइप्रकारेसंसारनइविषइ सागरउउत्कृष्ट उरहइ=२

उत्त॰ सू॰ ट॰॥ उ संवसे। इक्किक्कभवग्गहणे। समयं गोयम मा पमायए। १४। एवं भवसंसारे सं

संसरइ समइ शुभ अशुभ पाप उदयकर्मनइयोगइकरीनइ जीवप्रमादइंकरीमाप्यउ थिक उप्रमादमदादिकपांचकरी अथवा जिनधर्मनइविषइ आलसप्रमादकरीइ एहवउंजाणीनइंहेगोतमसमय मात्रपणिप्रमादनकरिवउ॥ १५

४२

सरेइ सुहासुहेहिं कम्मेहिं। जीवो पमायबहुलो। समयं गोयम मा पमायए। १५।

लहीकरीनइंदोहिलोंपुण जेमनुष्यपणउ॥ परंमगधदेशप्रमुषआर्यदेशनइविषइ अवतरिवउं अवतारपामिवउ तेजीवनइ वलीनिश्चइंदोहिलउ छइ देशा२५आर्य बीजाअनार्यतिणिकारणि॥ १५॥ अर्थ जिणकारणिदेशनइ बेदछइ रहतां घणादसुयाकहितां चोर मिलखुयाकहितां म्लेछ शाक यवनशाबरबर्बरिवरुटलाप।

।लद्धूण वि माणुसत्तणं।। आयरियत्तं पुणरावि दुल्लहं। बहवे दसुया मिलक्खु

४२

मुषलोक वइते मा हि एहवउंजाणी अहोगोतमएक समयमात्रपणिप्रमादनकरिवउ २६ कदाचितसंसारमांहिसमतांजी वइलहतउ आर्यदेशनविषइ अवतारतउ अहीणपूरांविकाररहित पंचेंद्रियनउ निश्चइकरीजहितवउं पामिवउ

या। समयं गोयम मा पमायए। १६। लद्धूण वि आयरियत्तणं। अहीणपंचिंदिया

तेघणउ दोहिलो स्यमाटइ॥ जेहणीसंसारमांहि कर्मरोगादिकइंकरी घराज मांविकल इंद्रियनाधणी निश्चइघणा दीसइ छइ॥ एहवउंजाणीनइंहेगोतम समयमात्र पुणप्रमादनकरिवउ॥ २७ कदाचित पुण्यसंयोगइ जीव।

हु दुल्लहा। विगलिंदियया हु दीसइ। समयं गोयम मा पमायए। १७। अहीणपं

पूरवपंचेंद्रियपणउं अपिनिश्च यपणउं लहइ तउ दीपणि बुधाने तेधर्मवीतरागनउं तेसा भलतेहनउं सांभलिवउं तउ निश्चयदोहिलउ॥ स्यामाटइं जेहमणी कुतीर्थी अन्यदर्शनीनउ अत्यंतसेवानउकरणहार एहवउ लोकसंसारमांहिं घणउ छइ तेमाटइ

चिंदियत्तं पि से लहे। उत्तमधम्मसुई हु दुल्लहा। कुतित्थिनिसेवए जणे। समयं

एहवउंजाणीनइअहोगोतम साम्पनइयोगइंकदाविनजीव अथानवपदार्थनीरुचिअति ऊंजणीत्र
एकसमयमात्रपुणप्रमादन इजहनधर्मनइसांभलिवउंते लायपुणवलीपामिवीअपि नवनइंतव
करिवउंअप्रमत्तरहिवउं॥ केहवउनतमप्रधानछइ॥ निश्चइसहंदोहिलो करीजाणि

४२ गोयममापमायए।१९।लद्धूणविउत्तमंसुइं सद्दहणापुणरावि दुल्लहा मिछत्तं

तुंनेमिथ्याथावतेह एहवउंजाणीनइअहोगोतम साम्पनइयोगइसर्वदृइननन दोहि
नुसेवणहारलोक समयमात्रपणिप्रमादनकं साम्पनधर्मअपिदृनिश्चइ लउका
घणउ रिवउ १९ सद्दहतांकरिवाछतानइंपण॥ याइंम

निसेवएजणे।समयंगोयममाय मायए।२०।धम्मंपिहुसद्दहंतया दुल्ल

नइंवधनइंकरीकरि एसंसारमांहिशब्दादिकपइंद्रिय एहवउंजाणीनइंअहोगोतमसमय
सिवउअनुष्ठानकरि नाकामभोगनइविषइमूर्छा मात्रपिणप्रमादनकरिवउ
वउजियकारणि ईरह्याछइएहवाप्राहिजीव

२०

हयाकाएणफासया इहकामगुणेहिंमुच्छिया।समयंगोयममापमायए।२१

४२

परिसमस्ततावइंजूर वयनी केशकहितांरामरायपांडु सेकहितांजेहवुंइकानउसोयकहि एहवउ
हानीनिश्चनुनवइजतनादरुउंशा राधउलाघाइंततादरा॥ नांकांननउवलतेहाइनइहानिया जाणीय
रीरकहयाकरिवायोग्यशरीर मइवेगलाष्किकीकोइमुकदन्त गोतमएक
जिणिकारणि शब्दनसांभलइ समयमात्र

परिजूरइतेसरीरयं।केसापंडुरयाहवंतितं।सेसोयबलेहायई।समयंगोय

पुणतइप्रमादन
करिवउनासवि शिथिलपणइंपामइशरीरदेह जिणिरोमराइपांडुरीथाइतउ वेहनेत्रबलहानि
वउ

२१
ममापमायए।२२।परिजूरइतेसरीरयं।केसापंडुरयाहवंतिते।सेचक्खुबले

पामइइम हेगोतमसमयमात्रप्रमादनकरि - गरदपणआवइअतिशय जिणिकारणिवंयपरिणम
जाणी वउ स्यउंहानिपणइंतेहशरीरउ इकेशरोमरायपांडुराथउ

२२
हायई।समयंगोयममापमायए।२३।परिजूरइतेसरीरयं।केसापंडुरयाह

जाघाइते तेघ्राणनाशिकानउबल एहवउंजाणीनइंहेगोतम वयपरिणम्यइजीर्णथाइ
ताहरा।। हीणउथाइगंधदोहिलउ समयमात्रपिणप्रमादनक हानिपामइशरीरदेह
जहइतेह रिवउ

२३

४२ वंतितेसि घाण बलेहायई।समयंगोयममापमायए।२३।परिजूरइतेसरीरयंके

कशकहीयइरोमराइ पवइतेहजीसनउबलही एहवउंजाणीनइंअहोगोतमसम वयपरिणम।
तेपंडुराथउजाघाइंते णथाइइस्वादिदोहिलो यमात्रपणिप्रमादनकरिवउ इजीर्णथाइइ
ताहरा जहइतउ तइं हानिपामइशा

२४

सापंडुरयाहवंतिते।सेजिब्भबलेहायई।समयंगोयममापमायए।२४।परिजूरइ

रीरतेणइ केशरोमराइपांडुराथउजा तेहफरिसकायनउबल एहवउंजाणीअहोगोतमसम
करीनइ थाइतेकहितांताहरातिवार हीणपडइगतिआगति यमात्रपणिप्रमादनकरिवउ
इतउ दोहिलीकरीसकइ

२५

तेसरीरं।केसापंडुरयाहवंतिते।सेफासबलेहायई।समयंगोयममापमायए।२५। ४२

वयपरिणम्यइजीर्णथाइहा तिवारइकशरोमराइपंडु तेसर्वहाथपगादिकनुबल एहवउंजाणी।
निपामइशरीरदेह राथवलाथाइंतकहीइता हानिपामइंमनवचनका। अहोगोतमस
हराउ यानाथ्यानहीणथाइ मयमात्रपण

परिजूरइतेसरीरयं।केसापंडुरयाहवंतिते।सेसव्वबलेहायई।समयंगोयममा

वातपित्तश्लेष्मकृपनउआहगते आतंकमूलथमुषजेजीवनइंतत्काल तथाविशेषइं
प्रमादनकर दअरतितथागंडगुबडउतथा हणइतेआतंकविविधअनेकप्रकार करीबळथा।
वउ अजीर्णथकोऊपनउअतीसा नाफरसइतउऊनइ।। कीपडइजीव
रविसूचिका

२६

पमायए।२६।अरईगंडंविसूइया।आयंकाविविहाफुसंतिते।विवडइवि

इरहितविध्वंसपा अतिशयसउंबहिटादिस्ने जिमकुमद।
मइतेताहरउंश एहवउंजाणीअहोगोतमसमय हराणअप्पणमुझऊपरिता चंद्रविकासी
रीर मात्रपणिप्रमादनकरिवउतइं हरुअइतेस्नेह यउंकमलशर
सोकानीसंबं।

२७

द्धंसइतेसरीरयं।समयंगोयममापमायए।२७।वुच्छिंदसिणेहमप्पणो।कुमुयंसा

धिपाणीनइ तजइ जिम कमल ऊंचेउं रहइ
निवारयउ जीवनइ सर्व स्नेह रहित करी इति मतलब माहरइ विषइ रागबंधि
एहवउं जाणीनइं अहो गोतम समय मात्र पिण प्रमाद न करिवउ
तजीनइ धनगाढ स्नेह सिद्ध सुखवली नार्यासी ...॥

२८

रइयं व पाणियं। से सव्वसिणेहवज्जिए। समयं गोयम मा पमायए॥२८॥ चिच्चाण धणं

पछिं वली जइ अंगीकार करइ अणगारपणउ श्री साधुनी क्रीया॥
तेवमी वमीनइ ते पुनः वली आपि निरइ अनि ... समय मात्र ... देखि
एहवउं जाणी हे गोतम समय मात्र पण प्रमाद न

च भारियं। पव्वइओ हि सि अणगारियं। मा वंतं पुणो वि आविए। समयं गोयम मा पमा

करिवउ २९
छांडीनइं ते जीनइ मन मान्या मित्र बांधव पोताना स्वजन व र्गं [illegible]
घणउ चेव पद [illegible] वली सुवर्णादिक द्रव्यनउ समूह ते द्रव्य [illegible] तु सार
मनने मित्रादि जी बीवार गवेषइ [illegible] मित्रादिकनइ वली आदरिवा नही

यए॥२९॥ अवउज्झिय मित्तबंधवं। विउलं चेव धणोहसंचयं। मा तं बिइयं गवेसए। स

एहवउं जाणीनइं अहो गोतम समय मात्र प्रमाद न करिवउ ३०
हे गोतम कालि निश्चइ जिन तीर्थंकर [illegible] काल नइ विषइ दीसतां न दीपलि
बहुपणानइ मत सम्मत एहवउ ज्ञान दर्शन चारित्र मोक्ष मार्ग साधु मार्ग दीसइ [illegible] मोक्ष मार्ग पण [illegible] तीर्थंकरे

मयं गोयम मा पमायए॥३०॥ न हु जिणे अज्ज दीसई। बहुमए दीसइ मग्गदेसए। सं

एहवउ कहीइ आगामी पइका [illegible] निवारस्य [illegible] नइ नैयायक [illegible] पंथनइ विषइ॥
एहवउं जाणी अहो गोतम तइं एक समय मात्र पिण प्रमाद न करिवउ॥
३१
[illegible] परिहरीनइ [illegible] मार्ग [illegible] तीर्थ [illegible] मार्ग [illegible] निवारी पंथ महंटालीनइ
[illegible] पंथ मार्ग इते द कदव उबड महालइ

पइ नेयाउए पहे। समयं गोयम मा पमायए॥३१॥ अवसोहिय कंटयापहं। उइन्नोसि

कहितां मोटउ द्रव्यथ [illegible] कीराज मार्ग [illegible] कीतीर्थंकरादिक [illegible]
तथा ते मार्ग [illegible] ज्ञानादिकनी आराधनाइ करी प्रवर्त्तइ [illegible] विशोधिया कहितां शोधि निश्चइ करीनइ
एहवउं जाणी हे गोतम समय मात्र पणि प्रमाद न करिवउ
देहनी समय [illegible] कहितां जिम कोइक सारथउ
३२

पहं महालयं। गच्छसि मग्गं विसोहिया। समयं गोयम मा पमायए॥३२॥ अबले जह भा

४५

४४

मतमार्गपिंथविषमकष्टकरछ पछइपस्चात्तापकरइजिमकोइ एहवउंजाणीनइंअंगोतम अवा
घाडणहार वगाहीयइमीनइअंगीकीधउ कुड़रूपसुवर्णादिसारलाभअस समयमात्रपणिप्रमादनक गोतम
हमाल॥ जेसारतेहनइंमूकनउंषिकउ मर्थइंइंछ्याठीघरिआवीनिइंहनिकु लिवउंअथमसारतिवउ॥३३ तस्य
पश्चात्तापकरतउहुउ

उत्ता सू ८।१० खवाडए।मामग्गेविसमेवगाहिया।पच्छापच्छाणुतावए।समयंगोयममापमायए ३३

उवइक्कुनिश्चइसंसाररूपीअउसमु किंगतउवलीस्यउंतिष्ठिउवइंउदा अलिकहितोसनमुषयणाइ एहवउं
द्रमोयइतिइंजेहसणीमोटीस्थितिना सीनपणउंतआदरीनइंतीरसंसा उर कतावलुंथाइपारस जाणीनइ
कर्मनइषपाव्याबइतणाइतरूउवें रनउपारयाम्यउषिकउ॥ सारनउयामिवानइं गोतम।

४५

तिन्नोहुसिअन्नवंमहं।किंपुणचिठसितीरमागउ।अभितुरपारंगमित्तए।समयंगो
समयमात्रपणिक्षमा अकलेवरसिद्धतेहनीश्रेणिवृंदनवृंद सिद्धिमोक्षतेलिजअहोगोतम कष्टकनाउ
दनकर उवयसिद्ध नइसुलपरिणामइक्षपकश्रेणिउसि लोकस्थानकतेप्रतिजाइए पद्रवरहित
लिवउ याकहितांउवीकरीनिणतावनावक सिवेहस्थानककेकेहवाउवइं ववजीशिवं।
३४ नइरसंयमस्थानकनेयाले
यममापमायए ३४ अकलेवरसेणिमुसिया।सिद्धिंगोयमलोयगछसि खेमंचसि

४५

मर्वपापर एहवोजाणीनेहं गोतमम नत्थनोजाणकथायना हेगोतमगामनइविषेगनरद्या
हितअनुत्त मयमात्रपणिप्रमादनक उपसिवाधिकीनाटवसं अथवानगरिनथाषेइअट
रसर्वार्थीप्र लिवउ ३५ यमउनिविचरे वीतमकषेरागरहितपापथा
धान नकषिकोलिवर्यो॥
वंअणुत्तरं।समयंगोयममापमायए ३५ बुद्धेपरिनिव्वुडेचरे।गामगएनगरेवसं
शांतिमोक्षतेहनोमार्गवक्ती एहवोजाणीअहोगोतम बुद्धकहितांतीर्थंकरनोसम्मसा
वृद्धिकहितांवधारिभव्यजीव समयमात्रपणिप्रमादने सलीनेवचनसांभलिनेआविंष्टत
नेउपदेशेकरीवृद्धियमाहि नकरिवो ३६ मर्थ
जए।संतिमग्गंचवूहए।समयंगोयममापमायए ३६ बुद्धस्सनिसम्मभासियं
भांतीरूकहयाअर्थसहित पंचरागनेहेषछेदीनेनि वस्तावलिसिद्धगतिप्रतिगयाषुकूलागा
जेपदनेतेणेकरीउपशोभितमो वारीनइं रमगहवाकुंसुधर्मस्वामिजंबूप्रतिइं
साचमानवइ कहेवइ
३७
सुकहियमठपउवसोहियं।रागंदोसंचछिंदिया।सिद्धिंगइंगएगोयमुत्तिबेमि ३७

॥द्रुमपत्र अध्ययननउ अर्थ संयोग मातापितादिकनउ अनइ ग्रंथ तथा जे दरव्य घर न थी ते अणगार आचार
ते दशमा द्रुमपत्र अध्य धनधान्यादिकनउ तेहथी मूकाणो भिक्षाइ आजीविका करइ ते भिक्षु ना आचारक्रि
यन १० मूकाणउ छइ ‥ यावनय

॥उत्त॰ सू॰ टा॰॥ दुमअज्झयणं ।१०। संजोगा विप्पमुक्कस्स अणगारस्स भिक्खुणो । आया

प्रगट करिस्यउं अनुक्रमइ सांभलउ मुझ जिकाइ विद्या जे अप्पसंसारी नाइं ‥ गर्व अहंकारी लुब्ध रसनइ लोलुपी इंद्रि
४९ पकहिता विनइ जिस ‥ व्यमन न उ विग्रह

रं पाउकरिस्सामि आणुपुव्विं सुणेह मे ॥१॥ जे आवि होइ निव्विज्जे थद्धे लुद्धे अणि

थी जे हनइ वारंवार अधिकउ अयुक्त विनयरहित तत अबहुश्रुत जाण अथ एतला कारण अनंतर आगलि ते
उबोलइ तथा बहुविद्या सतश्रुत ज गुण बहु कहीस्यइ ते पांचइ स्थानक पांच
श्रुतनउ कहीयइ २ थानकप्रवरकार तेण इ करीनइ

ग्गहे । अभिक्खणं उल्लवई अविणीए अबहुस्सुए ॥२॥ अह पंचहिं ठाणेहिं जेहिं ४६

ते शिक्षानउ कोइ जवर्त्ततो थको मानकरी अभिमानतेह थकी क्रोध प्रमुख रोगे करीनइ तथा आल अथ एतली कहसानत
ग्रहणी भिक्षा ग्रहणी आसेव तथा क्रोध रीस तेह थकी वली प्रमाद मदरहित परमो ते लेकरी स्यादि थानके प्रकारे
वनाशिक्षा न लइ प्रमाद करीनइ नइ २

सिक्खा न लब्भई । थंभा कोहा पमाएणं रोगेणालस्सएण य ॥३॥ अह अट्ठहिं ठा

करीनइ शिक्षाने विषे शील स्वभाव जेहनें हितिअरेति हसइ नही जेमनाचारमे सउ एहवो मर्म तथा
ते बलकत अरिहंतादिकनें सदाइ इंद्रियनो दमणहार नो वचन न बोलइ ३ नाबोला
विषे रथाइ २ ४ रित्र भम

णेहिं सिक्खासीले त्ति वुच्चई । अहस्सिरे सया दंते न य मम्ममुदाहरे ॥४॥ नासीले न वि

तेहनें ४ तथा पापू आचार अतिरसनें विषें लोल अपराधीनिरापराधी तेसा कशिक्षा शीतल अवरतला
तेहनें एतलें अतीचाररहि लंपट रागरहित ६ तें विषें क्रोध नकरें ७ विनीत कहींइ ५ कलाअनंत
तवें जेहनइ वलीतथाइ माचें रतिपानें ८ आगलिकहें

सीले न सिया अइलोलुए । अकोहणे सच्चरए सिक्खासीले त्ति वुच्चई ॥५॥ अह चउ

ऐ ते चउद स्थानके करीने | वर्त्ततो साधु यतो ते ६ | अविनीत शिष्य कहीइ च उपद इह लोकमाहिं जाणिवो | निर्वाण मोक्ष न पामइ च वलीइ लोकें ज्ञानादिक न लहे ६ | वा र वा

॥७॥सा॥८॥ दसहिं ठाणेहिं वट्टमाणे उ संजए। अविणीए वुच्चई सो उ निव्वाणं च न गच्छइ ६ अ

रहण वारंवार प्रति सकारणि नि कारणे क्रोध क्रोधवंत करइ १ ते मोक्ष पद न पामइ | अनेरो वार इं तो पुण घणा काल गिरी चरा पेज अहवा विकथा ग्रीअ अनेरं नही तवा कोइ करइ २ | नारी रो वेयावच्च करें ते वलतो जाणें मइ एहनो कर्यो वा स्यइ ते माटि किम इ माहरें वेयावच्चकरा बानी छपनथी | श्रुतज्ञान पाम्य इं कार रहे ते श्रुतज्ञानि मद करे जे ज्ञाण

८१

भिरकणं कोही हवइ पबंधं च पकुवइ। मित्तिजमाणो वमई सूयं लधुण मज्जइ

सर पंडि त थई हवो करें ७ | अपि संभावना इं पाप कहितां किण री प्रकारें समिति गुपति स्खलना ते लिंप रिक्षेवा धिक्कार नो करणहार एतावता छिद्र पामी = | मित्र जणीं को पकरें ते अनेरा नो स्म्हें कहिवो वै ६ | सुप्रिय कहितां अति वाल्हुं जे मित्र ते हनें पुण कोप करइ ७ ७ | एकांतें बाने पापदोष बोलें एतावता मुषा

॥७॥ अवि पावपरिरकेवी। अवि मित्तेसु कुप्पई। सुप्पियस्सावि मित्तस्स रहे भास ८७

अनेरा ना निंदानो करणहार ८

मीठे बोले पूछिया विमाठउ बोलउ | अथवा सगो बोलें अथवा एहस्या इस मउ तिज्ञा वादी मित्रादिकस्यु क्रोध करइ ८ दुःकार ए | ह जेतय स्त्री एहवो अहंकारी ए अन्नादिकने विषे लोलीर ते थाइ इंद्रियमननो संवर बोन हीजे एनइ ९ | आहारादिक पामी आत्मा पोषे ए सविभाग करें नेहने करावें प्रीत धार ए नइ इंद्रीस तो बोलतो आगला प्रीत अप्रीतिकर इहा॥

इ पावगं ८ पइन्नवाई दुहिले थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। असंविभागी अवियत्ते अवि

एहवो जिको इइ इते अविनीत साधु कहीइ | अथ पंनर लोक ह्या अनंतर एणे पनरें स्थानके जे हसा धु प्रवर्त्ते ९ तो कहीइ तेह | शिष्यने सुविनीत एहवें कहीतें ग्रणकरीइं | गुरुथी नीचे शिघ्या आसणि सूइबेस आरस्या कार्य भति स्थिर

णीए त्ति वुच्चई ९ अह पन्नरसहिं ठाणेहिं सुविणीए त्ति वुच्चई। नीयावित्ती अचव

रहें आहारादिक पामी गुरु नइं पंचे नहीं इतथा इरजा लगारा पेक्ष्य वाई शुभ मुग जो इ नहीं ४ | अत्युत्सुक ताववा वीणताव्तान हीपरिक्षेप निस्करे किण ही उतिं आकरतव वन नमाये ५ १० | घणा काल लगे रोस न राखइ द | वीजानकोइ कथ्यपणा काम करे तो वल उ ते हनें नपगा

ले अमाई यकुउहले १० अप्पं च अहिक्खिवई पबंधं च न कुव्वई। मित्तिज्जमा

रकार इ	श्रुतसिद्धांतलहीमद नकरइमदक्रोधदोष जाणिक ११	णोतेंपापकर्मकरीअनेपछे आचार्यादिकनादोषका ढइ	अपराधीकीधइछकेपुण अ मित्रऊपरिकापरीअनक ह्वि ढइ १

॥उत्रा॰सू॰ट॥ णोसयई सुयंलधुमऊई ११ नयपावपरिक्खेवी नयमित्तेसुकुप्पई अप्पि

यवाल्हउपरवोजेमि त्र तेएतलेवैरीतेहनो पलि	रहेएकांतइकल्याणकहि तोहनोमनेबोलै १२	ववनसंबिंधिउतेकलहजीव घातउपजैतेडमरतेहनेव जैइटालै १२	बुद्धिवंतएहवाउत् गलेंवाळोजाणवो तिणेसंथ्योवधस्नरी जातिवंतऊपाध्यात्मर तेवदे १३

४८

यस्सावि मित्तस्स रहेकल्लाणभासई १२ कलहडमरवज्जए बुद्धेअभिजायए

ह्रिरिमंतलाजवंतपाछउकरतो लोजें १४ कार्यविनाकिसीचेष्टा नकरइ १५	एहवोतपाविनीतकहक दियइ १३	वसइगुरुनइविषइ जावजीवलगें	धर्मनोव्यापारतेया गरूपवासमाधिते हवंतछपक्षनउपगा धानादिकसिद्धान्तना यागआयंबिलादिकतेवंत

हिरिमंपडिसंलीणे सुविणीएत्तिवुच्चई १३ वसेगुरुकुलेनिच्चं जोगवंउवहाणवं ४८

हनोकरेविहस्थान बोलवाप्रियसलावच नबोलइ	एहवोतेशिक्षासूत्रार्थादि कथइतहरूपणउहिवापामिवानेयोग्य ऊवततसाधकवेऊगुनकहीइ १४	जिमसंषनेवि षइदुधघाल्यो ऊइ	शंखनइविषइधमकरतोएहवोवि इडकाम्मोऽणकरीऋषिनिश्चसा नेराषनेमासाकपजावअनेप्रा एविणसनहीं

पियंकरेपियंवाई सेसिक्खलद्धुमरिहई १४ जहासंखंमिपयं निहितंदुहउविवि

अथवादुःखजें तथाइहवाटोनृषा इतनिरक्षिवनथाइएवेणेप्रकारेब ऊश्रुतसणणछारसाक्षनेविष इजाणिवो	धर्मयतीनोकाचिथिश्रुतसिद्धांतए शोभेयथपिणतिणिपराथपन्नापनवा पिबऊश्रुतरूपआश्रयविसेषकरी घणुंशोभेजिमदुधशंषनइविषइ॥ १५	जेणेप्रकारेसेकहितोते हुकंबोजदेशनामादेश तेहनाऊपनाघोडामां दिइ	शीला दिकम लेगुणे करीया

रायइ एवंबहुस्सुए भिक्खुधम्मोकित्तीतहासुयं १५ जहासेकंबोइयाणं आइन्ने

णेकथकपुक्षन पापणानइहंस सोभाकुलवंतेपद तेराहपाइनोगुण	एहवोघोडोजववे गतेणइकरीप्रधा नमलग॥	एणीउपमाइंबहुश्रुतजैन यतीकबोजदेशनाघोडानीप हिनानीहोंईभलीश्रुतवी लक्षकसक्ष्यक्षन १६	ऊथाजिणिप्रकारेजाणिवा दिइदेइगुणवंतजघोडोतेश तिहुमारुढरहइइष्वघोडा षकरीशोभइ	सूरसु भेटट स्थिरले शिरीर

कंथएसिया आसेजवेणपवरे एवंहवइबहुस्सुए १६ जहाइन्नसमारूढे सूरेद

नने खलज । जमणाजावाञ्जगलिपाछिलिया एवंइमकुइबकुश्रुतसिद्धांतरूपीउघेनउअनइ यथा।जणेष कुंजरहा
हनइ रइहरनइगावादकरीसलइश्र बकुश्रुतरूपसुनरत्रनदरग्नीनदर्शनइत्रासइ कारइसलद थीमाथि
थवायावकाहइउफनइजयदउ नदीदिवसराविमन्नायरूपनिर्घोषसहकदइ हाथलाइकरी वरसनउ
एहवइ गिरंजीबजिनशासनननउदीया।पावकाकिणइटपा । पारिवसयउ॥ हाथीनइ गनवीमकीइ॥

॥उत्त॥स्ता॥ उपरक्कमे, उसउनंदिघोसेणं, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१७॥ जहा करेणुपरिकिन्ने कुंजरे

साठिवरसलगीव बलदेहनीत्रामर्यादइअनेराम इमकुइबकुश्रुतव्यारित्रुद्धिरूपि यथाजेणेउकारिंसेतेती मासेत्र
उवाधतउकइ दवंतहाथीइहरावानसकीय णीहाथिणीइपरिवरयोञ्जतिहृदते थाठेसीगमजेहना तेएलस
इं साठिवरसनीउमाधारतेबलवंत सउउइ
अन्यदर्शनीइहणाइनही १८

४९

रे सुट्ठिहायणे, बलवंते अप्पडिहए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१८॥ जहा से तिक्खसिंगे जा

षंधजेहखोविशेषे बलदेवगायना इमकुइबकुश्रुतपरपक्षनेसेदेसेदेजेनरौव यथाजेणइबकारइ उतकटञ्ज
श्रोसइ यूथटोजानोना पासतेसीगगत्रमामोटाकार्यनेक्षत्तेजा मेतेहनीषीहाटबइ थुमावधमा
यकधणी अस्कधसारकरा हृदनोथापिपतितिर्णियथा जहनी बुयंवेततघा
थिपति अन-रइकि
१९ मइइजावइ

यपंथे विरायई वसहे जूहाहिवइ, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१९॥ जहा से तिक्खदाढे उदग्गे ४९

१गासवीनसकी एहवउसीहञ्जरवीजीवंत इमकुइबकुश्रुतपरीपहीनइसइहने यथाजिणइबकारइ पंचजन्यूश।
गइएदवत मगकहीइयइतेमाहेइथ गमादिकसातनयकरीतेदाढगुणइमो सेतेहवासुदेवरहह खमुदर्शन।
वरवाधान दउतेउदग्रबीजानेनथ१गसत्रउनजा आदि॥ नामचक्रता।
इअन्यतीथीरूपमगमांहिमाटउ॥

दुप्पहंसए मिगाण पवरे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२०॥ जहा से वासुदेवे संखचक्कग

थाकोमादकी बलदहञ्जनइरहहणं इमकुइबकुश्रुतसत्तारहथ यथाजिमतेथोन्हाबीर बषंतनउनारद
नामनीगराते इन्दीएहवीसमथोई। वीणज्ञानदर्शनचारित्रतेश। धणजीयारणाइभिड्डइ दएदारनरताधि
तननधरणहा नउधणीसुभट॥ स्वादिकरकर्मरूपवइरीनइ करीनइअंतवइरीनइ पमारलक्ष्मीनव
रजहनु॥ परसवेवासुलट २१ नागाठेहनुबइजेहनइ निधांनतेहनाना

दाहरे अप्पडिहयबले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥ जहा से चाउरंते चक्कवट्टी मह

यक सेनापति१गृहपति२पुरोहित३गयध४ अनेदेमवंतपर्वतलगी यथाजिलेमकारेसेतेय वड्ढगुणाधिजन
बइ दयप५मकत्रधर६स्त्री७चक्र१ रमु कीर्तिअथवादानादिक थापिनेत्र्यवइ परपाचनाय नइश्रमरनाथि
नाति४कागलि५पदम६दन७प१४रत्ने छिक्कराकर्मरूपवैरी मावेनानेञ्जतेहनोप्रयोजनन दारणहारबइ
तेहनोधणी एहवोबहुश्रुतकइ समुइउ गोनायकरणहार२०ल पवर्त्तइतेहमणासहस्राइ तथा शाकनाम
छितेमहाछाति २२

हिए चउद्दसरयणाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२२॥ जहा से सहस्सक्खे वज्जपाणी पुरं

।सिद्धासनमनवत्रदइसमए पणीउपमाइइवक्खस्कृतकाइकेमहानादे यथाजिणिदइप्रकारइसेनेवि कंवरत्राकाशि वाधिपतिकहीयइ
हारवत्रवनीसलायविमा कपूणाक्रातेआयतेहजल्हमवत्रवकूरी मिरत्रंधकारातहनत्रयालण कमनत्रहियमन
ननादेवतानउवाकरबइ हविलकूणतपूइगारीरनइविहारइदेव हारतथा उकरणहारएहव
ताधिपतिदेवइसवीयइ।तणिकारणिदेः

॥उवासूा८ दहे सक्के देवाहिवई। एवं दवईवक्खसुए। २३। जहा संति मिरविहसे। वतिठंते दिवा

उसूर्य ज्वालामूंकतउजनकइ गणीउपमाइइकाइवक्कस्कनत्र यथाजिणइप्रकारसेते नक्षत्रग्रहतारानउ
बइ॥ एहवउतेजइकरीदीसइ ज्ञानरूपअंधकारनइटालइइम हनाइ।३नउनायकचं परिवारइपरिवस्य
बइ॥ धाममयमार्गइइरहइनिर्मउत्र इकाहिताचंद्रमा॥ धिकउ॥
धवसायवंगपतेजइदीपतउ॥

५० यरो।उलंते इवते एणं। एवं दवईवक्खसुए। २४। जहा से उडुवई चंदो नरकत्तेपरि

परिवारइकउाइंकरी एणीउपमाइकुइवक्कस्कतपूर्ण यथाजिणइप्रकारइसेतइलोकना कान।
संपूर्णएहवउचंद्रमा यतीनउनायकसाधुनवपरिवा समूहनउ॥ गुण।
रसमकितरूपणीपुनिमनिविष वारवो
इसर्वकलाज्ञानादिनेणेसंपूर्ण॥ रउदर

वारए पडिपुन्ने पुन्नमासीए। एवं दवइवक्कसुए। २५। जहा से सामाइयाणं कु ५०

प्रमुखवकीपानूरूप गाहनत्रालिमू। गयमुख एणीउपमाइकाइवक्कस्कतगत्रवा यथाजिणप्रकारइसाते
सुरूडइराषवउ॥ घणोधानेकरी सीसाधनउनवंडारनानाप्रकारना हसमस्तहहरूमाहिप्रव
नस्यउ॥ अपसंगमत्रुगुत्रुणगपइल्नादिक कहीयइ॥
स्कृतज्ञाननेणेकरीसरतनसाधः

ठागारे सुरक्खिए नाणाधन्नपडिपुन्ने। एवं दवइवक्कसुए। २६। जहा सा दुमाण

रयथा जबूहरूपनोमतथासुदरूनेवी अणाढियएहवइनामइजेबू एणीउपमाइबंकाइवक्कस्कतत्र। यथाजि
नबइ जबूपुलनामकहीइजिमत्रुपन दीपनउअधिपतिकदेवता मतकलरूपसिद्धान्तसाहितदेवता णइप्र
फलरेवाधिष्ठितग्रहकूतिमत्रनेर वंतरतेदसंबंधियउतेहनइ नइसजनीयसाधकमाहिश्रेष्ठश्रेरि कारइं
अजबूदीपमाहिंकाइइहवूनहीं॥ वासथानकवइ॥ हेतरूपायउत्रलोदियदेवता॥ मात

पवरा जंबू नाम सुदंसणा। अणाढियस्स देवस्स। एवं दवईवक्कसुए। २७। जहा

एणीउपमाकाइवक्कस्कतत्र
इसर्वनदीधणापयइ सलिलानामनदीसमुद्र शीतानामइनदीनीलवंतपर्वते यथनाम्नाहिमोहरत्रक्रत
मरहसमाहिप्रधाना॥ प्रतिइउतीबइ बकीप्रवाहवहइजेहनउएहवी॥ सपीउनिर्मलपाणीमोक्षरूप
समुद्रयाइउ।तेमकलनीलवंतपर्वतथीहवउ

सा नईण पवरा। सलिला सागरंगमा। सीया नीलवंतप्पवहा। एवं दवईवक्कसुए।

यथा जिम एककारइं सतेह सम मोटउ प्रधान अंबु पणइ मे घणी औषधी इं करी एणी उपमाइं करी बहुश्रुत जि
स्त पर्वत मांहि प्रवर प्रधान हुइ रूपइ करी हुइ नाम मंदर पर्वत ॥ प्रज्वलित दीपतउ । तिम करी नइं बलि इं ओपतउ सि
रसामान्य साधु रूप पत्र नीमा।

॥ २८ ॥ सू॰ २८ जहा से नगाण पवरे सुमहं मंदरे गिरी नाणोसहिपज्जलिए एवं हवइ ब(हु)

हिप्रवरस्याम यथा जिम एक कारइं सतेह सम समुद्र अह नउ पाणी करी अनेक प्रकार नाम रत्न तक एणी रीत
नती उन्नति ना स्वयंभू समुद्र मांहि मोटउ सर्व पूरउ इंद्रजित तिना आपा मइन। केतन आदि रत्नइं करी भरि ति एमाइं
करी रिद्धि वृद्धि की मत नाम सिंइ ही॥ पूर्ण सुनउ बहु इ बहुश्रु
मोटउ अनेक = तउ पुरवउ सा

५२

ज्ञान रूप औषधी इं करी जाज्वल्यमान हुइ = १

स्सुए ॥ २९ ॥ जहा से सयंभूरमणे उदही अक्खओदए नाणारयणपडिपुन्ने एवं ह

वाज्ञान रूप पाणी घणी श्रुति ज्ञान रूपी घणा रत्न ते एणे करी सहित बहु इ ॥ अत्यंतर गंभीर मइ पुणइं करी समु द्रसमान दुरासया केहि ताक परबुद्धि इं किणही सेवी न सकिय इ ॥ परीसह अनइ परवादी इं हराबी वी न स की इ तथा किणही पुणपरात वीन स कीइ ए हवा बहुश्रुत मोटउ इ ॥

३०

वइ बहुस्सुए ॥ ३० ॥ समुद्दगंभीरसमा दुरासया अचक्किया केणइ दुप्पहंसया सु

५२

सिद्धांत इं करी नइं पूर्ण तस्या विस्तीर्ण अंगउ पांगादिक इं करी न इ ताइणो समस्त जीव ना प्रतिपालक बहु इ ॥ एहवा बहुश्रुत समा क्षय पावीन इं कर्म उ त्तम गति मोक्ष प्रति गया जाइं बहुश्रुत इंजा सइं पुण ॥ जकारणि श्रुत समा उन मा त न तउ फल तन कारणइ सिद्धां त स णिवउ सा सालिवउ ॥

३१

यस्स पुन्ना विउलस्स ताइणो खवित्तु कम्मं गइमुत्तमं गया ॥ ३१ ॥ तम्हा सुयमहि

तस्विव उत्तम सलाम कृदर करीइ पी या सर्वु नउ गवेष माहरउ जिणि सिद्धांत सरण ... नइं पर आनरना ... नमानि वइ निश्चइ ॥ मा कृपति इं एमा न इण ए बहु उदउ श्री सु धर्म स्वामि शिष्य श्री जंबू स्वामि प्रति इकहइ छइ ॥ बहुश्रु तना मा अध्ययन

३२ उत्तर्व ते

ट्ठिज्जा उत्तमट्ठगवेसए जेणप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणिज्जासि त्ति बेमि ॥ ३२ ॥ ब

इतपा कुश्तणी श्री हरिकशी बल नामा चांगला अध्य यन कहइ छइ = ॥ श्वपाक नीक सुघा पूर्व ले अध्ययनि कुश्रुतपण उक सुनेत तउ श्रमाणनिरानिवा रवणि तपआदरइ ते कारण ॥ चंडाल ना कुलनइ विषइ उपनउ न उत्तम हवउ ॥ ज्ञानादिक प्रधान गुण नउ धारक एहवउ मुनी यतीसा धुव इ ॥ चांडाल पणइ प्रसिद्ध हरिकेसी बल एहवउ नाम इ

हुसुयज्झयणं ॥ ११ ॥ सोवागकुलसंभूओ गुणुत्तरधरो मुणी हरिएसबलो नाम आ

आसिहूउतपसंयमइंकर्म नइंसेदइइंद्रियपांचनउजी पणहारबइ ॥ १ ॥ ईर्यासमितिएषणासमिति अनइभाषासमितिनइवि षइ॥ वडीनीतिआदिदेइपरठवे विवाउमुषसमितिनइवि षइ॥ वस्त्रवंतउपगरणनउंलेवउं मूकवउतिहांसंजयसंयम वंत॥

॥उत्र॥मूल॥ सिसिरकुजिइंदिए॥१॥इरिएसणाभासाएउच्चारेसमिईसुया जउ आयाणनिक्खेवे

रूडीपरिइज्ञानदर्शनचारि त्रनीसमाधिवंतमनवइ मनगोपव्यउंबइजेणइ वचनगोपव्युंबइजेणइ कायागोपवीबइजेणइ तथाजीताछइइंद्रियपांच जेणइ भिक्षानइअरथिब्राह्मण जिहांहोमकरइछइति हांइज

52

२

।संजउसुसमाहिउ॥२॥मणगुत्तोवयगुत्तो कायगुत्तो जिइंदिउ॥भिक्खट्ठाबंभइज्जं

यज्ञनवाडानइविषइउ पस्थित:ढूकउवउगयउ तेहमुनिप्रतिदेषीनइएज्जंतं कहितांआवतांप्रतिइ तपस्यानइदिवसइंकरीलोही मांससोसव्युंछइजेणइ॥ क्षांतहूंनउमइ। लउउपधिउपक रणधर्मनइशरीर नइअर्थिवस्त्रइण हवउछइजेणइ

३

मि जन्नवाडमुवट्ठिउ॥३॥तंपासिऊणमेज्जंतं तवेणपरिसोसियं पंतोवहिउवगर

52

नेषतिहसिवाजागअनार्यीम्लेछ सरीषासाक्षनीनिंदाइंकरीनइ॥ अलेजातिमदइंकरीनइंथति स्तब्ध जीवनाघातनाकरणहारनथी जीनांपइंद्रियजेणइरहवा ब्रह्मचर्यरहि तस्यामाटइअ निज्ञानीइसी।

४

णं उवहसंति अणारिया॥जाईमयपडिथद्धा हिंसगा अजिइंदिया॥ अबंभचारि

नइसर्वीइनेध एहवउवचनअनेसाक्षन मंएहवउकहइ इंकहितांहमसियाव निलिकारणीबा सेवक नउकउणएअावइवइदीपकहितां निबीहांबमणउंछइरूपआकारजेह नउं वर्णइंकालउदांतबाहिरनीक लइकरीबीहामणउअसुदेरा नइविषइस्थूलकवीनासिकाब लअज्ञानी॥

५

णो बाला इमंवयणमब्बवी॥५॥कयरे आगच्छइ दित्तरूवे काले विगराले फोक्कणा

इजे पाहूयांवस्त्रछइजेहनां थूलइक्षरमां हनी वस्त्रशरीरजेहनांतेमाटइपिशाच रूपदीसइछइ॥ कउकरडानउंवस्त्रअसारकइतेहवस्त्र पहिरउछइकंठनानइविषइजे णइ॥ कउणरेतउंएणइप्रकारइद र्शनेदषीवाअजोग्यबइजेहनां एहवउतनउछइ॥

६

से ओमचेलए पंसुपिसायभूए संकरदूसं परिहरियकंठे॥कयरेतुमंइयअदंस

किसी आ आइ ख्वाबाइ तउं इहां आव्या छाउ । परखवाई जतो नाखी जतां वस्त्र जह नां तया । जाइ हांथी थी इहां थी इहि
छ्वाहनइ विषइ किम तउ आया छइ॥ मूलिइं करी पिशाच शरीर सउ तउं छइ माटइ । बाहिर उपरहा थाइ॥

॥७॥ सू॥ णिज्जे । काए व आसाइहमागओसि । ओमचेलगा पंसुपिसायभूया । गच्छ क्खलाहिं कि

हां रहिउ छइ सर्वथा । वंतर तिहांउ कर्हणवो नामइं जे इहइ वइ ते रह । लग निरागी ते इहां हरिकेशी बल नामा महा । तो की
५२ तइ नर हितउ इस । नउ वासी तिहां नउ हरणहार तव उयक्ष देव । एरूषी श्रुनउ महा माहिमावंत छइ॥ नइ पो
वीजा परक्ष ७ ता॥

मइं ठिउसि ७ जक्खो तहिं तिंदुयरुक्खवासी अणुकंपउ तस्स महामुणिस्स पच्छा

तानी शरीर ऋष्टहष्ट करी अतीश । इमाइं एहवां आगलि कहीस्यइ ते इह । ते इह जक्ष देव तपस्वी मुनि इहां उवउं तवाय म
रीर मांहि पइसीनइं रह्यउ वि । वांचव नव तिइं उद्धार हरिख वोलतउ । संयमवंत उस्त व वर्षनउ धरणहार
रूउ रूउयरू॥ ८

यइत्ता नियगं सरीरं इमाइं वयणाइं मुदाहरित्था ८ समणो अहं संजउ बंभयारी वि ५२

निव सविं गाइं मे सिबलद रोधि वोबे । पारकें आर्थ नीपनो अन्नती नि क्षानें । अन्न पाननें अरथि इहांयत्र
तथा द्रव्य मुष पवकी विरम्यउ छउ । अवसरिइ । वामानें विषें आ वोठ

रउ धणपयणपरिग्गहाउ । परप्पवित्तस्स उ भिक्खकाले अन्नस्स अट्ठा इहमागउ

९ दे दिज्जा अनाथनें दीजीइ तथा घेवर प्रमुख । धान घणाउ मारें आ पत । जाणो जे मुज्हनें युवावें जक
षाइइ रूरदालि प्रमुख भोगवीयइं । रूवलीवइं । रीजीविवो माणनो धरिवोट

मि । वियरिज्जइ खज्जइ भुज्जई या अन्नं पभूयं भवयाणमेयं जाणाहि मे जाय

जे दैने एहवो । शेष ऊग स्यो ते इन्नो वली अवशेष ऊग । हिवे ब्राह्मण बोल्या लवण वेरावार इ । पोतानें
स्यो एतावता अंत प्रांत तुच्छ लक्षउ ए मु । संस्कृत स्यो जेजो यण निमणे ते तुम्हनें । काजें नीप
लरूप तपस्वी । १० । अमे आपीइ नहीं परनें पोतानें अर्थि । तुं इस एक
वइ

णजीविणुत्ति सेसावसेसं लहउ तवस्सी १० उवरखडं भोयणमाहणाणं अत्तट्ठियं

पक्वान्न ब्राह्मणने दीजीइ बीजाने नदी अमे एहवो आदिन रूपम देसुं आपस्यं नदी उभ्यने ते माटे यक्षा भि
नदी एहवो पक्षपक्ष जिसं मुख पाणी ईसवाणी प्रमुख स्यइं इहां रह्यो छे जाहि देखिस्तु ११ छितहरि

॥उवक्खड सिद्धमिहेगपक्खं । न उ वयं एरिसमन्नपाणं दाहामु तुज्झं किमिहं ठिओसि ॥११॥ थलेसु बी

५४ केस्योकर्षद्वे बलतरुवीज्जूमि तिमजनीवाज्जूमिनें विषें पुणघणो उपमाइं समोनअम्हाइं नावेंकरी आ आ
कासने विषें धान बीज वावइक वरिस्यें तो घले नीपजे नदी तरिनावें पोदीयस्यो मुझने जइ तुमेनीवाज्जूमि रो
रसणी एहवी वा बाइं एहवी करसणीना समांनबो तो मुझने अंचांज्जूमिलेषवादेउ थे

याइं ववंति कासवा तहेव निन्नेसु य आससाए । एयाइ सद्धाइं दलाहि मज्झं आरा

साधे पुण्यहूप एहवलु निश्चयइं दिवें वली ब्राह्मण बोल्या जे हृमारा क्षेत्र समांन जिणि क्षेत्र पात्र इ दीधो अ
देजेठें एहवो जाणीनें तुमे मुझने पात्र अमनें जाण्या छे जोकनइ विषैजेहा न्नादिक अन्यांतरि इं भग
आपो १२ अमे आपी दृधाइं कगे समझ्ता ते हनें आ
ताइं

हए पुन्नमिणं खु खित्तं ॥१२॥ खित्ताणि अम्हं विइयाणि लोए जहिं पकिन्ना विरुहंति ५४

जे ब्राह्मण जाति ब्राह्मणनी अनइ विद्या शास्त्र ते ब्राह्मण रूपी यां क्षेत्र मनोहर क्रोधि यक्ष बोल्यो उ क्रोध
दिकनी तेणइ करी उपपेन्नाहितरुड इन्हनइ प्रीतिकारियां ब्राह्मणनइ दीधो तेम अनइ मान यज्ञ इ षिद्धी
आपीयइ इसस्युणउंघाइ १३ माया लोभ वध प्राणि

पुन्ना जे माहणा जाइविज्जोववेया ताइं तु खित्ताइं सुपेसलाइं ॥१३॥ कोहो य माणो य व

लघुतन नो कषि तेव्राह्मणजाति विद्या ईकरीहीणजा ते ब्राह्मणरू
ब्रांजेब्राह्मणने परिग्रह धन ... लिवा ब्राह्मण ... तेजेहिं पीयांक्षेत्र पाप
जावइ इत्यादिक संबंधिय उ सारहितहांन उच्छ ... सहितजाणिवा

हो य जेसिं मोसं अदत्तं च परिग्गहो य । ते माहणा जाइविज्जाविहूणा ताइं तु खित्ता

परांहसत्तान ... विषे ... अदत्त नजाणउ अनइ सणउरूप व जंतुनी परू
जाणिवा ... दादि धर्यारिवेदरा जने विषे मुनी
मरीपछउदे ... रविवस इं आ

१४
इं सुपावगाइं ॥१४॥ तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं अट्ठं न याणेह अहिज्ज वेए उच्चावया

हारादिकनेअर्थिउ म्हारीपरिइआरंभ नकरइ तेहयतीकहीयांछेत्रयात्रतेह कर्पेसलकहितांसलामनोहर जाणिवा १५ एतलाकह्यानंतरविद्यार्थीबोल्याहेसाध्व किं उअमारउपाध्यायनेअपरागोविकोबोल पा उइ

॥उत्ता॥स्रा८ इमुणिणोवयंति तांइतुविज्जाइंसुपेसलाइं १५ अज्झावयाणंपडिकूलभासी पभा

दवाआकेपइउत्तरदेवउ रामनइविरोधकारवतास्यउं रबोलइबइयासइअम्हारे अपिजइपणिएणअउत्पकुदीसइ छइतेविणस्यउसमतउपरहेउअम अनइपाणीप्रमुख परंतुनहीदीहेउकहनेदेनिर्य ग्रथनीउआसारुवैरीनदी नस्किदापित

५५ ससेकिंतुसगासेअम्हं अविएयंविणस्सउअन्नपाणं नयणंदाहामुतुमंनि

दवना दयाआ णीनइ बलतोयहरबोल्यउसमितियावतेण मुकनइरूडइसमाधिविजउय काउपणुतेणेसहितनइ गुप्तिगुप्तिनेणइकरीगुप्तिवतनइं इंद्रियपाचमेहजीताछेजणे यहवानइ जेमुकने उमेनदी दियउय १६

यंठा १६ समिईहिंमज्झंसुसमाहियस्स गुत्तीहिंगुत्तस्सजिइंदियस्स जइमेनदा

५५

षणीयदोषइरहि तआनादिकनहीं दिउ उछइआजअहोआर्योजिज्ञनउला भपुण्यनीप्राप्तिईहांकिमलहिस्यउ पात्रदानहीधउजपुण्यकइअनातें दीधइनकइ १७ हिवेउपाध्यायबोल्याकोणछइएहवा नकनेविषेबेगकस्याक्षत्रियतथाअगनि नापासेनाछेमणहारतेउवजोइयकही इंकहिजहाथणवित्रोष॥

हित्थअहेसणिज्जं किमज्जजन्नाणलहित्थलाहं १७ केइत्थखत्ताउवजोइयावा

उपाध्यायजेशास्त्रनेसणसणावेतेह विद्यार्थीइंकरीनइंसहित एसाधुनेनिश्चेदंडलाकडीइं करीफलबीलीकउवउफषइं करीहणीमारीनइं गलेफालीनेकाढेजोणजिकोई छइतेएहनेएहवोकोईबेणंश इअलंकारनेअर्थि

अज्झावयावासहखंडिएहिं एयंतुदंडेणफलेणहंता कंठंमिघित्तूणखलिज्ज

एतिवारपछेहजनीकउपाध्याय नावचनवचनप्रतिइंसांभ लीनइ नेईहेगकरीनेमारिवाध्यायातिहांजिहां मुनिछइघणाकुमारकुवानछात्र वांसप्रमुखनेदंड करीवित्रेहिज लनावांशछेत्रने १८

जोणं १८ अज्झावयाणंवयणंसुणित्ता उद्धाइयातत्थबहूकुमारा दंडेहिंवित्तेहिं

लेंबाधरप्रमुषचावे करी चेवपद हरणी यइ | मिली नें आमो हि कानि यतीनं ताडइ मारइ | १९ | राजा नमी तेयक्षवाक्यनें विषे कोशला भयो ध्यानो धणी नायक तेहनी पुत्री तेके हवी छइ | भद्रा एह वे नाम इ करीनइ

॥उत्रा०सू०॥ कसे हिं देवसमागया तं इसिं तालयंति ॥१९॥ रन्नो तहिं कोसलियस्स धूया भद्द त्ति ना

५८

निंदा योग्य अंग शरीर जेहनो मनोहर शरीर वंती छै | ते प्रति देषीनें संयत हरिकेसी बल साधु प्रति दंडादिकें हणीता प्रति देषीनइ | तेक्रोधवंत कुमारनें उपसमावि वाला देगी | २०

मेणं अणिंदियंगी। तं पासिया संजय हम्ममाणं कुद्धे कुमारे परिणिव्ववेइ ॥२०॥ दे

वतानें बलात्कारि सुं जे प्रेरयइ छै तइ | दीधी मुझनें एह जणी राजाइ एलें मुनीनइ मनतइ मन करीनें पणि नवांछी इले साधु | राजा अनें इंद्र तेहनें वंदनीक छै जेह साधु मस्तकें तेणें छ

वाभिओगेण निओइएणं। दिन्नासु रन्ना मणसा न झाया। नरिंद देविंद भिवंदिएणं। जे

जिणें हुं वमी बांधी कुधी त्वरें तेएह जे हनें हुं मेकद र्थी छे एह कदर्थवा योग्य नथी | २१ | हिवें भद्रा हरिकेसी बलना गुण वर्ण वें छइ एयति जिखें सो तेभ्या करात पनो करणार मोटो आत्मानो धणी छइ | जीत्या छै इंद्रिय जेणें जावजीव लगें करें ब्रह्मचर्यनो धरणहार छै

णा मि वंता इसिणा स एसो ॥२१॥ एसो हु सो उग्ग तवो महप्पा। जिइंदिओ संजओ बंभयारी

जो जे साधु मे मुझनें तया तिवारें निश्चय कदितां वांछी नहीं देइ जती घकी केणें देता | पिताइं पोतें आप्यो ध्यानें विषें जउ प्रसिद्ध एहवो इ राजाइ परं भ धानने देवहनं त्ते | २२ | मोटो यश छै जेहनो एहवो मुनि महाप्रभाव हिमा वंत अचिंत

जो मे तया निच्छइ दिज्जमाणिं। पिउणा सयं कोसलिएण रन्ना ॥२२॥ महाजसो एस म

शक्ति नो धणी | धर्या छै घणो दुःकर महाव्रत जेणें कायादि कनें जीपि वें करीनें तथा अति समर्थाई नो धणी छै जे साधु | एयतीनें हीलस्यो मां एय ति हीलवा योग्य नथी ते माटें कहुं हुं | तपरूप अग्नि तेजें म हिमा इं करीनें तुम्हनें बाली नें रा षदूपज मने करिस्य एह |

हाणुभागो। घोरव्वओ घोरपरक्कमो य। मा एयं हीलेह अहीलणिज्जं। मा सव्वे तेएण भे नि

नमाटक्रु एहरर्दिलो तेहनजानावब्रुनसां रुइदेवनीस्त्रीमजापद्वेनामेंतेह रुषीस्वरनोव
कडूवुं ७ नलीनें नाद्रुबमांनाषितनलोबोलाक्व यावबनेंस्नर
नसांनलीइत्यर्थ

॥उत्ता॥सू॥८॥ इहेजा।२७॥ एयाइंतीसेवयणाइंसुचा।पत्तीइंसद्दाइंसुत्तासियाइं।इसिस्सवेयावा

विइं।ऋदितनिवारि यक्षतिंडकवृक्षवोवासीतेहनेंपरिवार तेयक्षरोजामणाऋपनाधरणे अ
वानिंअर्थे घणोबें तेमाटिइंघणाकसाउपसर्गनोक नारास्त्रितिरस्कारथिकाअंतरि क
रणारऋमरप्रतिइंनिवारतोहन्ना२४ साआकाशनेविषें र
ना

५७

डियाठियाएाउरकाकुमारेविणिवारयंति।२४।तेघोरस्रवाठियअंतलिस्के।असुरा

परिणामधीअक्षरयक्षनावक्रनें तेबात्तनाविद्यार्थाछेंशरीरजे तेदेषीनेंजानामराजकुमारीएहवो
विषें तेउपसर्गकारीबात्तविद्या दनाऋधिरलोहीवमताधिका वचनबोलतीऊइं २५
र्थीनेंहणवालागा कीधाछें सुओबलीर

तहिंवक्रुणताउरयंति तेसिंजदेहेरुहिरंवमंते पासित्तुसद्दाइणमाहुसुत्तो।२५

हि

५७

उग्रपर्वतप्रसिद्धइंनखइं ऋयलोहदुअञउसेदांते जालतेजअग्निइंपगइंकरीनइं जेअसेसाधुनइंअपमा
करीउइषणउछइ करीनइंषाउछउ हणउबअपादूइकरीमारउछउ नउछउसाधुनइंअपमा
सांसणी नइअनर्थफलऊइ॥

गिरिंनहे हिंपण्ह्वाअयंदंतेहिं खायह जायतेयंपाएहिंहणह।जेभिक्खुअवमन्नह
सर्पसमानजिणिकारणिअपमान्यइमर उईरमहाव्रतधारीघोरअ जिमअग्निबलतिइंयस्कंदकूयी॥
णलहियइआकरउनपवइजेहनउमरा धिकपराक्रमजेहनउकया दीस्पकइंपतंगियाबउरिडिय
ऋषीश्वर यजीपिवासमर्थछइ॥ जीवनीसेनामोटीश्रेणियहीम

२६
२६।आसीविसोउग्गतवोमहेसी।घोरव्वउघोरपरक्कमेया।अगणिंवपस्कंदपयंगसे
एउसेवुणजेसाधुनइंलोजनइं मस्तकइकरीवणामकरानइएयं मिलीनइआव्याधिकासर्वजनम
कालिमारउबअरिसोवरनइंदी एहसाधुनेंसरणरूपकरीपिडीव उस्पन्नाव्योमारातेणसहिततउमू
२६ जइएतलानउमार्यछइ जउ
२७

णा।जेभिक्खुयंसत्तकालेवहेह।२७।सीसेणएअंसरणंउवेहा।समागयासव्वजणेणउन्मे

जउडडहदवांबउबोजीविवउंअनइधइ माद्दिकवाबउतउ

एयतीकायइजीवनीरक्षानकइजेहस लीलाकसमसएयतीकायउकूंवउवो लइभुणाएहवउबइ

नीचानमांडयाबइशख्विंमानां थंसांसलांउसमूंगमस्तकमेद कमारनाएहवांघकां

२८

।उड्डइवहजीवियंवाधणंवालोगपिमोक्कविउदहिंज्जा।२८ अवहेभियपिठस्स

विसरणांबइंपिऊलाघयाबइबादहाथकेहवा विरलीथयीबइआंषिजेहनीनषमु ढंवांहवांबइमुषजे बइंकर्मकरीवइअगनिने विषइंधणादिकनउ हराथकारुधिरलोहीवमतानाथता हनांबाहिरनीका थानिवोतेहकर्मनीवेषांइरहितबइं बइंग लीबइजीलअनेंअ

उत्तमंगे।पसारिआबाऊअकम्माविठे निसेरियछेस्हिंस्वमंते ज्झहंमुदेनिगायडी

षिजेहक मरनी तेहनइंप्रासियादेषीनइमात्र वेषारहितकाष्ठसरीषादेषी नइं मनजेहनउंठामिनथीरहउंएन्तावुताचिंता वंतवेषवादएमूजेहकूमरसाजा किमकू स्पइअथएतलांनवरब्राह्मणसोमदेवतेविं ताकरउहवउ तेकृषीश्वरन इंप्रसन्नकरा नउहेसंतोषकू

२९

दनिते २९ निणासियापंनयकठ्ठरए विमणोविसन्नोअहमाहणोसो ईसिंपसा

हीलाअपमाननउहेइवउंवुलीनिं हानेहनादोषनुंकथाडिवउंतेखम अहलगवउंअपरपूरणीतलां ॥ ३०

बाजकइअसनेमूर्षनलांवेतनाराह नहिअहितनाअजाणअवेताए जेहेह लणाकी छीउसा

एईससारियाउ, हीलंवनिंदंवपमादसंते।३० बालेहिंमूढेहिंअयाणएहिं।जंहा

रीतसर्वखमउउस्नेहेलगव सजेहलणीएहबाजकअमेजा णताबइ

अनइंमायनिर्मलचित्तनांधणीऋषी परेनहीकोनिश्चयइमुनीश्वरकोप श्वरकुवइंउद्यमहानुभावबउं महितहउइ

३१

लियाससस्वमादसंते।महप्पसायाइसिणोहवंति।नहुमुणीकोवपराहवंति।३१

एतलेंजेयहवगलाहअनिवारइमुनिबोल्या नर्वइंअतीतकालनइहिवसंवर्त्तमानका लइकअथवाअनागतनविष्यतकालनइ विषइ॥

मननउथहषअसंतोषनथीमेमाह रइकोइपाकाइविणहवीऊत्रिणि कालसंबंधियउ

जेहकारणघकीयहयतरकू कहितांनिश्चइसंघातहवेया वचलकितानकरहबइ॥

पुविंचइण्हिंचअणागयंचमणप्पदोसोनमेअछिकोइ।जरकाऊवेयावडियंक

५८

तेह कारणथी विकी कुनिश्चय यइ एसर्वज्ञ मारनिं हंतहण्या मास्या अत्यन्त देषीना ते णइ ३२

ते यतीना गुणनां आकर्ष्यां ऊपाध्याया दिक हवे अर्थराग द्वेषनाफल अथवा कादिये शास्त्र सिद्ध ३२ तेना अर्थ धर्म इम आचार अथवा दया विषय तिथ मनो ते दतहन्न भाजाणता तुमे धर्मनइ

मकरोका पत्रिलि कारणिइ

रंति ॥ तम्हा कुराए निइयाकुमारा ॥३२॥ अवहेधम्मव वियाणमाणा तुमेन विकुप्प

न्ति समस्त जीवनी रक्षापणे महाबुद्धिवे जेहनी

एह कारणथी कुमारा पगनो शरण पाम्यो

आ व्यावकां सर्वकुटंब परिवार सहित अम्हे सर्व ३३

अचीइ हजी छे तेतुमने अशेम नाग

हरूईपन्ना ॥ तुसं उपाए सरणं उवेमो समागया सव्वजणेण अम्हे ॥३३॥ अवेमु ते

मोटा मापना धणी

नहीं तादर्संकाई पिगनी रज पणि अमे अम्हनीकडु मेह्स्नीक बो

भोजन करो इहां थालेइ विस्तरीने शालिनो कूर भात

घणाप्रकार नां मा जणां दही दूध प्रमुख तेणे करी सहित ३४

महाभागा नते व किं विण अच्चि मो तुंना दिसालिमं कूर णणा व जण संजुय ३ध इ

५८

आनह रहै अमारे पोताने घणो अन्न पाना आदि दे इनइ सर्व बइ

ते भोजन करो अम्हारा अनुग्रह ना मने अर्थिइ

एहवो तेणे कहिं इयती ते त्याएम करस्ये यइ इम मानपाणी आदिय पदार्थ शुद्ध जाणीने मासक्षमण

मंवमे अत्थिय पभूयमन्नं तंतुं वसूं अम्ह अणुग्गहट्ठा ॥ बाढं ति पडिच्छइ भत्तपाणं मा

ना पारणाने विषे महामोटो आ त्माछे जेहनो ३५

तिणिइ यतीअन्नपाणी लीधइ विके तेयज्ञवाडाने विषे कागध पाणीना वृष्टि फूलनी वृष्टि

देवताई कीधी प्रधान तिहां वस्त्र कहाये द्रम्मनी धारा ऊ लिवृ टा वरिसी

मस्सउपारणए महप्पा ॥३५॥ तहियं गंधोदय पुप्फवासं दिव्वा तहिं वसुहारा य वुट्ठा ।

पणि नथी दीसतो ब्राह्मणादिक जाति जन्मने थोके विशेषमहिमा ६

जे चंडालनो बेटो हरिकेसी बल एहवइ मा अंतरे एहवो देव राइ पण इम लोदीधां एहवी घो षणा कीधी ३६

ते ब्राह्मण एहवा व्यावकां कहि तां हवा प्रसह रवलु निश्चइ दीसे वें तपको भनो विशेष महिमा

पहियाउ दुंदुही उ सुरेहिं ॥ आगासे अहो दाणं च घुट्ठं ॥३६॥ सक्खं खु दीसइ तवो विसे

६०

पणिनथादीसतोब्राह्मणादिकजाति जेह्मणीवंनाननोवेटोहरिकेसी जेह्नीआप्रसदेपानीकु
जन्मनो घोनइ विशेषमहिमाकोइ बलएहवेनामेसाकयतीनइदे छिदेवतासहाज्यकरेछइ
बो तेकरहइछइ मोटीसंपदानोधणीमोटीऋ

सो नदीसईजाइविसेसकोटी।सोवागपुत्तहरिएससाऊ जस्सेरिसाइड्डिमहाणुभा

दुभागमाहि यतीब्राह्मणप्रतिकहेछेकांइतुमने सोधिसुद्धपणोतेवाह्यसुद्धिपरंज जेहमांहि
माछे ३७ सुकनथीअसेब्राह्मणोअग्निनोआ तरंगसुद्धपणानोकारणनथीइम तेलोछेवा
रंभकरतां यज्ञकरतां पाणीइकरीने जाणो हिरलावि

गा ३७। किं माहणा जोइसमारभंता।उदएणसोहिंबहिया विमग्गह।जंमग्गहाबा

सोधिनिर्मलताजेयज्ञ नथीतेदीठोकुसलपुरुषेऊत्तर उत्रफानबलीत्वंयज्ञमो घांणोवीरणइ
स्नानकाबेनिरमलहो तबनाजाणकहइछे ३८ णजातिकाष्टपीजाफानावैश्वानरएहवो
छइ ने

हिरियं विसोहिं नतंसुदिट्ठंकुसलावयंति ३८। कुसंचजूवंतणकट्ठमग्गिंसायंच

६०

सायसंध्याकालितेलीपायंप्र दिकस्पर्शादिकनूतहकानी तुच्छोवलीदिवसंपुरुषछिनेउद आदि मुनि
जातिइउदकपाणीफरस्पाको जातिनेहनेविणासमाअण मतिसारंभछकीजनविकाकरेछो तेवि
गलादिककरता प्राणबेंदिया क्विारता तेप्रतुतकर्म ३९ मइट

पायंउदयफुसंता।पाणाइभूयाइविहेडयंता।भुज्जोविमंदापकरेहपावं।३९। कहंच

नाहवा किमवर्तीइंयजनेंअर्थे पापरूपीयाकर्मरोहवेगलाकरी अरकोदिकद्रअसह्ननेंअरोसंयतपा
प्रवर्तीयेछे अमेयज्ञकरीइछे इ जेणे तेणेंउपाइकरीने पछकीवेगलाथयइंतेतथास्तरइय
तोकिम जितछे

रेभिक्खुवयंजयामो।पावाइकम्माइपणुल्लयामो।अक्खाहिणेसंजयजक्खपूइया।

तुम्हेजयज्ञबीजोदेषाडो किमरूडुंइयज मुनि कहइछइ पृथिवीआदिदे पूजवाजोगोपारकोअद
तबनांजाणकहेछइ ४० इछयजीवनोकायनोआरंभ नतेइहवो चपदहरणाइ
अणकरतो छकोजीव अणमेवता मृकतायका
जीव

कहंसुजिट्ठं कुसलावयंति ४०। छज्जीवकाए असमारभंता। मोसं अदत्तंचअसेवमा

परि। ग्रहतउपगरणनी मुर्छा स्त्री जातिमां
न आसक्तिमां न माया परनी वंचना तिमा
लोभ क्रोध एहनइ न करता

एपांच्या जाणी पच्चक्खाण परिज्ञाइं करी
परिहरीनइ चरइ यतनाइ विचरइ दंतापणि दा
म्या छइ इंद्रियपंच जेणइ ४१

दांत्या छइ सर्व पाप आ
चरणना हारबारणा थकी
जीवनो न हणिवो आ

णा परिग्गहं इत्थिमाणमायं। एयं परिण्णाय चरंति दंता ४१ सुसंवुडा पंचहिं संव

रिहइं नेपां
चमहाव्रतरू
पपांच संवर
तेणे करी

इहलोकविषइ असंयमजी
वितव्य अणइच्छतो अणवांछ
तो छइ थको

परीसह उपसर्ग सहिवा भणी छांडी काया
जेणे निर्मल छइ तन ते निस्पृहपणे अणक
रिवइं जीणें नानी देह जेणे एहवो थ
का

कर्मरूप वइरीनो मोटो
जय छइ जिहां यज्ञ नी तेहइ
दो यज्ञ यजइ श्रेष्ठ ब्रह्मलो
माहे तुम्हे पुण्य एहवो ज
यज्ञ यजतहा महणा

रेहिं इह जीवियं अणवकंखमाणा। वोसट्ठकाया सुइचत्तदेहा महाजयं जयइ जन्न

तांहिं वसइ ब्राह्मण तेने यज्ञवाना उपगरण
ए ते विधिपूर्वक कोणना हेरे अगनि त
४२ घा जिहां अगनि थापीइं तेना हेरे अगनि
सुधानकं कोण कहइं

कोणना हेरे स्रुवा कडछी इं वाहुली जे
णीइं घृतादिक अगनिमांहि होमिइ
ते घा कोणना हेरे करीषा गोमणाना जे
ह एहवे जेणे करी अग्नि सिलगावीइं

रवी जेह उमुषनो
तुम्हारे इंधण ते के
हा जेणे अगनि दी
पावीयइं तां ते सा

सिट्ठं ४२ के ते जोई के व ते जोइठाणे। का ते सुया किं व ते कारिसंगं एहा य ते कय

शांतिकोणक हो
अहो यति जेणइ
पडवड तइं

तां हेरे कोण संबंधी होमविधइ करीने होम
छे अगनिप्रतिइं तृपती करइं छे ४३

हिवे मुनि कहइ छे तप ए बाहिर अभ्यंतर तेह अगनि जा
णवो कर्मरूप इंधणवालवइ ते तेणो जीव अगनि
नो थानक तपरूप अगनिना थानिक जाणी

यरा संति भिक्खू। कयरेण होमेण हुणासि जोइं ४३ तवो जोई जीवो जोइठाणं। जो

मन वचन काया रूपे त्रिवरी त्रिविधइं
तेथा रहता तेने करी तपरूप अगनि दी
पावीइं ते सरीर छे कारिसंग अंगारा
ते णें करी तपरूप अगनि दीपे ते माटे

कर्म ते इंधण जे हणी अगनि करी
कर्म ते बापडा इं सर्वजीवनी रक्षा कर
वी तेहय तनया गजे तेह संपिणवांति जाण
वी उपद्रवने निवारे छइ करनार

एहवो होमइं कारी ते मिथ्यात आ
ठ कटिथइं तप रूप अगनि तेहे
थकी करसंबंध हस्त स्तुति पणे सहि
वा रीत्र करीने होम वि प्रह रहमुआ

गा सुया सरीरं कारिसंगं। कम्म एहा संजमजोगसंती। होमं हुणामि इसिणं पसत्थं

सुनिइ ते विकृतनी जे अभ्यंतरशुद्धि स्नाननो स्वरूप पूछे छे
कोणनी हेरे स्नान करिवा नाइ द्रहकुण ताहरे पुण्य छे
कल्या पाप उपसमावे तेहवा निर्तीर्थ अछवा हेरे संति छे
४४ समास मकड ताहरे तेनीर्थ कोण

किहां ने विषे नाही पवि
त्र थया थको वा अथवा क
र्म रूप णी रजनउ रिद्रा
इछइं

कर्हइसमना थई नइ अ
सनइ आड्हो संयत पाप
थी निवर्त्या तरइं ईजिव

४४ के ते हरए के य ते संतितित्थे। कहंसि ण्हाओ व रयं जहासि। आइक्ख णे संजय

६२

तुनीश्वर वाबोइछेजालिवा नादरासमा मुनिकहेछे हिंसारहितधर्मतेएद्रजा मिथ्यात्वादि
पद्मोअमृ ४५ लवोधर्मकर्मभलनेनपखावेएहवोब्रह्म केरुकलउ
चर्यतेशांतिधर्मजालिवो तेकहेवो महीजावली

डरकपूईया।इन्नामिनाउसवउसगासे।४४।धम्मेहरएबंभेसंतितित्थे।अणाविले

निर्मलवेश्यातेजपद्मक जेस्नेजस्नेविषेनासीकतोपहवोजाव रागादिनापरहि अतिशयस्फबांहु एसुद्दि
किलादिकतेछेसदानि कर्मरहिततेविमल विशुद्धकलंकादि तजतिशीतलभूत तजु कर्मद्रूपदो . इक
मल केरहितछे त पने ४५ सोक

अत्तपसन्नलेसे।जहिंसिणाउविमलोविसुद्धो।सुसीयभूउपजहामिदोसं।४६।एयं

नेरनलीपरिल ऊपरलतयनाजाणती सर्वस्नानमांहेमोटो प्रशस्तयो जेस्नानतेविषे रूपपातिवा
नोकरणहर धकरादिकतेलोदावो स्नानएहजालिवो ग्यवेजेथ नालापकाति विकीविशुद्ध
एहवोन्नाउ महृष्यो तीर्थंकरेते तेहस्नानऋषीश्वर मनिहवि मलकर्मरूपिणी कालंकरादि
धर्मतचेवे . नेंकसोछे. वे तछे

सिणाणंकुसलेहिंदिट्ठं।महासिणाणंइसिणंपसत्थं।जहिंसिणायाविमलावि

६२

तेमातरऋषीश्व तेमोटरूपीउत्तमस्थानकपाम्यासंयमनो हरिकेशीबलनाअध्ययनको हर्विलेअध्ययने
रछे आराधकपणोएहवोकह्योस्वधर्मास्वामि अर्थकसो लेशमात्रथीजाल १२ तपनेविषेयत्नक
जेहूमतेकहेछे ४७ वो रवोह... प
ोनकलजहूनि

।विस्कहा।महारिसीउत्तमगाणपत्तेत्तिबेमि।४७।हरिसिकाअज्झयणं१२।जा

जातवंडाजनीबेणीइपरा कासिकरतुंहतउववक्व हस्तिणाउरना ब्रह्मराजानीपटरा ब्रह्मदत्त उपना याणापरिन्द्रे ते
ताम्यउपाछिलासवनइ त्रिपणजंहतउजाएहवउ मंउरनगरेन णीचुलणीएहवइ एहवहना ऊजन्म नियाणोमहापाप
त्रिपइं नियाणंकहउउतुररणी इविषइ।। नामंतहनइविषइ मइ काम्पउ नोहेतुकर्मचित्रक
सणी भतिनेंउदाहरि

इपराजिउखलु।कासिनियाणउहत्थिणपुरंमि।चुलणीएबंभदत्तो।उववन्नोपउ

ननिजीगुल्म कंपिल्लपुरनगरनेविषे चित्रनामापाछिलासवनउसंभूतिनउसाईत आहिनाकुल चित्राजउ णिदेयाणिवा तर
नामाविमान इसंभूतिपाछिलावनउ नजीकउपनउपुरिमतालनगरनइविषइंसं नइविषइक टाबडीया नुचित्रसंभूतिनो
छीचवीनइं नामतेत्रउवकवर्तिविम भूतइक्षुणसेणमोहिंनियाणुकीधंजालीसे ,जकहवउ त्रादिकइं अध्ययनकहेछे
१ इत्तनामइ वगत्राणीभाररत्राहारपडरकीनेंनियाणुंकी उइं।। करीवीसाणी
धं

मगुम्माउ।१ कंपिल्लेसंभूउ चित्तोपुणजाउपुरिमतालंमि।सिट्ठिकुलंमिविसा

माटइक्कुड्वविरसाधनइंयासिधर्म बुह्मदत्तनीजिहांउत्पात्त आसोदासामृगा ।मल्याबहुपा।हंसा।सव
सांभलीनइंदीक्षालीधीवइराग़इंक एहवाकांपिल्यनामान दसा।मातंगोत्र नइनामइंविचत्रनइ
रीनइंसमागजकह गरनइविषइ मरोयथा॥ संभूति

६२

२

ले धम्मं सोऊण पव्वइओ ।१। कंपिल्लंमि य नयरे समागया दो वि चित्तसंभूया सु

सुखदुखवापारूपोकर्मनो
फलनउविपाककहीइसो तेहचित्रनउजीवअनइब्रह्मदत्तए चक्रवर्त्तिमोटीऋधिनउधणी बुह्मदत्तए
गविचेउतेहकहइंबइ कएकनइंमाहोमाहि हवेंनामइं

३

हदुक्खफलविवागं कहेंति ते इक्कमिक्कस्स ।२। चक्कवट्टी महिड्ढीओ बंभदत्तो

महामाटायशा पाबिलास बहुमानइमननं एहवउंआगलिकही हुंतांआपणबेहुजणांसाईभाजणां
कीर्त्तिनउइध बनासाई इंरागधेणइआ स्यइतेववेनबोल्नउ ॥
णीतेह उतिं हरि उक्कउ

४

महायसो भायरं बहुमाणेणं इमं वयणमब्बवी ।३। आसिमो भायरा दो

६२

केहवाअन्योन्यनेवशिवर्त्तता अन्योन्यंनअनुरागी अन्योन्यनेंहितनावांछणहा मामिलास
उमसावउतिइंध एकेकनोरागधरता रुअन्योन्यतणोउत्अविचनाध वकदेवेव
रता णी ५ हंदाशादशा

वि अन्नमन्नवसाणुगा । अन्नमन्नमणूरत्ता । अन्नमन्नहिएसिणो ।४। दासा दस

र्णदेशा मृगकहीइंहरिणहवाका हंसहवामतंगगानामानदी सोवागबांडालहवाकासीना
नइंविषे लिंजरनामानगपर्वतनइ नातीरउपकंठनइविषे मादेशानेविषेथया
हुआ विषइ ६

ण्णे आसी । मिया कालिंजरे नगे । हंसा मयंगतीराए सोवागा कासिभूमिए ।५।

पूर्वेदेवतासौधर्मदेव हवाआपणमहाऋद्धिवंतपरं आसत्यऋद्धिवंतानीआय अन्योन्यनइं
लोकनेविषेथया किलविषीदेवताहुया णीछठीजातिअम्हनइ परस्परंजाविणा
७ कहिताविया

देवा य देवलोगम्मि । आसी अम्हे महिड्ढिया । इमा णो छट्ठिया जाई । अन्नमन्नेण

उत्तरा० सू० ट०

६४

गविरह सहित ७ | हिवे चित्रमुनि कहे छे हे संभूत्र आगलि भवि तें पार्थिव ते नियाणुं पनीयाणानां कीधां उपरां | तुम्हे राजा हे संभूत्र चित्रो छेदी तया मन मांहि चिंतव्या नई करी कीधां | ते कर्मनां फलनें उदयें थकें अफल कीधां कर्म नियाग करी

ज्या

जाविणा ७ कम्मानियाणपगडा तुमेराय विचिंतिया तेसिंफलविवागेणं

वियोग पाम्या ते अम्हे भिंन भिंन थया तेउ पुण अम्हे नीया एकं कीधा ८ | बरुब्रह्मदत्त कहे छे भाव तं अनई चित्र एह वी ऊहित क्रिया | एहवां अम्ह कर्म मई पूर्वि लीलां सवन इं विषे की धा | ते कर्म आज वर्तमान कालिं अतिशय भु र्जं लोगवुं छउं

विप्पउगमुवागया ८ सच्चसोयप्पगडा कम्मामएपुराकडा तेअज्जपरिभु

सर्वे उत्तम कर्म चित्र पणिं इं सेतें वश्यम कर्म तया नि म्हे लोग वें अपि उन थी लोग वन संधाती हरा कर्म नां फल ऊसी ९ | चित्र कहे छे तप संयम अफल कीधां थकां नि फल नथी | सर्व फल होत पसंयम सफल सहित छे मनुष्य दिक ने | जे हकारण थी कीधां ते शुभ अशुभ कर्म अव श्य कारतें अवश्य वेदवां नागोगव्या विना मोक्ष न कोइ थी न थी ते कर्म कीधां

जामो किंनुचित्तेवासेतहा ९ सव्वंसुचिन्नंसफलंनराणं कडाणकम्माण

६४

थकां अवश्य फल दीयइं ७ | द्रव्य अथवा पार्थिवाय गणस्कंध अर्थ गादिक इं डियपांचनाकाम ते लोक री नई | ते केहवां छइं मत्र कहु नते लोकरी ७ | आत्मा माहरं | पुण्यरूपी इं फलें करीनइं उपेतम हित छइं | जिमतउं जा णइ छइ १०

ण मोक्खअत्थि अत्थेहिकामेहिय उत्तमेहिं आयाममंपुण्णफलोववेए १० जाणाहि

हे संभूत्र त्यइं पूर्वि नव | महा अनुभाग महिमा वंत छइ तथा | महा ऋद्धि लक्ष्मी वंत छइ | पुण्य नें फलें करी नइं सहित छइ | चित्र नें पुण्य तें जाणि ऋद्धि वंत महिमा वंत पुण्य सहित माटुं छुं तिम जे हे राय | धन वंत छइ तेह

संभूइपमहाणुभागं महिड्ढियंपुण्णफलोववेयं चित्तंपिजाणाहि तहेवरायं इ

ऋद्धि सवनाम चित्र नइं मुझ नें पुण घणी ऋद्धि जांणि ११ | मोटो जे हनो परिमाण नथा मई द्रव्य पर्याय सम हित एहवा अर्थ तेह प ते हमई | वचनें तो अपरू पें तथा गाथा अनु रूप सूत्र नां बू | एहवी गाथा सूत्रनी श्रेणि आरिसंतादिक थी सांभली विवरइ | कहनु स्मना इंद

ड्ढीजुईतस्सवियप्पभूया ११ महत्थरूवावयणप्पभूया गाहाणुगीयानरसं

६५

मांहिं वगा । जे गाथा मांसलीनइंसिक्खमा कशीलनेआरिव गुणज्ञानते णेसहितनइ । इहजिनप्रवचननेविषयनवंतपईनेंतेगाथानेंगुणमांसलीणि तिंअमणमाकहउएतावतामाधइसिद्धांतसणीइंइमजाणि एइछेनगाडुःखकमाटेलीधीदिक्षाछइ १२

धम्मज्झे झं निरकुणो सीलगुणोववेओ । इहज्झायंति समणो मिज्झाउ ॥१२॥ अब्भो

ब्रह्मदत्तकहिंकरसाधनेंनि मत्रइछे।अह्मोउदयमधइरुक उधइमहूयनेथिवालेइमइजा णिवउ । अति राय स्माक हा । उधांत आवाम बाहाशमा इगइ । बीजायाहिरमणी कछइ । तथाघरएहदेखिउवुक्छिवना मधनइयमसुवर्णादिकेंकरी मनोहरएतावतापांचअ वासजिहांवकचिनिइंकरवे

दएमज्जकक्केयवंते । पवेस्या आवसहा यरम्मा । इमं गिहं चित्तधणप्पभूयं

प्रतिपालपंचालदेशनागुणसप्रजाद्ध कितसहितएतावतापंचालदेशमांहि जेसारवस्तुतेइहांयणिजासेवइ १३ । उरबद्दनाटकेकरीगास्त्रोकरा तगानिइकरीनथामादलवुमुख वाजिंतेणेंकरीनइं । स्त्रीनाहृदमाहिपरि

पसाहि पंचालगुणोववेयं ॥१३॥ नट्टेहिं गीएहिं य वाइएहिं । नारीजणाइं परि

६५

नइविपेद्धकर्वत्रिसमांनकुछिनित्यकोरसुवर्णादिकनोदातारनिरंतरअनेकप्रासादादिकसोगवनो महाकाशीपोतादिकअनेककछिवंतअनेकस्त्रीनेंपरिवस्त्रोनाटककरावतोसोगीकुद ॥ १० नथीबीजीनोअर्थ

वांरंपरि वारीनउद्ध नउ । सोगव नउं । सोगपांवइइ यमंवधी । आशत्य कांदेषीज ना । अहो सिक्ख साछ । एकलातमुखनेनवैछकुनिंमेषवज्ञा दीक्षातेदुःखकपरीमहादिकदुःखना कारणथी १४ । बित्रमुनि कहेछेनह मूढचक्रवर्ति

वारियंतो । भुंजाहि भोगाइं इमाइं भिक्खू । मम रोयई पव्वज्जा हु दुक्खं ॥१४॥ तं पुव्व

इहवत्सवनेंस्नेहकरी कीधोछेअनुरागजेणे ६ । नरनायकहमदत्तप्रतिइंशाद्धादिय इंद्रियनाकामसोगनेंविषेगृद्धछइ । यतीधर्मनइविषेआश्रयऊनेहम्द दत्तनेहितवांछतोआबाधादिकेक रीनइ । चित्त गोत्री व मुनि

नेहेण कयाणुरागं । नराहिवं कामगुणेसु गिद्धं । धम्मस्सिओ तस्स हियाणुपेही । चि

हवइंआगलिकहीसंतेहवोव चनबोलतोहवउ १५ । सर्वविलापमरावोनईकस्त्री जातितथाबालकनाराडइवो सरिखोगीतगानजाणिवो ॥ । नाटिकअंगनोनचाविवो वेजानोपालटिवोसघलुंतम यणनोपरिविटवनाजाणवी । सर्वआ भरणभु कदादिक तथापाणा

त्तो इमं वयणमुदाहरित्था ॥१५॥ सव्वं विलवियं गीयं । सव्वं नट्टं विडंबियं । सव्वे आ

दिसारसरी सर्वकामशब्दादिकतेम बालअविवेकीनाचित्तनेविषमाता वचीतदुःखनुमुख
याजातिवा गादिकनीपरिदुःखनादा नादेणहारदेदुःखकमामावणहार॥ मेलामेवीताशब्द
यकछइ १६ दिककामभोगने

६८ नरगणलारा सव्वेकामादुहावहा १६ बालाभिरामेसुदुहावहेसुनतंसुहंकामगु

विषेअ इंद्रियपनाकामभोगथीअलगा जेसुखछेभिक्षुसाधुनइशीलगुणा
हेराय थयाछइतपरूपधनछेजे वारअनइसलागुणतेहनेविषेरागा अहोच
हनइ वेतइ १७ क्रवर्त्ति

णेसुरायं विरत्तकामाणतवोधणाणं जंभिक्खुणंसीलगुणेरयाणं ॥१७॥ नरिंद

नृजा अधमनिकृष्टम सोवागचंडालनीजातितेहआय जेहवातिनेविषेआपणबेहुं वाम्या
ति मनुष्यमा णाबेहुंजणनेंगयाभवदुःखेआय सर्वजनलोकनेद्वेषअप्रीति रह्या
दि णेथमीछइ नांकेरणहवा चांडा

जाईअहमानराणंसोवागजाईदुहओगयाणंजहिंवयंसव्वजणस्सवेसाव ६८

लना घरनेविषइ तेचांडालनीजातिनेविषेसमस्त वस्यारह्याआपणबेहुंचंडाल
जातिथकीनिघरणपिहजाति नाघरनेविषइ
१८ तेहनइविषइ

सीयसोवागनिवेसणेसु ॥१८॥ तीसेयजाईइउपावियाएवुच्छामुसोवागनिवे

समस्तलोकनेंदुगंछनीयनिंदानी इहजन्मनेविषेवलीसलाअनुष्ठानकर्यादिक जेकर्मजानिव
करवी तेसर्वआपणेपाविलासवतीउदयआव्याजाण। लाए्रखलीजापू
वीयमादनकरिव १९

सणेसु ॥ सव्वस्सलोगस्सदुगंछणिज्जा ॥ इहंतुकम्माइंपुरेकडाइं ॥१९॥

जतोसंभूतिपूर्वेजेतोतेहवेहिवनात्राका महाऋद्धिवंतचक्रवर्त्तिसंबंधिनीतेवंतपु इमधर्मनाफल
लनेविषेअहोरायमहाभाग्यमहिमावंतर्थया न्यफलसहितएतलेइमकह्योजेपूर्वें जाणीभोगनीनेतो
डालीहवणांचक्रवर्त्तिछइ गपइंद्रियमा

सोदाणिसिंरायमहाणुभागोमहिड्ढिओपुन्नफलोववेओ ॥ चइत्तुभोगा

इच्छाकामभोगअ आदानचारित्रधर्मनो कारणजाणी अथवा एहवाचीतवी एसंसारनें विषइ गुणकी ध
सास्वता असार॥ अतिशयरूपनी कलि दीक्षा ग्रहण करइ दोषरूप जेतेहक हे मुनिरा
२० जा अशालि मनुष्य भोआउ

६७ इअसासयाइं। आणो याणदेउं अभिनिरकमाहि॥२०॥ इह जीविए राय असा

शुअरहो राजा अत्यंत पणोंकरीनें पुण्य अणकरतो थ तेजीव सोक करे पछितापश्चरे आ कर्मनइ विषि
असास्वतु कोअणसमाचरतो थको उंमुख वमरणने मुहडे पुहुतइ थिको धर्म अकरीनें
इतेहनइवि परलोकिन
४६ नरकादिकं

सयंमि। धणियं तु पुन्नाइं अकुव्वमाणो। से सोयई मच्चुमुहोवणीए धम्मं अका

असातावेदनीयपामी जिमइह लोकनें विषेसी हतथा वाघ एमरणनर मनुष्यनें लेई तेहन
पछे सोचाकरे हीडइ कमइ मृगहरिणनइ ग्रहीनइ लेईनइ जाइ मरणकालने विषेअ रनइंम
धर्मनथी निश्चइ करीनइ गनीए
२१

ऊणपरंमि लोए॥२१॥ जहेह सीहो व मियं गहाय। मच्चू नरं नेइ हु अंतकाले। नत ६७

रिइ तेहना माता पिता ताइ बुण मरणनइ अवसरि तेहनो आऊषानो अंसविभा एअसरणभावना कहइ दुष
गनाधरणहार समर्थ थाइ नथी इइ बइ नहीं तिहनउं दुःख
मरणथकी कोई राषन सकइ २२ मनवचनकायानउं विहव

स्स माया व पिया व भाया। कालंमि तम्मंसहरा भवंति॥२२॥ न तस्स दुक्खं विभयंति

इस्वजन मित्रनावर्गस बेटानही नहीपोतानो एसवेजणनइ अनुसरइ दुःखकी तेकर्मना करणहा
दिका॥ मूकतहवानही बेटीनही साईविहचइ ओआपणा कर्मनइ भोगवइ एणे रनइ जक
तथा

नाय उ न मित्तवग्गो न सुया न बंधवा। एगो सयं पच्चणुहोइ दुक्खं। कत्तारमेवं अ

छिजाइ पापकर्म छिवइ एकवेलानाकहे बेत्य क्षेत्रक धवल सुवर्ण शालि चवेरा सुपोतानांक
जीनें द्विपद लायी हिकवउः पद रसणा हरा॥ दिक प्रमुष धान्यदीक
दासी प्रमुष॥ सम॥ धादिक इत्यादि
२३

णुजाइ कम्मं॥२३॥ चिच्चा दुपयं च चउप्पयं च। खित्तं गिहं धणधन्नं च सव्वं। सकम्मबी

हतेंइ एकलो अवसप अनेरइ सुभ अशुभ सुंदर ते उत्कृष्टा ते कदाइक शरीर एकलउ जीवरहि विहमांहि गत थाइ
रवसि थकउ जाइ दिकइ अथवा पाडूनरकादिक ने तबऊ पणा थकी तुच्छ असार शरीरक बाली नइ पावगेण
विषइ कहीइ पावकू शरीर विनाश पणा थकी स कल्ही तो अगनि इं

२४ तनु

६८ इवि सो पयाइ परं भवं सुंदर पावगं वा ॥२४॥ तं एक्कगं तुच्छ सरीरगं से चिइगयं दहिय पा

दातार धनादिक ने उदरपोषण हार एहवा अनेरा लेइ मइ इम रण वली क
करीनइ स्त्री न थाउ पोत्र पति अनइ अनेरा अति इं अनुसंक्रमइ जाइ एतावता कोइ ए मइ जीवि तन अवइ मिरत
तिसुजन वर्गनइ कहिन लोक कनइ रयणीय करी अनेरा
कहइ उवर्तइ

वगेणं । भज्जा य पुत्ता वि य णायउ य । दारायारमन्नं अणुसंकमंति ॥२५॥ उवणिज्ज

रमरण करी प्रमाद रहित तेजीवित आउखु वर्ण शरीरनउं सुंदरय एह कारण थकी ते पंचाल देशना राय धणी
कइ जीवि प्राणी णउ हरावस्था हरइ मनुष्य नउं अहो तेरा मा हरउं वचन सांभलउं
जरा

इ जीवियमप्पमायं । वन्नं जरा हरइ नरस्स रायं । पंचालराया वियणं सुणेहि । मा ६८

तउं मकरेसि कर्म पाटूयां वार लय महा हिव राजा कहइ हउं पि जिम एह जग जसु फन इसउ कहउ वडन
लेय मोटा मा सम हा इरा नरू गादिक लिनि अहइ करी जाणउं गत्रमांहि हिउ वचन उपदेश ए जे तउं सोका
र्म साधु ॥ इनथी ... तत्र भोग पणि

२६

कासि कम्माइं महालयाइं ॥२६॥ अहं पि जाणामि जहेह साहू जं मे तुमं साहसि वक्क

कहिसु भोग शब्दादिक आसक्त संगना जे भोग दुःख दुःख पजीस कोम अहा शृहा बर्तसा हवि णउ उरना
करउ करण हार अति इं बंधन उपजावेए कर्म सरीषा नारी कर्म ना धणी जीवां तण॥ मा नगरने विष
हवाबइ

मेयं । भोगा इमे संगकरा हवंति । जे दुज्जया अज्जो अम्हारिसेहिं ॥२७॥ हत्थिणपुरं

इंचित्र साधु देषीनइ सनत्कुमार नामराजा आप रूपने काम रस गंधफर नियाणुं नवां तरने विषे भोगनी
ए पूर्व भवनो अति मोटी संपदानो धणी देषी सनेभोग वहने विषे गृह्य थको वांछा जे दृष्टी पादउ बंध पदनो
नाम नइ इम अमुननु फउ कीधउ आरू

मि चित्ता । दट्ठूण नरवइं महिड्ढियं । कामभोगेसु गिद्धेणं नियाणमसुहं कडं ॥२८॥

तिणिपिघाण अणिवर्त्याघकोनेतिणि नदूनउंणहवउंजेमइंआग जाणतउथक उपुलजहतंस्फ कामभो।
घकीमुक्यनेरा अवसरिकउहंमुकनेवा लिकदीम्पइतेहवउंफ तधर्मीक्किश्रीवीतरागलाषि गनइवि
गनावशाथकी रतउथकेपुणनिवर्त्तउन उ नधर्म षइमूर्च्छ्या
दी

उत्त॰ सू॰ ८। तस्समेअपडिक्कंतस्स। इमंएयारिसफलं। जाणमाणोविजंधम्मं काम

मउवजंमछीतेनीयाणान हावीजिमकवरवअनइंपाणीतणाइस हेषीनइंपुणथकोकंठीसूमिकान
उफलनहीनरिजाण्यानउमा क्तितिहांकजाणनइविषइपंतउ। पामीसकइतीरकांठाप्रतिइं।।
रतेजेविरतिआदरीयइ।।२९।। षिकउते

६९ भोगेसुमुच्छिउ।२९। नागोजहापंकजलावसन्नो। दठ्ठुंथलंनाभिसमेइतीरं

एमअम्हेकामनागुणनइविषइगद्ध नहीसिक्षमाकनामार्गप्रतिलाआचरउति इहुनइंजिमफलरा
ज्याथका इंपकिवजीनथीसकताअम्हे हितनइंदेषीकरीयं
३०

एवंवयंकामगुणेसुगिद्धा। नभिक्खुणोमग्गमणुव्वयामो।३०। अच्चेइका ६९
थीआयरिद्दरे

गुनिआनिसपणाआउषानाकाल आउपाअनिसवेजिमतिमनथानित्यं पोताइनाइघाइआवीकामभो वृक्ष
दपोकिंउऊतावलाजाइवेदिवसरा कामभोगपुणपुरुषादिकनेविषइ गपवउपुरुषप्रतिछांडीनेजाइवे नजि
त्रिनविषे नित्य मफ

लोतुरंतिराईउ। नयाविभोगापुरिसाणनिच्चा। उविच्चभोगापुरिसंचयंति। दुमंजह २

जरहितनइंदेषीकरीयं नउपापणयाकरणीअवीपावउजउमरी
क्किपापरवउछांडीकरी जइंतूवइकामभोगछांडिवानइअसमर्थ नइंभलेयांगृहस्थअनुष्ठानरतिइकरि
नइजाइवइंनिमभोगा।३१ असमर्थछउ गृहेराय

षीणफलंवपक्खी।३१। जइतंसिभोगेचइउंअसत्तो। अज्जाइंकम्माइंकरेहिरायं

धर्मनइविषइरह्याथकउसर्वजीवनी तेअर्थकरिणीथकीतूहोईसिदे वताबि नथीतजनइंभोगभ्रनार्यका
सजीवनीअनुकंपादयातेहवंत मानवासीइहांथकीववीनइंवक्रियप्र र्मअवसाशिषादिकवांछानिम
क्तिनउधणी ३२ इंधर्मकाभ्रिवउगहनीबुद्धिइं।

धम्मेठिउसव्वपयाणुकंपी। तोहोहिसिदेवोइउविउव्वी।३२। नतुज्झभोगेचइ

न करणनउ सावहइ — अनइं गृहवासी यउ थकी पीरयउं वे कर्मादानउ मुख आरंभ अनइं धर्मकार्यादिक जे परिग्रह तेहनें विषइ तें मोहइं ॥ — मोह निःफल जिम हूं इति मए तलीविला विविध प्रकारइं निरर्थक वचन नउ भ्रापकी थउ — हिवइं हूं जा उंछउं अहोराग

उ०अ०द्वा०१८
७७

कणबुद्दी ॥ गिहंसि आरंभपरिग्गहेसु ॥ मोहं कउ इत्तिउ विप्पलावो गच्छामि रा

जउ मुइं मइं स्वामीगुग्र उ उहइं मकहीनइंसा फगयउ — पंचालनामेदेशनउराजा अपिनिश्चइं ब्रह्मदत्तएहवउ नामे चक्रवर्त्ति ॥ ३२ — साधु नेहुविचित्र नामा तेहनउ वचन अ रेक मीमाहिं इं अणकरीनइं अणपाळीनइं

यं आमंतिउ सि ॥३३॥ पंचालराया वियवंभदत्तो ॥ साहुस्स तस्सा वयणं अकाउं

एकएक थी उत्तम प्रधान भोगवीनइं कामभोग नइं भोग संसारसंबंधिया — थिति आदिइं तेहराय सर्व नरगायी जाव मामाहिंमोटा सातमा ॥ नइं विषइं — आपेई ठाणांइ नर गाथा सहइं सातमी नरग इं एवी नेवि बइसरु पउ उतउ ॥ — पूर्वविंशनाम वि अयतीन उंदन उं — तेहकामअ नइं भोगथी

अणुत्तरे भुंजिय कामभोए ॥ अणुत्तरे सो नरए पविट्ठो ॥ ३४ ॥ चित्तो वि कामे ७८

उपशान्तथयउतेह आतिनाथीजेहतु — सर्वविरतिरूप प्रधान चारित्र अनें तपरूप जे द ते हवे जेहने एहवो साधु महासूध्यादर — प्रधान संयम यथाख्यातचारित्र पाळीनइं — सर्वलो कऊप

हिं विरत्तकामो ॥ उदग्गचारित्ततवो महेसी ॥ अणुत्तरं संयमपालइत्ता ॥ अणु

रि प्रधान सर्वसर्वइ उत्तम मोक्षपदवी सिद्धिगति प्रति पोहतो इम कहुं छु धर्मस्वामि जे बू प्रते कहइ छे ३५ — एहचित्रसंभूति नाम अध्ययन तो अर्थ लेश मात्रापि कीक ह्यो ते रमो अध्ययन १३ — देवता थयानें पाछिला भवांतर नें विषे

त्तरं सिद्धिगइं गउ त्ति बेमि ॥ ३५ ॥ चित्तसंभूइज्जं सम्मत्तं ॥ १३ ॥ देवा भवित्ताण पुरे

कतला इक छ जणा सौधर्मादि देवलोकतिहां न लिना गुल्म विमान तिहां विमान एक विमानना वस्ताणहार जे देवता — पुर नगर नें विषे चिरकालनो जूनो ते नगरें इखुकार एहवें नामे — विख्यात अ सिद्धधनधा न्यें करी इ

भवंमी ॥ केइ चुया एगविमाणवासी ॥ पुरे पुराणे उसुयारनामे ॥ खाए समिद्धे सु

राद्दवलोकनीपरिर मलीकदीवइलोक नामनगरमइ १
पाल्नानीउत्पन्नतत्रसंविनागथाक नवकरमस्मुतेणकरीनइंयाबिला सवनइउपराजइ
कुलकुलि्याद्दिकतेहनइवेषमार्दा रव्यातिवइजेहनीतेवइजीवजन्मथा म्या
उन्गपाम्या विकीसेमा

उत्रासू।२७ रलोयम्मे।सकम्मसेसेणउराकएणं।कुलेस्कदग्गेस्कयतेपस्या।निवि
रवतरामीलाषजीवथानिर्मोहि समिवानासयषिकीउंडीनइं। सोम
वीतरागनउसाप्पउज्ञानदर्शनचारि त्ररूपमार्गसरणउकृष्टराषिवउपडि वज्या
कुरूवपणइस्याावीकुमारविलुक स्यातेस्यासलीजिणिकारणेविवा दजाणकीधइसंवेगीहवा

७१

मसंसारसयाजहाय।जिणिंदमग्गंसरणंपवन्ना।२।पुमत्तमागम्मकुमार
त्रीजउतउपुरोहितनुपुनामातेहनी वलीयसानहवइनामइपत्नीजार्या वत्रथी
घणीकीर्त्तियरावइजेहनउतिमराहवउ उइखुकारनामाइराजाहवउपंचमउ॥
राजानइंनालवा नइधवियइदेवीय हराणीकमला

दोवी।पुरोहिउतस्सजसायपत्ती।विसालकित्तीयतहेउसुयारो।रायत्थदेवी। ७१

वतीनामइपउंउठी गत।नइउदवा॥
इणइजीवइंजरिहंतनउमार्गतेकुमारषि कीतेकहइवइजन्मजरामरणएतलानोस यतेणइपरासव्याउद्वेगपाम्या
संसारथिकीबाहिरिजविहारमोक्षतेहने विषइस्यापहवंतपवर्त्यंउवइपवित्तजेह नउ

कमलावईया।३।जाईजरामञ्चुसयाभिभूया।बहिंविहाराभिनिविठचित्ता
संसारचगतिरूपीयउचक्रतमिवउंतेहना विशेपइमूकावेवान्यजिवानइअर्थिइं॥
देषीनइस्यांकनइंअबवाशस्पर्शादिकामनइ मोक्षनावइशरीनइकामगुणपावइइंदि यनाक्षिकीवइरागपाम्याबइं॥ ४
पियवाल्हापुत्रबेटोव

संसारचक्कस्सविमोरकणठा।दठ्ठुणतेकामगुणेविरत्ता।४।पियपुत्तगाद
कुलिस्राइंसगनामा बाल्हणनाहता
यजनयजापयनअध्यापनेप्रतिग्रहष ट्कर्मनइविषवतरबेद्राजादिकनइंस्था स्तादिकनउकरणहारपुरोहितपदवीवइं॥
संसारीनइंचिरकालमीतिसंतेगाम नइविषइकमरषणइवर्त्तताजातिज मयाबिलउ

न्निविमाहणस्स।सकम्मसीलस्सपुरोहियस्स।सरितुपोराणियतत्थजाई।तहा

निमळरूउमभावरूउनिश्चयण तेरुपुरोहितनाबे. इश्रुकारमराजानइवि तेकहामनुष्यभाजनइजेदेवतासंबं
रुहितनुपअनइसंयमपालउ घइसंगमअणकरताबइ धीआ तेहनइविषइ
नमनाम्रउ

।७३।स्वा८। सुविन्नं तव संजमं च ।५। ते कामभोगेसु असज्जमाणा । मणुस्सएसु जे यावि दि
माहनीअनिलाषावांछइजेहनइंकमनीछइतउनी पितावलिं आवीनइ हवडें आगलिक अस्मासतउअधि
कधिअकसावजेहनइ दीसइतेस्युंतेहवनबोलताहूआ।। रवेवीनइं आश्चल्प
७२

व्वा । मोक्खाभिकंखी अभिजायसड्ढा । ता ते उवागम्म इमं उदाहु ।६। असासम
रूपणेविहाररहितउ जिहां व्याधिरोगआदिघणाअंतरायनहींप तेहकारणघीनआपरनेविषइरति
मनुष्यपणइ लोपमसागरोपमआदिदीर्घमोहुआउं मानापतिइजहीतापामताअरि
जिहां।

यं दट्ठु इमं विहारं बहुअंतरायं न य दीहमाउं तम्हा गिहंसी न रइं लभामो । ७२

वृतीयइउइआस्य अंगीकारकरीस्यइ उवइंएहवउंकरउयउपिताकहइइढइणतला धर्मनउअनुष्ठान
बेहुजणमुनीपणउंसाधइपसतं ऽनतरिपितान्नपुत्रमातिणिअवेसरिसानिवे तेतपनइंचापात।
अनविषेतेमुनिनइं अंतरायकरइग

। आमंतयामो चरिस्सामु मोणं ।७। अह तायगो तत्थ मुणीण तेसिं । तवस्स वा।
हवइं वचनबोलतउ जिमनकंइअचत्रियानेलोकगतीगतिअपत्रस्पर्गा
हुउ एहवउंवचनवेदधनाजाणकहइइ नअपुत्रनास्तिइतिवचनातबेटाकइं तउपिंडदियइ।
पूर्वजनइ।। अपुत्रस्पगतिर्नास्ति।स्वर्गोनैवचनैवच।
तस्मात्पुत्रमुखंदृष्ट्वा सर्वकार्याणिसाधयेत्।।
घायकरं वयासी । इमं वयं वेदविदो वयंति । जहा न होई असुयाण लोगो ।८

तणीनइंवेदधचारतघासोजनकरावीनें बेटाधतिइंसणावीपरणावीगृहस्थ सोगवीनइंजोगपांचइं
विषयाळाणनइजिमाडीनइं।। धर्मनइविषइधापीनइंइंपाजो द्रियनास्त्रीसार्याभोगि

अहिज्ज वेए परिविस्स विप्पे । पुत्ते परिट्ठप्प गिहंसि जाया । भोच्चाण भोगे स

अटवीनइ विषइ तापस पाहु सहित मुनी अप्रमत्त उत्तम ... तत्त्वनी प्रतीति ... इहां ग्रंथ करीनइ
वेळा स करी॥ सलाभ एतावद् ... तरुणी ... अप्राप्तकारी आश्रम प्रवि कर्मनउ कष्ट ... अथवा समक्षादिक जेणइ
... जिम ... नइ ... अटवी ... तापस ... नाना गुण तेहनइ पइ धणइ करी॥
... स्वामी ... मुनि ... तीनइ [illegible]
आश्रम ॥

उत्रा॰ स्॰ टा॰ प॰ दइ क्रियाहिं। आरन्नया होह मुणी पसत्था॥ ९॥ सोयग्गिणा आयगुणिंधणेणं। मो

अज्ञानरूप वायरइ ... अधि संतापीनउ ... अंतःकरण जेहनूं तेउनउ वियोगदुःखरूप दाहइ करीनइ
कबइ ... नेह बंधना ... नउ अतिशय ... ... इइ प्रणउं हियइ ... विषइ ... दाइ तउ
इश्चिइ करी॥ ... सघलूं ... अधिकउ बइ बहु ... अनेक प्रकारइ
७५ तबइ घणइ जिम ... इनिमा॥

हानिला पज्जलणाहिएणं। संतत्तभावं परितप्पमाणं। लोलप्पमाणं बहुहा बहुं

नेहरूप गमा ... हि ... निमंत्रणा करतउ ... ... तउ यथाकालि यथा वसरि
नके ... अनुक्रमइ ... उपुत्र ... धननइ वइइ करीनइ लाभे कामभोग तेणइ
धतउबइ उत्तैणा निमंत्रतउ हवउ

च॥ १०॥ पुरोहियं तं कमसो णुणंतं। निमंतयंतं च सुए धणेणं। जहक्कमं कामगु ७२

नहवो हि कुमार तेबकुय समस्क ... पितानी मातेक ... अपिता वेदधर्मादिइस जिमारो
नउबनि आज्ञा ... काली ... जाणीनइ एणइ ... कारण स्वरूप बालणउ
इ बाल ... ... कहइ स्तेहवउ कुमारइ

णेहिं चेव। कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं॥ ११॥ वेया अहीया न हवंति ताणं। भुत्ता
धकार माहि ... धकार ... वी अ ... कविकी ... वचन कदाचित्
तिराद रोरवादिक नरकनेविष जाया स्त्री पुत्र तेणइ त्राण शरण ... करीनइ ... मानइ ... तेउ
जेतणी ... विष जिमाड्या ... पाडबा ... ... मानइ ... वचन॥
अबसुख करइ

दिया निंति तमं तमेणं। जाया य पुत्ता न हवंति ताणं। को णाम ते अणुमन्निज्ज एयं

... मात्र कसुख ... घणा अतिशय करी दुःख जे ... सुख जेह संसार ना
काल लगी नरकादिक नां दुःख जेह ... फल ... ॥ दुःखनीमु
क्तिकी

१२॥ खणमित्तसुक्खा बहुकालदुक्खा। पगामदुक्खा अणिकामसुक्खा। संसार

काइवउणदवुउजेमोक्षयामिवन नरकाविपक्षवइरीसूत
इहलोकनोंदुःखनमंघामिवनेतेरूपजन्त्र नधीतदनीपोषिबइणवलीकामभोगपडइ
हमंबेधीत्रा
पगिनमणकरतऊनंदणी नगादिकइंनवीनिवस्तउत्र मन्नुसिलापीजिन्नर

उत्रा॰सू॰टा॰प मुक्खस्सउविपक्खभूया।खाणी अणत्थाणउकामभोगा।१३।परिव्वयंते अनि

७४

दिवसरात्रिनेपामिवानणीघणउं अनेन्यअनेराजेमाबापेतादिकतेहनेअर्थे एमकरतांजपामइ
वितासूपणीअगनिदाहनउ उपमतनहनाघणाएककूडकपटादिकउ मरणउरूपउनइ
धकउ पापरीकरीनइद्रव्यनीगवेषणाकरतउ गदपणुणविडक
धकउ

यत्तकामे।अहोउराउपरितप्पमाणे।अणपमत्तेधणमेसमाणे।पप्पोत्तिमच्चु

अपवानेपोतानउरूपउमाहरइछइअ आपणमाहरइघणारगदउमुषकार्य नेपुरुषउतिइं
जाणवा उपनुपमरागरतनादिकमाहरइ करिवउंछइआमाहरइआरंभउआ एमंमलालपमा
नथी पारादिकतेकरिवउंनथी णकहितांघणो

प ७४

रिसं जरंचा१४। इमंचमेअत्थिइमंचनत्थि इमंचमेकिच्चइमंअकिच्चं।तंएवमेवं

जिमलोइतिमपडिवनेवव अथवाव्याधिविशेषतेहरइआउथा वलीपुत्रादिकतेहथधनद्रव्यघणा ममजनापि
नेवोलेउनेपडिकरवुंतपव नवांतरिलेइएहवेजाणीकिमप्रमाद स्त्रीइंकरीनिं सहितछै तापीताह
स्त्रादिकहरी रात्रिदिवस करिवोधर्मनइविषइप्रमादनकरवो यादकन

लालप्पमाणं।हराहरंतित्तिकहंपमाए।१५।धणंपभूयंसहइत्थियाहिं।सयणा

मनाप्पादिकपइंद्रियनाकामभोग तपक कःकदि तपह्मआद जेधर्मादि मनुष्यादि तेसर्व स्वाधीनछा एदिजवर
नेकेहवाअतिशयवंतछइ छान तांकांति रेछइकर कतेअर्थ कलोक रर्वक पणंजवसि नेविषेतुम
अर्थछइ छ छ लाते छइ यमाछिजन
वरइ

तहाकामगुणापगामा।तवंकएतप्पइजस्सलोगो।तंसव्वसाहीणमिहेवतुब्भ

धनद्रव्यइस्युंकी धर्मनिक्षमादिकदशप्रकार स्वजनकुटं तथाकामगुणेगुणेस्यो अमणसाध
१५ जोइं अथितुकां यतिधर्मतेहनीधुराधारते बतेहनेकि प्रयोजनछइतिणिका तपस्वीताह
इनथी तेनुंअधिकारेंचालेसाध स्यो रथकी सउ

त्तं।१६।धणेणकिंधम्मधुराहिगारे।सयणेणवाकामगुणेहिंचेव।समणा

ज्ञान दर्शन चारित्र रूप गुणनो उद्य समूह तेहना धरणहार
बाहिर द्रव्य थीयाम नगरादिकथी बाहिर रिनाव थी कि संह अप्रतिबंधपणा थी बाहिर पदे बोविहार विहारवो तेहनो पामीने ।जरूआश्रय प्रतिइ १७
वनज्ञ राणादिनक दृष्टंत जिमअग्नि अरणीनाकाष्ठ

उत्रास्॰टा॰प॰ नविस्सामुगुणोद्धारी ।बहिंविहाराअभिगम्मसिरव... १७ ॥ जहायअग्गीअ

७ ५

तेविषेस्वनावेअ छतीस्वनाविइअ छतुसंयोगिसमू छइछे
दधीरदूधनेविषेघरत तेलजिमतिल ना दाणानेविषेअछतोसंस्पर्शसंम छइछे
एणीमाइअछेतुअसरीरतेहनेविषेसं यभोणीमूर्छइअणछताकायानेआ कारे परणम्या पंचमहाभूतनामसमदा यथकी
संमूर्छइछ ऊपजेछइ स्वनावइन थीविनाश

रणीअसंतो।षीरेघयंतिल्लमहातिलेसु। एमेवजायासरीरंमिसत्ता।समुछई

पामेआत्मातानापरिरकैनही सरीरनाशइ तिवारे तपिणचेतन अनाशपामे पाणीतारपोताना
दिवेंपुत्रबोल्याअसेपितानहीएआत्माइंद्रि पांचेकरीग्रहीसकीइ अमूर्त्तिपणाथकीते द्रव्यणीरूपादिकनीमहिमातेमादिनपामीइ
अमूर्त्तरूपादिकनाअभावपणाथि कीजेअछइतिसजेनेइमथिकोअम र्त्तितेतेनथइजिमआकाशमनोअमूर्त्ति

नासईनावचिठे।१८।नोइंदियगिज्झअमुत्तभावा।अमुत्तभावावियहोइनिच्चो। ७५
पणाथिकीवंधथिणनहीतेआकाशनिय धइ

आत्मानेविषेरह्या मिथ्या त्वादिकतेअध्यात्म तेहजहेतुकारणथानिश्चेकर्मसाथइबंधपरंजि मअमूर्त्तिआकाशमूर्त्तिघटादिसाथेसंबंधछे इएमकर्मस्कंधसाथानइ बंधजाणवो
संसारनाहेतुकारण कहेछे तेहनाजाणबंधकर्मनोअ तिइ १९
जिमअमेमुग्धकिवारइ धर्मअजाणताथिका

अज्झत्थहेउंनियस्सबंधो।संसारहेउंचवयंतिबंधं।१९।जहावयंधम्मम्या

पापनेहेतुभूतकर्मअम्हेकरताहवा तत्वमार्गणेअण जाणिवाथकी
घरथकीनीकलिवाअणपामता सेवक नफर जननेअतिराषता प्रतिपालताथका
तथातक मनेहीव हीरसम

णमाणा।पावपुराकम्ममकासिमोहा।उरुस्समाणापरिरक्खियंता।तन्नेव

वरियइ करियइ जेहअणीअमे वस्तुनो तत्वसारपामोछे २०
पीनाइरह्योछे एहवालोकनवि षे
सघलीदिशिनेविषेअ तनवीढछे जेह
अम्हा घेसं

भुज्जोविसमायरामो २०।अब्भाहयंमिलोयम्मि सव्वउपरिवारए अमो

फलवत्रास्त्रनीश्रेणिपन पदस्थावासेंबसतारतिसाता पुरोहितबोलतोहुउत्स्पोकदन्न किणेंमृगबंध
तीकुंतीयइं नलकुंतिमतातादिकनेविषेंहइ तेपुत्रोकेणेंश्राहिलीसरीपेंहइजे नादिकसरिष
रिण पम्योसाहाननहइ २१ कन्नमाहतपाम्योछड

अ.सू.टी। हारिपंडंतीहिं। गिहंमिनरइलहे।२१।केणश्रसाहउलाग।केणवापरि।

७८

सघलेंबी कुलतिफलरहितसफलीएहवी असेपुत्रोचिंतापरचिंतावि हवेंपुत्रकहेंपितामरण
योछे मस्त्रनीश्रेणिवुत्ताकही वेंएकालेकुमोसोछउ २२ इंकरीपाम्योबे लोकजेह
नलीलोकमतिइंश्रतोता

वारिउ।कावाश्रमोहावुत्ता।जायाचिनावरीसुकुमे।२२।मवुणासाहउलो

तनरण गरटपणेसघलेंवी श्रमोघसफलश्रास्त्रनीश्रेणि एमछहेतातचितजो जेजेना
सघले थउछेजेन्सणीजराग तेरात्रिकहीदिवसपणिजिणि वियाणहजालो २३ हउइ
छे रहपणाघकीपालहि एहछेंपरिवरेश्रवकजोकनो
उछइ घातकइ

मा।जराएपरिवारउ।श्रमोहारयणीवुत्ता।एवंतायवियाणह।२३।जाजाव

७९

आतिक्रमेंरात्रि नंहीतेपाछीनिवर्त्तेंश्रा हिंसादिकश्रधर्मनाकरणहार अफलथनिफलजाइछेरात्रिदिव
अनेंदिवस वइ जीवतेहने सतेश्रधर्मवांछेश्रेयकुइरात्रि
२४

वइरयणी।नसापडिनियत्तइ।अहम्मंकुणमाणस्स।अफलाजंतिराईउ।२४

जेजेजाइछे रात्रिश्रनेंदि तेतेनहीदिवसरात्रिपाछीनि समकितव्रतादिकधर्मना सफलजाइ
वस वर्त्तेंश्रावें करणहारजीवनें छेंदिवसरा
त्रिजन्मनोसा

जाजावचइरयणी।नसापडिनियत्तइ।धम्मंचकुणमाणस्स।सफलाजं

रएछिजव्रता एतलेंतेएकस्थानकनेंविषें बेंकुंश्रमेंतुमेंमछिसहितदेश पत्नीगरटपणेंश्रसेपुत्र
दिकरहीनें २५ श्रनेंवर्चेंपुरोहितप्रतिबोध विरतिव्रतपचरकाणसहि श्रापणगामनगरादि
पाम्योउमसहितश्रसेएकवाव तघका कनेंविषेंविचरस्युं
व्रतादिक श्रादरीसकलकरीइ

तिराईउ।२५।एगउसंवसित्ताण।दुहउसम्मत्तसंजुया।पच्छाजायागमिस्सा

दीक्षालेइनें अनेराब्रिकयाचताद घरद्रनें विषें उम्रकरे छे पितानेंजने अइ मरणसं तेहनें वलीऊइप
सफलतोउबादिकपरंनहीएकघरनेंविषे २५ घातिमित्रपणोतथा नायन मरणथी

उत्ता सू० ट पि॥ सिरकमाणं कुलेकुले २६ जस्सत्थिमच्चुणासक्खं । जस्सत्थिपला

नाश जेकोइजाणेंइहउंकदीइमरी तेऊनिश्चेंवाबइकालिनेंदोहे आजजअमेंएवनि
वो सनहीं ऊस्मैअमकोकार्य २७ श्चेंधर्मयतीनोमार्ग

७५

यणं । जोजाणइनमरिस्सामि । सोहुकंखेसुएसिया । २७ । अज्जेवधम्मं

पडिवजिस्यैअंगीकार जेधर्मइविशेषस्यैआश्रयाथकीनही संसारमांहिवसतापिणपाछिवोस्यो
करिस्यैसाधुनोधर्म उणवलीहेइस्यैंसंसारमांहिकमदि कांइनहीछें जेजणीएणेंजीवेंअनंतकाल
नाशथकीजरामरणादिकनोअभावहोइ अनंतीवारपाम्याछेंअथवाजिहांमरणन

पडिवज्जयामो । जहिंपवन्नानपुणब्भवामो ॥ अणागयंनेवयअत्थिकिंचि
धाश्याउतेतामसंसारमांहिकोइनथीर
इकारणथकी॥

७६

श्रद्धाइमायुक्ततंछइहलोकपरलोकना एतलाकहितांनपुत्रादितनेंव्रतनाइछाहवी हेवासिष्टगोत्रनीऊ
मकल्याणपानिवाहेतिअनुष्टानकरिवा परविधननीकरणाराजेब्राह्मणीप्रतिकहेछें पनीजिमएस्त्रीनेंति
तेकहअनादिकविणइत्युटाजीवनहीरागमो= पुरोहितविकुत्रेरहितजीतऊनिश्चेंजेऊ मआपणनेंपिण

पहिनिग्रामसं
सारमांहिकोइ
नथीएकारणि
थकीजाणवो

२७ तेहतनें घरनेंविषेवसवो॥

णं । सद्धाखमंनेविणइत्तुरागं । २८ । पहीणपुत्तस्सहुनत्थिवासो । वासिट्ठिभिक्खाय

भिक्षावरीव्रतले जिमवृक्षशाखासहितनेंहइयामेंस अनेंछेदीशाखाइ तेहजवृक्षठुंठादीसेंजिम
वानोकालमस्ता माधिस्वस्वपणोतिमऊपिणपा आरवावृक्षनेंरहा अनेंरोगनासमाधिनोका
वबइनेकहइछइ मो रणतिममाहरेंएबेटाएतलामाटेंऊंठूंठासमान

जाणवो

रियाइकालो । साहाहिंरुक्खोलहएसमाहिं । छिन्नाहिंसाहाहिंतमेवखाणुं । २९

पांखविनाजिमइहलोकनेंविषेंपंषीउ जिमसेवकइहलोरहितसंग्रामनें जिमद्रव्यवंतव्यवहारीउस
तेनाशिवानेंअक्षिवंतनही कुंतरादिकें विषेंराजाजीपवेंवइरीमनुष्यनेंति मुद्रइवव्योमवहणभागें
पहीतोछिकोपीनाइ मऊपिणतनीयतेंपयो द्रव्यगयेंविषवादकरे

पक्खाविहूणोवजहेहपक्खी । भिच्चाविहूणोवरणेनरिंदो । विवन्नसारोवणिओव्व

तिमगयेपुत्रतिमऊपणिपाषसेवकद्व्यसमान बे यागयेतिवारें ऊपिणतेद्वोजनाणवोइमकहेछे २९ पखापुरोहितनीस्त्रीपुरोहितआगतिकहे बेसफसंभूतरूडेसंस्कारावासलीवीणागी तादिके आप्रसन्नतादराघरनेविषेबइ सम्परम्परका रेटगलाकी

उत्ता॰स्वा॰२प॰ पोए पहाणपुत्तो मितहाअहंपि ।२७। सुसंसिया कामगुणा इमे ते संपिंडि

भवे अन्नमधुरादिक घणा घरिमवर्त्तइरसते संसारीकजीवनेअतिलोभ ऊपजावे तिणवलीउसाकीधा भोगविषइआपणतेहकार णिधिकीकामभोगनाअति सयस्फ पछेगरढपणइआवइजईस्यइपतिव नीस्पेप्रधानमार्गप्रतिमसाधुरूपेसे वोदीक्षारूपमोक्षमार्गनइविषइ

७८

या अग्गरसप्पभूया ।। तंजामुता कामगुणा पगामं पच्छागमिस्सामु पहाणमग्गं

३६ वलीपुरोहितबोल्योस्त्रीप्रतिइभोगव्यामधुरा दिपइंद्रियनाभोगपणिसजीवेंदेषियेआय णनेयोवन नदीजीविवानेअर्थिइवांछियेइं छेभोगपइंद्रियजेह वस्त्रादिक नोलाभ अलाअवस्था दिकनीअप्र मिइकरीने

मं ।२८। तुम्हारमा लोइ जहा तिणवज्जो न जीवियठाए जहामि सो ए लाभं अला ७

रवलीरूपविषयसंबंधी वाधाथीऊपनोदुःखविर हादिकथीऊपनोतेह समतापणेजोतोविचा रतोथकाजीविवेंतथाम रवेंसमताधरतो विचरीस्येमुनिपणेएतलें मोक्षार्थीदीक्षालेईनइ ३० दिवेस्त्रीयशानामानोलीपुरो हितप्रतेऊनिस्रेंतोक्षदरंतम दोदरसाजणपोतानातथाभोग

सव्वसुहं वदुक्खं संविरकमाणो चरिस्सामि मोणं ।२९। माहूतुमं सोयरियाण

दिकनेमसंभा रिमजेघणोक सोकेउफजेउजा ले जिमजरठोहंसनदीमांहिऊपरावहपाणीनेपंथ वालतोकष्टपामीनेअसमर्थकोप्रवाहमांहि वहेएमऊंपणिसंयमथीभोगस्वजनादिकसंभा रिसि तेहकारणथकी भोगविनोगपांचइंद्रियनाहेमनाभि एसमानमुफसंघातिइ दुःखना कारणनि व्ययनिस्क

संसवे ।जुन्नोवहंसोपडिसोयगामी।।तुंजाहि भोगाइंमएसमाणं।दुक्खंसुमि

नरोनोग्रामादिकनेविषेअप्र तिबंधपणइंविचरिको ३२ मृगुपुरोहितकहेबेस्त्रीप्रतिइंजिमवलीअसे ब्राह्मणीशरीरसंबंधीउत्तमउंगमस पविबइ कावलीबाहीपरिहरीजाइ अतिशयस्फनासेंसंकाणि थिकोवलतीसभालनकरइ

रकायरिया विहारो ।३२। जहा य से ईतणुं कंचुयं गमो निम्मोयणिं हिच्चप

किसंबे एणेंमाइंतारापुत्रबान्हबेसजेंबें भोगपं विंदियना तेभोगसमतापुत्रदेषीब्रतनेंसदबइकरीएक लोऊंकिमकेनेंनहीमोहनेंपंघरसरवाइयारहि नहुपनेंकिस्योघरवास ३३ नाष पुत्र बंदीनें

उत्रा स्०१४। जाइ मुत्ता। एवं एन्नाया पव्वइंति सो ण तं कहं नाणुगमिस्सामिका ३३ छिं

७८

जालकापीनेंसूत्रादिकनोनिर्बलमनोसम्यो वलबंतरोहितजातिनामाछलाजिमबेतिम ऊंजाणिवो एहवेंदष्टांतेंकरीनेंइ तिमकामगुणपांचिंद्रियनाबांहीयरि हरीनें तेहमांछलाफालवानाजालम मानबइं धोरीवलदनासरीषोऊपा च्यानारनेंनिर्विंदिवारूप सीलस्वभावबें जेहनो तथा

दित्तु जालं अबलं व रोहिया मच्छा जहा कामगुणे पहाय। धोरेयसीला तवसा उ

तप१२प्रकारेंप्रधानकर्मनाशनाकरणहारएहवासत्व वंतभिक्षाचरीसमचरेंआचरेंतोऊंकुणव्रतप्रदिस्यं ए तलेंस्त्रीप्रतिबुधीकरेबेइ ३४ आकाशनेंविषेंक्रौंचपंषीयातेप्रदेशप्र देशप्रतिअतिक्रमताउंलंघता विष रहबइ विस्तीर्ण मोटाजा लजाल

दारा धीरा हु भिक्खायरियं चरंति। ३४ धाहं व को वा समइक्कमंता तयाणि

७

तेंअर्थनाहेतुकारणजाणी नें दलीनेंदीनें हंसनीजा ति माहंसजालसरीषाभोगछानेंसंयमनें विषेंप्रवर्त्तइबइ तेप्रतिक्रकांइनहीजइंसकोएक लोसंयममार्गेंभोगछांडीनि रोपक्ष पइनइविबा

जालाणि दलित्तु हंसा। पलिंति पुत्ता य पई य मज्झं ते हं कहं नाणुगमिस्सामि

३५ अथपुरोहितबेटासहितस्त्रीयशा सहितसांभलीनें घरथानीकलीनेंदीक्षालेतांपरिहरीसं जीनेंभोगपंचेंद्रियना धनधान्यादि कुटंबनोस र

का। ३५ पुरोहियं तं ससुयं सदारं सुच्चाभिनिक्खम्म पहाय भोए। कुडुंबसारं वि

विस्तीर्णघणोउत्तम राजाइ वार पुरोहितनउत्तम कुकार वार एतां मति राणी रूडेंबोलतीकहइकि कमलावतीनामेंपट ३६ वम्योपाइंआहारएहवाकु तिरासरीषोतबंपुरुषदीसे बइ नहीतेऊंहप्रसं साकारिवानेंय

उलुत्तमं तं रायं अभिक्खं समुवाय देवी। ३६ वंतासी पुरिसो रायं न सो होइ प

उत्रा॰सू॰ट॰

८०

अपंडितना देलोके बाह्मणपुरोहितइसजांनें परिदस्यो एदवोजे धननेंप्रदिवानेवांछेछइ एह युक्तोनहीउमसरीषानें ३७ सर्वजगत्रलोकजइताहरेंपोतेंहुइअनेंबली सर्वसं सारमां

संसिद्धमाहणपरिव्वयंतं धणंआयाउमिछसि ३७ सव्वंजगंजइतुहं सव्वंवा

दिसोधनसुवर्णादिकनि तेसर्वताहरीइछापूरिवासमर्थ नहीत्राणशरणजरा मरणादिराषिवानली तेसर्वजगत्रादिकनइ ३८ मरासिअहोरायजिवा रेंजिवारेंकालतेंविषेंअ

ख्रेताहरेंहुइ इछाउअाकारासमालीछे

विधणंभवे सव्वंपिते अपज्जत्तं नेवताणायतंतव ३९ मरिहिसिरायजं

वस्यपसंसारमांहि मननेंरतियातकरेंतेमनोरमकाम जिस्यौतेमरइज सुणमइंडिनाबानीनेंएकलोमरी तेवालवी सि साधकोईनाबइ एकनिश्चइंज्ञानदर्शनादिकधर्मदेन रनाथहेराजा आपदाथीपराषेपिल बीजोकोईराषवानेंसमर्थनही नथीअ नेरोइ हलौ

यातयावामणोरमेकामगुणेपहाया एक्कोहुधम्मानरदेवताणंनविज्ज

८०

कनेंविषेंमरणथीरक्षाकांइधर्मते मारणरक्षाजेकीधंतेमोक्षआपे ४० नथीकुरतिमातापामतीजरामरणभव पांजरेंजिमपंखिणीपांजरानेविषेंमाता नपामइ स्नेहसंततिछेदाडीबालानेंकुटं बादिकनीवरिस्फ आदरस्फ

ईअन्नमिहइकिंचि ४० नाहंरमेपक्खिणिपंजरेवा संताणछिन्नापरिस्सा

मोनसंयम इतनेंविषे द्रव्यथकीसुवर्णादिक भावथकीकषायादिकें रहित मायारहितसरलक्रियानो अनुष्ठानछें जेहनो विषयादिकआ मिषमांसरहित छै धर्मादिकपरिकरसमण दिकआरंभथातेनिव र्तइतेंकारणेंअदोषदिष रहित

मिमोणंअकिंचणाउज्जुकडानिरामिसा परिग्गहारंभनियत्तदोसा ४१

दावानलनीअग्निइंजिमअरण्य अटवीनेंविषइ बालीनेंराषकरीनेंहूंतइ जीवनै अनेरासत्वजीवकहातीपोता नोबलतो अजाणतांप्रमादथ रेंजे अज्ञेनिर्भयरूषियाते स्यामा टेंजेह मणीरा

दवग्गिणाजहारन्ने डज्झमाणेसुजंतुसु अन्नेसत्तापमोयंति रागदो

ग द्वेषनें वशि पहे तो ४२ | रांणी कहे छे इम अमेम् ढ मूर्ष मोहने वशि वर्त्ता | कामभोग पचिंद्रियादिकना ते हने विषे मूर्छा पांमी रह्या छउं | बलतो थको बल जाणता न हउ थी नेएह ६

उत्त्रा॰सू॰ट॰ सव्वं सगया ॥४२॥ एवमेव वयं मूढा। कामभोगेसु मुछिया। डज्झमाणं न बुज्झा

राग द्वेष रूप अगनि इं करीने प्राणी लोक वर्ग जे जगत त्र्या पणउं पणि ४३ | जे पुरुष वान हुइ ते स्त्री करे भोग भोगवीने तथा वमी परिहरीने | लघुकहितां हलूउजे वायरो ते हनी प्यां तसरिषा अप्रतिबंध हुइ विचरवा हुनो स्वभाव जेहनो ते हरूं हुइ क्रि

८२

मो रागदोसग्गिणा जगं ॥४३॥ भोगे भुच्चा वमित्ता य। लहुभुयविहारिणो। आमो

हलें करी हर्ष पामता थका उत्तम गति प्रतिं जाइ अथवा ग्रामानुग्राम प्रतिं जाइ छै | पंषीया जिहां २ साता पामें जाणें तिहां ते जाइ जमें तिम साधु पणि जिहां २ संयम निर्वाह तिहां २ विचरें ४४ | आमत्स हर्ष शब्दादिक दाधा वीणादिक स्मान आराम पदहरूवा दिक उपाइ राष्या पिति स्थिति थी | माहरे ता हरें अहे आर्यहा

यमाणा गच्छंति। दिया कामकमा इव ॥४४॥ इमे य बद्धा फंदंति। ममहत्थज्जमा

थांपें ते जे ताहु इबे

८२

घि आव्यांबे वशि वर्त्ते बद् | अमे ते आत्राक विलगी रह्या एहवा कामभोगने विषइ | आउषा ने वय लप णा जाणी भोग वा प्या कमी तिम एणे कामभोग वाध्याति मआपणा पिण बाहस्के ४५ | आमिष मांसें सहित कु लल्ह पंषी ग्रस्थ वा पंषी

गया। वयं च सत्ता कामेसु। भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥ सामिसं कुललं

नजाति देषीनें | बेमा ते अनेरे पंषी जातिं मांस रहित ते निर्भय देषीनइ | आमिष समान धन्यादिक नो संगम वाधा नी परिहरीनइ | विचरस्यां अप्रतिबंध विहारे निरामिया सजा

दिस्सा। बज्झमाणं निरामिसं। आमिसं सव्वमुज्झित्ता। विहरिस्सामि नि

राग नाद्वेष सर्व जाणइ ४६ | मांस सहित एहवी पंषीया सरिषा विषइ रूपीयइ मांसें करीनइ सहित लोकनें जाणीनइ | कामभोग पांचइंद्रियमा ते संसारनी वृद्धिना करणहार छइ | उरग सर्प गरुडनेंया में जिम संकातो थ आणतो तउ धीमउं

रामिसा ॥४६॥ गिद्धोवमेउणच्चाणं। कामे संसारवद्धणे। उरगो सुवन्नपा

यम निजिमग रूरुन्नाणीतिमवाली जिमनागहाथीबंधनरासनी आपणानेवसतिरदिवानी॥
तिमतुपणिराजापरिमवर्त्तिनाक्रिया प्रतिइ छेदानें ओनानइ मविंध्याचलनीअटवीप्रति
नेविषें जिमविषरूपगरूनेंहणाइनतीति जाइ पोतानीभूमिकाइजाइ

उत्ता॰सू॰।१४।८२ सेव संकममाणी तणु वरे ॥४८॥ नागो व्व बंधणं छित्ता । अप्पणो वसहिं वए

इम तो कर्मबंधनविचारीजीव अहोइखुकारनामराजानबीजे एतलेंराजाप्रतिबोधपा कामभोगपा
मेंसकदथानकेमोक्षजाइएहि कहितीपोतानाबुद्धिकरीएहवो म्यो बांनीपरिहरीराजा चइंद्रियना
तकसोबेंहेमहारायदीनानेकहे मेंसाधुपासेंसांजल्योछइ. अणीमोलेराज उरवेंछांनी

८२

एयं पत्थं महारायं उसुयारित्ति मे सुयं ॥४९॥ चइत्ता विउलं रज्जं । कामभोगे

सकीहतेपिए विषयदेशाअघ वलीतेहसगपणाथ स्नेहप्रतिबंधरहितछइपरि सावोष्कतवा
परिहरीनें वाविषयपइंदि कीमूंकाणाछइ ग्रहरहितछइ ४९ रित्रधर्मश्रीवी
यनेतेरहितछुं

य दुज्जए ॥ निव्विसया निरामिसा । निन्नेहा निप्परिग्गहा ॥ ५० ॥ सम्मं धम्मं

८२

नराग नेमाणी वांमीनेंकामभोगगुणप्रधा नपरइमेंदेयहीआदरीनेंय घोरआकरोपराक्रन
नइ दिकवरप्रधानछइ धारव्यातजेहवोजगवंतेंजा धर्मानुष्टानेंनेंविषइ
ण्योनेंहवोधर्मछइ वलजेहनोछे.

वियाणित्ता । चिच्चा कामगुणे वरे । तवं पगिज्झ हक्खायं । घोरं घोरपरक्कमा

५० एणेंप्रकारेंतेवेंअनुक्रमेप्रति सघलातेबइइधर्मनेंविषेंप जन्ममरणनाभयथीकी दुःख
बोधपांम्याविका रायणतत्परथयासावधा उद्वेगपाम्यावाजिआव्या नोअं
नपणेथया तेवइजणा तछे

॥५१॥ एवं ते कमसो बुद्धा । सव्वे धम्मपरायणा । जम्ममच्चुभउव्विग्गा दुक्ख

नो तेहनेंगवेषतांवाछाक शासननेंविषेंमोहरहितश्रीअ पाछिलाभवनेंविषेंभावनाशु छोनेजअ
रताछे ५१ रिहंतदेव तेहना सकर्मनिइंअभ्यासेंकरीअेस्या ल्पकालि
भावियाने जपतपक

स्संतगवेसिणो ॥ ५२ ॥ सासणे विगयमोहाणं पुव्विं भावणभाविया । अचिरं

राजे श्रावकर्मना देउ डःरकतेहनाअंतवेर राजाइस्कुकार कमलावती ब्राह्मणजातिइषुका
गोपाम्या मोक्षगया ५२ देवी पटराणीसहित हितमुक्षइरवइना

उत्ताम्मु टाय णेवकालेणाऽरकम्मंतमुवागया॥५१॥राया सहदेवीए माहणीयपुरोहि

मे ब्राह्मणी स्त्रीयशानामेहार रूपजाइर्केमस्त्रीपित्रीनोजपाधताडीमुीत इति इक्षुकारिया ध्यय
८२ क बेटा तेहनाबेटा लबइ नाहाथई मोक्षेगया एरवोकह्यो नमोअर्थलेसमात्रक
कधर्मास्वामीजंबुप्रतेकहेछै ५२ स्रो

ओ।माहणीदारगाचेव।सव्वेतेपरिनिव्वुडिति बेमि॥५२॥इसुयारियंसम्म

१४ आवुरी स्कंध एरवो अनिमापपामीनेधर्म सरलकृतअनुष्टान सरलकृतमनछेजेहनाविषे
दीक्षालीएसहितपरइएकलोनहीतथा वेजेहनो बानीनेइछानियाणं छेदइउ
जेणेसाधिइ

त्तं १४ ॥ मोणं वरिस्सामि समिच्च धम्मं ॥ सहिए उज्जुकडे नियाणछिन्ने

माताश्रानेसंगबांछइ परिहरे काम कोइनजाणेतप अतारनीगवेषणानोकरणहार रागऊपरतेनिव
भोगअभिलाषीकांछानही पुणादिकजेरह निस्नवासरहितसंयममार्गे र्त्तउछे तिसं अथ
वेऊलेरयपाछै प्रवर्ते तेभिक्षुयतीजाणवो बाराश्रीनोजनघ

संथवं जहिज्ज अकामकामे ॥ अन्नायएसी परिव्वए स भिक्खू ॥ १ ॥ रागोवरा

कीनिवर्त्तेउजितंतिन सयमथीउसस्योछेवेदसिद्धांतने सारबुद्धिवंतछेपरीसहेउपसर्गनिहणा जेभि
विचरेभिक्षानेअर्थे जाणेवे आत्माऽगर्थितिथारायें नवानेअथवारागद्वेषनिवारीनेसर्व क्षुकि
कृतोछेअनुष्टान ६६ जीवमात्रनेआपणसमानदेखेजाणेछे साइ

यं वेरं सलाढा ॥ विरं एवेय वियायरक्खिए पण्णे अभिभुय सव्वदंसी ॥ जेक

कवच्चादिकवस्तुनेविषेनथीमूर्छित आक्रोशाकोइकुवचनकहेअनेंवधमारे मुनियती विचरेप्रति
लोभीपरवेगुणेसहितनेभिक्षुयतिक तेआपणाकर्मनाफलजाणीनेंधारकरि बंधइराहितछिकोनथ
हीयइ २ नोक्षामनपामे नोशेनही कृतआचारनोधणी

म्हि विन मुच्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥ अक्कोसवहं विइत्तु धीरे ॥ मुणी चरे लाढे निच्च

उत्रा सू टाप

८४

वली नित्य सदा कालिं | चिंतार हित मन छे जेहनो कोई | जेहसाधु सगला ईश्राक्रोश बध प्रति ३
गोपव्यो छे असंयम | ते आक्रोशादिक सहण हर्ष निं माने | अहीयासें हइ तेहिं कहीजाणवो
थी राख्यो छे

मायगुत्ते । अव्वग्गमणे असंपहिट्ठे जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ३ ॥

प्रांत असार शय्या आसण अन्न वस्त्र | गादितापल | विविध घणे प्रकारे समसा | व्यप्र असंभ्रम
दिक भोगवीनें सेवीनें | हीनइं | प्रांकण्णादिक परीसह सेवीनें | चिंताइ करी आकु
| | प्रमानें | लनथी मन विक्षेप

पंतं सयणासणं सइत्ता । सीउण्हं विविहं च दंसमसगं । अव्वग्गमणे असं

हर्ष तणी असंप्रहृ | जेह साधु परीसह सगला अहीया सैसहीनें | जो कोई साधु सत्कार आदरे उभो थाइ
हर्ष सहित न थाय | निर्जरा लेषवें तेहिं कहू साधु कहीयें ४ | वो नवांछे वस्त्रादिकनी प्रज्ञान वांछे ते
तावता राग द्वेष रहि | | आत्मकनो वस्त्र आपे तुझ नेपस्वीवावा
त छे | | नकरे

पहिट्ठे । जे कसिणं अहियासए स भिक्खू ॥ ४ ॥ नो सक्कियमिच्छई न पूयं

८४

नही जे वंदणगकहितां द्वादशावर्त | ते रूप अनुष्ठान ने विषे बलवंत संयम रूपा व्रतनो पा | ज्ञान क्रिया
वांदणादिकनी इच्छा धरवी छे ते कि | लणहार सदा सर्वदा अतो तपस्वी तपनो धणी | इ करी सहि
हा थकी प्रसंसा पुण्यवांछवो वांछे नही

। नो वि य वंदणगं कुओ पसंसं । से संजए सुव्वए सयाें तवस्सी । सहिए आ

तकर्म षपाववा थी आत्मानें | जिणें कर्तव्य इं करी सर्व प्रकारें यम | मोहनीयकर्म कषायादि
शुद्ध निर्मल वांछे ते साधु कही | जीवतव्य छांनाइ ते साधु कहीयइं | कसंबंध बंधाई रूपा अ
यइं ५ | | व्यवसाय रहें विणासई

यगवेसए स भिक्खू ॥ ५ ॥ जेण पुणो जहाइ जीवियं । मोहं वा कसिणं नि

ते एहवा वर भुत्त षनो नारि स्त्रीनो संगम परिहरइं | स्त्री संबंधिया विषय नो रूप हरलननपामे ते भि
वांनइं जे कोई संयम तपस्वी तप करइं १२ भेदे | क्षु कहितां साधु जाणवो ६
तप करें

यच्छई नरनारिं पजहे सया तवस्सी । न य कोऊहलं उवेइ स भिक्खू ॥ ६ ॥

लोहादिकनआ कासिव्रतरनग रादिकनोलक्षण

उत्त।सू।टा।प

८.५

रास्त्रदांतकाष्टवेदनशुभअशुभकहेते विद्याछिन्नकहीइहसघलेजाणिवोम रसूआतितेहनोऊचारस्वरसूमिकंपता स्वपननाफ लाफलनो कहिवो स्त्रीपुरुषनालक्षणनोजाणि वीतेहनोफलाफलसोदादिकनाल क्षणजाणिवानोफलाफल अकप्रमुखफरक इतेहनोफलाफ लनोजाणिवो

छिन्नंसरंभोमअंतलिरकं।सुविणलरकणंदंडवथुविज्जं।अंगवियारं

देविप्रकषनाहरनोविज पशुभअशुभकहिवानो अभ्यासरूप जेसाधुएहवुंकरीनेआजीवि विद्याइकरीनइहतस्वरजेन जीवइ एहवीजेआजीवि काघाघनेप्राणध रेंनहीतेसाधुजाणवो ७ उंकारादिक मंत्रसहदेवी प्रमुखनोजड घणाप्रकार नाजेवैद्यनीचि ताजेमूलआवे

सरस्सविजयं।जोविज्जाहिंनजीवईसभिरकू।७।मंतंमूलंविविहंवि

तेवैद्यकनीक्रिया विदलनउजेवो इतिवस्तु वमननीउ कारोकरी जाणवो विरेचननेप वालतेडाने काढवोउदक रवो मनसिलनोधूपलेइवोआ षिनोउषधअंजनउषधीसहि तस्नानकरियो रोगादिकेपीडिइंमाबापनोसमर वोआत्माकारोगनोप्रतीकारक राविवो

ज्जचिंतिं।वमणविरेयणधूवणित्तसिणाणं।आउरेसरणंतिगिछियंच ८५

तेसर्वजाणीनेपरिज्ञाइप्राहृआजाणीपच्च रकाणपरिहरइंतेनिस्संचारित्रीउसाधु जाणवो ८ क्षत्रियराजानमल्लादिकनागणसमूह उग्रकोटवालादिकराजपुत्रराजाननादे टीकाकरा मा० ब्रा ह्मणजा तिविप्ररूप

।तंपरिन्नायपरिव्वएसभिरकू।८।खत्तियगणउग्गरायपुत्ता।माह

वस्त्रादिकना भोगीप्रधाना दिक घणाप्रकारनाविज्ञानवंत सूतारचीतरादिकतेह नहीतेहसर्वेंइकहस्यातेहनोबोलेंश्लोक अनेंप्रजाजेतलाएहनेंप्रजोचाकिकरो एहवो तेविरूप्रकारे जाणीपरिवर्जे संयममार्गि

णभोइयविविहायसिप्पिणो।नोतेसिंवयइसिलोगपूयं।तंपरिन्ना

चालेतेसाधुजाणवो एहवोकसोआवात लगइ ८ जेगृहस्थयतांप्रव्रज्यादीक्षालीधइं छिकेदीठावेंपरचितथयावे प्रव्रज्यादीक्षाग्रहणली धेंगृहस्थपणोजेहसस्त तवे

यपरिव्वएसभिरकू।९।गिहिणोजेपव्वइएणदिठा।अप्पव्वईएणव

परिचित्तहोय ६ तेहनो इहलोकनां फलवस्त्रपात्रादिक नालाभनें अरथिइं प्रयोजनइं जेकोइसाधुसंस्तवपरिचयन करें तेभिक्षुसाधुजाणवो

उत्ता.सू.८८ संकयाइ विज्जा तेसिं इह लोइयफलठ्याए। जो संनिहिं न करेइ स

८६

१० शेय्यापाथरा आसनबाजठप्रमुष पाणीजलादिकना अन्नगोधूमादिकना भोजन घणाप्रकारसंबंधीआ खादिमखारिकषजूरप्रमुष स्वादिमलविंगप्रमुषवासते परगृहस्थइं

भिक्खू।१० सयणासणपाणभोयणं विविहं खाइमसाइमं परेसिं अ

अणदीधइं प्रतिषेध्यउ निरावस्यउजेअवस्य तेधांननदीदेवइं प्रतिषेध्यउ निर्ग्रंथ ११ जेतेगृहस्थऊपरिप्रद्वेषीरोसन करेंतेभिक्षुसाधुकहीइं ११ जेकांइथोडुआहारअ नादिकपाणीचोषानां धोयणप्रमुष

दाए पडिसेहिए नियंठे जे तत्थ न पउस्सई स भिक्खू।११। जं किंचि आहारपा

८६

घणेप्रकारें स्वादिकखजूरप्रमुषल विंगप्रमुषवासरइं स्वना घरथीपामीनइं जेसाधुतेलेंआहारादिकेंकरीत्रिविधमन वचनकायाइंकरीनेंअनुकंपइंबालक लानादिकनेंजेविभागनकरें तेभिक्षुनहीं आम्लवधिकी०मनवचनका

णं विविहं खाइमसाइमं परेसिं लधुं। जो तं तिविहेण नाणुकंपे मणवय

यादिसंवस्याबें जेणेंएहवेंउधिकोजेमहानु भावआहारादिकलहीपामीबालादिकनें जेसंविभागकरेंतेभिक्षुसाधुजाणवो १२ धाननोओसामणजवधान नोजिमणसाधुनें नाठोकांजीनोपाणीजवधान नोधोयणपाणीतेहांपाणीजाणवो

कायसुसंवुडे स भिक्खू।१२। आयामगं चेव जवोदणं च सीयं सोवीरजवो

हीलेंनहीजेपअ हरस्वनाघरथीआणी निहुबधिकं नलीपकबीकांजीतेपिंड रस निबलविरसनाधणीदरिद्रगृहस्थादिकतेप्रांतकुलक हीयइं तेहवेंघरेंआहारादिकनइंअरथिजाइछै तेभिक्षुसाधु १३ शुद्धविविधप्र हारपरिजनइं

दगं च। नो हीलए पिंडं नीरसं तु। पंतकुलाइ परिव्वए स भिक्खू।१३। सद्दा

नेकप्रकारनाकहइलोकनइं देवक मनुस्संबं तिमतिर्यंच बीहाम रुद्रामणाभयकरीनइं जे
विषें देवता संबंधीया न धिया नाकीधा णा भैरवभयनीकरणहा सो
रतथाउदारणमोटाबेतेह म

उत्रास्‌टाप विविहासवेतिलोएदिव्वामणुस्संयातहातिरिच्छा।भीमासयभेरवाउरा

तानेंझीषादिकव्यथाइं चरेंतेभिक्खुसाधक १४ वादविवादअनें जाणीनेलो ज्ञानदर्शनचा
नहीबीहेनहीधर्मध्यान हायइ॥ कप्रकारेनोदर्श कनेंविषें रित्रइंसहितछे
थीचलेंनहीसोदथइवि ननोमाहेमाहिकीधो

७७

ला। जोसोच्चाणवहिज्जइसभिक्खू॥१४॥वायंविविहंसमिच्चलोएसहि

षेदसंयमतेणइक ण स्त्रतत्त्वनोजलोछें सारबुद्धिनोधणीपरीसहउपसर्ग कषायादिउपसम्याद्या
रीसहितछइं परमार्थजेणइं नेंपराभवीरागद्वेषनिवारीसमता जेणेंकहितइंपिणबाध्या
भावेंसर्वजीवनेंआपसमानलेषवे उपजावेंनहीभिक्खुसाधक

ए खेयाणुगएकोवियप्पा।पन्नेअभिभूयसव्वदंसी॥उवसंतेअवहेडए

७७

कहीयइ १५ विद्यामादिज्ञानेआजी गृहस्थनोसंग शत्रुमित्र इंद्रियजीताछे बंधनादिकअंत
विकाररहितछे गनधारें नथीजेह जेणेंसाधइ रकषायादिपरी
नइ रहथीमूकाणाछे

सभिक्खू।१५।असिप्पजीवीअगिहेअमित्ते।जिइंदिएसव्वउविप्पमुक्के।

अल्पथोडेंकषायस्व लघुअसारबोलाआलरादि जेबाह्यनेंद्रव्यघर रागादिकरहितएकलोविचरेंते
जनादिछइंपरंघणाक कनोथोडोभोजनकरीसंयं प्रतिहृद्रव्यथकी भिक्खुसाधजाणवोएहवोक
षायनथीजेहनें मपालेंछे अनेंभावथकी लोकधर्मस्वामिअब्रमतेंकहेंछे

अणुक्कसाईलहुअप्पभक्खी।चिच्चागिहंएगचरेसभिक्खूत्तिबेमि १६

एभिक्खुनामाअध्ययनअर्थ १५ सांभल्योउमेंहेआउ तेणेंश्रीभगवंत एहवोकहे
लेशमात्रकहीछइं षावंतशिष्य इ ब्रह्मचर्य

सासिक्खुअज्झयणंसम्मत्तं १५।कयंमेआउसंतेणं।भगवया।एवमक्खा

इहविजइअध्ययनमिंभिक्षुसाधनागुणकह्या तेभिक्षुनागुणब्रह्मचर्यनइविषेंरह्यानेंजहुइं इणिसंबंधिइस्यो
तेमोब्रह्मचर्यसमाधिस्थानकनामाअध्ययनकहइछइ तेसांभलोअहोजंबूमाणीसावधानो

इहप्रवचननेविषे गणधरादि ऐश्वर्यवंत दशब्रह्मचर्यनीगुप्तिनेसमाधिना तेभिक्षु सांभली
निश्चे कह्याछेइ तेणे घातकस्थानअतिशयकरीछइ साधु सूत्रथी

उत्त॰सू॰१६ ये। इहखलुथेरेहिंभगवंतेहिंदसबंभचेरसमाहिठाणापन्नत्ता। जेभिक्खू

हियेधरीअर्थथि संयमबहुलघणोछेजेहनो आश्रवनोरुंधि चित्तनोसमाधिस्वरूप कायागो गो
की भावेछे जेहनो वोबहुलघणो णोतेबहुलघणोछेजे पव्याछे प
छेजेहने इन्द्रिमनवचन जेणे व्या

८९

सुच्चानिसम्मसंजमबहुलेसंवरबहुलेसमाहिबहुलेगुत्ते।गुत्तिंदि

वेइंद्रिय५ नवगुप्तिसेविवाथीगुप्तजणो अप्रमत्तअप्रतिबद्धविहा जंबूकहेछे तेस्थविरगण ऐश्वर्य
जेणइ पणब्रह्मचर्यतेहनोचारीये रपणोइविचरेगुप्तिपाले केहानिश्च धरादिकइ वंतते
वणहारसर्वलिंइ संयमकइ यइ णइ

ए। गुत्तबंभयारीसयाअप्पमत्तेविहरेज्जा॥ कयरेखलुतेथेरेहिं।भगव

८९

दशब्रह्मचर्यनीगुप्तिनेसमाधिनास्थान अतिसयवंत जेभिक्षुसा सांभली हियेधरीअ चतनेर
कह्याछेइ रीनेकरी भयतो सूत्रथी अर्थथी परणा
मइ

तेहिंदसबंभचेरसमाहिठाणापण्णत्ता। जेभिक्खूसुच्चानिसम्मसंजम

संयमघणोजे आश्रमननोरुंधि धर्मनइविषेएकाग्रचित्त गोपव्यांछइइंद्रि तपवाडिकरीगोपव्यो
हनेछइ वोघणोछेजेहन घणोछेजेहनैमनवच यपजेणेतेजा छेब्रह्मचर्यतेहनोसे
इ नकायागोपव्याछेजे णवोसाधु वणहार

बहुले।संवरबहुलेसमाहिबहुलेगुत्ते।गुत्तिंदिए।गुत्तबंभयारी

सदाकालज अप्रमत्तपणे विचरेछे तेयथास्त्री स्त्रीपसुनपुंसक पाटपाटसंथारादि सेवइंअ
गइ प्रतिबंधरहित साधु तिकहेछेइ नेसंसर्गेरहित करायनसाजवट तुमवेका
छे कुंडणादिआस याइकर्त

सयाअप्पमत्तेविहरेज्जा। तंजहा। विवित्ताइंसयणासणाइंसेविज्जासे

उत्रास्त्र।टाप

८९

तेनिर्ग्रंथसाधु नरीस्त्री मनुष्यणी देवांगनापशु बालीप्रमुख नपुंसकस्त्रीजेतेणेंसं सक्त सहित आश्रयस्थानक शयनपाटीयांप्रमुख आसण बाजवट पुंछणादिकसेवणहार भोगवणहार उंअइ तेनिर्ग्रंथसाधु

निग्गंथे।नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताइंसयणासणाइंसेवित्ताहवइसेनिग्गंथे

तेहवेशिष्यकहेछे तेकिमकहि छे तेजेछेतेहवोमाठुं वचन कहे छे आचार्य कहे छे ते माटे इतिवृत्त ते पवे बालककन्यादिकनीआस्थ नरकथाय्यादिकनीगाढि नथा जेहनेतेनिर्ग्रंथपनोनि स्त्री मनुष्यणीआदि पशुबालीआदिपंड क नपुंसकतेणेंसाहि तव ६

।तंकहमितेवा।आयरियाह।निग्गंथस्सखलुइत्थिपसुपंडगसंसत्ताइंस

पाटीयासंथारादिक बाजवटपुंछणादिक सेवतानेभोगवतानइ ब्रह्मचर्यनाधरणहारने ब्रह्मचर्यनइविषें एस्त्रीसेवोकेंनाअथवाछ कांक्षास्त्रीयोदिकनीवांछापब्रह्मचर्यपा

यणासणाइंसेवमाणस्सबंभयारिस्स।बंभयेरेसंकावा।कंखावा।विति

८९

पाम्यानोफलजस्येकेनहीत्यवइ एहवो अतिशयऊपजे तेचारित्रनोविनाश लहइपामइ उन्माद कामग्रहपरवशपणो पामेलहइ घणा काल

किच्छावासमुप्पज्जिज्जा।भेयंवालभेज्जा।उम्मायंवापाउणिज्जा।दीह

लगे रोगदाघज्वरआतंकऊतावलो घातकरेशूलादिकतेथाइवाते होइ कामनीअधिक इच्छाइ केवलीनोभाख्योश्रुतधर्मचारित्रधर्मतेथकीभ्र ष्टथाइ धर्मथीकीचूकें कर्मनाउदयथीतेसा धु तथाक्रियापात्र नरगेंजाइ तेह का रण

कालियंवा।रोगायंकंहविज्जा।केवलिपन्नत्ताउवाधम्माउभंसेज्जा।त

थकी निश्चें न स्त्रीनीजाति बालीआदिक नपुंसक तेणेंसंसक्तव्याप्त संथारादिक पुंछणसेविणहार भोगवणहारथाइ तेनिर्ग्रंथजाणि वोएतलेप्रथम वाक्य १

म्हायंखलुनोइत्थिपसुपंडगसंसत्ताइंसयणासणाइंसेवित्ताहवइसनिग्गंथे

उत्त॰ सू॰ टी॰ प॰

९०

१ नही निर्ग्रंथ साधु स्त्री एकलीने धर्मकथा प्रबंध वार्त्ता अथवा ते निर्ग्रंथ साधु ते किम किम इसु तेजेए यक
कर्णाटदेशनी नारी वस्त्रकरूप जाति कुल वेशइ जाणिवो इवो तिवारइं आचा इइ
सादिक थानी कहइ ण ल खइ

॥ २ ॥ नो निग्गंथे इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। आयरि-

यथा निर्ग्रंथ साधु निश्चइ करी स्त्री संबंधिनी कथा प्रबंधक हितां थकां नइं ब्रह्मचर्य वंतनैं पिण ब्रह्मचर्य नइं विषें एसी वडु कइ न्या इत्यादि

याह। निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका

कसं का बइ कांक्षा स्त्री नी वांछा ब्रह्मचर्य पाल्यानो फल ऊस्ये कइं न सीऊ इ एह वी संका एह वो अतिशइ स्फेऊ पजइ जेहनइं अथवा ब्रह्मचारित्रनो विनाश लहैं पामइं उन्माद कामनैं वा सो पर वस्य पणो आमइं

वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा। भेयं वा लभेज्जा। उम्मायं वा पाउणि

९१

घणा काल लगी रोग दाघ ज्वरादिके आतंक शूल प्रमुख उतावलो घातकरइ ते प्रकट थाइ केवलीनो भाष्यो श्रुतधर्म चारित्र थी भ्रष्ट थाइ

ज्जा। दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा। केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

तिणि कारण थकी निश्चइं निर्ग्रंथ जे साधु नही स्त्री संबंधिनी कथा कहे करें एतलें बीजा कहिनें विषें दोषलागें २ नही निर्ग्रंथ साधु स्त्री जाति संघातिइं बाजवट प्रमुख आसनें

। तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ ३ ॥ नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं स-

एकठो विचरणे सील वइसी उवइसि हं प्रहर त्रिणि कल्ये पछे तेस्थानकें बेसें ऊ आ पछें घणी रकावान करे एसा धु सा मा समकारे स्त्री नो परिहार एहवो जइ तेनिर्ग्रंथ साधु कहीयइं ते जाणवो ते किमा किस्ये हेते जे पमकहे ठेउ मेति वारें आचार्य आनुरू कहइ इव इ ते सां भलो हे शिष्य

न्निसिज्जागए विहरित्ता। हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। आयरियाह

निर्ग्रंथसाधुनें निश्चइं स्त्रीजातिसंघातें आसनप्रमुषगतग्रामनें एताव विचरनाधकानें आस ब्रह्मचर्य
नाह्मीइं एकवाबइठानें गादिकथकी वंतनें पिण

निग्गंथस्स षलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागयस्स ॥ विहरमाणिस्स बंभयारि

ब्रह्मचर्यनइं पासनोकरवोते स्त्रीनीवांछात एब्रह्मचर्यपाल्यानोफ अतिशयस्युं एहवो जेदेहेवारि
विषे संका कांक्षाक लउपजेकेंनहीतेइए उपजेअथवा अनेविनाश
हाइ एवीसंका लहेपामे

स्स बंभचेरे संका वा कंषा वा विइगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा भेयं वा लभे

अथवा उन्मादकामनो वासउपरवशाप घणाकाललगे रोगदाघज्वरेंआतंकतेशूलादि केवली
णोपामइं कसोयइं भाष्या
श्रुतधर्म

ज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा केवलिप

चारित्रधर्मथीभ्रष्टथाइं धर्मथाइ ते एकारणथकी नहीनिर्ग्रंथ स्त्रीजातिसंघाते आसनादिकनें
के निश्चइं साधु विषेएकठोबइस
नोविकोविदरइ

न्नत्ताउ धम्माउ भंसिज्जा तम्हा षलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागए

एतलेंत्राजो नहीनिर्ग्रंथसाधुस्त्रीनीजाति दृष्टिदेवेंजेआग चीतआतेमननें समस्तप्रकारेंजोय
वाफिजाण ३ नाआंषिप्रमुषइंद्रियजोवें जानेंमननेंहरें हर्षउपजावेंतेम णहारअथवा षोतें
वी तेमनोहर नोरमएहानेआ देषणहारपोतेअंत
लोकणहार तरितिथाइं अतिशं

विहरिज्जा ॥ ३ ॥ नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आ

यस्युं रूपादिकनो तेनिर्ग्रंथसाधु तेकिमकिसेंदेतेंजेएहवो आचार्यगुरुकहे निर्ग्रंथसा
चिंतवणहारअथ कहेछें तुमेतिवारेंआ वेंयवा धुनेंनिश्चे
वाघणोदेषणहार
हइ

लोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमिति वे आयरियाह निग्गं

निर्ग्रंथसाधुनें निश्चइं स्त्रीजातिसंघातें आसनप्रमुषगतआमनें एतावता न्हीइं एकवा बइठवानें । विचरना थकानें आस गादिक थकी ब्रह्मचर्य वंतनें पिण

उत्त० सू० टी० प निग्गंथस्स पलुइन्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागयस्स ॥ विहरमाणिस्स बंभयारि

ब्रह्मचर्यनइं विषे पासनो करवोते संका स्त्रीनी वांछाते कांक्षा कहीइं एब्रह्मचर्य पाल्यानो फल ऊप्यें केंनहीं होइए एवी संका अतिशय स्फे एवो ऊपजें अथवा जे देहें धारि नो विनाश लहे पाम

८१ रस्स बंभचेरे संकावा कंखावा विविकिच्छावा समुप्पज्जिज्जा भेयंवा लभे

अथवा उन्माद कामनो वा सउपरवश पणो पामइं घणा काल लगें रोगदाघज्वरें आतंक तेशूल दिक रोग इं केवली नो भाष्य श्रुतधर्म

ज्जा उम्मायंवा पाउणिज्जा दीहकालियंवा रोगायंकं हविज्जा केवलिप ८२

चारित्रधर्मथी भ्रष्टथाइं धर्मथी के तेह कारण थकी निश्चइं नहीं निर्ग्रंथ साधु स्त्रीजातिसंघातें आसनादिकनें विषे एकठो बइस तो बिको विचरइ

न्नत्ताउ धम्माउ भंसेज्जा तम्हा पलुनो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागए

एतलें त्रीजी वाडि जाणवी ३ नहीं निर्ग्रंथ साधु स्त्रीनी जाति नामाविप्रमुष इंद्रिय जोवें दृष्टिं दीठें जे आगलानें मनने हरे तेमनोहर चीतव्यां थकां मनने हर्षऊपजावें तेमनोरम एहवा नो आलोकण हार सम्यग्प्रकारें जोयण हार अथवा थोडा देषणहार दीठो अनंतरि तिथाइं अतिशय

विहरेज्जा । ३ नोनिग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आ

यस्फ स्फुपादिकनो चिंतवणहार अथवा घणो देषणहार होइ तेनिर्ग्रंथ साधु ते किमकिसे हेतें जे एहवो करतें ब्रह्मे तिवारें आ आचार्य गुरु कहे बेंयवा निर्ग्रंथ साधुनें निश्चे

लोइत्ता निज्झाइत्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमिति वे आयरियाह निग्गं

स्त्रीनीजातिना नेत्रादिकइंद्रिय दीठे देषणहारमनो हरमननेंहरेतेमनोहर चीतवेंनमननेंरंगऊपजावेतेमनोरम एहवाइंद्रियआलोकताने दीठा सम्यक्प्रकारेंअथवाघोंघो जोइताने

उत्रा०सू०ट०प यस्स खलु इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स नि

८२

अनेतरखीतवाने अथवा जोईमरादिनादृष्टिमांडीजरादिताने ब्रह्मचर्यवंतने पिण ब्रह्मचर्यनइ विषे एजीउक्षइनहीएसंका काषातेइंद्रियजोवानीवांछा एहनोफललक्षणेकेनहीकइ

ज्झायमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा

अतिशयस्फ उपजेंअथवा भेदचारित्रनोविनाशलहे पामे कामनेंवसेउन्मादपरवशपणो करीयें तेपामें लहइ घणाकाललगें रोगरूपद्रव

समुप्पज्जिज्जा भेयं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रो

८२

दाघज्वरतथाआतंककरीयें शूलप्रमुषकरइ केवलीनोभाष्योजेश्रुतधर्मचारित्रधर्मथी भ्रष्टथाइ धर्मथाचूकें तेहकारणाघिकीनिश्चइ नहीनिर्ग्रथसाधु

गायंकं हवेज्जा केवलिपन्नत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे

स्त्रीनीजातिना नेत्रप्रमुषइंद्रिय दृष्टिंदीठेदेषणहारनामननेंहरइ चीतवउजमननें हर्षऊपजावइ एहवाआलोकेंसम्यग्प्रकारेंजोइअथवाघोंघोजोइ दीवाअनंतरिचीतवेंअथवादृष्टिमां

इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइज्जा निज्झा

नीनेंरहइ ४ नहीनिर्ग्रंथसाधु स्त्रीनीजातिना ऊड्यपाषाणादिकेंरचिव्यउतेहनेंआंतरैअथवावस्त्र नोपरियवनेंअंतरेंपटंतरइ नहातेमाटीनोपाकीईटभीतिनेंआंतरें

इज्जा। चउत्थं नो निग्गंथे इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा दूसंतरंसि वा भित्तिंतरं

जोगनेअवसरेकोइलनी परिशब्दबोलनी जोगनेअवसरेकलहा दिकनेविषेरोइवोतेनोशब्द पंचमरागादिकक्रु काररूपगीतशब्द कहकहादिकहसि वानाशब्दधमधमकार करी जोगने समनइ कोधप

उत्तराध्यय सिवा॥कूइयसद्दंवा॥रुइयसद्दंवा॥गीयसद्दंवा॥हसियसद्दंवा॥थणिय

गाजिवाजिवारूपउनाशब्दजेहनो भर्तारविदेशगयोछेतेविरहिणी स्त्रीआक्रंदशब्दनेकरेतेप्रतिइ गुणबोलीरनइविलाप शब्दकरे एहवाशब्दनोसांभ लणहारहुइ तेनिर्ग्रंथ तेकिम किम्येदे तिस्वामी

८२ सद्दंवा॥कंदियसद्दंवा॥विलवियसद्दंवा॥सुणित्ताहवइसेनिग्गंथे॥तेकह

इमकहेछेउमे तिवारेंश्रीआचार्य गुरुकहेछइ निर्ग्रंथसाधनेनिश्चे स्त्रीजातिनांपाषाणादिकनाकु धनाअंतरभीत्तिनेंविषे व स्त्र

मितिचे॥आयरियाह॥निग्गंथस्सखलु॥इत्थीणंकुड्डंतरंसिवा॥दूसंत

८२

नीपरियचिनां विचालाआंतरे तेहनेंविषइ माटीनापाकीईटनी भीतिनाविचालानें विषे जोगनेंअवसरेकोइल जिमशब्दकरवो जोगनेंअवसरेकल हादिककरतारोइवो पंचमरागादिकक्रु कारिरूपगीतना शब्द

रंसिवा॥भित्तिंतरंसिवा॥कूइयसद्दंवा॥रुइयसद्दंवा॥गीयसद्दंवा॥ह

कहकहादिकहसनादसह सिवानाशब्द जोगनेंसमैक्रीडागा जिवारूपशब्दतथा जेहनो भर्तारविदेशगयोते स्त्रीनोआक्रंदशब्द डणबोलीरनेंविलाप करें तेहवाशब्द सांभल नारसाधनें

सियसद्दंवा॥थणियसद्दंवा॥कंदियसद्दंवा॥विलवियसद्दंवा॥सुणि

हुइ तेनिर्ग्रंथसाध तेकिमाकिम्यतेस्वामी इमकहेछेउमे तिवारेंश्रीआचार्यगुरु कहेछइ निर्ग्रंथसाधनें स्त्री जाति नांपा

त्ताहवइसेनिग्गंथे॥तेकहमितिचे॥आयरियाह॥निग्गंथस्सखलु इ

पाणादिकनाऊघ्नान्तरवि वस्त्रनीपरियचिनोक्विाले मादीनीपाकीईरि भोगनेअवअरेको भोगने
वालानइविषइ आंतरोतेहनेंविषे नीजीतिनाक्विा इलजिमराध्रकारि अवय
ानइविषइ बो रइ

 ड्डीण कुड्डुतरंसिवा। दूसंतरंसिवा। भित्तितरंसिवा। कुईयसद्दंवा। कुईय

कलहादिकरतो पंचमरागादिक करकसादिपडदादसूंका भोगनेसमेंकीधा जेस्त्रीभर्त्तारविदेश
थकारोइवो ऊंकाररूपगीत हसिवानाशब्द गाजिवारूपशब्द गयोतेस्त्रीनुंआक्रं
नाशब्द तथा दशब्द

सद्दंवा। गीयसद्दंवा। हसियसद्दंवा। थणियसद्दंवा। कंदियसद्दंवा। विल

गुणबोलीरनेंविला सांभलतापकानें ब्रह्मचर्यनाधणीनें ब्रह्मचर्य पसाभलोक सर्विजावि अ
पकरेएहवाशब्द ऊइ पिण नेंविषे इतांएहसंका लाभचांभ ण
भोजेद लवानीवा मां
बी

वियसद्दंवा। सुणमाणस्सा। बंभयारिस्सबंभचेरे। संकावा। कंखावा। विवि

भर्लिलाजकसोते एहवोअतिशायसंक्रं भेदचारित्रनोविनाश कामनेंवसिउन्मादपरवश घणोकाल
ऊप्मेकेना ऊपजें अथ तेलहेंपामे पणोपामे लगें

कि्छावा। समुप्पज्जिज्जा। भेयंवा। लभिज्जा। उम्मायंवा। पाउणिज्जा। दीहकालि

रोगदाघज्वरआतंकशूलादिकउरत केवलीनोभाष्योश्रुतधर्मचारित्रधर्मथीभ्रष्ट तेकारणेथकी न
ऊपनोमाहरें तेऊइं थाइं धर्मथीहुकइं खलुक-निश्चे ह।

यंवा। रोगायंकंहविज्जा। केवलिपन्नत्ताउधम्माउभंसिज्जा। तम्हाखलुनो

निर्ग्रंथसाधु स्त्रीनीजाति पापाणादिकनाऊम्भनावि वस्त्रनीपरियचिना मादीनीपाकीईटनी भोगनं
संबंधी चालानेंविषे विवालानेंविषे भीतिनाक्विालानेंवि अवय
षै रेकोइ

निग्गंथे। इत्थीणं। कुड्डुतरंसिवा। दूसंतरंसिवा। भित्तितरंसिवा। कुईयस

लनीप भोगनेविषेकलहादि पंचमरागादिकजं कहकहादिकंठगयेरा भोगनेअवसरिकीक्षा जेहनो
संशब्द ककरतानोशब्दो कारकरूपगीतनाशब्द टकरिहसिवानाशब्द गाजनाशब्दरूपउभाशब्दा भर्ता
करिवो शब्द शब्द रिवि

उत्रा॰सू॰टा॰प दृवा कूइयसद्दंवा गीयसद्दंवा हसियसद्दंवा थणियसद्दंवा कंदिय

देशगयेतेस्त्रीनो सुणबोलीबोजीने भोगलतोथकोविचरेय नहींनिग्रंथसा स्त्रीनीजाति
आक्रंदशब्द विलापकरेतेशब्दा वर्त्तइ एतलेपांचमीवा ५ धु संबंधिजेरह
शब्द निजाणवी स्यपणइवि

८५ सद्दंवा विलवियसद्दंवा सुणमाणो विहरिज्जा ॥५॥ नो निग्गंथे इत्थीणंपु

पनोअनुभवि थेंजूवटादिक अणुसरणसारचिंतव तेनिग्रंथसा तेकिमकिस्येहेतइ तिवा
वासेविवउरह भोरमवोते णहार वारंवार करइ धुनइ जेहवोकसेबो रहइस्त्री
स्यपणेस्त्रीसा हता तेकहेगुरु आचा
यगु

व्वरयं पुव्वकीलीयं अणुसरित्ता हवइ से निग्गंथे तंकहमितिचेआ ८५

रुकहइ निग्रंथसाधुनेरख तिसाथें रहस्थपणेविषेंनाअनुभादिवा अणुसरतानेंबी
बई छुनिश्चइ स्त्रीना रहस्थपणेस्त्रीसाथेंजूवटादि तवताथकानें
रामतिनोरमवो

यरियाह निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलियं अणुसरमाण

ब्रह्मचार्यवंतनइखुण ब्रह्मचार्यनइवि रवावासंसारिवानी एणेअनुस्यइफल आतिशा
साधुने पइसंभाव वाबाअथवास्त्रीनी कुलोकइस्यकेंनही यसुउप
कहितापसंकाकं वाबा रवेछप

स्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जि

जइ भेदचारित्रनोविना अथवाउन्मादकामनेंवसिप घणाकाललग रोगदाघज्वा
शलहे पामइं थोपरवशपणोपामे ५ रआतंकरुठप्र
लादिकऊइ

ज्जा भेयं वा लभेज्जा उम्मायं वा पाउणिज्जा दीहकालियं वा रोगायंक

पामइ केवलीनो भाख्योऊत धर्म चारित्र धर्म थी ॥ अथवा धर्म थी चूकै तेहका थका स्त्रीरण बकी निश्चइ नही निर्ग्रंथ भा

उत्रा॰सू॰टा॰प हविज्जा। केवलिपन्नत्ताउ धम्माउ भंसिज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थी-

९८

तिस्यं गृहस्थपणे विषे नो अनुभवि संसार एणहरवि तेनिर्ग्रंथ साधु एत नही निर्ग्रंथ साधु गृहस्थपणे स्त्री जाति साथे नवण हार हेवे ते ब्रह्मचारी ह कगला तेटीपइ जूवटादि रमिवो

णं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं अणुसरेज्जा॥ हवइ से निग्गंथे। जे नो निग्गंथे प-

धननो घणो दीपा अन्नादि आहार णहार तेनिर्ग्रंथ तेकिम कि सेस्ते तिवारि आचार्य कहइ वि एहवो अहार जीमणहारऊइ साधु इमकहेबो आचार्य कहइ बइ

णीयं। आहारं आहारेत्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे। आयरिया ९८

निर्ग्रंथ साधु निश्चयइं घृतादिक एहवउं पाणी अन्न आहार करतां नइ एहवउ ब्रह्मचर्यवं तेहनइं नइ दूध इलीअन अन्नादिक जिमता नइ नइ नइंगुण

हा। निग्गंथस्स खलु पणीयं। पाणभोयणं आहारेमाणस्स। बंभयारिस्स बं-

ब्रह्मचर्य न एहवउ आहार करउ कंखा वासना आहार नी वाछा थाय स्त्रीनी एहवउ आहार परिहरइ फल कथउ ते ब्रह्मचारी विना अनिथ्यपणउं ऊपजइ जतिदश चारित्रनउ विनाश कहइ शांके एसकी ॥ दिवा ॥ इच्छइ के नही बालहइ पामइ

भचेरे संका वा। कंखा वा। वितिगिच्छा वा। समुप्पज्जिज्जा। भेयं वा लभेज्जा।

कामनइ वशि इच्छा आनंदकरी अथवा दीर्घ घणा काल लगी ॥ रोगादाघ ज्वर तवा आतंक शूल उपजइ ते दुःख पामइ ॥ श्री केवली नउ भाख्य उक्त धर्म चारित्र ॥ इषस्व सघल उपामइ

उम्मायं वा पाउणिज्जा। दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा। केवलिपण्णत्ता

उत्रा सू०टा० प

८५

धर्मनिह थकी अष्टथाइ धर्म तेहकारणथ नहीनिर्ग्रंथ सरसटबके ऊरतेए आहारकरेएतले
थीह्रकइ कीनिश्चइ साधु रवोआहारअलादि सातमीवाडि ७
क

उधम्माउ भंसिज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहारं आहारेज्जा। ७
नहीनिर्ग्रंथ पुरुषनेंकवल३२ स्त्रीनेंकवल२८ नपुं तेहनेंनिर्ग्रंथसाधुयतीक तेकिमकि
साधु सकनें२४ एथीअधिककवलपाणीनो हाइ स्येंनेंस्वा
भोजननोआहारनोकरणहारनेंबइ मी इमकहा

नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गंथे तं कहमि
वो तिवारिंआचार्यकह निर्ग्रंथसाधुतेहनेंनिश्चें कवल३२प्रमा पाणीजापवाणीआदि भोज
करैबइ णअतिक्रमीनें नअन्नादिकआहारकरतानें
जिमताथकानें

ति चे। आयरियाह। निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोयणं आहारेमा

८७

ब्रह्मचार्यनाधणीनेंपुण ब्रह्मचर्यनेइ मात्राधिकआहारनां वासिद्ध्यादि एहवाआहारपरिहरे तेहना
साधुनें विषे केंनाएसंका करवाअ कनीवाछा फलकह्यातेऊपजे किंवा
धिकआहारनीअथ नहोइ अतिशयफ

ण्स्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा। विइगिच्छा वा समुप्पज्जि
ऊपजें हियमांहिइं भेदचारि कामनेंवसिइं उन्माद परवश घणोकाललगें रोगदाघ
त्रनो विनाशतेलहइपामेंइब पणोपामइ ज्वर तथा
इ

ज्जा भेयं वा लभेज्जा। उम्मायं वा पाउणिज्जा। दीहकालियं वा। रोगायं
अतिकष्टआदिक केवलीनोभाख्योकृतधर्म अष्टथाइ धर्म तेहकारणथ नहीनिर्ग्रंथसा
तेहवोइपामइं चारित्रधर्म थीह्रकइ कीनिश्चइं धु कवल३२मा
नअतिक्रमीउल

कं हविज्जा। केवलिपण्णत्ताउ धम्माउ भंसिज्जा। तम्हा खलु नो निग्गंथे अइ

छीपांणी ज्ञाववाणीयादिकेजनजन्नादि क जिमेएतलेएन्मावमीवाफि ८
नहीनिर्ग्रंथसाधु शरीरवस्त्रपात्रउपगरणादि तनिर्ग्रंथ ते कनादिको धोइवा समारिवा शृंगारादिशोभा साधु कि तुपांमी करणहारकइ म

उत्ता०सू०८।८ मायाएपाणभोयणं भुंजिज्जा।८ नोनिग्गंथे।विभूसाणुवाई हवइसेनिग्गंथे।तंक

किस्येहेतिइ तिवारइश्री आचार्य निग्रंथसरि शरीरवस्त्रादिकने स्नानादिकेकीधो स्त्रीजा
एहवोकहे गुरुकहइवइ निर्ग्रंथ शृंगार सोभाकरवी वेसरीरशोभाजे तिनइ
बो साधुने लइ अभि

८ ८ हमितिवे।आयरियाह।निग्गंथस्सखलुविभूसावत्तिए।विभूसियसरीरेइत्थि

लाषकरवा प्रार्थनाकरवाजोग्यकइ तिवारपछीलंअलंकारतेब्रह्मचारीनें स्त्रीनीजातिअभिल
षीता प्राथीताने

जणस्स अहिलसणिज्जे हवइ।तउणंतस्स इत्थीजणेण अहिलसिणिज्जमा ८८

ब्रह्मचार्यनाधरणहार यनइवि विभूषातकरइ करवावाविभूषादि एविभूषाअणकीधइ स्याप
नइ साधुनेपुणब्रह्मचा ये नकरुएसंका कनास्त्रीनीवाछा तेनोफलतेसेयेकेनसी हवाचे
ऊइअतिशय नमाऊ

णस्स।बंभयारिस्स।बंभचेरे संकावाकंखावा।वितिकिच्छावासमुप्पज्जिज्जा।ते

पजे अथवाभेदवारि कामनेंपरवसिइकरीउन्माद घणाकाल रोगदाघज्वरआ केव
ग्नोविनाशलहे परवशपणोपामइ लगे तेकथ्यलसमुपपी लिना
पामइ माहोइपामें माष्फे

यंवालभेज्जा।उम्मायंवापाउणिज्जा।दीहकालियंवा।रोगायंकंहविज्जा।के

ऋतधर्मचारित्रधर्म धर्मथाभ्रकइ तेकारणथिको नहीनिर्ग्रंथ शरीरवस्त्रादिकनो
तेसाधुनाधर्मथकी निश्चेकरी साधु शृंगारसोभानोकर
भ्रष्टथाइ णहारकइ पनवमोवा

वलिपन्नत्ताउधम्माउभंसिज्जा।तम्हाखलुनोनिग्गंथेविभूसियवत्तिएसेज्जा। कि

नहीं निर्ग्रंथ नाताक्चन रूप कटाक्षादि स्त्रीसंबंधि रस मधुरादिक गंध स्रगंधादि स्पर्श कोमल होइ
ते साधु तादि मनोहर ने विषे मन वचन कायाइं करी अनुपाती आश्रयवंत नार सवता
तात

उत्ता सू ३ टा० । णो निग्गंथे सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई हवइ । ... हवइ से निग्गंथे । तं कहमिति चे
ते निर्ग्रंथ साधु ते किम किस्या हेतिइं तिवारइ बोलइ आचार्य तेहनें निश्चे नहीं शब्द रूप रस गंध
कहीयइं स्वामी एहवो कहइ छै ए गुरु कहइ छइ निर्ग्रंथ कहीयइ साधु करी फरस नें विषे मन वचन
काया इं करी आश्रयता

९४ ९

इ से निग्गंथे । तं कहमिति चे । आयरियाह । निग्गंथस्स खलु सद्दरूवरसगंधफासा
तें प्रवर्त्तता ब्रह्मचर्यना धणीनें ब्रह्मचर्यनइं एस वउ कइं शब्दादिकना इंद्रियना विषेपरि हस्पाफ
नें गुणसाधुनें विषें नाएसंका अथ स्त्रीयादिक लकस्ला तेह से केनहीं तूइ
नी वाछा ते करवा अतिशय संकल्प एहवो ऊपजे

णुवादियस्स बंभयारिस्स । बंभचेरे संका वा कंखा वा । वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा

९० ०

भेद चारित्रनो विनाश कामनें विसिइ उन्माद परवश घणा काल रोगदाघहर तथा आतंक अ
ते लहइ पामइं पणो पामइं लगें ल प्रमुख पीडा प्रमुख थाइं

भेयं वा लभेज्जा । उम्मायं वा पाउणिज्जा । दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा ।
केवलीनो भाख्यो श्रुतधर्म भ्रष्ट थाइं धर्म ते कारण थकी नहीं निर्ग्रंथ रूप शब्द रूप रस
थकी साधु थी हुकें । निश्चइं साधु गंध फरसनें विषे
मन वचन कायाइं

केवलिपन्नत्ताउ धम्माउ भंसिज्जा । तम्हा खलु नो निग्गंथे सद्दरूवरसगंधफासा
करीनें अनुसार इणि प्रकारे एहवो दश ब्रह्मचर्य समाधि स्था श्लोक आगलि कहीज
सेवणहार होइ एतलें नक होइ भवंति वइं इणें अर्थइं अधिका ता पद्य रूप ते यथा वि
दशमी वाकि १० रइ ति महपेछइ

णुवाई हविज्जा । दसमे बंभचेरसमाहिठाणे हवइ भवंति । एत्थ सिलोगो ।

आदिकतणेंरहित ते करइ बइं जंविविक्त एकांतभूतनिराव रहित विवर्जितअकालेवाधि ब्रह्मचर्यनाराषि जेसाध
सणतारी स्त्रीआदिकेरहितभू वागभुयनइआव्यऊजेस्त्रीजन वानअर्थेप्रयाज एहवोआ
नाकालकार्यादिकेआवीस्त्रीजे- तेणेइवृषिकीपुरुकादिकेरहित ने जयउपा

उत्रासूत्र।। तंजहा।।जंविवित्तमणाइन्नं रहियंइथीजणेणय।।बंभचेरस्सरक्कणा।।आलं

अयसेवइ अति मनअंतःकरणनेंअतिशय विषेरागनीघणोइ ब्रह्मचर्यनेइविषे तस्त्री
१०७ सयस्तउ १ इकरनेंइषऊपजावे छिनीकरणारी रातोथकोसाध नीक
थाए

थेउनिसेवए१मणपल्हायजणणिंकामरागविवहणिं बंभचेररउसिक्कु थी

स्त्रीमुषथेइमाअरीबोइ साधिइपरिचयस्त्रीस्योकरि स्त्रीजातिसाथेएकवा ब्रह्मचर्यनेइविषे
त्यादिवर्जेइंपरिहरइं २ वोएकइंआसणिबइसवो बइसीकथाकहिवी रातोथकोसाध
वारंवार

कहंउविवज्जए।२।समंचसंथवंथीहिं।संकहंचअभिक्कणं बंभचेररउभिक्कू १००

निश्चसदापरिवर्जेइ अंगसस्तकादिप्रत्यंगस्तनबाहप्रमुष मननेंकवइएहवोमो ब्रह्मचर्यनेइविषे
परिहरइ ३ संस्थानकहिनेविषेसाघनोघापिवो हवो बालवो वांकोआ रातोजेसाधतेस्त्री
षिजोइवो तेनकरइ नो

निश्चसोपरिवज्जए।३।अंगपच्चंगसंठाणं।चारुल्लवियपेहियं।बंभचेररउथीणं

दृष्टिग्राह्यहिवायोगऊउऊतो कूजितशब्दरुदितशब्दगीत हसितशब्दस्तनितशब्दक्रंदित ब्रह्मच
पणिविशेषेंपरिहरेंतेसाध ४ नाशब्दएपहिलाकह्यातिम शब्द पहिलानीपरइ. र्यनेइ

चक्खुगिज्झंविवज्जए।४।कूइयंरुइयंगीयंहसियंथणियकंदियं।बंभचेर

विषेरातोसाध श्रोत्रकाननेंग्राह्यहिवायो जेवयादिकोना स्त्रीनामरारथी स्त्रीनेंऊपमभागरात
तेस्त्रीनो ष शब्दविवर्जेइपरिहरइ ५ ऊपनीरतिप्रतिस्त्रीनामाननइ आश्चिप्यकीनेंसह
टालीनेंएहवोगर्वस्त्रीसाथेजिमा सातकारित्रासपमा
आलनइ एकवाबहुवा. मिके

रउथीणं।चक्खुगिज्झंविवज्जए।५।हासंकीडुंरयंदप्पं।सहसाविन्नीसियाणि

ब्रह्मचर्यनिंद्दं विषिं द्दढ घको एसर्व सर्वि लाकी कांचा नविन ही सरसर्व कं जरतोल्ल उनावलो
साधु स्त्री ज्ञातिनो कहीइ तुल ६ ल स्मनइ पाणी स्मतिशय

उत्रा सू०टा०प॥ यावंच बंभचेररउइ णं नाणुचिंते कयाइवि ॥६॥ पणीअं भत्तपाणं तु खिप्पं मय

स्पतं मदनेव ब्रह्मचर्यनइ विषे निसमदा अतिशय स्नि धर्मइति लाधं पामीनिर्दोषी
१०२ धारेएस्वा रातो साधु परिवर्जेक हितापरिहरे स्त्रीने घकी मानो पेत भ्राप्त
तेसाधु कहींइ ७ रकालिइ

विवड्डणं । बंभचेररओ भिक्खू निच्चसो परिवज्जए ॥७॥ धम्मं लद्धं मियं काले जं

संयमनिर्वाहिनणीचि मात्राप्रमाणप्रतिक्रमक ब्रह्मचर्यनिंद्विषेरातो संघरवस्त्रादिकेविनूषा
तेनेअंमस्वस्थचित्तसहित क्षमाने जोजनकरइपे ब्रह्मसदाजे साधु ८ सोभा शृंगार वस्त्र परिद
परराग हेषवर्जितहो लवादि जोनकरे रइ

त्तं पणिहाणवं । नाइमत्तं तु भुंजिज्जा बंभचेररओ सया ॥८॥ विभूसं परिवज्जिज्जा १०२

शरीर संविनरवनखेप ब्रह्मचर्यनइविषइरात शृंगारविलासनइविषइ शब्दरूप गंध स्पर्शनोप
रिमंडनसमारिवत्र उधक जनिक्षा साधु धरइ नदीकरइ नदीक रगंधमुगंधादिक

सरीरपरिमंडणं । बंभचेररओ भिक्खू सिंगारत्थं न धारए ॥९॥ सद्दे रूवे य गंधे य

रसमधुरादिक फरस एपंचप्रकारे कामनागुण तेनित्यसदा काल इंपरि आलायउपाश्रयस्त्री
सुकोमलादिक कामनासाधनत्र वर्जइपरिहरइ

रसे फासे तहेव य । पंचविहे कामगुणे निच्चसो परिवज्जए ॥१०॥ आलओ थीज

जनइंव्या स्त्रीनीकथामनन इहरती तथापरिचय स्त्रीसंबंधिउत्रा तेस्त्रीनाइंद्रियनेअनिलाडपमु
पर्यंका॥ सगाइंएकठाबइसिवत्र षऽनइदेषवत्रं

णाइन्नो । थीकहा य मणोरमा । संथवो चेव नारीणं तासिं इंदियदरिसणं ॥११॥

कूजित रुदित गीतना कामनोशब्दसांभलवो एकठोजिम्योअसणइ सरसघृतादिकटबककरचूइते
शब्द॥ शब्द॥ शब्द एकवारवइठो ध्यानअनइपाणी

उत्त।सूटीप कूइयंरुइयंगीयं। हसियंभुत्तासियाणि य। पणीयंभत्तपाणं च
अरकेवलादिकमात्रातिक्र शरीरनीशोभानइअर्थइंग्रा इंद्रीयपंचनाकामभोगदुः डुरुषनइ
१०२ मीनइपाणीभोजनतकरिवो नारणसारपरिहरीवा षइकरीपीसकीयइ॥ अनइस्त्रीज

अइमायंपाणभोयणं ॥१२॥ गत्तभूसणमिट्ठं च। कामभोगा य दुज्जया। नरस्सत्त
आत्मागवेषी तालपुटविषसरीखातेविष इखइजीवीसकीयइ एहवा
वइरागीवइ घाक्षइएकवारमरीइतिम इंद्रियसंबंधियाकामभोग नित्यसदाअनिशयस संकाना
तेहनइ एसेव्यासंसारधारइ १३ उपरिहरइ

वेसिस्स। विसंतालउडं जहा॥१३॥ दुज्जए कामभोगे य। निच्चसो परिवज्जए। संका १०२

स्थानकजेसर्वब्रह्मचर्यनइ परिहरइएकाग्रचित्तनअधणीनदीव। धर्मनाआरामवननीपरिइधर्मारामइः इनिवंतस्य
शंकस्थानेतेणा विरिमिथ्यावअज्ञानतउषभिवलएवमा वसंतापतृष्णाव्यानेमीतजकरिगाथिकी स्वचित्तवंत
दिकदोषनअविनाशीरहइ अनिष्टफलदेवाघकीएहवोजवरइसंय धर्मनइवि०
ममार्गिविवरइभिक्षुसाधु

ठाणाणि सव्वाणि। वज्जिज्ज पणिहाणवं ॥१४॥ धम्मारामे चरे भिक्खू। धिइमं धम्म
ज्योतिषी
वइववर्ग्री धर्मनेविषइरमेएहवासा ब्रह्मचर्यनइविषसमाधि वेतीक भवनपती धागां यक्ष राक्षस
वणहर क्नेविषरातोनिर्तीविंद्रे चेतनइढएहवोवनचारी सा इआजातिमा धर्
शा॥ ध्क

सारही। धम्मारामरए दंते। बंभचेरसमाहिए ॥१५॥ देवदाणवगंधव्वा। जक्खरक्ख

किंनरपंचेतर एसर्वेब्रह्मचर्यना नमस्कारथणा कोनरजनइदुःकरजेएकर एब्रह्मचर्यइकरइतेब्रह्मचर्यरूपी
नीजातिमाणवी धारणहारअनिइ मकरइसवइ रइसाधुमाकेवलनइब्रह्मव मतधर्मथिरपनीवीइजेकंपावी
धर्मनिइ नसकीइतथात्रिकुंकालिकालइ

सकिन्नरा। बंभयारिं नमंसंति। दुक्करं जे करंति ते ॥१६॥ एस धम्मे धुवे णितिए

निरंतरवइ इवि जिनश्रीवीतरा अतितकाल महाविदेहक्षेत्रनेविष तिमआगामियइकालइइघणाइजीवसीझस्यइ
रहकहीइनथी गइदेषाम्रत्र इमीधासिद्ध वर्द्धमानकालिएणइ सीजयाजीरनइएहवत्रुइंकहतजीसुधर्म्मस्वा
जेह ध्या ब्रह्मचर्यइकरीनइसी मीजंबूप्रतिइकेहइबइ॥
फइबइ

उत्रा सू० टा० प सासए जिणदेसिए सिद्धा सिज्झंति चाणेणं सिज्झिस्संति तहावरे त्तिबेमि ॥ १७

एहब्रह्मचर्यसमाधिस्थानकअध्ययनोअर्थकह्योते
१०२ ज्ञानात्रयीसर्वइअध्ययननिब्रह्मचर्यनीगुप्तिकहीते जेकोइएवत्रादीक्षालीधीछइ अनवारि मुनीसो ज्ञान
पापस्थानकवर्ज्यइज्ञानहसणीसतरमउंपापश्रम जेणइएहवत्रनिर्ग्रंथसाधु त्ररूपधर्म सजीनइ दर्श
णीयध्ययनकहइछइ॥ १६

बंभचेरसमाहिठाणं सम्मत्तं ॥ १६ ॥ ॐ जे केइ पव्वइए नियंठे धम्मं सुणित्ता विणओ
नचारित्रसंवे
वरूपविनय अतिशयसहितो तेजसी बोधिलाभ एहवुं लाभआलीदीक्षाजेइ सिंहनीपरि गुरुकहेतेपाप
इकरीसहि हिलुंपामिवुंजेहनु तेपामी जगत्राधर्म विचरइ बेपबइ निद्राकथाइकरीसी षवइकेहथोपा
छइ॥ नइ तोपामिवोतेह आलनीपरिआपणीयइछइ॥ १ उपाश्रयदृढनवत्र

ववन्ने। सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं विहरिज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥ सिज्जा दढा १०२

वायुतापनुलजनादिरहित कपजइछइ सोगविवाअन्नादिक हतेजाण्डुंछउंजेवर्तइछइजीवअजीवादिपदा तकारणि
तआवरणवर्षाकालजोग्य मिलइछइ पीइवापाणीनीजाति बेउपदइयरूपतेहहेआयुष्मावंतनगवन्॥ श्रीकिंना
मप्रस्तावनेमाटेछइ ति मकहितोस्य

पाउरणंमि अत्थि। उप्पज्जई भुत्तुं तहेव पाउं। जाणामि जं वट्टइ आउ सुत्ति। किं नाम

तेकहामिकुरोसुणमिहवानइ
वलिवइसतेगुरुनगवनएतावे जेकोइपबइतइएदीक्षा निद्राकरइघणीअतिशा हडीकरवा अमिप्रमु क्रिया
ताअनिसाप्रजातनणवानइ दीक्षालीधीछेजेणसह॥ यसूत्र॥ दिकजिमी बधीइसइ सुषान
वलिकपअउनथीउगलाग्रंथ- नइ रहिना
कालकरइ॥३=

काहामि सुएण भंते। २ जि केइ पव्वइए निद्दासीले पगामसो भुच्चा पिच्चा सुहं सु

सुखजिम हत्नइंपापश्रमणइछपामी श्रीआचार्यअनइउपाध्यायेनी सिद्धांतसूत्रशिक्षा अर्थशिक्षीनेम
इसूत्रिम यउसाधुकाहवउकहीयइ॥ नइविनयश्रुतमार्गयहेवराव्य
मईरहइ उसीपणउ

वई पावसमणित्ति वुच्चई। ३। आयरियउवज्झाएहिं सुयं विणयं च गाहिए तेचे

तेआचार्यादिकनेजेखिंस ईनिंदाइतेबालविवेकर हितमूर्ख ते हवइ पापश्रमणपापिष्टसा धुएहवउकहीयइ॥ श्रीआचार्यश्रमनइउपाध्यायनी सम्यक रूडीपरिइं विपरीततारहितसा

उत्ता॰सू॰टा॰ थंसई बाले पावसमणे त्ति वुच्चई ४ आयरिय उवज्झायाणं सम्मं नो पडि

अरिहंतादिकनी सक्तिनकरइ

१०५ सुश्रुषा नकरइ रेअथवा कहितनइपणिउपगा रमकरे अहंकारी माननो धणी तेहने पापश्रमणपापि ष्टसाधु एहवउ कहीयइ संमर्दतउ आतिगाय सघउंचांप तउ बेइंद्रियादिजीवनइ गोहूंआ लिअत्रनेइ

तप्पई । अप्पडिपूयए थद्धे पावसमणे त्ति वुच्चई ५ सम्मद्दमाणो पाणाणि बीआ

जवादिकांनइं फूलमूल प्रमुखनइ॥ पोतइ असंयती अनइ संयतीवणउक रीमानइ जेहउ संयमवंतअच्छु॥ तेहनइ पापश्रमणपापिष्टसा धुएहवउकहीयइ॥ काव ली

णि हरिआणि य । असंजए संजयमन्नमाणे पावसमणि त्ति वुच्चई ६ सं

१०५

कांबली पाटीयो बाजठ सज्झायनी भूमि पूंजवणादिक आदिक दिक बादिक सिकादिक पायल्हिापसक रनाउ उपवेसणु पुत्पतीकरवआदिक इत्यादिकसूंप्रइ हइ हइ अणगाय पीयणसाधुएहवउ इकउपरिबइसइ तेहनइपापश्रमणपा

थारं फलगं पीढं । निसिज्जं पायकंबलं । अप्पमज्जिअ आरुहई पावसमणि त्ति

अज्ञानी लोक अविवेकी बालक

कहीय इ आतुरादिकनइ अर्थक नावलउ रहीडइ ईर्यासमितिनेविषेप्रमा दवंतसावधाननही तेअविनयकरतोजाणोबीज इस्यानरडऊपइसाहरतटीस हितेक्रोधकरइ तेहनेपापश्र मणपापीसा

वुच्चई ७ दवदवस्स चरई पमत्ते अ अभिक्खणं उल्लंघणे अ चंडे अ । पावसमणे

पडिलेहणाकरइ वस्त्र पात्रा

धुएहवउक हीयइ दिकनीप्रमादकरतउ असा वधानपणुधरतउ जिहांतिहांमूकइ विणपउ अइ, पडिलेहणाकावली पउवणादिक बीजीउपधिप्रमुखसर्वनइपउ जिवंपडिलेहणे अनाभुक्त असा वधान

त्ति वुच्चई ८ । पडिलेहेइ पमत्ते । अवउज्झइ पायकंबलं । पडिलेहणाअणाउत्ते पा

तेहनें पापश्रमण पापीसाधु एहवें कहीयइ॥ वस्त्रपात्रादिक पडिलेहें प्रमादवंत समितिइं रहित थइ थकउ॥ तेसाधु कांइ निश्चइं विकथादिक॥ सांभलीय अहंपणइ करी॥ पाछुं उत्तर करी नइं वलइ कलहउ मेल्हे अने शीष्यां तेहज करो तो इम गुरुनइ पराभवइ॥

उत्ता॰सू॰१७अ॥ वसमणित्तिवुच्चई।९। पडिलेहइ पमत्ते। से किंचि हु निसामिआ। गुरुपरिभवई

१०५

करइ नित्यसदा॥ तेहनइं पापश्रमण पापिष्ट साधु एहवउं कहीयइ॥ घणउं अनेरानइं वंचणहार॥ अतिशय मुखवाचाल॥ अहंकारी॥ लोलीउ रसादिकनउ॥ इंद्रियपरवश जिनधीको अजेणइ॥ गुरुजानइ मुखनेसविभागादिंइ नही॥

निच्चं। पावसमणित्तिवुच्चई।१०। बहुमाई पमुहरी थद्धे लुद्धे अणिग्गहे असंवि

आचार्यादिकनइं विषइं प्रीतिवंत॥ तेहनें पापश्रमण पापीठसाधु एहवउं कहीयइ॥ सर्मवचन बोली अपशाम्यउ जे वचनादिकनउ कलह विवाद तेहनइं उदीरइ वधारइ॥ पाछ्या आचारवंत आत्मानी सात्त्विक रेग्रहवारूपी बुद्धि पामीहणइ तेहनइं लोकविवादे करी॥

भागी अचियत्ते। पावसमणित्तिवुच्चई।११। विवायं च उदीरेइ अहम्मे अत्तपन्नहा वु

१०८

लाकडीप्रमुख वचनसंबंधी वचनावरेने कलहनविषे त्रिषइ रागतारागीसावधानपूवर्ज॥ तेहनइं पापश्रमण पापिष्ट साधु एहवउं कहीयइ॥ बइसणइं थिरपणानथइ नत्परपगहथ्थ हालवा कुचेष्टा विकथादिकनइविषेसावधान॥ जिहांतिहां सचित्तपृथिवी आदिकनइविषइं वइसइ॥

ग्गहे कलहे रत्ते। पावसमणित्तिवुच्चई।१२। अथिरासणे कुक्कुईए। जत्थ तत्थ निसीयई।

आसणविवइसणानइं विषइं अनाभोगइ असावधान॥ तेहनें पापश्रमण पापिष्टसाधु एहवउं कहीयइ॥ संथारइ सयत ओधिकउ रजसरजसहित पग इत्यादि सहित पगपूंजीइं नही॥ तसो आसंथारा बतिइं प॥

आसणंमि अणाउत्ते। पावसमणित्तिवुच्चई।१३। ससरक्खपाए सुअई। सिज्जं न प

जिहां इत्यादि संथारानइं विषइं अनाभोगइ असावधान॥ तेहनें पापश्रमण पापिष्ट साधु कहीयइ॥ दूधदहीघीइंतेल प्रमुखनीआई गुलपांच प्रमुख विगइ॥ आहारकरइ निम॥

डिलेहई। संथारए अणाउत्ते। पावसमणित्तिवुच्चई।१४। दुद्धदहीविगईओ आहारे

इवारंवार इदिवस भतिइ अरतिनिग्रहो निधरइ नयतपवासादिक तेहकरिवानेविषे तेहनेंपापश्रमणपापिष्टसा धुएहवोकहीयइ॥ सूर्यअस्तथाइ ... मतासूर्यउगइसाधु

उआसूरउ इअभिक्खणं। अरई अ तवोकम्मं। पावसमणित्ति वुच्चई ॥१५॥ अत्थंतम्मि अ सूरं

किणहीगीतार्थइंकह्योसाधुलगी

अमनादिकआ हारकरइ वारंवारदिव सनिइं षाइबेसुंसुखनलहीनोहितगुरुआ मासंयमनइलाभइवेपवेकरे सुफनेंकहेवइतेकाइनकरइ तेहनेंपापश्रमणपापिष्टसा धुएहवोकहीयइं आचार्यगुरुने रागनादिक नेरागनादिक १६ नेंआपणनइ

१०८

मि आहारेइ अभिक्खणं। चोइओ पडिचोएइ। पावसमणित्ति वुच्चई ॥१६॥ आयरि

करइ आपइ आपणने अनेरापाषंडीनेमत बमासनेअंतरेगच्छपालटइ तेहनइपापश्रमणपापिष्ट दीक्षालेई कहेनपकरोअन्यादिक सेवइ आहारवेश्या इणकगच्छाबाहीरीजेमाइ साधुएहवोकहीयइ॥ पोतानउघ नालोनीशिकाआचार्य एहमाहिकुणपामीय इष्ट आचारइकरीनिंदनी नेंपरइहरइ॥ इणमगणीनइ॥ कपणुलहइ

यपरिच्चाई परपासंडसेवए। गाणंगणिए दुब्भूए पावसमणित्ति वुच्चई ॥१७॥ सयं

१०९

रहोंपीवरिह रीनइ॥ आहारनेअर्थीविकउपा रकघरिकामकाजकरइ निमित्तकहिवइववहरइधना उपार्जईअथवाहस्तनिमित्त क्रयविक्रयकरइ तेहसाधुनइपापश्रमणपापि ष्टसाधुएहवकहीयइ॥

गेहं परिच्चज्ज। परगेहंसि वावडे। निमत्तेण य ववहरई पावसमणित्ति वुच्चई

नीछइअनेकघर लीआणीकुडंबा थोडइ

जातिसगइगइविहराववउ आहारआणीजिमइ १८ घणाघरगहस्थादिकन घरेजइरनेगहस्थादिक कहिबावारंवारसवइ॥ तेहनइपापश्रमणपापिष्टसाधु एहवोकहीयइ॥ एहवुंजेप्र कारइसर्वइक १९

बइसामुदाणि यं

१८॥ सन्नायपिंडि जेमइ। निनिसज्जं च वाहई पावसमणित्ति वुच्चई ॥१९॥ एया

पासत्थादिकपांचकुशीलि संवुडेह यापतजेआचारनाविराधक वउ॥ कहीइतेहनीपरिगमेहतेने बीहइधाप्रआचवहार=

वेषधरमुकुटवीतसाधुनउरूपधरइपरंसार नवतनीतपामहामुनीश्वरसीहेवतेनीवत्ता॥ विषमात्रमामीअलोकसंपनपलाविके॥ इलोकमनुष्यनइलोकनेविषविष नीपरिनिंदापामइ विषनीजिमम हकोइनिदाकरेतिमसाधुवत

रिसे पंचकुसीलसंवुडे रूवंधरे मुणिपवराण हिट्ठिमे। अयंसि लोए विसमेव ग

नई त्रवधतां बइ नदीनइ कलोकनइ परलोक इमलोणवंउ नउ एनलेती गृहस्थ मा भम धीवूको जे बाढई एतलाम दाकाउलगी देष सडाचार मुष सीलियादिक आचार बलिई नरुहावुतनउ धणीऊ इम सर्वमुनिमाहिइं साव

उत्राम्रा टाप रहिए नसेइ हंनेवपरंमिलोप ॥ २० जे वज्जए एए सया उ दोसे से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे

१०७ मुनिवणाबिकी मुनिमाहिप्रधम गलीबइ इहांश्रामनुष्यलोकमइ विषइ अमृतनी परिइं पूजाइ मान उनिइं पामइ लहइ आराधइम फलेकरइ बेहुलोक इहलोक अनेपरलोक आपुरापहवंतिननइ एहवुतहक कउ सुधर्मस्वामिजंबुप्रतिकहइ॥

णीण मज्झे । अयंसि लोए अमयं व पूइए । आराहए लोगमिणं तहा परं त्ति बेमि

एतलेपापश्रमणअध्ययन नउ अर्थ बोलेशमात्र थकी कथाउ= कंपिलनामा नगरनेविषे रा जादेशनउ अधिपति उदयआवुउबलवबरंगसेनाप्रश्र श्वाश्वारीरनउबलवाहननिमिते प्रि छेश्रमवालर्धुधोमादिकजेहनइ

१७ । पावसमणिज्जं सम्मत्तं ॥ १७ । कंपिल्ले नयरे राया उदिन्नबलवाहणे

१७मिलइअध्ययनइं पापश्रमणकनिवारवाकह्यातेपापश्रमणकनउ निवारउ संयमवंतनइ जइतेसंयमतागवो बादिकनात्यागथी हउइते त्यागथी संयतराजऋषिनइं हष्टांतइं करी एअध्ययननइविषइ कहिसइ तिणकारण अढारमोए संयतनामा अध्ययनकहइ छइ १०७

नामिंसंयतएहवउनाम आहेडानइ अर्थे नीकल्पउ उद्गयपउअड नगरथकी घोडानइकरकइंकरीनवाहो थीयानइकरकइकरी रथनइक टकइंकरी तिमज वली

नामेणं संजए नामं मिगव्वं उवनिग्गए १ हयाणीए गयाणीए रहाणीए तहेव

पालीयाननइकटकेतहकट कहदेवेमहतामोटइ सघलइदिशिविदिशि इंपरिवरुउ मृगहरिणाघणाइनइं प्रेरीकही रीनइंघोडाहडीइबयउधिकउ कंपिल्लनग रनउकेशर

य । पायत्ताणीए महया सव्वउ परिवारिए २ मिए छुभित्ता हयगओ कंपिल्लु

नामाउद्याननवन आर्ठभिकामृगकेतलाइक हणइ बाणइंकरीरसमांस एतलाअनंतरकेसरनामाउ नइविषइ बेतजामांहिबी संबंधीतहनउलोलीधिको घानवासीनहनइविषइ

ज्जाणकेसरे भीए संते मिए तत्थ वहेइ रसमुच्छिए ३ अह केसरंमि उज्जाणे

साधुजे तेनइं घरनथी तपरर अर्द्धवावविवादिकधर्मध्याना धर्मध्यानादिकआज्ञाविचयादिक घणोहेरूपा
नदेतेरुजधनइ थइजेहने दिकनेणेकरीसहितछइ॥ सियायइ ध्याइ ण्डपएहवउना

उत्रा० सू० १८ अणगारे तवोधणे। सज्झायज्झाणसंजुत्ते धम्मज्झाणं झियायइ॥४॥ अप्फो

गरवेलनउमंडवनै धर्मध्यानवइ ध्याउबधो तेसाधुनइ पासेआव्याजेमृग वधतउमारतउहउतेनर
हमाहवानइविषई वइसाश्रवजेणइ हरिणतेहनइ नउअधिपतिठाकुरनाथ

१० ८

वमंडवंमी। झायई झवियासवे। तस्सागए मिगे पासं वहेइ से नराहिवे॥५॥

एतलानंतरघोडइचडयउराजा उतावलउआवीनइतेराजान हण्यामाऱ्यामृग देखीनइं अनगारसाधुप्रति
जामंथतमहउइम्ासमइ॥ हवेननइविषइ गाहरिणला निहांवनमाहिइंदेष

अह आसगओ राया। खिप्पमागम्म सो तहिं। हए मिए उ पासित्ता। अणगारं तत्थ १०८

मगंहिइ एतलानंतरराजासंयततेसाधुन अनगारसाधुअणहण्योउथा मइंमंदउणाघुण्यनेधण॥
देषइ इहराज्ञनइघइवाहतउथकउ हइनीवहनीमराणउएसाधु इवजाहउंकेहवउछउ

पासई॥६॥ अह राया तत्थ संभंतो। अणगारो मणाहओ। मए उ मंदपुण्णेणं रस

मांसनारसनेविषेलुंपटहं घोडावांतिइहुंमजीनइंमुकी अनगारसाधुनेतेनृपराजासंय विनयइंकरीन
णिवानउंथमनेछेजेहने नइ ननामा वांदइतयतीना

गिद्धेण घित्तुणा॥७॥ आसं विसज्जइत्ताणं। अणगारस्स सो निवो। विणएण

पगवरण। कहइछेभगवनुए मृग एतलानतरिमोनध्याननमाटिमुनि अणगार ध्याननीतउधर्म
वधमइकीधउतिणमादरतउइस्र लिवुतणइ यतीधर्म नआश्रतउजेण
पराधषमजु

वंदए पाए। भयवं इत्थ मे खमे॥८॥ अह मोणेण सो भयवं। अणगारे झाणम

राजा संयत नउ तिनिमं अवरनबो निवारंते राजा संयत कारी इंउ कहा सय मे यत राजा हुं नउ ऊ कधी गुरु अहो
ऊतिइं लामउ अमुकी न उजर कोप उ न जाणी इंस उहेलाजाणउ बउ कोई नीबलइ नग
उकर स्यइ इम
॥ अनगारस्स॥ ९॥ अणगारो न पडिमंतेइ तओ राया भयद्दुओ। संजओ अहमंसीति भय
वइ हणिकारणि बोला को पिउ अनगार तुं तेजाले बाले नरमनुष्य नी कोडि नइ ए त इस कइ मुनी बोलउ अनु
वउ उत्तरमुरू नइ अणइ करीनइं अनगार कहीइ जा मा टइ हुं नउ बीहुं उं मनही अनेरा य उ ऊ न
साधु
१०९ वं वाहराहि मे॥ कुद्धे तेएण अणगारे डहिज्ज नरकोडिए॥ १० अभउ पत्थि
अभय दान नउ दाता तुं थाइ जिम नही बीनि स्य सदा सा स्वतः अनेरा ने स्यउ हिंसा वध ते तने विषय
उकन इ मरण थी सम बइ निमबी नाजी स्याल वाडाणी नाम मूल नइ विषइ संसक रइ बइ वो दादि नने
बानइ तुणउ जाणि काज नर गसा धन कर तें
वा तुब्भं॥ अभयदाया भवाहि य॥ अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि १०९
६४

जिवारे सर्व संडार अंत पुर अश्व सर्व तरने विषे जाइवउ उछ अनित्य असास्वत प्राणह वा जी स्य ऊं राय पडु नोगा
दि बांडी अति शय स्यउं परि इ मरी नइ ऊ फनई अवस पो व जोक संसार नइ विषइं॥ प द वी ने विषय संग
री नइं मानी इज्ञा विवा
११ ॥ जया सव्वं परिच्चज्ज। गंतव्वमवसस्स ते॥ अणिच्चे जीवलोअंमि किं रज्जंमि प
विशेषे हउ पण जीवितव्य आउख उं अनइ [illegible] कबा किंवउ जे जीवितव्य अनें रूप नावे [illegible]
न घरे बरा वइ बे रूप सरीर न उं सुंदर पणो जे रूप वोंव प्ल ते वेति म रूप उं अने जी [illegible] करी रयउ
वन मव पल जाणि वउ॥ वइ अहो राय
१२ ज्जसि॥ १२॥ जीवियं चेव रूवं च विज्जुसंपायचंचलं। जत्थ तं मुज्झसी राय पिच्च
उत्पपर सउ न ह अर्थ का दारा स्त्री सुत बेटा बेटा पद इर मित्र मन ति मच माई [illegible] जे जीव इ ना लोग
यं नवी जाणतउ॥ लीसणी नामान्या जी प बांधव नेह न उ पराज्य नं इम
लागवइ
त्थं नाव बुज्झसि १३ दाराणि य सुया चेव मित्ता य तह बंधवा जीवंतमणुजीवं

अनेमरइनिवारेंतेकोइनजाइनउकि घरधकीवा मूक्या बेटादि मरणाश्रम घणेदुःखकरीआसंता
तांधकीसखायतुथाइतेमाटेइणकय दिरिकाढइ ऊनि मेलीने पितानइ पथरतावि काकरि
रिजग्रासाकेरिवी

उत्ताष्याप्प ति। मयनाएफवयंति ॥ १४ ॥ नीहरंति मयं पुत्ता। पियरं परमदुक्खिया।

११० पितापणितहाजिमपुत्रेपुत्रनेकाढिं बांधवपुणबांधवप्रमुषने घरथी तेणेपितादिकइनुपरा साराधीतेहपुणजे
छाथिकामरणपाम्यानेतरवाहिरि इमजाणीमहाराजासंय काढ्या ज्युनुणकएतेकीधउं णोकरइराबीहती
काढइ ततपसमाचरितपसेवि॥ पछी जेह्यधन जालवणाकरी॥

१५
पिअरो वि तहा पुत्ते। बंधू रायं तवं चरे ॥ १५ ॥ तउ तेणज्जिए दव्वे। दारे अ परिरक्खिए।

तेहधनइंस्त्रीनइंभोगवेअनेराम हर्षपाम्यारोमराय उल्लिसेवेकरीतृष्ट तेणेजीवेंजेकीधुंपातइनुंपा
तुष्पकीहाकरइअनेरागी संतोषपाम्या वित्तमांहिअलंकर्याआचरे ज्युनुकर्म
पहिरवकरीएहवडं जाणीतपकरि॥

कीलंति न्ने नरा रायं। हट्ठतुट्ठमलंकिया ॥ १६ ॥ तेणावि जं कयं कम्मं। सु

१११

अतनअलंउण्यशुभनिरूप पछेतेणकर्मइंकरीसहित जाइअनेरभवविरूमी सांभली तेमा तेह धर्म
अशुभाशुभुनपाप्हवंपापरहु थिउपरंरथइमहितनभी अथपाम्हईगति नइ धनु राजा वीन
निरूप

१७
हं वा जइ वा दुहं। कम्मुणा तेण संजुत्तो। गच्छई उ परं भवं ॥ १७ ॥ सोऊण तस्स सो

रायनुं गर्दभालिनामा समीपनइ मोटउ संवेगमो निर्वेदसंसारथी पामतउ हवउनराधिपसं
अनगारसाधुना विषइ घणउ हुनीवाका वेहगपामउ यतनामाराजा

१८
धम्मं। अणगारस्स अंतिए। महया संवेगनिव्वेयं। समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥

तेसंयतराजादीक्षालेइगी
संयतना ज्यजी राज्य नीकल्यउ दीक्षाजीधीवीतरागना गर्दभालिनामायतीमुनि नार्थवडेसर्वसाधुनीयं
महाराजा बांधीनें सर्व घरथिकी शासननइविषइ भावंतअणगारसाधुनेसमीप सामाचारीसीषीगुरुनु
नीपइ आदरनोलेइशिक्षाकीपण

संजउ चइउ रज्जं। निक्खंतो। जिणसासणे। गद्दभालिस्स भगवउ। अणगारस्स

विचरतउकोइएकग्रा बांधीनइराजसभागदी क्षत्रियजातिनामनघीकृष्यउ परीक्षाकरिवासणी जिम प्रस
मइनइद्विपग्रायउ क्षालीधी तेक्षत्रियसाधुसंयतप्रतिबो तीरूपरूपदीसइछइ॥ नवि
तिणंक्षत्रिययतीप्रति उइ=
जउ

उत्ता॰स्॰१८।१० अणगारे तवोधणे।१९। खत्तिओ परिभासइ। जहा ते दीसई रूवं पस

कारहितनिमवली अहोयती नाहरूनामकउण किसइअर्थइजनेतउमा केणप्रकारिइसेवइ
मनपणिप्रसन्नमक नाहरूंगोत्रकुलकउण॥ हणउदीक्षालीधतइ उबुद्धआचार्यउपाध्या
लउनथी २०

न्नं ते तहा मणो।२०। किं नामे किं गुत्ते कस्सट्ठाए व माहणे। कहं पडियरसी

यादिक अनइकेणप्रकारेवीनीतकहवाउक हिवेसंयतमुनीबोल्यासंतेये तिमबलीगोत्रइगोतमनामु
नइ ठीयइछयइएहवोकहउकहवउं माहरुंनामनामइंकरीनइ छइंगोत्रनेंगोतमजाणिवउं॥

बुद्धे कहं विणीए त्ति वुच्चसि।२१। संजउ नाम नामेणं तहा गुत्तेण गोयमो

तेक्षत्रियपूर्विइकदेवलोकथीच्यवीकेइकनिमित्तदेखीजातिस्मरणउपनउंपछेकपनउवैराग्यदीक्षालेइविचा रतउसंयतमुनिमिल्यउपछइक्षत्रियमतीसंयतमुनिप्रतिइंकहिवउछइउ= र्व॰पाहिलीनाअर्थ ११२

गर्दभालिएहवइनामइंमाहरा नाकहवाविद्यासर्वश्रुतज्ञान क्रियाजीवादिम अक्रियाजीवादि
आचार्यधर्मगुरुछइ अ॰नेचारित्रक्रियासर्वनापार नाक्प१ पदार्थनीनास्तिरू
गामी प २

गद्दभाली ममायरिया विज्जाचरणपारगा।२२। किरियं १ अकिरियं २

नमस्कारादि नज्ञादिकनुंजाणिवुं अहोमहामुनि एतेचिउंथानकइंकरी मेयन्नेकहितांमयजाणी
कविनयउ ज्ञाप्रयइातेअज्ञान क्षपीश्वर नइ वायाप्रजेजीवादिवस्तनेजा
३ ४ णिइतेनइमयन्नकहीयइकि
यादिकअपणीबुद्धिकल्पि

विणयं ३ अन्नाणं च ४ महामुणी। एएहिं चउहिं ठाणेहिं मेअन्ने किं प

तवस्तनाजाणकन॥ णक्रियावादी थामिनावीरकपायरूपकेगनिनिवारीनजीनलुकउपरि क्षायकउप्र
सतमान्हउबलाइमइक अनुकंकलोष तेहसगवनुं सिद्धनथीकउजीवधानथीनिवर्त्तितसर्वम क्षानअनइंघ
निबोबालनाबताथघणा एवगटकरत लोकइनुमाटइमारूनजाणतेमोक्षनइअर्थइकंगुरुनेस रित्रतणइक
इ परविवादीतुछाथस्थित उरूनकुहनउ वानमाटेविनीतजाणवोहिवेसंयतइंगमकन्क्षत्रियप्रा रीसंयमलेसाहि
नजाणइकोइएहइ २३ नुजाण॥ आक्षपिउमकु स्लइ॥ न॥

भासई।२३। इइ पाउकरे बुद्धे। नायए परिनिव्वुए। विज्जाचरणसंपन्ने

मनवचन३ठबोलणाना नेहनो फल देषाडइ छइ पहं जेवुरुषस्त्रियादिकनां पत्रजु जे प्राणि वा नवी
रमावउपरीक्रमवीर्यछइ तिजाइ घोररुद्रनरकनइ विषे नापदार्थ तुं सापवंतेनहना नेदिमउजम
जेहनइ २४ षइ कारणहार गनिइजुंइछु

उत्त०सू०टा० सच्चेसच्चपरक्कमे॥२४॥ पडंति नरए घोरे जे नरा पावकारिणो॥ दिव्वं च गइं

कुषकुवइ आराधीनेधर्मआर्यवीतराग केमाणायपनाकरणहारनेकेहछइ इणिकारणिए परतीर्थी
जाइ तेसाधीसहणानप्रकूपवुए मायाइकूलीपणइबुद्धइयेकचनुए नीमृसाषात्रमुहणाण्या
इवोजाणीनइसंयतरहुराहि हवउणीक्रियावादीतुमाप्यनजाणवु जाणीषेनेसाधाकहवी

११२ गच्छंति॥ चरित्ता धम्ममारियं॥२५॥ मायावुइयमेयं तु॥ मुसा भासा निर

निरर्थकसी अपिनिश्चितिणजकारणिसंय वसामि॥वसनउवउपाश्रयादिक इत्यादिपाते हनइगनवी॥
षइ अरर्थि मम्मारणकहितोनिवर्त्ततेउषिकउ नइविपइए रियादिजाउ वइतुं करतउ॥ जेह कारणवी॥
रहित नेहनासाधितनांसाचलिबोबेकी गावरीआदिकनइविषइणतावनां सघलाई तिके साधादीज्ञा
आरह उ रहनउबालतउपणिआत्मानइ षि दिइन्य नीत्री माहरां जाणी वइ
ढिआ॥ संजममाणो वि अहं॥ वसामि इरिआमि अ॥२६॥ सव्वे ते विइआ मं

श्रं० ११२

एमिथ्याविपरीतदृष्टिमतिनाथ हिजिहकारणइकीविज्जमाणक मूम्यइकारें जाणं वउं अप्पपरात्रापणात्रात्मा॥
णीअनार्यसलापंचर्याविगतावे हिनांबवरलोकेअनरइजान्म नजेमएमाहरोआत्मा अनेरानवषकाअप्प
अंतिणिपरलोकअनआत्मानेसम्यकंजाण
वेनेपरतीर्थीपणिसम्यइकारइजाणइजका — रणपरतीर्थीनउतेग
नकरे

मिच्छादिट्ठी अणारिया॥ विज्जमाणे परे लोए॥ सम्मं जाणामि अप्पयं २७

तकिमकुंक्रितउपांचमाइंहेदेवलो कांनिवंतक्ससमउतिजा॥मिअ॥ अथा जीवितवतपहरीयंउपाणी रायेए
कनइविषइमृतआणीतनामावि नी॥थानेविमकावीरनेशासनेमनुष्प हवीसवर्षितिआत्रपुत्तेपालन
माननइविपइकेहवउ॥ नीअनरुषीकदीयइतमतेणीइउपमा पालिइ हांपल्योपमजाणवामका
इहउंपणउतकाहादितिनउधणीवउ फलिसाणरोपमजाणिवा

अहमासि महापाणे॥ जुइमं वरिससओवमे॥ जा सा पाली महापाली॥ दि

देवलोकनइविषे कूहते दिव्यएहवीपणालिम तेहनुं वयउंव्रह्मलोक मनुष्यनइं तविअवता माहकेउ
हापालिआणिवीनेकहवीवरमनइमइउवमी नामापांचमादेवलोक, दिव्याप्रमनुष्पपण नइअनेरा
मपिमवाजायहनाउहरिआदिकइएतावता घिको उपामत नवपुण॥
मइस्वरसणाककवालायहअपहरवा

व्वा वरिससओवमा॥ २८ से चुए बंभलोगाओ॥ माणुसं भवमागओ अप्प

आकर्षं जाणउ जेहनजेनइ एकार | क्रियावादी आदिकपूणाएका | एअसा स्वाणी
इवइतेहजननउनिमित्तिआणउअउय | रनीरुविवांवइवेषायअनेवली | परीहरइवादी
रविपरीतनजाणउ | अनेकप्रकारनभवंदअसिधाय॥ | नइएवर्ग्रइसंघ
२७

उत्रास्नाटाप णो अप्परो सिया। आवं स्रोणं जहा तहा॥ २७॥ नाणं रुइं वइंदवा। परिक्कें जूसं

अनर्थनाकारणजेहिंसादिक | एत्वीसर्वेक्रिवियाजाणवतेमा | वलीस्पउनेसांतजीतउनिर्वर्य
नकहीय सहउकहिलासघलाअर्थीतव | वउजाणीनइअंगीकारकरीनइ | वउस्रनअस्रुतआगुहादिषु
इसाधा॥ जेअषवासहूणाकहिलासघल | विवरतेउवउेहनेसंयममार्गसा | असवइतेहथी
इआमनसगादिकविषइ | धनामार्गनइविषइ ३०

११२

जए। अप्पणा जे असबंग। इइ विज्जामणुसंचरे। ३०। परिक्कमामि पसिणा

परगृहस्थनाजेमंत्रसपापआ | अहोएविस्मयधर्मपतिइंउत्थउसा | एत्वउसर्वत्यंउजाणीपंडितजा
लोवतेसर्वसपापजाणीकुनि | वधनआहाराससर्वकालजमीको | णनउइतपजआचरइपरंवआ
वर्जउवइ | इकमहाआत्मानउधणी | दिकवांकइ
३१

णं। परमंतेदिवापुणो। अहोव ठिअ अहोरायं। इइ विज्जा तवं चरे। ३१॥ ११२

हिवइसंयुतमुनिप्रत्यउतोआउषोकिम | मावइसमूधवोपइअंतः | तेसर्वप्रगटक | सर्वज्ञग | तेज्ञानजिनशास
जाणवइनिवारइतेबोल्यउजेतउमुफ | करणंकरीनइ | रइनाहत्वाइका | घवानज्ञा | नमाहिजाणतज्ञ
तेप्रवइकाजआतणासंबंधी | सनाहवा | ननाधणी

जं वमे पुच्छसी काले। सम्मं सुद्धेण चेयसा। ताइं पाउकरे बुद्धे। तं नाणं जिणसा

इइमजा | जीवछइइत्यादिक्रियाअथवाक्रिया | जीवनथीअनेसिद्धनीरुवीक | दृष्टिसम्यकदर्शनसमाक
लीइतांय | तेउअहुष्टानतेरोवदेत्रस्तिलषधार | स्त्रिनक्रियातेअक्रियावादीप | नतेणीइसाहृततथादृष्टि
नकरिवो | किणहीषोतवीनसकीयइतेह | णउडाहउपरिहरिसर्वथा | ईसंमतिज्ञानसजउज्ञान
३२

मणो। ३२। किरियं चरे अणधीरे। अकिरियं परिवज्जए। दिठ्ठिए दिठ्ठिसंप

नणीइसपन्न | एत्वउंधिकरंउनसइधा | एहवउसर्वेकदातेहवोउष्णनोहेतुस | नेकेत्वउपदस्वदेवलोकमो
सहिवणताव | नवानिउधर्मचरमुआ | पदक्रियावादीयहिकनीपरिवर्जिवादि | रूतेअथअनइक्तउधणीनेण
तासमपगप्रका | वरिधर्मउस्त्ररमावरवो | ककोसवनारसउसांतजीअथवाप | क्षिकइकरीपणउंगासनउवे
रदज्ञानदर्शनवं | दोहुलुं ३३ | लंज्ञानादिकपअरसांतजीनइ॥

ने। धम्मं चरसु दुच्चरं। ३३। एयं तु न पयं सोच्चा। अद्धधम्मो वसोदियं सरहो

भरतनामाचक्रवर्त्तिश्री त्यजीनइंकामभोगप्रति सगरनामाचक्रवर्त्तिपुण पर्वतलगइभरतक्षेत्रप्रति
क्षयक्षेत्रवनतुपुत्रतेउ संयमलीयापणलीदीक्षाली समुद्रनाअंतसनइजुक्त मनुष्यनुष्यनुअधिपठाकुर
णानिश्चेभरतक्षेत्रप्रतिं धी ३४ हिमवंत

उ॰सू॰टी॰प॰ विसारहंवासं। चिच्चाकामाइंपव्वए।३४। सगरोविसागरंतं भरहवासंनराहिवो

एश्वर्यपणुराज्यऋद्धिसमस्तसंपद दयाइंसंयमनइंप्रतिपालि त्यजीनेपरि भरतनामाक्षेत्र चक्रवर्त्तिपदवी
लब्धिंद्वीपरिहरइ केवलीकर्मक्षयंकालाउ छांडीनइ प्रतिं तेउधणीथयउ

११५ इस्सरियंकेवलंहिच्चा दयाएपरिनिव्वुडे।३५। चइत्ताभारहंवासं चक्कवट्टीम

णानिधाननऊ मैसर्वपरिहरीनइंप्रव्रज्या मघवानऊउनामजेहनउमहा सनतकुमारनामामनुष्यनउ
पर्कीनवंता दीक्षाआदरतउहउ मोटोयशजेहनउहतउ इंद्र॥

हिड्ढिउ। पव्वज्जमब्भुवगउ। मघवंनाममहायसो।३६। सणंकुमारोमणुस्सिं ११४

चक्रवर्त्तिपदवीनउधणी पुत्रनीकरानेराज्यनइंथपि तेपुणराजासनतकुमारतपकर त्यजीनइ
नीजेहनेपदवीबंधरनादि थापीनइणअलंकारतणी नउहवउइंहांसनतकुमारचक्र परिहरी
कर्माक्षयंपदावंत वर्त्तिनीकथा ३७ नइभरत

दो। चक्कवट्टीमहिड्ढिउ। पुत्तंरज्जेठविऊणं। सोविरायातवंचरे।३७। चइत्ताभा

चक्रवर्त्तिपदवीनउधणीथ शांतिनामातीर्थंकरसोलमुंतेजा पाम्यउगतिनेगति इक्ष्वाकुवं
शप्रतिइ रत्ननिधाननउपुषमहासं करइविषइंशांतिनउकरण केवलीअनुत्तर श्रीजिनराजा
पदावंत सारइहांश्रीशांतिनाथनीकथा ध्यान ३८ नेतमां॰

रहंवासं। चक्कवट्टीमहिड्ढिउ। संतीसंतिकरेलोए। पत्तोगइमणुत्तरं।३८। इक्ख

वृषभसमानपुरु कुंथुनामातीर्थंकरसतरमो जेहप्रसिद्धछइकीर्त्तिजेहनी पाम्यउगतिअनुत्तर
पउधान मनुष्यनेईश्वरधणीइंहांश्री महायशवंतऐश्वर्यवकरा प्रधानमोक्षरूपिणी
कुंथुनाथचक्रवर्त्तिनीकथा इवंतो॥

गरायवसहो। कुंथुनामनरेसरो। विक्खायकित्तीभयवं। पत्तोगइमणुत्तरं

सागर समुद्र पर्यंत तजीनइ भरतक्षेत्रनरवर समस्त अरनामा अरजं कर्मरहितो कर्म पत्तो पाम्यो गति
उत्तरत्यजीनइ त्यजीनइ राजा मांहि ईश्वर प्रधान॥ नउ अरनाथ पत्तो पाम्यो गति अनुत्तर प्रधान मो
क्ष

उप्प

गा.सू.१८.५ उप्पसागरंतं चइत्ताणं भरहं नरवरीसरो अरो अ अरयं पत्तो पत्तो गइम

हूयपणी त्यजीनइ भरतक्षेत्र चक्रवर्त्तिपदधरतो पणि त्यजीनइ उत्तम एह महापद्म
वर्त्ति धनवस्तु घणी संपदानु छानइ भोग पांच इंद्रिय संबंधी॥ नामा चक्रवर्त्ति पदधर

११५

४०

णुत्तरं॥४०॥ चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढिओ चइत्ता उत्तमे भोए महापउ

तप करतो हवउ एक छत्र जिहां राज्य करी एहवी महीपृथिवी साधी रवहीना हरिषेण नामा मनुष्यनउ
स्वामी तउ हूउ॥ राय इम साधी भूमि वश कीनइ अहंकारनउ निवारण हार इंद्र आकार चक्रवर्त्ती

मो तवं चरे॥४१॥ एगछत्तं पसाहित्ता महिं माणनिसूरणो हरिसेणो मणुस्सिंदो ११५

पत्तो पाम्यो गति अनुत्तर साहस पतिवृत्त अहंकाराज्ञानन सुपरिच्चाई परित्यागी दम पांच इंद्रिय जयनामा
प्रधान मोक्ष रूपणी इम छइ करीनइ गीत राज्य भोगा दम्युं पणि एवचक्रवर्त्ति
दिकनुं पहिलो हार: संयमरूप करतो वे रमते
४२ उत्तउ॥

पत्तो गइमणुत्तरं॥४२॥ अन्निओ रायसहस्सेहिं सुपरिच्चाई दमं चरे जयनामा

हवउ श्रीतीर्थंकरनउ पत्तो पाम्यो गति अनु दशार्णदेशनउ राज्य त्यजीनइ मुनि साधु थयो दशार्ण
नाम कहवाउं जयचक्रव त्तर प्रधान मोक्ष रूप मुदित सर्व कष्ट रहित विचरतउ हवउ वलि वे नइएह
र्त्तिनी कथा णी न धारहित वेनाम इ

४३

जिणक्खाउ॥ पत्तो गइमणुत्तरं॥४३॥ दसन्नरज्जं मुइयं चइत्ताणं मुणी चरे द

राजा घर छोडी नीकल्यउ साक्षात् प्रत्यक्ष सौधर्मेंद्र इंद्र कहिवाथी नीकल्यउ नमी राजऋषी रूप नमइ कहं साक्षात्
उदीरणा थी मंत्र ति इंद्रे प्रत्यउपजीनइ करी गृह थी हितांव सिकरणउ दवउन इसो धर्म
कदर्थीतनइ नामानगा जवा सणी पावेदी अनी मावना इं अप्पणुगा इइं स्वामी॥
कथा थी श्री महावीर पासे इ तांदशार्णनइनी कथा म्पारनबी अहंकार जे कहने

सन्नभद्दो निक्खंतो सक्खं सक्केण चोइओ॥४४॥ नमी नमेइ अप्पाणं सक्खं सक्के

नेंछोडी नइ कहिनां परिहरीनं घरमांहि रविदेहदेशनाथ चारित्रनं विषसावधानहवउ करकंडू नामा राजाक
उत्तमविकंडा॥ एणीअवसरइजीवइ मिथिलानगरी रक्षमंनइ विषेमिथिलनधी॥ लिंगनामा देशनइ विषे

११६ णचोईआ चईऊणगेदंवइ देही सामन्ने पज्जुवट्ठिआ ४४ करकंडु क

पंचालनामा देशतेहनें विषेहूउ द्विमु नमीनामराजा विदेहनामा गंधारनामा राजा गंधारदेश
घइहूउ षनामाराजा देशतेहनें विषेऊपनउ॥ निंवेषेहूउ निगाईराजा इहां क
रकंडू द्विमुष रनमी इनिगाई

लिंगेसु पंचालेसु य दुम्मुहो नमीराया विदेहेसु गंधारेसु अ नग्ग

गंधारनी क एहचेवइ ककंडूतेचणारा संसारमांहि नीकल्या तस्या जगन्ना पुत्रदीकरानइ राज्यनें विषे
थापीनी ज्ञानमांहि चउदसमानउ चनाशासननइ विषइ छवीकायीनं

ई ॥ एए नरिंदवसभा निक्खंता जिणसासणे पुत्ते रज्जे ठवेऊणं ११७

चारित्रनइ विषइ अतिशय सोवीरनामा देश तेहनों राजा दे देश संगरादिक सर्वत्यजीय उदायननाम
स्यंगउ आदीक्षालीधी एसमानमोटो राज्यतारनउ विहरीनइ मुनि यतीव्रतश्री माराजावीत
ऊपरमणापार चरतउहूउ अतिपाळतउहवो नयपारण

सामन्ने पज्जुवट्ठिआ ४७ सोवीररायवसहो चइत्ताण मुणी चरे उद्दायण
नउवासी ठाकरवूं पहोतो पाम्यां गतिप्रनुत्तरस्वपन तिमजकासीदेसनउ राजानंद श्रेयकल्याणकारीस
ज्यो दीक्षालीधी इसंउ मोक्षरूपिणी अतिइ ननामा सातमुबलदेवइहांमद नसंयमनें विषेपरा
दायनराजानी कथा नराजानी कथा क्रमजोहतुवइ

णो पव्वइओ पत्तो गइमणुत्तरं ४८ तहेव कासीराया सेओसच्चपरक्क

कामभोगपांचइंद्रियसंबंधि हणतोहवउ कर्मरूपीयवन तिमहीजविजयनामा राजा बीजोबल
त्यापरिहरीत्यजीनें लवनगहनतनवपंडवतिइ देवआर्तध्यानरहितइहां विजयराजा
नीकथा

मो कामभोगे परिच्चज्ज पहणे कम्ममहावणं ४९ तहेव विजओ राया

कीर्तिवंतअथवाअतिशयवंत राज्यसंगातेंतुगुणकरीत्र परिहरीनइमनमांहि रहत्र विमजव
गइतेअकीर्तिजेहनीतेपहिलादिं थवागुणकामइंद्रियपनातेण अठइजेहनेत जीत्राका
कालेतहुत करीनइसमृत्रठइ

उत्ता।सू।टाप अणगकित्तिपव्वए।रज्जंतुगुणसमिद्दं पयहित्तुमहायसा।५० तहेव

११७ रत्तनपघणउर एकायपणेचित्तअंतःक महाबलनामाराजवांछीदी यहीनइजीवितयनीआ
करीनइ रणहायीनोइणमहाब कालीधीतेराजऋषि शावांछीमस्तकइकरी
जराजऋषीनीकथा संयमरूपिणीश्रीलक्ष्मी

गांतवंकिच्चा अव्वक्खित्तेणचेयसा महब्बलोरायरिसी आदायसिर

त्रीजनवे किमधीर्यवंतसाधक्रियावादीय अन्मत्तसवजगतुकइनेकोईनउ एसर्वइंकधस्रजे
माकुगयो दिकनीअहेतुकमतिविपरीतपण कांईबोलकुयते।फरेनेहनीपरिम सरतादिकतेविश जिनशासननाविष
ग्रतणेकरीनइ हीहविवीइहीकविचरताणभवसरी= वजाणीमिथ्यामन सारतत्वजाणीहट
इत्र्यपिवुनही।। पणेत्र्याशनंनि
श्लक
रान=
त

सासिरिपंर। कहं धीरे अहेऊहिं उम्मत्तुव्वमहिंचरे ।।।विसेसमादा ११८

मरहवा हदपराक्रमसंयमनें।विषेंइम असंतपणोनिदांनकर्मथुइ एसावीमाहरीभावाणी एणी
माणा धर्मनइविषेइहतांइकरवीतेह करिवो तेहनेंविषेसमर्थ सर्वकुमतिवामीजिनम इस्य
जपराक्रमीकहीइ ५२ त वइ तिआणामेंरहवी नीका

याम्हरादट्टपरिक्कमा।५२। अच्चंनियाणखमा सच्चामेसासिआवइ य

रकीधीघणा तस्यास घणाजीवसंसारसमुद्रतरस्ये किमधीरसाधक्रियावादीयादि आपणो
सारथादिवणातरेवइ आगमियेंकालइ ५३ कनो अहेतुकमतेंकरीनइ ॰ आत्माने
विदेहक्षेत्रमांहि परियाव

तरिंसुतरंतेगे। तरिस्संतिअणागया।५३। कहंधीरे अहेऊहिं अत्ताणं

संकुदेहनेंआवसेकरें सर्वसंगइंद्रव्यथाधनादिकें सिद्धथाइंकर्मरजकाढीएहवोऊ एतलें दइइंहूत्रियराजऋषी
अपितनकपइ भावथाक्रियावादीयादिक कउँश्रीसुधर्मस्वामिजंबूप्रतेंकहै संयती अरविहारइ।नवर
मिथ्यात्वरूपयकीनिविशेषेँ= एहवीशिष्याकहै= ५४ माअय नाकते।श्रुतेनसंयमनमु
निवाहित्रुपाले।ली
मारुधुतो=३०२

परियावसे सव्वसंगविणिमुक्के सिद्धेहवइनीरए त्तिबेमि।५४ स
मूकाणे॰

नसत्र अर्थलेशमात्र सुग्रीवनामानगरनेविषेकेहवो काननमोटा वृक्ष आंबादिकना वन राजादि
कस्यो १८ वो रमणीक छै उद्यान ते आराम अनेक लताद्रुमोइ क्राधिप
न छै अथवा उद्यानक्रीडा वन ते नेशोभत निबलभ

उद्दक्षं समत्तं॥ १८॥ सुग्गीवेनयरेरम्मे। काणणुज्जाणसोहिए। रायाबल

द्र एहवे ना ते बलभद्र राजानी मृगा एह ते राजाना राणी नो अग्रजात बेटो मृगा पुत्र एहवे नामे लो
मे वे नामे पटराणी जाणवी बलसिरी नाम माता पितानो दी क नो दि विख्यात प्रसि
ते घणे सोभा सहित॥ धो छै द्ध छै

भद्दुत्ति॥ मियातस्सग्गमाहिसी॥१॥ तेसिंपुत्ते बलसिरी। मियापुत्तेत्ति विस्सु

माता पिताने अतिवा कुमरपदवी वंत ते युवराजा कहीइ ते दनक दितो लक्षणवंत ऋद्धि कील
ल्हो छै दमवंत साधु ते हवो छै ईश्वर ईसोइ हाइनो करणहार सो उ ते मृगा क्रीना
वनि ते पो प्रमाण जाणवो २ पुत्र उपद हरणाइ प्रासादधवल करेइ

ए। अम्मापिऊणदइइ। जुवरायादमीसरे॥२॥ णंदणे सो उ पासाए। कीलएस

दर ते स्त्री विषे

पुनैल अध्ययन मा। लोगकह्विमंत्याजि। नुकज्ञातनेनागक ।द्वदोदीमाक्षपणउ अइतिकर्मघणाइ टाइतिलिनगणीस मझेनि: पनिकमेनो ऊपरिमृगापुत्रनउं कहइछइ=उत्तोपा दीलीनाअर्थ॥

११८

रमे संघातिहं देवता दोगुंदक त्रायत्रिंसके नित्य सदा मुदित हर्षवंत चंद्रकांतादि मणि अनेक कर्के
इ स्त्रीस्यू इ मत्रायत्रिंशक तिन मांगीजइ मानस मनछै जेहनो तनादिक रत्न तेणे करी कूटी
३ तिम चेव पद हरणो यइ ३ छै सास्वतो छै तनु वे दो घिको

हइत्थिहिं। देवोदोगुंदगोचेव। निच्चंमुइअमाणसो॥ ३॥ मणिरयणकुट्टिमत

च्यारि पंथ भवर्ते ते हस्ते चउक कहीये एतला ते तरित्रिक जो पेछे च्यार पंथ भवर्तई ते चोक ने एतलाने
त्रिणि पंथ प्रवर्ते त्रिक घणा पंथ सुग्रीव नामा नयरने वि। विषे आलोके छे चचरने तरित्रिक
प्रवर्तइ ते चाचर कहीयइ ते मासा= पेंग विषे आलो के छै ४ ने विषे र

ले पासायालोअणट्ठिउ। आलोएइनगरस्स। चउक्कतिअचच्चरे॥४॥ अहतत्थ

ते विषे आलोक न ऊंचि तो गवाखे इत्ते विषे स्थिर रह्यो छै वो पिको:

हि तत्र कोइक दीठे श्रमण साधु संयत जीवनी तप उपवासादि द्वादश भेद ते का ऋस अतिशीलं अगरथ
तो जयणावंत केहवो लभावना अभिग्रह ते नियम तेणे आढ्य नरी ज्ञा
सतरभेदे संयम ते हनो धरण नादि गुणनो आगर ५

अइच्छंतं। पासइसमणसंजयं। तवनिअमसंजमधरं। सीलड्ढंगुणआगरं ५

तेयतिनेंदेषतोएहवोमृगापु दृष्टिइनेंत्रंकरीनेंतेघष्टिके कहांकिंसइकमनेमानुंजाएं दीगोमेंपूर्वइ
त्र नामाकुमार हवापिलकारानेंप्रणकर हुं एहवोयतीनोरूप मइंपुरांपाछि
तीठे

उत्ता०सू०टा०प तंदेहईमिआपुत्ते दिठीएअणिमिसाइउ कहंमन्नेरिसंरूवं दिठपुव्वंमएपु

लाजनने साधुयतीनेंदर्शनिइ अध्यवसायमननोपरिणामरूडोथो एहवोरूपमेंदीठोजुनो
११९ विषें तेहनें पहांमभावतेलेंमनतमलेंभावें एहवोचिंताइऊपनोजेमा
५ घिके हमूर्छागतमाइवकोइमा

रा ५ साहुस्सदरिसणे तस्सअज्झवसाणंमिसोहणे मोहंगयस्ससंतस्स

जातिपाछिलाभवनोसंभारिवो देवलोकथीचव्यो मनुष्यसंबंधियइभवइभव संज्ञियानेंगर्भज
जिसं तेजातिस्मरणऊपनो ६ घिको नारिइआव्यो ऊपनो मेंज्ञानऊपजेंते
संज्ञिज्ञानपाछिला

जाईसरणंसमुप्पन्नं ६ देवलोगचुउसंतो माणुसंभवमागउ सन्निनाणेसमु
भवनोदेषवो ११९

हावतांजातिस्मरणऊपनाइं जातिस्मरणेंअतिशयसं नगापुत्रमहाऋद्धिवंतजा सं
घिकजन्मसंभरयो पाछिलोभव ८ घातेंऊपनेंघिकेंज्ञातें तिस्मरणनाऋद्धिवंजेहने भा

पन्ने जाईसरणपुराणयं ७ जाईसरणेसमुप्पन्ने मिआपुत्तेमहिड्ढीए सरई

रइ पाछिलोजन्मपो वलीचारित्रपूर्वइपाल्यो पांचइंद्रियनाविषेंनइंविषे अनेवलीरागधर
तानो कुंतोतेपुणसंभारइ ८ रागअणरागधरतोछे मनोहँसंयमचा
रित्रनेंविषें

पोराणिअंजाइं सामन्नंचपुराकयं ८ विसएसुअरज्जंतो संजमंमिअ अ

मातापितापतिंइआवी एहवोवचनबोलतोहउ सांभल्योमेंपूर्वभविनेंविषेंव्रतपा नरगग
नेंइमकहै जेहआगलिकहीस्ये छिस्येंजन्मेंमेंपा ल्यांछुंतामाक तिनेंवि
तेकहेंबइ १० पणेंतेह बेदुःख

म्मापिअरमुवागम्म इमंवयणमब्बवी ९ सुयाणिमेपंचमहव्वयाणि नरए

तेदुःख   तिमवलोतिर्यचिनीयोनिनें   निर्विन्नकामोकहितांनिवर्त्याविछें   अनुज्ञाअनुमतिदिउ
विषेंदुःखभोगव्याते   इच्छाजेणें एहवोछंहुंसंसारसमुद्रथी   घणाइकस्करकनोदे

उत्तराध्या.टा.प   सुहरकंपतिरिकजोणिसु निविन्नकामोमिमहन्नवाउ अणुजाणहपव्वइ

१२०

णहारीएहवीदीक्षाम   मातापिताकहयापछीसंसारना   यनामेंघणाइंभोगव्या   पहिलाभोगवताथ
तिहेंमादरम्के ११   भोगदेषानेंजेभुक्तभोगभोगअ   विषवृक्षनाफलसरी   कांमधरपछइक
नेतिणिभोगनिषेधइछेंअहोमा   षाछें तेमेंभोगव्याछें   द्रूआछेंजेहनाफ
तापितामेंभोगहवइभोगपइहि   ल

स्सामिअम्मो ११ अम्मताएमएभोगा।भुत्तावि सफलोवमा पच्छाकडुअ

अनुबंधनिरंतरदुःखनाआपण   आपणहदीसतोशरीर   अशुचिअ   लोहीवीर्यप्रमुख
हारछें   १२   उदारिकतेअनित्यअहो   पवित्र   अपवित्रथकीऊ
मातापिताउ   पनो

विवागा अणुबंधदुहावहा १२ इमंसरीरंअणिच्चं असुइअसुइसंभवं

१२०

असासतउअनित्यछइआवा दुःखनाहेतुकारणजेक्लेसरो   एहवोशरीरअसासतोअ   रोगादिक
सजीवसइवसिवउशरीरनइ गादिकतेहनउंघामाजनथा   नित्यशरीरमनइविषइ। अतइपुणार
विपइ   नके
१३

असासयावासमिणं दुरककेसाणभायणं।१३।असासएसरीरंमि रइंनोव

विविग्रनउ   भोगभोगवांपछीपुणअनइ   पाणीनउफीणअनइपाणीन   मनुष्यनउभवजन्मअसार
स्वरूपणउ   आणमइपुणअवस्यछांडि   उपीपोसरइतेसरीरछइएउ   नेहनइविषइ
नलहुइ   वा   रीर
१४

लभामहं।पच्छापुरावचइअव्वे।फेणबुब्बुयसन्निभे।१४।माणुसत्तेअसारंमि

कष्टवत्रछइव्याधिकोटसरीर जरागरछपणअनइमर एकक्षणमात्रपुणरतिमा संसारथकीहिज वली
प्रमुखनइरोगतावसीसकादि णतेणइग्रसीयाइमैकुउ तायमनतेनहीहवेंअहो नसर्मिवउदुःजरा
कनुघानक   मातापिता   ख   गरट
१५

वाहीरोगाणआलए।जरामरणघत्थंमि।खणंपिनरमामहं।१५।जम्मदुरकंजराडु

घणांत रोगनावसी मरवंतणा अहोमातापिताजन्मजरामरणादिक जेसंसारनइविषइजन्मजरामर
दुःख सकादिकः खिकतनेदुष इकरीकनिश्चइदुःखकनतइंका णादिकइक्लेशपामइबहुजंतु
ख रणसंसारबइ प्राणी

१६

उत्तास्सूटाप क्खं रोगाय मरणाणिया। अहो दुक्खो हु संसारो। जत्थ कीसंति जंतुणो।१६।

गामवाडी आवास खेत्र घेर स्त्रीज्ञातिसाईसगा एसर्वसघलीबांधीनइखजी जाइवनंबइ अवसय
प्रमुख सुवर्ण सोनो दिक सावमावीनराईव आपणाकुवेहशरीरतेण रसवशइहवामुक
मुष नइ

१२१

खत्तंव कुंहिरण्णंवा पुत्तदारंचबंधवा। चइत्ताणंइमंदेहं। गंतव्वमवसस्समे

जिमकिंपाकवृक्षनाफलनउ परिणामविपाकपाछाअनंतर एवंइणिदृष्टांनइभोगव्याअनुज
नलउनकडमरणलहिइ ब्जेकामभोगपइंद्रियनातेहनउ

१७। जहा किंपाकफलाणं। परिणामो न सुंदरो। एवं भुत्ताण भोगाणं। प १२१

परिणामबहु केतहनाफलउ जिमकाईएकपुरुषपाथेयसरवइ ग्रामनगरादिकनइअद्ध पं तेह
रथआवतिवारेक्षुधाउनकइ व्यादिकइसहितकुइअनइं बंइबलीनउमार्गिजानउथिक प्राणी
अनंतकाल दुःखकरीघणुंइ १८ उ दुखी

रिणामो न सुंदरो। १८। जहा कोइ अपाहेज्जो। अद्धाणं संपवज्जई गछं

थाइक्लेशपा
मइसीदाइ क्षुधातृषाअनइत्रिषानिरमइ एवंइणिदृष्टांतइजेधर्मनुंअरि जेकोईजाइपर
पीडाउथिकउ हंतमनुष्यनइग्णकरीनइ लवअनेराअ

१९

तो सो दुही होइ छुहातण्हाइ पीडिओ।१९। एवं धम्मं अकाऊणं। जो गच्छई

वतारनइ जानउथकउतेप्राणीदुखीथा व्याधिकोटप्रमुखचिरकालनीरोग जिमकोईकपुरुषपाथेय
विषइ इउपनीपरंपरालहइ नावसीसकादिकनेणपीड्योथिको सरवइअ्यादिकइसहित
२० उइअनइ

परंभवं। गछंतो सो दुही होई। वाहीरोगेहिंपिडिओ।२०। जहा कोइ सपाहे

अह ग्रामनगरादिकनइ पंथइं जातउ मार्गनइ विषइ छुधा त्रिषा अनइ षाति रसे करी एवइं
प्रवर्त्ततउ हूंतउ इते प्राणी सुषी थाइ केशनया विवर्जित रहित थिकउ।। णि इहां
मइं न सीदाइ सेव २१

ग्रामाणुगाम ज्जा। अहाणं संपवज्जई। गच्छंतो सुहेणं बुहा नादावि विवज्जिय।।२१।। प दी

१२२ छांतइ धर्म वीतरागनु जे प्राणी जाइ परलवअने जातउ थिकउ ते प्राणी सुषीया अल्पकर्म निवडक
सावउ ते आवरीनइ रात्र वतारनइ विषइ।। इर्ष उ सुषपामइ मेरहित अवेदनवेद

वंधम्मं वरित्ताणं। जोगच्छइ परं भवं। गच्छंतो सुहीहोइ। अप्पकम्मे अवे

नारहित जिम घरनइ विषइ पलेवणइ जा नेघरनइ जे वस्तु धणीनइ सारवधानजे तंहाकिरि
गइ परखलत इथिकइ याणां ते घर थिकी बाहिरि
२२ काढइ वस्त्र मूलवस्त्रादिक

यणो २२। जा हागेहे पलित्तंमि तस्स गेहस्स जोपहू। सारभंडाणिनी १२२

अनइ असार अमूल्य पाटला गा एणे दृष्टांतइ लोकनइ विषइ पलेव जरा गरइ पणे तेणे अनइ
दंडउ मुषनबांधी अलगा थाइ।। णइ लोगइ थिकउ इता वता आक मरणनइ करीनइ
जन्म थिक जेथइ रसइ
२२

णेइ। असारं अवउज्झइ।२३। एवं लोए पलित्तंमि। जरा एमरणेण य। अ
अपणो आन्मा सारकिरिया णमाता पिता भेम्ह अनुक्रिनि स्विंतेउ त्रेपति इक हइ बइ चारित्र
समान धर्म करिवइ करी तारिस्या दीक्षा जेहनइ एहवउ हउ स्पतीनइं पिताबहू होउ तहारि
असार लोग कामत्यजि सउ।।
२४

पाणं तारइस्सामि। तुम्हेहिं अणुमन्निओ।२४। तं विंतिम्मापि अरो। सामं
चारित्रनइं उपगारना करण रागद्वेषना
जउ तारसी जागरणादिक गुणना क्षरिवा आदरिवा निष्कलंकनइ क्षणकरि
सहस्र

नेउत्तरकुञ्च रे। गुणाणं उ सहस्साइं। धारेयवाइं निरकुणो।२५। सम

बउंएकेन्द्रियादिक शत्रुवइरीमित्रप्रीतिवंतनेहनइ जगाजीवनतेंअतिपातह तेहथावजीवलगी।
सर्वप्राणीनइविषइ विषइजगतलोकनइविषइ णिवर्त्तंतेहनीविरति तेदुःकरजाणिवउं

त्रासु।८।प समयसव्वभूएसुसत्तुमित्तेसुवाजगे। पाणाइवायविरई जावज्जीवाइ

निरंतरसदाकालजगइजावजी जूठांबोलिवानउविशेषइवं बोलिवउंतेजेअगला
उत्र बलगइअप्रमादीइं जिवउंपरिहरिवउं नेहितकारीअनइसा

१२ १

२६

दुक्करं।२६।निच्चकालप्पमत्तेणं मुसावायविवज्जणं भासिअव्वंहिअं

सदाअप्रुकसावधानइंतेउ दांतसोधीयइतेसिलीतणष परनउंअणदीधउअदत्तंतेहनउ
बउ एदोदिलउउत्र लउआदिदेईनइसर्व विशेषइवर्जिवउंदांकिवउं

२७

सच्चं।निच्चाउत्तेणदुक्करं।२७। दंतसोहणमाइस्स।अदत्तस्सविवज्जणं १२२

निरवद्यपापरहितएषणीकएषणा ग्रहिवउंअन्नपानवस्त्रादिकतेउ विरम्यवउ अब्रह्ममैथु
करिवायोग्य णअनिदोहिलउअइदीकरा॥ संहरवउ॥ नातलनउं॥

२८

अणवज्जेसणिज्जस्स।गिण्हणाअविदुक्करा।२८। विरईअबंभचेरस्स।का

कामभोगरसनुतेजाणतेण उग्रअाकरउमहाव्रत धरिवउंपालिवउंतेवुराउं धनग धान्य प्रेष्यवर्गमा
जिणिजिअजाणतइबांधि ब्रह्मचर्यरूपीयउ॥ दोहिलउंजाणिवउंतु णिज्ञा गोधू सदासी
वुंकरइनिणिजाणकरउ॥ दिक॥ मादि नासमूह

२९

मभोगरसन्नुणा।उग्गंमहव्वयंबंभं।धारेअव्वंसुदुक्करं।२९।धणधन्नपेस

जनइवि परिग्रहममतानहनउंविशेषइ सर्वआरंभकरमणादिक एहवउंनिर्ममपणउनिर्लोभ
षइ परिहरवउ नउंत्यागपरिहरिवउ नानेगुणपणुंदोहिलुछइ

३०

वग्गेसु।परिग्गहविवज्जणं।सव्वारंभपरिच्चाओ।निम्ममत्तंसुदुक्करं।३०

असनपान खादिम स्वादिम एच्यारि प्रकार आहार नइ विषइ॥ रात्रि नइ विषइ भोजन आहार न त करिवउं ते हनी वर्जना निषेध॥ अनइ वलीकाल आनिक्रमी नइ संचय गुल घृत मुख प्रमुख पदार्थ तेहनी संधि ने रूप संचय न करिवउ

उत्ता.सू.८ चउविहे वि आहारे। राई।भोयणवज्जणा। सन्निहीसंचओचेव। वज्जे

वर्जिवउं निवारिवउं तेह उ लाघवाण वोहिल तत्ताणि वउ दुष्कर ते दुःकर दुष्कर ते दुःकर तारि ते दुःकर कहा पते दुःकर इम समस्त मुख परीसं निवद नाभोग विवर्जते दुःकर आक्रोस दुर्वचना।

१२५

३१

अहो सुदुक्करं। ३१। छुहा तण्हा य सीउण्हं। दंसमसगवेयणा। अक्को।

दिनिर्बर्शनाते दुःकर शय्या तथा आश्रय विषमादिते दुःकर तृणनडफरिसनते दुःकर जल्लमइ लपरी सहते दुःकर हाथिकरी रस आंसुली देशादि तादिक देवी नइं बीहउ वउ

३२

साडुक्कसिज्जाय। तणफासा जल्लमेवय ३२। तालणा तज्जणा चेव। १२४

लाकडी आदिकइं करि मार वउं तन वध राम लीयादिक क रीबांधिवा ते बंधण विरूपरी सह गाळी इंसि हाट त्रिइंद्री डिवउं तहीपणि महादुःकर बइ ग्रहस्थ नइ घरि जयी याचिवउं अलादि कर ते कते दुःकर गृहस्थ नइ घरि गयत्र भुण न या म्पने ते दुःकर

३३

वहबंधपरीसहा। दुक्करं भिक्खायरिया। जायणा य अलाभया। ३३।

कपोत पंषि प्रानी जाग्रह त्रिसदा संका
न्य साहत की डा दिक ग्रहि छांरइ विषे विवरवउं तिम साधक दोषनी संकाइ मस्तकादिक नइ विषइ केश मुं आलनुं लोच करा विढुं ते डुःख मा टउंकहु अतिश्राकरउं ते ढुरवर्य ढ्रुत ते डुःकर

कावोया जा इमा वित्ती। केसलोओ अ दारुणो। दुक्करं बंभवयं घोरं।

धारिवउं आपण पइं आत्म पुत्र सुपसोग विवाने योग्य ते आत्म डुत्तते शरीर सुकुमाल सुहालउं सुहइ ल हीवराम उववस्त्रादिक परिहरा म्पउ

३४

धारेउं अ महप्पणो। ३४। सुहोइओ तुमं पुत्ता। सुकुमालो सुमज्जिओ। नक्ष

नहीं उइ अत्रा समर्थ ताताज्ञ लोछत्र | श्रामण्य चारित्र प्रतिपालि वानुइ | जावज्जीव लगइ निरंतर अविश्राम वीसामा रहित

 सीयन्हउंमंछ्रा।सामन्नमणुपालिउं।२५।जावज्जीवमविस्सामो

१२५ गुणवारित्रसंबंधिया नउ भारो गिरूउ भारी नेके हलुउ लो | जेहउ नहवे दोहिलउ तेसहिवउं निर्वाहउ नवी समर्थ दीकरा | हिवइहि मउ तपव

गुणाणं तु महब्भरो। गुरुओ लोहभारुव्व। जो पुत्ता होइ दुव्वहो। २६। आ

तहकी यउतउ गंगा नदी नउ प्र | एहवा वली वीजी नदी ना प्रवाह | वली बिहुं बाहि करी नइ समु | तिम
वाहतेह मइ विपैत रिवउ दोहि लउ | नइ विषमा मइ जा वुसामहेइ रवें तरिवउं जेहवउ तेहवउ दुक्क | द्रत रिवुं तेह गुणे ग्रत्र दोहि लउ तरि वउ

कासे गंगसोउव्व। पडिसोउव्व दुत्तरो। बाहाहिं सागरो चेव। तरि

पार पामवो ज्ञानादि गुणनो दधिसमुद्र ३७ | वेलूना कोलीया जिम निरस्वाद ६ | तिम नीरस्वाद इक करीर हित संजम पुणज लवो | जिम असि तरवारनी धारा ऊपर चालेइ

यव्वो गुणोदही। ३७। वालुआकवले चेव। निरस्साए उ संजमे। असि

तेउ परिगमन सहितवो घणो दोहिलो होइ | तिम दोहिलो आचरिवो तप बार भेदे करवो . ३८ | जिम सर्प एकाग्रदृष्टि चालेइ दृष्टि ऊपरही परही न करइ तिम साधने पिण | तिम एकाग्रदृष्टि हे चारित्र पालवो उत्र दोहिलो

धारागमणं चेव। दुक्करं चरिउं तवो। ३८। अहीवेगंतदिट्ठीए। चरित्ते पुत्त

जिम जव धान्य कि लोहमा नी लोह करवली नो दना चावता चाले पामइ | तो पिण तउ वा इन ही तिम चारित्र पालिवउ घणो दोहिलो होइ ३९ | जिम अगनि नी शिषा झाल ते हवल दीसइ तिव जती अग्नि झाल

दुच्चरे। जवालोहमया चेव चावेअव्वा सुदुक्करं। ३९। जहा अग्गिसि

जिनदेदिखीव मनुष्यनेपाइवोअतिशय मनुष्यनेपाइवीअतिशयस्कं नासएणपणेमोवनावस्था
लीतिमधुत्र स्कंदोहिलाउवै दोहिलोहोइ पणेसाधकपणोदोहिलो
दोहिलोचारित्र नाणवो धुत्र

उत्त०सू०टी०प दाहिता। पाउंदोइसुदक्करं। तहदुक्करं करेउं जे। तारूणेसमणत्तणं।

४० जिमदुःखेंकरीनेंनरीसकी तिमदुःखेंकरीस कीवकातरप्राणीइश्रमण जिम
१२८ इवायरेंकरीनें कीयें यतीपणोअतेधुत्र ४१ उला
इत्रा

४१। जहा कोथलो।। तहा दुक्करं करेउं जे। कीवेणसमणत्तणं; ४२ ज
कलाइकरीनेंतोलिवा दोहिलोमंदरगिरिमेरु तिमनिश्चलनिश्चलतिःसंक दोहिलोश्रम
मांनकरिवा पर्वत चारित्रनीअपेक्षारहितपणो णसाधकप
णोआदरिवा

दाउलाएतोलेउं।।दुक्करं मंदरो गिरी। तहा निहुयनिस्संकं। दुक्करंसम १२९
लूगनानोकोथलोवानमानोनतराइपरवस्तू
डरकंनरेउंजे सेइवायस्स

इंधुत्र ४२ जिमभुजाविकंबाहेकरीतरि दोहिलोरत्नाकरलवण तिमअनुपशांतइउप
वो पारपामिवो समुद्रातिसमुद्र इैंशमाद्यानथीकषा
यजेहेनो तेणइ

णत्तणं।४३।जहा भुयाहिं तरिउं। दुक्करं रयणायरो। तहा अणुवसंतेणं
दोहिलोइंद्रियदमिवारूपपाणी तेअहोपुत्रभोगविमनुष्यनवसं
समुद्रतरिवोहेधुत्र बंधियाकामभोग शब्द

दुक्करो दम

दु[illegible] सागरो।४४। भुंजमाणुस्सएभोए। पं
रूपरगंधरसस्पर्श भोगवीअनुभवीकामभो पछेंधर्मवीतरागनोआदर तेहमृगापु
एपांचलक्षणसयुक्त गादिकतिवारेंअहोजाया जेआदरकरिजे ४४ त्रबोलतो
उउकहें

चलक्खणएउमे। भुत्तभोगी तउ जाया।। पछाधम्मं चरिस्ससि।४५।सोबिं

असोमातापिता एहमजिमतुमेभगटपणेदी परं इहमनुष्यलोकनेंविषेंकेहनें नथाकाइपि
कादोहिलोदेषानीतेतिमज वाछाअभिलाषनथी णिदोहिलो
रूकंअनुष्टा

उत्तराध्ययन नम्मापिअरो पवमेअंजहाफुडे इहलोअनिप्पिवासस्स नत्थिकिंचि
नधर्मकरिवानो शरीरसंबंधिनीअनेंमानस अनंतीवारजेहनो मादरेंजीवेंससाअनुभव्या
तेहने ४४ मनसंबंधिनीवेदनाक वेमोनपामियें वीहामणाजेहसंसारीनेंसा
हनेनोगववो भल्यारोमऊनाथाइ
१२७
विडकरं ४४ सारीरमाणसाचेव वेअणाउअणंतसो मएसोढाणिसीमाउ अ
घणीवारदुःखनोउपजावणहार जरागरदपणोअनेंमरणे च्यारगतिरूपअतवजेह मेंमा
नयेंराजकिलेशादिक ४५ करीनेंअतिगहनपणेंकंता नाएतावतासंसारनेंवि हरे
रअटवीनेंविषेंइं षें तेकेहवोनयनोआगर जीवे
मइं डरकसयाणिअ ४६ जरामरणकंतारे चाउरंतेसयागरे मएसोढा १२७

ससाअनुभव्यावीस जन्मअवतारनोपामिवो जिमइहांमनुष्यलोकनेंविषेंअग्नि इहथकीअनं
मणाभनाराअंतारो अनेंमरणतेप्राणनोछां ४७ विष्वानरऊणोघणोहोइतेमनु तगुणइअधि
मऊनाथाइं डिवो ष्यादिकनेंबाले तिमज कउतेअग्निनो

णिसीमाणि। जम्माणिमरणाणिय ४७ जहाइहंअगणीउण्हो इत्तोणंत
तापतेनरकनेंविषे नरकनेंविषेंवेदनाउत्पृ एहवीअसातासुखपणोविषें जिमइहांमनुष्यलोक
घणोछें तेमेंसह्यो नोफरसआदिदेईनइं बादर मेंपामिलेंनविअहोमाता नेंविषेंआप्रत्यक्षता
छइ अग्निनथावेंक्रियअग्निछेंमेंद पिताउ ४८ ढिपणेंछइ
पर्वतनरषानेंबालइ
गुणातहिं। नरएसुवेयणाउण्हा। असायावेईयामए ४८। जहाइहइमंसी
तेइहांथकीअनंतगुणेंअधिकी नरकनेंविषेंवेदनाताढिसंबंधनी एहवीअसातावेदनीअनुभवीमें पा
नरकनेंविषें ताढिजाणवी जेणेंपर्वतनरीषागलइएहवी छिलेनवें अहोमातापिताजीनेंमे
ताढिनीवेदनामेंसही सहीछें जाणीछइ ४९

यं इत्तोणंतगुणातहिं। नरएसुवेअणासीआ। असायावेइआमए ४९

आक्रंदकरतो बुंबपा उंचापगकस्या अनेंअसेदेवेउ देवतानीमायाइंकीधेञनारा ऊंसर्विइ
मतेजे हादिकनीकंडुकुं बें जेहना शिरमस्तकडें नअग्निजाज्वल्यमाननेहनइवि पच्यो तुं
नी पचवानाठामडें विषइं जेहनो षइ ज्यो अन

१२८ कंदंतोकुंदूकुंभीसु। उद्धंपाउ अदो सिरो ऊ आसणेज्जलंतंमि। पक्कपु

तीवारजेहनो अंतनपा मोटोजेदावानलबलतोजाइं मेरुमिकंमस्तनिर्जलदेशतेहनें कलंब
मीइ एतलीवार ५० तेहसरीषो नकरकनो विषें वेलू तेहनेंपणिमरुकहीइ बालुका
तेहवीजभूमिकाबेतिहां नामान

वो अणंतसो। ५०। महादवग्गिसंकासे मरुंमिवइरवालुए। कलंबव

दीनेवि हविइंदरूपते बलितोअनंतीवार राडकरतोआरडिपाडतोजे उंचोपगकरी
षइ जेहनो अंतपारनलहियइ तेतली ५१ हादिकनीकंडुकुंभानेंपाचवाना नेंबांध्योतूं ज्यो
वार अहोमाता पितानी वाम व ञलिविशेषनें विषइं इषनवणादि

एलुआपय। दढपुव्वो अणंतसो। ५१। रसंतोकंडुकुंभीसु। उद्धंबद्धो अबं

१२८

इनरे नदिनश्रा ए६

करपना करवतमोटाजकरमांडुकवानाकरवत बेधउकाप्यउहविजनवंने घणेताणेजेकांटा
सीजाइं नाल्हाकरवआरामानीजातितेणेंक विषेंअनंतीवारअहोमाता ५२ नेतेंकरीआकोर्स
तिहांबंध री पिताजी कहिनें मस्योवाण्यो
वमाइंको=

धवो। करवत्तकरकयाईहिं॥ छिन्नपुव्वो अणंतसो। ५२। अईतिक्खकं

उंगअतिऊंचोसिंबलनामापादपरु रवपाव्योहविस्योमइंकमंकिहवें अरहेपरहेतांणीघस
हतेहनेंविषें पाम्यंकरानें बहु बांध्योपरवो रतानें अतिकष्टपमाड्यो
परमाधामीयइं जेपिणहिहिअहोमाता

टयाइन्ने। उंगेसिंबलिपायवे। खेवियंपासबद्धेण। कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं।

पिताजी मोटोयंत्रको आक्रंदकरतो अतिबीहामणोञ पील्ये मादरेपोतानेंक पाप
५३ तूघाणीसमुष बंदपाडतो इतिमसुकनें बइं मकरीनइं कर्म
नेंविषइंसेलडी घको घणा
नीपरेपेहरकरानें

५३। महाजंतेसुउच्छुवा। आरसंतोसुभेरवं। पीलिओमिसकम्मेहिं। पाव

उत्ता॰सू॰ट

नोकरणहारकुंअनंतीवार ऋजतोआक्रंदकरतोकोलिसूअर सामअनेंबलतनामाजेपरमा वि
पाररहितअसेमातापिता ५४ ऋतराएतावताकृतरानोंरूपेंकर धामीदेवतेणेमुफनइरूंकृने ष

कम्मुणा णंतसो ५४ कुयंतो कोलसुणएहिं सामेहिं सबलेहि य पा

पाडिउ ऊनालूगमानी घउमु कुरकुराटकरतोअरहेपरहे नरवारिकरीनेंकेहवाअलसीनाफूलने
परिफाडिउ फने तेतोअनंतीवारअरेमाता नीपरिरातेवर्णेछइ एहवाजेअ
रूषनीपरेछे पिताउ ५५ सिक॰तरवार

डिउ फालिउ छिन्नो विप्फुरंतो अणेगसो ५५ असीहिं अयसिवन्नाहिं

भालेंत्रिशूलेंकरीपट्टिसहथियार विदास्योवीरि नाह्याकटकाघ उपन्योअवतर्योनरकनेंविषेंपा
विशेष तेणेंकरीनइंबेघोषंडकी उ णाकीधा वक॰पापकर्मेंकरीतिणिपापक
धा रतोजनरकेंआत्मापोंचे ५६

भल्लीहिं पट्टिसेहि य छिन्नो भिन्नो विभिन्नो य उववन्नो पावकम्मुणा ५६

अवसपरवशपणेपाडिकोऊंआर नेअग्निइकरीबलतोरथअनें प्रेस्योहांकस्योजोतस्योजुगनें रो
नेंगाडलेतथारथेंजोतस्योपरमा सहित धऊसरेंतेपिणअग्नि आररासिमादिवावकादिके क
धामीइ थयायो करी प

अवसो लोहरहे जुत्तो जलंते समिलाजुए चोइउ तोत्तजुत्तेहिं रो

शनीपरिजाकमाआदिकें परमाधामीनोकीधोवैक्रिय वयनीआगनेंविषेंमहिषया
कुटानें पाडिउ परधामी ७ हाबलतोअग्निनेंवनेंविषें नानीपरिजुदनेंअहेमाता
इकीधो पचव्यो पितार

ज्झो वा जह पाडिओ ५७ हुआसणे जलंतम्मि चियासु महिसो विव

रापरूपकीधो मरदोकी पाडियाअवनाकीधेंपापकर्म बलात्कारिसांडसासरी
धोरीगणांनीपरइंपरव तेणेंकरीनें व्यापोद्यको ५८ षा उनस्मारीषा मुहन.
शथको बें जेहना:

दड्ढो पक्को य अवसो पावकम्मेहिं पाविओ ५८ बलासंडासतुंडे

लोहमानाछेमुह पंषियाजेहे सांडसेंकरी विदास्यो विल तिहां तिर्यंचतोनथी परविक्रीयग्रद्धपंषी
मानेलेंएहवा तेणें विलापकरतो रगतोहुं इम अनंतीवार ५८
जे

उसू।टा।प हिं लोहतुंडेहिं पक्खिहिं। विलुत्तो विलवंतोहं। ढंकगिद्धेहिंणंतसो ५

पाणीनी तृषाइंकरी धावतो पोहतो वैतरणीनदीप्रति तिहांतो तिहांजइं ऊपाणीपीइंनें तृषानि
आक्रम्योपीड्यो ऊजातो दी पलूना सवाहवहइछइ वारस्यूं एहवो चिंतव्यो
थको थको

१२०

९। तण्हाकिलंतो धावंतो। पत्तो वेअरणिं नइं। जलं पाहिंति चिंततो

बुरीपलानी धारासरीषा पाणीना ऊन्हाजे वज्रवेलू तापतेणेंक तरिवाम्हिनीपरि तीषापत्र
कल्लोल तिणेकरी वीधाणोआ ६० रीनें तपाव्यो घणोउन्हउकी पानहाजेहना असिपत्र
प्योदेषीकी धोऊं असेमातापिता थो नामवडोवनवडइ

खुरधाराहिं विवाइओ। ६०। उण्हाभितत्तो संपत्तो। असिपत्तं महावणं १२०

तेहअसिपत्रनापानपडतातेणें ऊंधर्वितडइनविसस्यारमांहिवस मोगरहथियार विशेषतेणेंमुं
पडतें करीनें छेद्यो तां अनेकवारघणीवारमातापि ६१ सढिनामाहथियारछइ तेणेंक
ताजी रीनें

असिपत्तेहिं पडंतेहिं। छिन्नपुव्वो अणेगसो। ६१। मुग्गरेहिं मुसंढीहिं सू

सूलत्रिशूलादिकें मुसलना गदालोहमयछइंतेणें एहवो थकोऊंपाम्योदुःष एकुरपला
माहथियार तेणइंकरीन करीभांगउछइगात्रशरीरजे अनंतीवार असेमातापि जेनावीस्यबं
इ ह्नो ताउ ६२ धीयातेहनी

लेहिं मुसलेहि य। गयासंभग्गगत्तेहिं पत्तो दुक्खं णंतसो। ६३। खुरेहिं ति

जेतीषीधाराउ छुरीपाली मोटाछुरा तेणेंकरीनें कापोत्रगजनीपरें थंडो थंडकीधो च्चाचा
तेणेंकरीनइं मोटाकातर कातरणी तेणेंकरी कातरणीइ फाड्यउ ऊआधाविषंड मनीऊ
नइं कीधो तिरछो थंडकीधो छेद्यो तारीनें

क्खधारेहिं। छुरिआहिं कप्पणीहि य। कप्पिओ फालिओ छिन्नो। उक्कित्तो अ

कदर्थ्यो हुं अने मातापि तांउ अनेक घणी वार संसार मांहि वसतां थकां ५३ | पास बंधन विशेषइ करी | कूडजाल अजाणीने मांडवें करीने | मृगहरिणी थानी परि अवश परिवशपण्यो थको | लोभावीअ रसे परहे वहाव्यो बं

१२१ अणेगसो।५३।पासेहिं कूडजालेहिं। मिओ वा अवसो अहं। वाहिउब

धने बांध्यो रुंध्यो बाहिर जावा न दीधो | हुं घणी वार पर एकवार नहीं विणास्यो जीवतव्य थी चूकव्यो अहे माता पिताजी ५४ | मच्छ नें पंकअदि तजे गला तेणें करी मगरनें रूपें परमा धामी तेणें अनें तेहना की धा जे जाल तेणें करीनइं | माछि लानी परि अवस परवश थ

द्धरुद्धो अ बहुसो चेव विवाइओ।५४।गलेहिं मगरजालेहिं मच्छो वा अ

कोहुं अहे मातापिता उ | फलनी परि वि दारयो गलइ घी | काष्टनी परि फाड्यो मगरइं | हिरणनी परि ग्रहइ जालइं | रोहनी परि मार्यो मरण पमाड्यो अनंती वार हुं माता पिताजी ५५ | सीचाणादिक जी वनइं

वसो अहं।उल्लिओ फालिओ गहिओ।मारिओ अ अणंतसो।५५।वीदंसएहिं

१२१

बगफालिवाना जालतेणइ करीने | सरसप्रमुख बज्रलेप तेणें करीनइं | शकुन पंखियानी परे हुं अहे मातापिता उ | ग्रहिउ वि इम्ये | वलगाडि उलेपइं | बांध्यउ बंधनें करी नें | मार्यो जीवतव्य थी चूकव्यो हुं अनंती वार

जालेहिं। लेप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो अ बद्धो अ मारिओ य अणं

५६ कुहाडा अनें फरसी प्रमुख आदि देई तेणइं करीनइं | वाडई जे सूतार | दुम वृक्षनी पासें | परिइं | कूटिउ नाना खंड करीनें | फाड्यो काष्टनी परि | छि दि थे उ

तसो।५६।कुहाडपरसुमाईहिं। वड्ढईहिं दुमो विव कुट्टिओ फालिओ छि

फलनी परिइं | ताछिउ वासलीनी परें अनंती वार जेहनो पार न पामि वो ५७ | चपेटा घनाच पेटा मूठि मूकीनइं मुष्टि इक पाटा आदिक तेणे करी नें | कुमार ते लोह रना जाति तेणें करीनइं | अयं कला इक इजि म कूटाय इ

न्नो। तच्छिओ अ अणंतसो ५७ चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव

तिमआए कुटिउ भेदीषंडर कुरीनें नानाषंडकीधे अनंती अग्नेकरी वैक्रियत्रांबो
पो तघा कीधे वार जेहनो पार नपामीइ ६८ तपाबो अनें लोहनो

उत्रा०१९ ताडिउ कुट्टिउ भिन्नो चुन्निउ य अणंतसो ॥ ६८ ॥ तत्ताइं तंबलोहाइं

तरूआ सीसो एसर्व वैक्रियपृथवी एहवां पाया कलकलाटएहवे केहवो मेंअतिकूबपाडितो
नो परिणामजाणवो मुझनें राडमतें करतां थ का आक्रंदकरतो अतिबीहामणो जिमहुइ ६९

१३२

तउआइं सीसगाणि य । पाईउ कलकलंताइं । आरसंतो सुभेरवं ॥ ६९ ॥

वली संसारें परमाधामीजे स्यालगकदितांजनघो एहवो षवरावीउं स्वपोतानामां अग्निव
तुझनें प्रियवाल्हाहूंताजे तेहमंसारीनें समांआपणीजसरीरमांस र्णआगि
मांसषंडरूपजे नासरी

तुहंपिआइंमंसाइं खंडाइं सोल्लगाणि आ । खावि उमि समंसाइं अग्गि

१३२

सोवर्णजेहनोएहुं ७० अरेउफनइ चंदहासमदिरातां वगनीनी मधजातिएआ पाया
बो अनेकवारमें वाल्हाहूंता नीनोहूध जाति दिदेई हूंजल
उःषपाम्याछे

वण्णाइं णेगसो ॥ ७० ॥ तुहंपिआ सुरासीहू । मेरउ अ महूणिय । पाइउ

तीजाज्वलता वसाहाडनोपेंसबो रुधिरलोहीएहुण सदेवबीहतो तत्रेण उषिउ असं ब
मान पाया अरेमातापिताऊ ७१ त्रासपामतो तउषवंतइ धा
इ

मि जलंतीउ । वसाउ रुहिराणि आ ॥ ७१ ॥ निच्चं भीएण तच्छे । णं दुहिएण

कोपतांबें अगउपां उत्कृष्टाउःखनोसंबंध तेवेदनासरीरनीमननीवेदा तीव्ररचनाअधिक
गजेहना एहवइ मेंलावो एहवो वेदेछे अनुभवीमें अरे मातापि पणाधिकीचंडपगा
ताउ ७२ ढघणीस्थितिजेहनी

वहिएण य । परमाउ दुहसंबद्धा । वेअणा वेइआ मए ॥ ७२ ॥ जारिसामाणु

असेतातपिताजी दीसें छें वेदनाते घणाप्रकारनी   एहथी अनंतगुणी जेहनो अंतपामी इनेदुःखकारिगुणी इतोतेहनो अंतनथी   नरकनेविषेदुःखनोवेदवोमेंअनुभव्यो असेमातापिताजी

उत्ता०सू०८ सेलोए। ताया! दीसंति वेअणा। इत्तो अणंतगुणिया। नरएसु दुक्खवेअणा

१२३

७३ तीव्ररसनाअधिकपणाथकी चंडपगाढ घणी स्थितिछेंजेहनी   रौद्रामणासांभलेंधूजेंदुःखें अरीयासीसकिइजे ६   सांभलेंइंभमहाभयकपजें   अतिदिबीहामणा नरकनेंविषे

७३ तिव्वचंडप्पगाढाओ। घोराओ अइदुस्सहा। महाभयाओ भीमाओ। नरएसु

मेंवेदीअनुभवी असेमातापिताजी ७४   तिमहिजसघलाभवनेंविषइ असाताअक्षषमय   एहवी वेदनाजेतीहितापरेषादिकते वेदीअनुभवी   आंषिमीचीउघाडीइ

वेइआ मए। ७४ सव्वभवेसु असाया। वेअणा वेइआ मए। निमिसंतर

१२२

जेतलेंपिण लेशमात्र   जेसातासुषनोवेदवोनथी तोअसेमातापिताउकंसकमालअनेंसुषतेउषमेंकिम सहस्यांतमेदीक्षालेइलीकहोछो ७५   तेमृगापुत्रप्रतिहबोल्याकहिताहवा मातापिताजेमृगाराणीअनेंपिताबलभद्रराजा   ताहरेछांदें अभिप्रायेंपोतानें तोअसेपुत्रप्रव्रजी

मित्तंपि जं साया नत्थि वेयणा। ७५। तं बिंतम्मापियरो। छंदेणं पुत्त पव्व

दीक्षालेइतो कोणवारइछइ   एतलोविशेषछेंजेवली श्रमणचारित्रतेहनेविषइ   एहदुःखजेनिप्पडिकम्मयाकहितां रोगनोप्रतीकारवेदानउअणक रावितो तेपापनोवैदोनकरावेवतो ७६   तेएयुवराजा मृगापुत्रबोलतोहुउ मातापिताप्रतइकहैछे

या। नवरं पुण सामण्णे। दुक्खं निप्पडिकम्मया। ७६ सो बिंतम्मापि अरं

एहइमजजेतुमेकहोछोतेसही जिमस्फुटप्रगटछइतिम   परंपरिकमवियावछसंभालकोणकरइछइ   अरण्यअटवीनेंविषेमृगहरिणियानें पंषियानइ ७७

एवमेअं जहाफुडं। परिकम्मं को कुणइ। अरण्णे मिअपक्खिणं। ७७

एकलो थिको अट वीनें विषइ — जिम निश्चल स्कंध विचरें मृग हिरण — एणें न्याइं दीधो छुं धर्म वीतरागनो नाखित आचरिस्युं आदरस्युं — सतरभेदे संयमे करी बा

उत्रासूत्र एगभूउ अरणे वा जहा उ चरई मिगो। एवं धम्मं चरिस्सामि। संजमेण

१२५

रे प्रकारे तपणं करीनइं ७८ — जिवारे मृगहिरणनें आतंकनो काल मरणनो देणारो शूलादिक — मोटा आरण्य अटवीनें विषे ऊपजइं उदय आवइं — रहितां व सतां वृ

तवेण य।७७। जया मिगस्स आयंको। महारन्नंमि जायई। अछंतं रु

क्षिकां सूका वृषना मूलनें विषइं — कोण एहवा हरिणनें तिवारें दया भाव आणी जे औषध प्रमुख करइ — कोण ते मृगनें तिसंतओषध आलीनइ आपइं — कोण सुख बादिक ते हमृगनइं

७९

रकमूलंमि। कोणं ताहे तिगिछई ७८। कोवा से उसहं देई। कोवा से १२५

पूछइ जसुख सम मा-छइ — कुण भातन मृगनइं भात पाणी पी इवानइं काजिइं — आहारी नइं निहां आपइं अ हामानां विनाउ — जिवारइं ते मृग सजो थ ई रोग उपशांत थइं अनइं

८०

पुछई सुहं। कोवा से भत्तपाणं वा। आहरित्तु पणामए।७९। जया य से सु

सुखसमा धिवंत थाइ — तिवारइं जाइ गोचरइं गोचरि ग्रास तिवारि वजी जेहां ते गोवरतइ जिहां — भात पाणीनें अर्थइं प्रगजनइ — अटवी इंजे वरिजनी भूमिका निए — अनइं सरोवर तलावनें विष

ही होइ तया गछई गोअरं। भत्तपाणस्स अठाए। वल्लराणि सराणि अ।

आरित्रै रखडइ पाणी पीईनइं — वल्लर अटवी इवारि नी भूमिका इ सरोवर पु ष्पनइ विषइं॥ — जिम मृग इइ रणनी नेवडी अरहांथ रहीं टपवत हु बकल बगलान प्रमुख बीनइं पखायो गपपटइ वरीनइ — पव इजा इम गचर्या इथि।

८०। खाइत्ता पाणिअं पाउं। वल्लरेहिं सरेहिं वा। मिगचारिअं चरित्ताणं गछ

उत्तरा सू ८

१२५

तानी इच्छाइ जिहां वे जिहां वे सी सकोइ जिहां बइसी सकि यइ ॥ ८२ — एवं इणि प्रकारें संयम क्रियानुष्ठा नवंत ऊठ्यो साधुयती — कोइ एक रोग थयो थिको वेदना मेटवा मृगलानी परि अणेगओ एक ठेकाणे ते गामि नर हे साधु — हरिणना जसरी षी चर्या वरी देहि दोषी फिरे तो पवा

इ मिगचारियं ८२ एवं समुट्ठिओ भिक्खू । एवमेव अणेगओ मिगचारिअं

री कर्मने इम आवे शन्यक भिकरी संयम धरी — ऊंचो जे दिशि नो परिमुनि मोक्ष रूप णो ते प्रते जाइ क्रम पले ते मोक्ष पामइ ८३ — जिम मृग हरिण एकलो नहीं कोइ पामें बीजो एकलो थिको अनेक थण थानकने विषे चरी आहारादिक लेवानो स्वभाव छे जेहनो — थानकने विषे वाम जे हनो ते नथी एक अनेकवा

चरित्ताणं उड्ढं पक्कमई दिसं ८३ जहा मिए एग अणेगचारी अणेगवा

सी ध्रुव सदा गोचरी जेहनें गोचर जसो जेतो आहार — एणे दृष्टांते ते मुनी मृगनी परि इम मुनि साधु गोचरीयें जाइ प्रवर्त्तो पइठो थिको — आहार पाणी नि रूप इव ले इम ही लेनही — आहार पाणी अण पामें को इहहस्यनें आपणा आत्मानें

से धुवगोयरे अ एवं मुणी गोअरिअं पविट्ठो नो हीलए नो वि अ खिंस

१२५

निंदइ नहीं अहो माता पिताउ ८४ — मृगहरिणनी चर्या चारित्र पाली नइ काजिं जाइ आवइ निम मृग एउ करइ छइ कां वि चरस्युं यती नइ पंथि जिम … करउ ॥ — वलतां माता पिता कहइ छइ एवं जइ इम … जहा सुहं — माता पिता प्र… गा पाली बलन

इज्जा ८४ मिगचारिअं चरिस्सामि एवं पुत्ता जहा सुहं अम्मापिऊ

इतें अणुन्नाउ नुं उपधि छइ — त्यजइ परिहरइ उपधि परिग्रह स … — एहवी इं कही ते मृगा चर्या चरिसुं आचरि सुं तें मृग चर्या के हवी छइ — समस्त जे शरीर ना मन ना दुःख

८५

हिं अणुन्नाओ जहाइ उवहिं तओ ८५ मिगचारियं चरिस्सामि सव्वदुक्ख

तेहनी मुंकावणहारी ए कही छइ — तुम्ह माता पिताइं आज्ञा दीधइ थि कइ — माता पिता कहइ छइ ना उदी करा जिम सुख पडइ तिम ८६ — एम सर्वि जी परि ते मृ गाउत्र मा तानी

विमुक्खणिं तुब्भेहिं समणुन्नाओ गच्छ पुत्त जहा सुहं ८६ एवं सो अ

अनइपितानी अनइअनुमतलईमातापितानइमनावी ममतापणुंमोहमातापितायनपरिग्रहनउ जिममहा
बहुविधप्रकारइ छेदइछोडइअभ्यंतरविषयादिकनामनता मोटोना
छेदइ गसामा

उत्ता।सूत्र म्मापियरो।अणुमाणित्ताण बहुविहं।ममत्तंछिंदईताहे।महानागो

कांचलीनइंपरिहरेबाल्यपणे कुहिइ विल्लइ जहसापनेना छेटाले स्त्री च ज्ञातिने रेणुजिमलूगडइव
वलगउनजोइकिहांछेलि सीधछुए मृगापि तृपलरमाक पेरीना जा र रुद्धिया लगीकुइअनइफा
१२६ मजछइदइ ८ मादिक इतिहमित्र छपना ति ली दिकनी स्कीवेगजीकीजइ

८७

वकंचुअं।८७।इड्ढीवित्तंचमित्तेआ।पुत्तदारंचनायउ।रेणुअंवपडिल

सर्वछांडीपरिहरीनइंघरथकीनी हिंसानकीजइसाचुंबोलीइअदत्तानली ईर्यासाषाएषणाआदाना
निम कल्पउदीक्षालीधीतेणइ जइब्रह्मचर्यपालियइपरिग्रहनराषी नक्षेपणापरिठवणापए
इणपमहाव्रतसहित सुमतिसुमतउमनोगुप्तवचं

ग्गं॥निद्धुणित्ताणनिग्गउ।८८।पंचमहव्वयजुत्तो।पंचसमिउतिगुत्ति १२

नगतिकायगुप्त कार्यसूत्रविनयवैयावृत्यसज्झायध्या एहवउअभ्यंतरपकारना वस्त्रपात्रादिक अहंकारना
तउ गुप्तिंइगुप्त नकाउसग्गएअभ्यंतरतपइंमानेनं तपतेहनइविषइसा विषइममत्वन निकमादि
अणसनउनोदरीनिरसवरीरकष्टा वधानहुउ ८९ बीजेहनइ कछउकारन
ग्गसंलीनतागबाह्यतप॥ मदनथीजेह

गुत्तोआसभिंतरबाहिरए।तवोकम्मंमिउज्जुउ।८९।निम्ममोनिरहं

संगइत्यादि छंड्याउगर्वरिसनउ समउसरि समस्तजीवनी बेंद्रियादिक पृथिवीपाणीप्र
नइ एहवउ कनोनथीजे गर्वसातानुगर्वएतो शुरागद्वेष शुअनइमित्रआदि सर्वजीवनइ गनिवायुवनस्प
हनइ गवली व्यागारवजेपो नाछांडियाथी दईतेहनइविषइ विषइ तीथावरनविष

कारो।निस्संगोचत्तगारवो।समो अ सव्वभूएसु।तसेसुथावरेसुअ

लाभपामिवउतेअलाभअप्राप्तनहनइ जीववउ मरणन रागद्वेषर रागद्वे कोईनिंदाकरइ
विषइसुखसाताडःखअसाताकपउजपनइ नइविषे इविषइ हिताविषइ षरहित कोइप्रसंसाक
तथानिम इतेहनइविष

९०।लाभालाभेसुहेडुक्खे।जीविएमरणेतहा।समोनिंदापसंसा

निमकाईकहइ आवउ कइसउ हुइ समभ गर्वि हुतइ कषायथकी दंड २ नइं त्रिविधशल्य ३ नइ वि
अवि दियइ अथवा पर हउ जां काइं आगउ नइविषइ इविषइ षइ सप्तभयनइं विषइ॥
लाभ पमान निंदा स्तुति

९१

उत्ता.सू.ट सु।तहा माणावमाणउ।९१। गारवेसु कसाएसु।दंडसल्लभएसु अ।
निवर्त्तउ हास्य अनइं शोक नियाणउ असुह तनुं रागद्वेषरूप बंधन निश्राजेहनइं नथी इहलोक दिव्य
उमसउ॥ तेहथकी रहितपणइ रहित इहाँ रहितपणइ पना आश्रणकरिवा नथी इहलोक परइ
शाश्वतो मुख पमुषनइं विषइ

१३७

९२

नियत्तो हाससोगाउ।अनिआणो अबंधणो।९२।अणिस्सिउ इहं लोए
देवलोकादिक परलोकनइं विषइ कोईक पापी वासलीइ करी वेदइ अन्नादिक असणनउ करइ आहार
निश्रा नथी जेहनइं परलोकाद्धिनउ कोईक बावना चंदनइ सूंजइ एवि आहार के दिक परिहरइ सुखपइ वउ
नाश्रणकरिवा थकी हुने विषइ सरिखउ मृगाउत्र॥ रइ अथवा लसरिखउ जाणिवउ॥९३

परलोए अणिस्सिउ।वासीचंदणकप्पो अ।असणे अणसणे तहा।९३ १३७

अप्रशस्त पापाश्रव जे बारइ तिहां हिं सर्वथी निवर्त्तनवइ इणि कारणि आत्मानइं विषइ रूडा ध्यान नाजे योग व्या
कर्मबंध विना हेतु आश्रव बारते पिहित ढांक्या आश्रव जेणइ ब्या पारते णइं करी नइं
रूपथकी प्रशस्त आवइ नारूं ध्यावइ

अप्पसत्थेहिं दारेहिं।सव्वउ पिहिआसवे।अज्झप्पज्झाणजोगेहिं।
रूडउ वइरउ मउपसम इणि प्रकारइं रू बखाण्यानथा दर्शन शुद्ध समकित तप १२ भेद ते
अनइ सामर्थ्य सिद्धांतते डां जे मतिज्ञानादि रित्र तेणइ क नसाथी सहितइ णइ णइ करी
हतुं ९४ तेणइ करी री

पसत्थदमसासणे।९४।एवं नाणेण चरणेण।दंसणेण तवेण य।भा
महाव्रतसंबंधिनी भावना पांच तेणइ करी सम्यक्प्रकारइ भावना भावीनइ तेम मृगापुत्र घणां वरस
अथवा अनित्यादिक भावना इकरी ने आपणो आत्मा जे मृगापुत्र ऋषि तां व्रत रलगइ
एवं नाम ईनिदान रहित सुद्ध निर्दोष ९५

वणाहि अ सुद्धाहिं।सम्मं भाविउ अप्पयं।९५।बहुयाणि अ वासा

श्रामण्य चारित्र रूडी परिइं पालीनइं   मासएक लगइ भातपाणी मेल्हीअणसणकरीनइ   सिद्धि मुक्तिइं पुहतु सिद्धि केहवी प्रधानस्थानक जिहां जन्मजरामरणादिक नहीं

उत्तरा सूत्र ट   णि सामन्नमणुपालिआ मासिएण य भत्तेणं॥ सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं

एहवउ करइ वर्त्तमानकालिइं तत्त्वना जाण सर्वविइं तत्त्वना जाणकरनाहवावा गलितु ण करस्याइ   पंडित निश्चयपणइ आस्तुनाजाणि स्या सवेंग सती क्रिया ना करणहार ते अनिश्चय सत्त विचक्षण कहियइ॥   निवर्त्तइ पाछा उसरइ   पांचइंद्रियना कामभो

१२ ८

९६॥ एवं करिंति संबुद्धा। पंडिआ पविअक्खणा। विणिअट्टंति भोगे

गथि की   मृगापुत्र नाम ऋषीश्वर भोगथी निवर्त्या तिम अन्यइ निवर्त्तवउ   रोगादिक ना अभावथी जिहांइ पालिवइ महामहिमा वंत सर्वदिशि विदिशि व्यापी महिमा जेहनउ एहवउ मृगापुत्र   एहवा मृगा उत्तनामा

९७   ६३

सु मिआपुत्ते जहा रिसी॥ ९७ महापभावस्स महाजसस्स। मिआ   १२८

ऋषीश्वरनउ भांखलीनइ साषिनक पयउं संसार दुःखनउ वगोवणहार   तपवाह्यअभ्यंतर बार भेदने लइ प्रधान   चरित्रचारित्र वली उत्तमप्रधान   गति मोक्ष प्रधान गति जे सिद्धिरूप

९ पुत्तस्स निसम्म भासियं॥ तवप्पहाणं चरियं च उत्तमं। गइप्पहाणं च

वली त्रिणि भुवन मांहि जे विख्यात एहवी   जाणीनइ   दुःखनी श्रेणि वधारवी विकीही हितनाकरण हारगणिमादिक धनद्रव्य   ममत्व ममता ते हुं बंध नहीं बांधणहार

९८

तिलोअविस्सुअं॥ ९८ विआणिआ दुक्खविवद्धणं धणं ममत्तबं

वलीमोटा भय पेर संबंधी तेह तुं आवणहार जाणी॥   सुखनी उपमा करणहारि   धर्मरूपिणी कालविडं   अनुत्तर प्रधान सर्वमांहि श्रेष्ठ   धरउ अंगी करउ   अनंत ज्ञान दर्शन वीर्य सुखरूप

धं च महाभयावहं सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं धारेह निव्वाणगुणा

गुणवती महिमाइकरी माहीवइ ह्दउ एवं हे समगोतमी मृगापुत्रनामा अध्ययन नउ अर्थ कह्यउ जेह माहे अरिहंत आदि देई सिद्धवनर
आपण कहइ श्री सुधर्मस्वामि जं एवं केवल गणी समो अध्ययन मृगापुत्रनो निवृत्ति कर्मताने भेदेने हमणी नमस्का
हारि वतिंक हइ छइ विपाक सुहं तोनिवृत्ति कर्मतान विषे नोहइ तेहजे अनाथ रकरीनइं
१९ पणु सम्यक्त्व कारइ जाणो तिणि वीसमउ अध्ययन अनाथी नाकहइ छइ
१९

उत्ता॰सू॰ ८ वदंमहत्तिबेमि ॥ १९ ॥ मिआउत्तिज्जं सम्मत्तं ॥ १९ ॥ सिद्धाणं नमो कि

हितनावाछणहारइ अर्थयइएहवउ
आचार्यउपाध्याय सर्वसाधक तेसणी साक्षी उधर्मनउ अर्थ धर्मतेहनी गतिइकहीइजा एहवी शिक्षा सांभलउ मुझकहि
सिक्कि विकी नइछइ तेवलीतघासावी तावतिइं श्री वविरनउ वचन

१३९ च्चा संजयाणं च भावओ अत्थधम्मगइं तच्चं अणुसट्ठिं सुणेह

घणां रत्नकर्केतनादिक अथवाघणा
महाबीला घोडा छइ जेहनइ राज्यनउ श्रेणिक नामा मगधदेशनउ अ क्रीडनइ अर्थि इग्छा डार माहि वानउ का
१ धणीतेराजाएहवउ धिपति कही यइ काकर जेइं नीकल्यउ

मे ॥ १ ॥ पभूयरयणो राया सेणिओ मगहाहिवो विहारजत्तं निज्जा १२९

मंडितकुक्षिनामा उद्यानचैत्यव घणावृक्षार नाजेहु मदृक्षअनइल नाह्घणाउकारनाजेपंषियाते णइ षं
नषंननइ विषइ तावेलाफीतेणइ आकीर्णसरखउछइ षीइंसेव्यउपरिवरुउ

२
ओ मंडिकुच्छिंसि चेइए नाणादुमलयाइण्णं नाणापक्खिनिसेवि

घणांफूलकारनाजे फूलतेणइ करी संछन्न मंडितकुक्षिना नंदनवननी उपमादी तिहांवन तेहश्रेणिक मा
ढांक्यउ छइ एहवउ माउद्यान अइ एहवउं छइ ३ मांहि राजादेषइ ध्

यं नाणाकुसुमसंछिन्नं उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥ तत्थ सो पासई सा
तपनउक अतिशयइं समतिनी बइठउ बइठउं षनामूलनइ विषइ सुकमालउ सुषसोगविवानइ
पुनिइ रणहार समाधिनउ धणी यनउ स्कल्पनइ पासइ शरीरनउ धणी अचितसोग्य

हुं संजइं सुसमाहियं निसन्नं रुक्खमूलंमि सुकुमालं सुहोइ

१४०

ते यतीनुं रूप सुंदर देषीनइं राजा श्रेणिक नें ते संयत साधुनइ विषइ अत्यंत घणो परम उत्कृष्ट न हवउ आसी होतउ हवउ जे रूप नें सरषाई पणउ अतुल अबीहइ

अंध। तस्स रूवं तु पासित्ता राइणो तम्मि संजए। अच्चंतपरमो आसी अउलो रू

उत्ररूपनउ विस्मय अहो आश्चर्यकारी वर्ण शरीरनउ आश्चर्यकारी रूप आर्य साधुनु सौम्यपणुं आश्चर्यकारी आश्चर्य
आश्चर्य वर्ण सतेज गौरवपणुं आश्चर्यकारी क्षमा नी परिदेषण हारनइ आनंद आपे लीभमा उपरा कारिणी
५ उरूप म मुक्तिनि

वविम्हउ।५। अहो वण्णो अहो रूवं अहो अज्जस्स सोमया। अहो खंती अहो मु

लोभ आश्चर्यकारी भोगइ परिहरनइ विषइ तेसाधु चरणवांदी नमस्कार करी वली करीनइ दईनइ प्रदक्षिणा
ता रीतें भोग असंगपणुं अनासक्ती मं रीनइ त्रण वार दिशि दीक्षिणा उत्तरि वलवउ

त्ती। अहो भोगे असंगया। तस्स पाए उ वंदित्ता काऊण य पयाहिणं ना

१४०

अति वेगलउ नहीं अति निकट नहीं हाथ बे जोडीनइं राजा पूछिवा तरुण यौवनवंत अहो आर्य साधु पउहा भोग भोग
उनहीं एहवउ थिकउ लागउ पूछतीनइ नउ असि तइ दीक्षा लीधी तइ विवाना काल
७

इदूरमणासन्ने पंजली पडिपुच्छई।७। तरुणो सि अज्जो पव्वइओ भोग

न अवसर नइ विषइ आदर सहित चारित्रनइ एह वात अर्थ निमित्त कारण सां हिवइ उत्तर कहइ
अहो संयत साधु कष्ट उठउ विषइ भलिवा वांछु छउं॥ नथी॥
८

कालंमि संजया। उवट्ठिओसि सामन्ने एयमट्ठं सुणेमि ता।८। अणाहो

नाथ स्वामी जेहनइं इत्यादिक न कस्ते हनइं दिइ कइ सुख उपरि दया आणइ अथवा कांई तेणइ करी हउ
ते कुंअ नाथ अहो म ते हनी रक्षा करइ ते हवउ नाथ स्वामी मित्र वलेष वइ अनइ मित्र कोई हितनउ कउ तेणइ न
हाराजा माहरइ नथी माहरइ नथी रूणइ मइ

मि महाराय। नाहो मज्झ न विज्जई। अणुकंपयं सुहं वावि। किंचि णाभिसम

टीका यतीदृशमकस्या पदीनं अतिशयसुंदर श्रेणिक मगधदेशनउ अधि एहवाउ फलइ आश्चर्यकारिणी
लीधी मित्रं विस्मयपाम्यउ राजा नामा पतीक्कर कारिणी कांतिरूपसंपदा धणीन

१४१ सेमहं ।९। तउसो पहसिउराया। सेणिअ मगहाहिवो। एवं ते इड्ढिमंतस्स कहं

किमता हइ इनाथपनथी एवधनकोई जउनाथ विनाउ केदी क्षालीधी भोगपइ झियना अहो संयत मित्रज्ञाईस्वजनामान्याः
मानइ श्रीपदनमानइ उत्कंठहो उंवउनाथ अहो भयत्राउ भोगविभुजनाथ साधु अनइ ज्ञातिका नातीजण
१० लोकउ थिकइ

नाहो न विज्जई ।१०। होमि नाहो भयंताणं। भोगे भुंजाहि संजया। मित्तनाइपरि

इपरव मनुष्यपणुं दुर्लभ खउंवणु निश्च वलीयतीक हइ अहो राजा आपणपइ तुं अहो श्रेणिक मगधनामादेश
मलउ वइहो दुल्लहं तउं वइ जञ्जनाथ वइ नाहरइ कोई नाथ नथी नउ अधिपतिधणी
वउं

वुडो माणुस्सं खु सुदुल्लहं ।११। अप्पणा वि अणाहो सि सेणिआ मगहाहिवा १४२

तत्रैपातइ आपणपइ अनाथ रहितथि किम तुं अनेराननउनाथथाईस इमयतीयइ नरमनुष्यनउंइंद अतिआकुल
कउं कस्यउंहंतु॥ तेश्रेणिकराजा आकुलथयउ
१२

अप्पणा अणाहो संतो। कहं नाहो भविस्ससि ।१२। एवं वुत्तो नरिंदो सो। सुसंभंतो

घणविस्मयपा नाहइ हनाथनथी एहवउंवचन यतीअत्यंत विस्मआश्चर्यपमोघु घोडामाह हाथी मनुष्यसुभ
म्यउज सर्वइ सांभलुनऊनउ थिकउथेलउकहउ रइघणा घणा नाहिमाह
१३

सुविम्हिओ। वयणं अस्सुयपुव्वं। साहुणा विम्हयन्निओ ।१३। अस्सा हत्थी मणु

रइघणा पुरनगरमाहइ रइवइराजा भोगवउंछउं अनुलवउं छउं मनुष्यसं आज्ञाप्रवर्तिवतरामनस्यउ ऐश्वर्यसमृद्धि
वइ लीनुवर्यमाहइरइवइ बंधीयाकामभोगहउ स्पर्शीमिमाहइ इअथवा आज्ञा तेआज्ञी नो
मानिवउए श्वर्यथकुरइपणउ १४

स्सा मे। पुर अंतेउरं च मे। भुंजामि माणुसे भोए। आणा इस्सरिअं च मे ।१४।

एहवी संपदा छतां अलंकारणीबि कइ सर्व काम भोग इंद्रियना काम भोग नइं आपीम तउ इम कहइ किम अनाथ नाथ रहित कहो छो मा निषेधइं ऊं भूठूं म बोलिस

उत्तरा सू० ८ रिसे संपयग्गंमि सव्वकामसमप्पिए। कहं अणाहो हवइ मा हु भंते

१४२ इसउं वचन मबोलिवउ नथी तउ जाणतउ अहो पार्थिव राजा अनाथ एहवा शब्दनउ अर्थ अनइं पोथउ उत्पत्ति अनि प्रयत्न अहो पार्थिव श्रेणिक राजा जिम अनाथ नाथ सहित थाइ

१५

मुसं वए॥१५॥ न तुमं जाणे अणाहस्स अत्थं पोत्थं च पत्थिवा। जहा अणा-

अनइ सनाथ नाथ सहित थाइ अहो नरना अधिपति राजेंद्र सांभलि मुझनइं कहितां थकां नइं अहो महाराजा अव्याक्षिप्त चित्तइं अनइं

१६

हो हवइ। सणाहो वा नराहिवा॥१६॥ सुणेहि मे महाराया। अव्वक्खित्तेण १४२

न क्षिप्त चित्त करत जिम मई अनाथ नासहित थाइ जिम मइं अनाथ प्रवर्त्यउं जहा जिम मुझनइ प्रवर्त्तुं तउ कोसंबी नामा नगरी पुरि जिहां किसउं करइं

१७

चेअसा॥ जहा अणाहो हवई। जहा मे अ पवत्तिअं॥१७॥ कोसंबीना-

जूनी नगर नइं भेदइ पोतानइ गुणइं करी शोभतउ तिहां नगरी थई हुंतु पिता माहरइ घणा धननउ संचय तेहनइं नामि अनइं गुणइं करी

म नयरी। पुराणपुरभेअणी। तत्थ आसी पिआ मज्झ पभूअधणसं-

धन संचय प्रथम वय पेहलूं अवस्थानइ विषइ अहो महाराजा जेहनइ उपमा सरखाई कोइं नथी एतावता अधिक आंखिनी वेदना कुंती कुंइ अनइं वली विस्तीर्ण घणउ दाह कहितां दाघज्वर

चओ॥१८॥ पढमे वए महाराया। अउला मे अच्छिवेअणा॥ अहो(त्था) वि-

सर्वगात्र आषा शरीरनइ विषइ ॥ शस्त्र जातरवा परमउत्कृष्ट तीक्ष्ण अणीआ शरीरनां सुकुमालविवरा-
हे पार्थिव महाराजा विषमुष जिम रुडेरुडा आंषिवा कादिकनइ विषइ

१९

उत्तसू।८ सोदाहो सव्वगत्तेसु पत्थिवा ॥१९॥ सत्थं जहा परमतिक्खं सरीरविवरंतरे

घात जइ वयरी रूठो हिये वेगा करावइ जिम इणिप्रकारइं माहरइं आंषिनेत्रनी त्रिकटिनउ विभाग माहरइं अंतरमां
काई वइरी कोपवंत अधिकउं वेदना पीडा हवी हे महाराज हिंडु आसिलाष अनइ हृदि तेहनइ

१४ ३ २० पीडइ

पवीलिज्ज अरी कुद्धो एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥ तियं मे अंतरिच्छं च उ

उत्तमांग माथु पीडापी इंद्रनउं वज्र सरषउ भारिइ वेदना केहवी उपजइ तेह वेदना असातावेदनीय कर्मनाउदइ वेदना कहिवा
डा उपजावइ समानइ वज्रघात सरीषी अतिघोर रौद्र अनइ रूप अत्यंत दुषनी उपजावणहारि नइ समर्थ नहीं
नइ पणि परानइ बनी उपजावणालि

२१

त्तमंगं च पीडई इंदासणिसमा घोरा वेयणा परमदारुणा ॥२१॥ उवट्ठि। १४३

रूपा माहरा काजि वैद्य नामो टार विद्याइ करी मंत्रइं करी नइ व्याधि नानि ऽसाध्य अक्षर लीन घणा शास्त्रनां जा मंत्रनइ मूला
नायक श्रेष्ठ वारणहार श्रीपहवादी जा लषाई यार दीषमुष नइ वि

आ मे आयरिया विज्जामंततिगिच्छगा अबीया सत्थकुसला मंतमूल

षइ विसारद नै वैद्य माहरूं पडी गलउं करिवा वैद्य रुकषधर रोग विष तिवारक धाउ ४ प्रकारनु पडी गलउ जिम
जाहा आगरो गनु प्रती कार करिवा सा हितकइ तिम शास्त्र मूलाप्या सारू रूप रंपरा नउ उत्तम मन
२२ वधान पहला करावि वुविरे षनदेवउ इत्यादिक हितकइ रोगी याने तिम करइ

विसारया ॥२२॥ ते मे तिगिच्छं कुव्वंति चाउप्पायं जहाहियं न य दुक्खा

नहीं मुकनइं दुःपरोगथी एमाहरइ उ अनाथ पणउं जाणिवउ ~~ते वेषमा रूसं पडी मलउ~~ पिता माहरउ घरनउं जे सर्व वखान दिअइ आप
क्रमनी जे आसातानइ अनिहाम हाराजा वस्तु इत्यर सुवर्णादिक इमाहरइ का
क्रमीन काबइ

वमो अंति एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥ पिआ मे सव्वसारं पि दिज्जाहि

२णड इमश्रादरवंतषक्लवुणनषीडषदेवनाषकी मुक्नइमूकावइ एद्मादरवञ्रनाथपणवंजाणिवव अहोमहाराजा मालावुणनिश्चयइ करीमादरीअहोम

२५

३त्नास्राट ममकारणान्नयडरकाविमोयंति पसमेञ्च श्रणादस्या।२४ मायाविमे

१४८ हाराय वुत्रनवजेशोकरूपडषतेपणइक रीनइयीडांनीडषधरवी आदरसहितषकीवुणनहीडःषनी वेदनाषिकीमूकावइं एमादरवंअनाथपणवनाथ रहितपयवंजाणवुंअहोम

महाराय।पुत्रसोगडदठिश्रान्नयडरकाविमोश्रंति।पसामञ्च श्रणाद

हाराजा साईजेमादराअहोमहाराय एकमातानाजण्या ज्येष्ठवंगे अनइकनिष्ठ लकुडलातेह आदरअधिककरतांवुणनही डषनीवेदनाषिकीमूकावइ॥

या।२५।सायरोममहाराय सगाडिठकणिठगा नयडरकाविमोश्री १४८

एमादरवञनाथपणवंनाथरहितपणवं जाणवुं बहिनिजेमादरीअहोमाहाराज आपणीएकमातापितानीजिणीमु लषीवणीकनिष्ठमुक्नइलकुडी

२६

ति।पसामञ्चश्रणांदश्रा।२६। नयणीवमेंमहारायसगाडिठकणि

आदरअधिककरतीनेंवुणनहीडषनी वेदनारीषकीमूकावइं एद्मादरवंअनाथपणवंनाथ रहितपणवजाणिवव सायीस्त्रीमादरीअहोमहाराज

२७

ठगा।नयडरकाविमोश्रंति।पसामञ्चश्रणादश्रा।२७।सारिश्रामेम

अनुरक्तरागिणीपतिव्रतापणवंधरतीअ बबाषयइंसरीषा आमुंइंकरीनइंमर्लसलांजेनेनेआंषि नेणइकरीनर उरहितेयइमाहा रुसीषइं

हाराय।श्रणफरत्ना श्रणफवृया। श्रस्कंपुत्रेहिंनयणेहिं।उरंमेपरिसि

२८ अनधान फाणीनुपी अंघोलिन वस्त्र फल विलेपनस्रूकादि माहरइजाणपणइअथवा नेसा
जिमवुं इवउ अंकरिवउ दिक गंध नीमा जा मलियागरादिक नो अजाणपणइस्वसारज दीधा

उत्तरा॰स्क॰८ वई ॥२८॥ अन्नंपाणंचन्हाणंचगंधमल्लविलेवणं मएनायमनायंवा।सा
लघवनीधणीयाणीनवयौवन एकह्णि मेमाहराअहोमहारा पासाथीपरही कीटतीनहवीकायेका सदाप
वतीनेसोगवतीनहवी मात्रपणि जे मविहोछिजातीनहवी सिरह
१४५

२९
बालानोवसुंजई॥२९॥खणंपिमेमहाराया।पासाउनविफिट्टई।नयदु
नीथकीह्वीपुणनहीदुथनी एमाहरतेअनाथपणतेनाथरहि रोगनइथतीकारउपाधनजागइंति
वेदनाछिकीमूकावइ नपणतेजाणवउ वारइंअहोकुंसुकहिनउवउवउएह

३०
रकाविमोयंति।एसामज्झअणाहया॥३०॥तदुंपवमाहंस्स डुरक १४५

डुरकइंकरीथमीसकिपइ डुपनउंवेदवुं अनुसविवासोग संसारजेम्यारगतिरूपतेदनइ सकृतएक
कुइवलीवली नेवेदना विवा विषइ वारजइमू

३१
माऊपुणोपुणो।वेअणाअणुभवेउंजे।संसारंमिअणंतए।३१।सइंच
काउएहछिकीवेगलुंथा डुपनीजेतेदनानवलीविहुजविस्त्री हूमा इंद्रियथ आरंसपाप पडिवजउंअनगारसाध
अंतु लग्नतिपणीजेकुंसोगवउंछउएहवी वेत दमीनइ आपारनथी पणउजिमतेणीइदीक्षाइं
रूकी मात्र हानथाउ जेहनइ॥ संसारछेदाइवेदनीनुंसा

जइमुच्चिज्जा।वेअणाविउलाईउ।खंतोदंतोनिरारंभो।पव्वइएअणगा
वथाइ एहवउंहर्वइछीनविउचिंतनाथप्रे मनवशेप्याइंपकवाउहवउंअहो अनिकमीवहंचनीजेरात्रितेरज
३२. नीकरीनइ मनुष्यनाअधिपतिठाकुर रात्रिनइविषइ

रियं॥३२॥एवंवचिंतइत्ताणं।पसुत्तामिनराहिवा।परिअत्तंतिएराईए।

दुखनी वेदना मेमा क्षय गई वेगली वेदना उपशम्या पछी हवं कालिनी अनिरायस्य उद्दीनइं आज्ञा मा
हरीनइ नारी रही गई रोगरोगरहित थकउ प्रभातकाल गीनइं पिता आदिदेई सर्वसजन
नइ विषइ वर्धकेकनइं
३३

उत्तरा सू० ट वेअणा मे खयं गया ॥३३॥ तउ कल्ले पभायंमि आपुछित्ताण बंधवे खं-
क्षमा इंद्रिय आरंभ सर्व कर्म तेदीक्षा पाम्या अनंतर हुं नाथ थउ सुहृद स्वजन
वंतक दमीदांत नउ कारंभनइ पडिवज्यउ अनगार साधु युद्ध योगक्षेम करवा करीनइ थिकी आपणा
उ कउ परिहरउ पणउ ३४

१४६

तो दंतो निरारंभो पव्वइउ अणगारियं ॥३४॥ तउ हं नाहो जाउ अप्पणो
आत्मानउ पर अने सर्व सघला सत्व प्राणीनेह नी रक्षा बेंद्री तेंद्री चउ- रद्री पांची अनि वायु वनस्पती एव जीव
रनां आत्मानउ थति पाजिवा थिकी रिंद्री पंचेंद्रीए थावर नउ दीक्षा लीधइ नाथ हुउ पउ नइ
सर्वनउ हिलीनउ नउतेकिम ३५ आत्मा

अ परस्स य सव्वेसिं चेव भूआणं तसाणं थावराण य ॥३५॥ अप्पा नई

१४६

नेह जे वैतरणी आत्मा जीव नेह ज कूडशाल्मली वृक्ष नर आत्मा नेह नकाम धेनु गाइ समान जाणि आत्मा जीव नेह जहर्ष
नदी समान जा क संबंधी दुष नउ दायक जाणिवउ दुष वउ वांछा नइ पूरिवइ नेवाणि ऋद्धी कर नउ देणहार नंदन व
णिवो पापक करणी कीधइ तेथानकनांइ भणदीइ लीइ नमेरु पर्वत संबंधीव
पामीइः र्णीइ नेह ज=

वेअरणी अप्पा मे कूडसामली अप्पा कामदुघा धेणू अप्पा मे नंद-
नंत समान जाणि आत्मा जीव नेह ज रूडां पापस्थानक उकर दुष नरगादिकादिकनानेहनुं आत्मा जीव उप
वउ जाणीकरणीइ णहार रूडा पापस्थानक विकर्त्ता वीसंपरि स्वर्ग मोक्षादिकनां सुष गारी मित्र अनइ
सुषजीइ ३६ नकरणहार नगरादिकइः ष दिइ उइ

णं वणं ॥३६॥ अप्पा कत्ता विकत्ता य दुहाण य सुहाण य अप्पा मित्त-
अमित्र वयरि पापक आचार नइ विषइ प्रवर्त्यउ वैरी वली अनेराइ अनाथपणउं कहइ उइ ए हूं आगलि नेह
आत्मा जा शुभ सदाचार करता आचारइ प्रवर्त्तुं तेका करीसइ ते कहिस्यइ करी अनेरा अनाथपणउं उए
णिवउ मे तुम्ह सुष कारी थउ जाणिवउ ॥ हइ अहो नृपमहाराज काय

ममित्तं च दुप्पट्ठिय सुपट्ठिउ ॥३७॥ इमा हु अन्नावि अणाहया निवा त-

छिन्नएक मनउ षिकउरीजा कार्य सर्व निवारी निर्ग्रंथ साधु लहीनइं पाइं मीन यथा जेपोउकारइं साधुनाआचा
नइं निवृत निश्चल षिकउ सांवलि नउ धर्म आचा इं ते उपनिश्चइ ते रनइ विषइं शि
रकृति षलषाइ एगे केत

उत्ता सू ८ मेग विरतो निव्वाणं स्मणो हि। निर्यंठ धम्मं लहि आणवी जहा मी अंतिए
ला बकुपणउ जिम कुइ तिम काजर मनुष्य जे कोइ उतम षादिक षक्वादी कोलेई सम्यक्त्वली परिइं नकर सइ नसे
इ निर्ग्रंथ धर्म नइ विषइ सीदा ना आपणने नेअहिंसादिक महाव्रत पांचइ कइ मद पविक षापक षाय धनिदा
१५७ क अनेअनेरा नेसीरा षीनसक इं एअना
षपणउ सू ५

गे वकुकाउरा नरा। सू ५। जोपवइनाणमदइ याइं सम्मं नो फासयइंए
पविकषाध नषीनिग्रहसुउसंव मकरादिद रसनेविषे एरहउ षिकउ मूल थीनछेदेन तिवारइ कर्मसंबंधि
एउमाइ थकी सुउआत्मा जेणइ यइउ असंतोषी जेउप णावं धनेरा गद्वेषनेसाधु
णुजेद नइं सू ६

माया। आणिमादएणायरसे गिद्धे। नमूल उछिंदइ बधणंसे। सू ६। आउन्ना १४७

आयुक्त पणउं जेसाधु कांइ थोभी ईर्यासमिति साषासमिति तिमवलीएषणा आदानवस्त्र नउ जेवउं निक्षे
सावधान पणउं नइनथी इउण नइ विषइ।। नइविषइ समितिनइ विषइ पमूकिवउं नेदनी समितिनइ
उं

याउस्सयं नवि कोइ इरिआएपंतासायएतदेसणाए। आयाणनिक्के
विषइ फनीत्विक्तीनीति वीरमहावीर ते हनु साध्य उ जे मार्ग मोक्ष नउ पंथ थिरकाललगीनिश्चइ यमु हिज तोषईनइ वि।
प्रमुषपरिवविवानइ वि नेहपनिइंनवाज इनषवर्तई जेह षइजणथिरसि जाषजेहअनेय आचारनइ।
षइ विषइ शिथिलपणाथकी यह वउषईनइं।।

वणं। गणाए नवीरहाए अणुआइमग्गे। धणा चिरं पिसेमुंडरुईत्तवि
व्रतपांचमहाव्र तपारहेदे अनइंनियमअति इम थिरकाल लगी जोवादिक संबंधीय महीयारग
तनइविषइस्न अहतें बहुषकी स्तष रहित आपणाआत्मानइ उकेरायमाहीमर मीला रनउ पा
छिरउल मणाहारकइ

ता। अधिरहणतवनिअमेहिं सठं चिरं पि अप्पाणं किलेसइत्ता। नपार

कुशलंकारसणी संपरा य संसार अनंत — पोली मुठि हाथनी नही कांई कस्य करी — जिम ते हाथनी मूठि असार आलि वी नही कांई तेव — अयंत्रण अणाण्य जिम कू डा पोरह इस नाणूं जिम टीस
४२

ए होइ हु संपराए॥४१॥ पोल्लेव मुठी जह से असारे अयंतिए कूडकहा

वं सार परमां हिं को कात्रमणि कांच नउ थंत जिम टीसतउ वे मउघउ न वेचाइ जानि अडइकरी जाणउ रुष ४२
ईसार नही — तूयमणि ना मामणि सरिखु टीसइ परमां — मूल नउ कपजइ — आगलि इं
हिलउ नही

१४८

वणे वा॥ राढामणी वेरुलियप्पगासे अमहग्घए होइ हु जाणएसु॥४२॥

पासत्थादिक इहजन्मन वटीनइं आद कुशीलरनउं रिजुं उघादिक वेष सरिखा रूप आपण पइ असंय
नउ लिंग वेष इ विषइ रीनइ आजीविका तणी वृद्धि पमा मीनइ नी छक्कें कोई मां तइ

कुसीललिंगं इह धारइत्ता इसिज्झयं जीविय बूहइत्ता असंजए सं १४८

निवारइ कहइ हुं संय तेहो पइ करीनइ याति दुख पामइ तेह साधु घणा काल — विषपीधं थि कालकूट नामा
न साधु हुं एहवु बोलतउ लगी नरकादिक मांहि — कउंजि मोटउ विष
घ कउ घवर्तइ

जयलप्पमाणे। विणिघायमागच्छइ से चिरंपि॥४३॥ विसं तु पीयं जह कालकू

हणइ वजीशस्त्र नरवारइ मुष्टहवी घारजि तिम एहवी नरें वीरा तेसाधादिक इंद्रिय ना हुण
मारइ मनंतीपरि फासुं विकउ गनउ साध्य उजे धर्म विषइ तेणइ सहित इवे
ताल

डं। हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं एसो वि धम्मो विसओववन्नो। ह

वं मरनी जानि वेशोषतेहनी परिते वेलालके हवउ जे साधु लक्षण शरीरादिक नउं सुपिण कहीयइं सुपन सुनिक
अविषकह दिनां मंत्रादिक इंपीसूडा नहीएनाव नउं कउ ग्रहवां स्वादिक आगलि वउयइ पादिक
कालहणइ तिम विषयसहित धर्म हणइ मुनि मित्त

णाइ वेयाल इवाविवन्नो॥४४॥ जे लक्खणं सुविण पउंजमाणे॥ निमि

उत्तम दिकनी विद्या तिणइ अर्थइ स्नानादि जडीबोटी आश्चर्यनी करणहार मंत्रतंत्र विद्या न गछई न पामइ शरण रक्षा न उ
कउपदेस देवइ करी अत्यंत पणउ दिक रूप जे आश्रव द्वार कर्मबंधना हेतु कार कारण ते हसोगनां फलनी काल
विपाक देइ नइ प्रवर्तइ णइ करी जीवइ आजीविकानउ करणहार नइ विषइ ४५

उत्ता।सू।टा।प नकोऊहलसंपगाढे।।कुहेडविज्जासवदारजीवी।।नगछई सरणं तंमि काले।।४५।।त

मिथ्यात्वरूप मोटइ अज्ञानइ करीनइ ते द्रव्य ते केहवउ सदा दुखी चारित्र विराधनाथी कुरूपनुं अतिशय सूत्रे धाइ दुःख कवड
बीयती जाणि वस्त्र अशील पाम्यु आचार ते दुःख तेह थकी ते तत्वादिकनइ विषइ विपरी निरंतर नरगे तिर्यंच निगोदि
१५९ उधली नपणुं लहइ पामइ

मतमेणेवउसेअसीले सयादुही विप्परियासुवेइ संधावई नरगतिरि
उपजिवा नाथा मोनचारित्र विराधीनइं आपणपइ हवण लगाडीनइं दर्शनीनइं उहिसीनी पजाव्यउं वेचातुं आ
नकथनिइ असाधुरूपनउ वकी जिवारइं विचारीयइ तिवारइं वे णपतं साधुनइ अर्थइ एगृहस्थनउ नित्यपि
वधारकउ परंपरानीयणउं नहीं ४६ डु।।

रकजोणिं।मोणं विराहित्तु असाहुरूवे।४६।उद्देसिअंकीअगडं निआगं १५८

नमुकइ काईयइ अनेषणीय असुद्ध सदो अग्निजिम कांईकं न मुकइ सर्वे बालइ तिम आग्नि इतः एमनुष्य सवभी
नडांडइ पआहारकाणी आदि सर्वइ नीपरिणामइ ते षाइ पीइ सदोष सदोष सर्व एहथी चउ चवीमरीनइ पापक

नमुचइ किंचि अणेसणिज्जं।अग्गीविवासव्वभक्खीभवित्ता इतोचुओगछइक
रीजाइ नरका नहीं ते वइरी कंठछेदनहार कहीइ कंठमा जं ते से ते हनइं करइ करइ अपणि आत्मा अपणी मेकरणहा
दिकनइ विषइ जान ते छेदणहार करेइ कदितां करइ दुरप्पा कुंडरात्मा नाचार हसा आचारनी उहत्तिरं रजालस्य

४७

टुपावं।४७।नतं अरी कंठछेत्ता करेइ जं से करे अप्पणिआ दुरप्पा।सेणा
इमरण अवसर नइं मुनि हनइ पाछाना पश्चात्ताप करीनइं हा मइ पापी अज्ञानी निरर्थक निःफल नग्नपणउ चारित्र
जिवारइं उजवस्यइ निवारइ इंसउं कीधउं ते के हवउं दया संयम ते लइ विहूणउ पणउं ते हनइ विषइ रुचि अभिलाष
रहित ते साक रूपी नु नाणउं

हिइ मच्चुमुहं उपत्ते।पच्छाणुतावेण दयाविहूणो।४८।निरट्ठिआ नग्गरुई उत

जे बाली तत्थ मार्ग भेद थका कालनी आराधनइ इमे विरएउण से नेहनइ नथी लोक लोया बिहुं प्रकारे दुःखइ लोक परलोक
विषइ अज्ञाना आराधिवानइ विषइ विपर्या दिके नाथी अनइ परलोक पणि नहुइ नाथनें अणआराधे से तेहजइ
सकदीइ विपरीतपणउं समतिपामइ जे बली इ ग्रीति जाइ स्त्री गतिनपामइ यबंत लोकनें देषी नेमुकनइ विहि
लोकथी लूष्टनें कांई मुकनहीं इम

आ.सू.टबा. स्स जे तत्थ मढविवन्नासमेइ इमेवि से नत्थि परेवि लोए दुहओवि से किझइ तत्थ

चिंताइ कि झइ झणबाइ एली परिमलवृत्तनइ अणफर सिवे असंबंद मार्ग वंधवतिइ विराधी नइ षंडी कुशरीय विणी
तिम बिहुं लोकना स्वरूप आपणे कांई असिवायकजित असारव्रत नइ जिनोत्तम वीतराग तीर्थंकर जिमसोगरस
१५० णानें विषजो एलोकमांहि करीजबंत कर्मिष्ठ तपा ह्ला उ शीजस्सला नाथतिइ बावधीवानइ
४२ वजेहनउ तेस्वपने ह्वउ तेह

लोए धुवं एमेव हावंदकसीलरूवे मगं विराहितु जिणुत्तमाणं कुसीरीवि

रसिकरी लेपजबकी अनेरा पषी पापी कष्टपामी छकी निरर्थक व्योजन विवाबोक जेहनु सांसलीनइ अलेमेधा
लोसिणी भिकी जिमए जिणि पवइ कोई उतिकार न करइ एह्वा ह्वी परितापपामइ तिमए वीबुद्धिवंतस्त्रु तसा
मांसनी लोसिणी दुणसोग स्वारसनइ विषइ ग्रह छकउ परितापपामइ ५०

वासोगरसाणुगिद्धा निरंगसो आपरिआवमेइ ५० स्ववाणमेहावि स्कता। १५०

थउए अनुशासिमत्का ज्ञानअनइं गुणविरतिवछरका मार्ग कुशीलीयाअनाचारीनउ त्यजी परि महा
माह्त्रत सीषरूप तेकेह्वउ णतेणइ बेलइ करीनइ सहित पथ हरीनइ सपलइ नियं

सिअं इमं अणुसासणं णाणगुणोववेअं मग्गं कुसीलाणजहाय सव्वं महा

वसा अवधारि वणकहितांचालि चरित्रकहितां चारित्रनेहनउ आचार सेविबुं अन अनुत्तर प्रधान संयमउच्छेदे
त्रियातेह्नइ चतुर्विर्त्थंबमार्गइ इगुणज्ञाननेणइ बेइं सहितनेमहानिर्ग्रथमार्गथी यथाख्यातचारित्रपालीनइ
नउ ५२ ह्र

निअगणं वणपहेणं। ५२। वरित्तमायारगुणन्निएतउ। अणुत्तरं संजमपा

आराधीनइं स्त्रीपरिषपावीनइं निवारीनइं कर्म पामइ जह्स विउजमोटउं थानक अनंतसिद्ध एणेउ
आम्रवरहि आठप्रकार नउ जिहां वासउइत त्रमजगमांहि षमननि कारक
न सुलेषणाह्रपरूप र्मक्षी

लिआणं। निरुसवे संखविआणकम्मं। उवेइठाणं विउलुत्तमं धुवं ५२ ए

इतिइंजग्रहम्याजइपावइंछियजिणि महामोहजुमुनीम्बरमदाघनिक्षावजनइ महानिर्यामकनइंहितकारी
मोजतनपहवीउधर्मनजइजेहनइ विषइम्रनिद्दहपणउजेहनइ तेमहानिर्यामकहीयइ
मोहउयाननउधणी

।उ।सू।ट। तुगादंतिविमहातेवोद्दलो।महामुणीमहापइन्नेमहायसे।महाणिज्जविक्रमिणं

एहवउएकछलक यतीधतिइंपहवउंकहत
मोक्षेश्रेनसिर्दा तेहमुनिश्रेणिकहइंमवउविकउं संतोषपामउश्रेणिकेराजा उहवउकनकीश्रेठइश्रेज
१५१ नरूपीउ कहितउहवोमोटेविलासइंकरी नामा
५३

महासुश्रसेकाहणमहयाविद्धरेणं।५३।भ्रगेयसेणिग्रायाइणमुदाक्रका
अनाथपणाउंयथासृतजेहवउं रूजंमुखनइंदेषाडतंकरइउ तेकारणघकीजु रूजं मनुष्यन
जिजेणइ क्रंतउतेहवउ घवाछे जाधु उजन्म

यंजली।ग्रणाद्वंजहातचंसुद्धमेववदंसिग्रं।५४।तम्हाफलद्वंखुमणुस्स १५१

मनुष्यनउ जासवर्णरूपादिक उत्रेश्रेहोमहाक उत्रेसमानाथनाथप ग्रनइवलीबांधव जेहकारणथीउ मार्ग
जन्म नांसुहुरूडांलाध्र बीम्बरयती णइकरीनइसहित साईइकरीसहित होरसावउ नइवि
षइ

जम्मं।जासासुलद्धायभ्रमेमहेसी।भ्रम्हेसणाहायसबंधवायाजंसे।विग्रामग्गेजि
जिनेश्वमकही ग्रहोकषिद्वंलइनाथ स्वामीग्रनाथजे सर्वभूतप्राणजीवडीतेडीवजरां ग्रपराधकीधउ ग्रहो
इश्रीतीर्थकर पालीतेहनउ पंचेंद्री प्रमुखतेहनउग्रहोसर्वे जइतेतेषमावो महा
नइ ५५ हवउजनेस्वामी साग्य

णुत्तमाण।५५।तसिणेद्दोग्रणाहाणं।सद्वभ्रूग्राणसंजया।खामेमितेमहाना
ग्रनुशासनसिका इछीनइमइंउभ्रनइजेग्रहो
नाथणी इछउंछउवां सीक्रविधउंमाह यतीकिमइंपजइंजखइंदीठा ध्याननउव्याघातचूकिरउंजेउ वलीनिमं
छउंछउ राम्राम्यानइ ५६ तर्पु लीधीपग्राहिदेइनइ ष्मारउंमइकीधउ मानितुंत

ग इच्छामिग्रणुसासिउं।५६।पुच्छिऊणमएतुझं।झाणविग्घोउजोकउ।निमं:

स्याले गइं करीनइ जेमइं तेसर्वसमर्थसमउछे पणीपरिसवीनइं स्तुतिकरीनइ तेराजाश्रेणि अनगारसा
उत्तनइ जेअपराधकीधाछइमेमइ कआतिपणक्षमवंवसमस्तराजानमांहिसीह छमांहिइसी
समान
५७

उत्त॰सू॰टा॰प॰ निग्गहजागि दिंतं सघं मरिसेवि मि॥५७॥ एवं थुणित्ताण स राय सीहो॥ अणगार
हसमानअनाथीनामयतीप्रति सावरोधसमस्त परिजन बांधवभाईप्रमुषसहि धर्मनइविषइं रा विमलउनि
इंपरमभोटीभक्तिइंकरीनइं राणीसहित सर्वनकर नवनमांहिक्रीडाकरि गइंकरीनइ५७ मंजविअत्रे
चाकरसहित बांधवसहित उरालेउ

१५२ सीहं परमाइ भत्तीए॥ सओरोहो सपरियणो सबंधवो॥ धम्माणुरत्तो विमलेण चेय।
तःकरण अनाथीयतीनउअतिशयदेषीनइंउ अतिशयपुंजवाडीनइं शिरम
नेलेकरी धात्मपमाारोमकूमनइविषइजेहना करीनइदेईनैप्रदक्षिणाइरीयू स्तकइंकरीनइं
नइं
५८

असा॥ ऊससियरोमकूवो॥ काऊण य पयाहिणं॥ अभिवंदिऊण सिरसा १५२

पोतानोघरिगयउराजाश्रेणिक इतरेबीजउपणि समस्तसाधन मनोगुप्तिवचनगुप्तिकायगुप्तिएत्रिहुंगु
श्रीमहावीरनइंवादवापहिलु श्रेणिकनीअपेक्षा इंगुणइकरी सिरुयउमनोदंडवचनदंडकायदंडएत्रि
गम्यक्षपामउ ५९ इबीजेअनाथयती घरउ हुंदंडथीउसरूउ

अइआउ नराहिवो॥५९॥ इयरो वि गुणसमिद्धो तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरउ य वि
विहंगपंषीनीपरिममताजेमनपुण्यइं विचरतउहतउपुरा मोहनीयकर्मइरहि एहवुंजेकहवं सु एमहानि
करीनइंरहितथइएहवउथकउ॥ पृथ्वीनइविषइ तथकुंकेवलीथउ धर्मस्वामिजंबूप्रति यंथयाः
इंकहइछइ ६० अध्यना

हग इव विप्पमुक्को विहरइ वसुहं विगयमोहो त्ति बेमि॥६०॥ महानियंठिज्जं स
करउअर्थजेहा चंपानामानगरीनइविषइपा श्रावक हतिनिउथलीहंतउ महावीरनामातीर्थकरभग
मात्रथीआणिवउ= लिअनएहवइनामइ वाणीयउसार्थवाह वंतनेहनु
२०

म्मत्तं॥२०॥ चंपाए पालिए नाम सावए आसि वाणिए महावीरस्स भगव
शिष्यजअध्ययनइअनामपणउंकहउंतेएहवउविचारीविचक्षणधीजबाणिवउंतिणिकारणिविक्षणथीप्रतिबहएक
वीसमउंसमुद्रपालाध्ययनकहइछइ=१

शिष्य अंतेवासी महात्मा आत्मबलपराक्र निर्ग्रंथ श्रीवीतरागना प्रवचन श्रावक तेह विशेषइं अत्यंत कोविद पोतइं प
तेह श्रावक हती महंत एहवा भगवंतना॥ श्री सिद्धांत तेह नइं विषइ विदग्ध वादिक तत्त्वना जाण वहणे

उत्ता० सू० ट० उ। सिसो सो उ महप्पणो।१। णिग्गंथे पावयणे सावए से विकोविए। पोएण

इं करीनइं व्यवहर पिहुंड नामा नगरनइं विषइ तेपालित वाणीयानइं पिहुंड नग अनेरउ कोइक वाणीयो
रतउ व्यापार करं तेवाणियउ आवतउ हूउ रनइं विषइ व्यापार करता थकां गुणइं करी रंजउ थकउ
नउ इं पोतानी दीकरी परणावतउ
हूउ

१५२

२

ववहरंते पिहुंडं नगरमागए।२। पिहुंडे ववहरंतस्स वाणिउ देइ धूयरं

तेपरणी समकं कहितां सर्वगर्भ पछइ आपणा देसनगर प्रति एतला नंतर पालित व्यवहारीयानी
तेणइं सहित बीकीनइं लेईनइं इंवा जवउ वाहणइं बइसीनइं घरणी कहीयइ स्त्री ते

३

तं ससत्तं पइगिज्झ। सदेसमह पत्थिए।३। अह पालिअस्स घरणी। समु १५२

समुद्रनइं विषइ जन्म एतलानंतर दारक बेटउ तिहां समु समुद्रपाल एहवउ नाम बेटान क्षेमइं कुशलइं आव्यउ
प्रसवती हूई जणती द्र मांहि जिणइ थिकइ उ हूउ चंपानगरीइं नइं विषइ
हूई पछइ

४

द्दंमि पसवई। अह दारए तहिं जाए समुद्दपालोत्ति नामए।४। खेमेण आगए

श्रावक पालित नामा वाणीयउ अतिशय सुखइं वृद्धि पामइ दारक बालक ते केहवउ छै बहुत्तर जे कला
घरइं पोतानइं घरनइं विषइं तेहपालितना सुखोचित सुखनइं योग्य

५

चं। सावए वाणिए घरं। संवड्ढई घरे तस्स दारए से सुहोइए।५। बावत्तरी क

तेह भणइ सीखी बेतवानी निपुणमाहे तेहने योवनावस्थाइं करीनइं संयुक्त रूडउ रूप संस्था प्रीतिकारीयउं
विषइ कोविद पंडित थयउ रीअंगउपांग थयां बइ जे हमाए हवो नउ जेह नउ दर्शन छै जेह नउ

लाओ य सिक्खए नीयकोविए। जोव्वणेण य संपन्ने सुरूवे पियदंसणे।६

तरसमुद्रपालनइंयणउंरूप पाळितायपनाआणाइपरणावइरूप प्रासादधवळघरनइविषइ देवतादोगुंदकदेव
बतसावीइति णिएइवएनामइ स्त्रीसुंकीडांकरतउतेप्रासाद तानुपुरोहितत्रायेते
केहवउरमणीकतिहां सकदेवतानइपरइ

उत्रा.सू.८ ।तस्सरूववइभज्जं पिआआणेइरूविणिं पासाईकीलईरम्मे देवा दोगुंदवो
नीकतेजिमगा एतलाअनंतरअन्यदाअनेराअ प्रासादधवळहरनाआलोकमइ मारिवानईमडबतनरतंजणीन
गीजइतिमएह वसरनइविषइकिवारइंकइ गउषनइविषइबइठउबिकउ उविजिपनकणसुरनीमाजाद्धि
वाण तेणेकरीशोभागछेजेहनोएहवउ

१५५

जहा ७ अहअन्नयाकयाई पासायालोयणाठिओ वज्झमंडणसोभागं
वध्यमारि तेसमुद्रपालदेषइवा तेदवोरधुतिइंदेषीनइंसंवेग समुद्रपालएहवउनादतउ अहोआशु
वायोग्य हिरछीमेणसूमिइआ कहीयइवेराग्यवृतिपाम्यउथि हवउ थेइ
ण्याइति कउ

वज्झंपासइवज्झगं ८ तंपासिऊणसंवेग समुद्दपालोइणमब्बवी अहोअ
१५४

अशुभजेपापकर्मतेहतउ निर्यानबहरूडपाफअ मुसआप्र एहवउंसाबतउथाट बोधउंपाम्यउतसमु परमउक्के
मरूएबापनुमारिवाकाइउवइ डपालतिहांगउषिभगवंतमहिमावंत॥

९

सुहाणकम्माणं।निज्जाणंपावगंइमं।९।संबुद्धोसोतहिंभगवं परमसं
इसंवेगवैराग्य ८ पूछीनइआज्ञा मातापिताप्रतिइ ब्रितपइंआदरतउ हतउअनगारपणउं बांधीनइसगासजनपरिजन
पाम्यउ मागीनइं पितानइ लतउंसंगरहितसाधुपणउ नतउप्रतिबंधनमहाकष्ट

१०

वेगमागओ।आपुच्छम्मापिअरं।पव्वइएअणगारिअं।१०।जहित्तुसंगंचम
हाडु:खनीओ मोटइमोहकषाया रुजोजेरणानउरुडुनभयसय वीहावउपर्यायरूपजेधर्मतेहनइंअभिलषतउ
णिजेहवउकी हिकेमोहनीयजेहथी बीहकनुकरणहारविवक्क्षं हवउतेसगवंतसमुद्रपाल
तनइ

हाकिलेसं।महंतमोहंकसिणंभयावहं।परिआयधम्मंचभिरोयएज्जा

महाव्रतप आदिएव्रणमत्नरीसी जे आचारसुद्ध गोचरी हिंसांर हितएवधमव्रतसत्य बोलिवउं बीजुं व्रत तेणा निवारपत्रीजुव्रत
प्रमुख करणमत्नरीपरीसहा रस्ते हतनईंपणि रोवता वह गोचरी परिहरिवी अदत्त न लेवुं त्रीजुं व्रत वर्धपालिवुं व्रत
वउ चउव्रत
२२

१५५ जा वयाणिसीलाणिपरीसहेय।२२ अहिंससच्चंव अतेणगंव तत्तोअबं

परिग्रहनीबांछिवउंएपांच पडिवजीअंगीका पंचमहाव्रतमोटांव्रतजेहस्वेइ वरतउ हतआदरतुहतुधर्मश्रुतधर्मसम
मंउव्रतप रकरीआदरीनइ कह्यानेह कितरूपचारित्रधर्मव्रतपचरकाणरूपजि

भं अपरिग्गहंचा।पडिवज्जि आपंचमहव्वयाइं चरिज्ज धम्मं जिणदेसि
नवीनरागउने सघलासूत्रप्राणीनइविषइहितनाउपदेशरूपजी क्षमाइंकरीतउक्षमाइंकरीलोकनांदुष्टवच
साधुउविहारेपं वनीरक्षारूपदयाइंकरीअनु कंपनेइपालतउ नादिखमइजेएहवउसंयतसाधुकरीतिनउ
जित प्रतिपालकवउब्रह्मचर्यनउधरणहार

यंसिविऊ।२१ सव्वेहिंभूएहिंदयाणुकंपीखंतिक्खमेसंजयबंभया १५५

१५५

सावद्यसमापापजेमनवचनकायानाजोगप्रवर्त्तन वरिज्ज विचरतउरूडउसाधुचारित्रिआउसमुदपाज कालजे सा वुन
वर्जनेअनि त्रासस्पउंपरिवर्जतउभिक्षु रूडइसमाधिपणइप्रवर्त्तइछइंजेहनांइंद्रियप विषइअश्ववापार
सीयादिककाल
२३

री सावज्जजोगंपरिवज्जयंते।चरिज्जभिक्खूसुसमाहिइंदिए।२३ कालेण
कालेकहितांकालाविनपडिलेह बलपरीस पणंअव आपणुजिमरसंयम बलपरीसहादिसहिवासमर्थपणउअबल
णादिककरउविचरइसाकराष्ट्र हादिसहि लअर्थस नायोगनसीदाइनि असमर्थपणउजाणीनइंसीहनीपरिजि
देसनइविषइ नवासमर्थ मर्थपणउजा मरप्रवर्तइ।। मसीहअन्यजीवनासद्वकारियाशब्दसांभ सउत्रासनवधरउ
णिनइ लीधउंतवकीत्रासनपामेतिमअतिशय

कालंविहरिज्जरट्ठे बलाबलंजाणिअप्पणोउसीहोवसद्देणनसंतसिज्ज
आपणुजिमरसंयमनी तिमसाधुदुष्टनइअपजावणंह लोकनांअसत्यवचनादिकअवगणतउवन लोकनांप्रियवच
योगनसीदाइतिमरउर कावचनसांभलीपरनांअसत्यव मांहिअणधरतुयथामानुउमित्रअनित्रायसुं नअप्रियप्रयाहजा
ज्रीइमर्वधानबोलइतउरह वनकानेधरीपोतइअसत्यवच प्रवर्त्तइतउहउअप्रवासंयममार्गेनइविष खवनसांभलीन
वउ नसर्वधानबोलइतउहवउ।। इप्रवर्त्तेतउहवउ
२४

वइजोगसुच्चाणसब्भमाहु।२४। उवेहमाणोउपरिवइज्जापिअमप्पि

इसर्वेतितिक्खइक्षमाकहितांसहितअहवउ सर्वप्रकारइंसघलीवस्तुसघलाइंहीअवइ नहीवलीनिश्चयेपूजानइगर्हानिंदा
नहीएतलाइदीठीअणदीठीवस्तुनअवांछइ तेगुणरोचवउनइकुडजिणितेकहवउ
नकुइतेअहवउअसिआषतअहवउ

उत्रा।सू।ट अंसव्वतितिक्खएज्जा। नसव्वसव्वत्थभिरोअएज्जा। नयाविपूअंगरहंचसं

संयत अनेकघणाइछंदअभिप्रायजहियइएहजगतय जेअनेकछंद तेभावीसंपगार साधुभ्या घणाडंसमर्तकर
नइविषइमानवमनुष्यमांहिइ नइंभावथिकी इसप्रकृपकी रिछियत त्हाराउपसर्ग॥
१५ १६करइ

१५६

जए १५ अणेगछंदामिहमाणवेहिं। जेभावओसंपगरेइभिक्खू। भयभेरवात

तत्रतेदीक्षानइविषे भीमरौद्र देवता मनुष्यसं अथवा तिर्यचनाकीधाउप कृष्णादिकप उपसर्गसहीस अनेक
भयदयआवइ भामणा संबंधी बंधिया सर्ग रीसहइ कीयइएहवा घणाप

त्थउविंतिभीमा। दिव्वामणुस्साअदुवातिरिच्छा।१६। परीसहादुव्विसहाअ १५५

लघुका सीदाइसंयमथीसिथिल तेसाधुतेपरीसहउ पामीनइमनथीउचइसवा जिमसंग्रा
१६ बाइजेहपरीसहनेविषे घणाकांतरनरमनुष्य पसर्गकामइक्षदयआ थिकीवलतउनइकुडसा मनाशीर्ष
वइ कवारिछिय

णेगे। सीअंतिजत्थाबहुकायरानरा। सेतत्थपत्तेणवहिज्जभिक्खू। संगा

मथानइविषइसंग्रममाहिनागराजा सीतपरीसह डांसमसान तृणफरिसनउपरी आतंकरोग विविधघणाथ
नलउहाथीनसाजइतिमसाधुउण उष्णपरीसह उपरीसह॥ सह कारनाफरिस
१७

मसीसेइवनागराया।१७ सीओसिणादंसमसाअफासा। आयंकाविविहा

इंपरितापइदेह पीडाउषिकउआकंदपोकारअणकरतउथिकउ रहवउथिकउरज तेकर्मकेहवांपुरायाछि पखि
नइ तिहांतेअहीयासइउकुउसमकप्रकारइसहित कर्मबइंधपावनउ लांलवनाकीधा १८ हरी
उकुउ कुउ

फुसंतिदेहं। अकुक्कुओतत्थहियासएज्जा। रयाइंखेविज्जपुरेकडाइं।१८ प

बांधी रागद्वेषमनथोद्दषक्रोधदसद्यादि मेरुश्रव निरुधा निसरस विवरूणानथादिक मेरुपर्वतनीपरिजिम कांपइनदीति
वाअश्रा रिजियउ वाकालइ नइविषइपंकिते मेरुपर्वतवायरइकरी मत्राकंपमान
न
निश्चलथइ॥

हायरागंवतहेवदोसं मोहंवसिरकुसतते विश्रस्कणा मेरुव्ववाएणअकंपमाणे

परीसहनइंआत्माकांबिबानीयसिअसंयमथी अनिमानइं दीनपणउं महामोटोक्र नहीथवजीअपि अनइंगहंनिदा
गोपव्यतबेजेणएहवउविकोसहितवह्न्उ॥ करीनइं नआणइ धीश्वर निश्चइसो प्रतिसंगकरखक

परीसहेआयगुत्तेसहिज्जा॥१९॥ अणुन्नएनावणएमहेसीनयाविपूयंगरहंचसं।

संयमथतिअरतिअसंयमथ
इसयत तेहसाधुसमुद्रपालएहवइनामइसरल साधउसम्यक्कादिक पापथिकीविरतउ निरनितेसहरुलतजेसंयम
साधु सावधथिवजीआदरीनइंसंयतचारित्रियउ मोक्षमार्गिवतिइ स्वरूउकामतउहल्उ पाउतोसातोआसातासहे

जए सेउज्जुभावंपडिवज्जसंजए निव्वाणमग्गंविरएउवेइ॥२०॥अरइरइसहेय

यहीणस्रयगयस्तहेससस पापथीपरगउसरूउआत्माजीवसुहनइं परमार्थमोक्षसंपजइजेणइएह छेद्यउनिवा क्रिसीइव्या
वपरिव्वयगृहस्थादिक हितकारीप्रधानसर्वविरतिरूपमोक्षना बुंपदसुहसम्यक्त्वादिनिअरइव निउजेणइ नीममतन
स्यउजहतु हेतुथकीसंयमनेहवंतएतावतासंयमरत्न वहइ शोक ही

हीणसंथवे विरइआयहिएपहाणवं परमट्ठपएहिंचिट्ठई छिन्नसोएअममेअकं

इत्यादिकनउ स्त्रीयादिकइरहि तेवलिसंजव बहूकायपति तेजयमइत्यवीसाधु आलिप्रमुखथी निर्दोषपणामा॥
परिग्रहनथीजे तउपाश्रयरहित तउरूउ पालक नइअर्थिलीव्यानथीना उदकरीनथी टिइरूपीश्वरइंआव
दनइं २१ नांधांनक वधीराग्रहितथइ व्याप स्था

चणे॥२१॥विवित्तलयणाइंभएज्जताई निरोवलेवाइंअसंथडाइं इसिहिंचिन्ना

नयनीकेतवाथइम तेसमइपाउसंज्ञानतेरुनज्ञाननेणइतया प्रधान
हायरावंतमोटाम कायाइंकरीफरिसतउहउआकरइपरीसहा ज्ञानजेरूपहाकिपाकलापनुंजाणवुंतेलइ नउउ
हिमावंत करीसहितमहामोटोऋषीश्वर सर्वप

२२

इमहायसेहिंकाएणफासिज्जपरीसहाइं॥२२॥ सन्नाणनाणोवगएमहेसी अ॥

णइवत्र आचरीक क्षमादिकयतीना प्रधानसलोकवलज्ञाननउधारण दीपनउरूउकेवल जिमसूर्यआकाशमइ
म रीनइ धर्मनुसंचयसमूह हारयउवंत ज्ञानइकरी अजूआलूंकइतिम

उत्रा।मा।२३।। णुत्तरंचरित्तधम्मसंचयं।अणुत्तरेणाणधरेजसंसी।उभासईसूरिएवंतलिक्खे

घातियांअनइसर्वापयाहिकरणवि वुत्पअनइंपा संयमनइविषे आयुअनइंअभ्यंतरपरिग्रह तरीनइआविदुसरसमुद्र
प्रकारनाषपावीपरिहरीनइ पत्रउस निश्चलकर्मस इत्यादिकनासंग नीपरिइंछोमे मोक्षउदेवता
गइकरीनइरहित श्रीमुक्तिगणउबइजोह

१५८

२४।दुविहंखवेऊणयपुन्नपावं।निरंगणेसव्वउविप्पमुक्के।तरित्तासमुद्दंवमहा।

दिकधगतिना समुद्रपाजना जिराजस्वेलीआविवजेनवीएहवीजेसिद्धिगतितेप्रति समुद्रपालिएहवइनामाध्ययननउअर्थते
सवनअउघस माकषीश्वरके तिइंगयउंउक्तवउगाएहवउंकक्षीक्षधर्मसा आमाउवीजाणिवउसर्वजिनअध्ययनइणक
मुद्र वली फिरीबुधतिइकहइ २४ अपणउंकसइअनइंतेएकवपणवतउसं।

भवोहं।समुद्दपालेअपुणागमंगइगइत्तिबेमि।२४। समुद्दपालिज्जंसम्मत्तं।२१।। सो १५८

यमनइविषइध्यानातरिइंवुक्तंनउतिवारइधर्मनइविषविरताकरइतिणिकारणिआवीसमवंधर्मथिरतानाविषरेनेमिनउं
अध्ययननाणिवुः= उं०१

सोरीपुरनगरनइविषनगर रूतउरूतउराजाते मोटीऋद्धि रायलक्षणनाउरूणसाथी
तजिहांगाइतइसिसाधरन जयनापनुंधणी नउधणी वसुदेवएहवेनामइंजाणवउ तअअकेउवउलक्षणाइकरी
थीनेहनविषइ सहित

रियपुरंमिनयरे आसिरायामहिढिए। वसुदेवित्तिनामेण रायलक्खणसंजु

तेहवसुदेवनइंबायीस्त्रीबिहुहवी रोहिणीएहवे नामवलीबीजी तेबिहु अपिनि बिहुपुत्रहवीक इष्टवाल्हारोहि
२ नामइ देवकीएहवेनामं स्त्रीना अयस्यु राजाणिका णीनउपुत्रराम

ए।१।तस्सभज्जादुवेआसि रोहिणीदेवईतहा तासिंदोण्हंपिदोपुत्ता इट्ठाराम

अनइदेवकी सोरीपुरनामनगरतेहनइविषइ रूतउरूतउराजानजयतापवंतमोटीऋ समुद्रविजयनामाराजावसुदे
नुवसुदेव द्धिवअमराद्धिकनीजेहनइ वनउवडउसाईतेकहवुं

केसवा।२।सोरियपुरंमिनयरे।आसिरायामहिड्ढिए।समुद्दविजएनामं

राजाननां लक्षणचक्रवज्रपताका दिकतेणइंकरीसंयुक्तसहित तेहसमुद्रविजयनामाराजानइंशि वादेवइनामइस्त्रीभार्यास्त्रीछइ तेसिवादेवीनइपुत्रछेटतु मोटायशनउधणी ऐश्वर्यवंतअरिष्ट रत्ननेवपईठेदीठे मातापिताइंअरिष्टनामा

उत्ता.सू.टा॥ रायलरकणसंजुए॥३॥तस्सभज्जासिवानामं।तीसेपुत्तेमहायसो।भयवंअरिठ

रिष्टनामाति त्रिणिभुवनलोकाननउस्वामीक अरिष्टनेमिना मरइपणइकामडीनउतेसणी म इंद्रियनादमणहारमोहिकोटउ तेअरिष्टनेमिनामाभगवंत स्वरसादानेतेनांजेजलक्षणमुखरा गंभीरत्वआदेहवणाइबधु नेणइंसहित कल्याणका रीलाषणा दिकनीरेषा

१ ५९ नेमित्ति।लोगनाहेदमीसरे॥४॥सोरिठनेमिनामोउ।लरकणस्सरसंजुउ।अठ

वज्रदिकएकसहस्रनइलक्ष लक्षणनुधरणहार गोतमगोत्रछइजेहनुकालीवृ कांतिशरीरनीअछइमडीबइजेह नी वज्रऋषभनाराचछि सकु फायसमकंठबधणइगुणेसहितसंघ यणछेजेहनेनेवज्रऋषभनाराचसंघ यणकहीइडइसाइदोसनठी समचउरु हासिमहि ठसंस्थान

सहस्सलरकणधरो।गोअमोकालगच्छवी॥५॥वज्जरिसहसंघयणो।समच १५९

छइजेहबुते समचउरससंस्था नकहीइ तेनेमिनाथनइअर्थिउग्रसेनराजा नीपुत्रीराजीमतीइस्यइनामइं कन्याबालिका भार्यास्त्रीकरिवानइयाचइछइ रषिइकेसवावासुदेवपदवीनुधणी ६ एतलाअनंतरवं राजकेवरउग्रसे लीतेहराजीमती नतेहनीकन्यादी करी

उरंसोझसो।तस्सराईमईकन्नं भज्जंजायइकेसवो॥६॥अहसारायवरकन्ना

मलइआचारनी धरणहारी मुहुतजोइवानउजी लजेहनुपरंक्रिहक हितउरवउ सर्वजेलक्षणस्त्रीनाइ४गुणइक रीनइसंसर्वव्यापीछइ विशेषइउद्योतकरइएहवीजेसौदा मनीवीजलीतेहनासरीषीप्रभाकां तिछेजेहनी तेकन्याया वानअनंतर

सुसीलाचारुपेहिणी।सव्वलरकणसंपन्ना विज्जुसोआमणिप्पभा॥७॥अहाह

तराजीमतीनउपिता उग्रसेनआश्रमकहित श्रीकृष्णवासुदेवमहाऋद्धि नउधणीनेहप्रतिइंकहतउहवउ इहांआवउअम्हारइघरि इकुमारनेमिनाथ जेहनेमिकुमारसणीकन्याराजी मतीदेउंवीवाहनीविधिइकरीकं

जणउतीसे वासुदेवमहिड्ढियं इहागच्छइकुमारो।जासेकन्नंदलामहं॥८॥

वाह्लणइं लेगनआपइजयाविज कीधाकोतकनिलाम्मुंबमषी दिव्यदेवदुष्यअथवासारव मुकुटकुंडलहारबाजू-
यादिकअषधीइकरीनइन्ह्वरा तिलकादिकमंगलदहींबोषादिकं सुनोयुगलकहितांजोडइवि वंधवमुषआभरणने
विचनेमिकुमार देनादिकजेहनइछंमंगलीक॥ वेषवस्त्रपहिस्यांजेणइ णइकरीनइविभूषित

उत्त।सू।८।। सव्वोसहीहिं ण्हविओ। कयकोउयमंगलो। दिव्वजुअलंपरिहिओ। आहरणेहिं विस-

कहितांअंगे मातंगमोटगंधहस्तीजेहनइ कृष्णवासुदेवनउजेष्ठवड तेऊपरिचड सोहइवइअधि सिरिमाथइ
कारकरिवउ गंधबीजाहाथीनामदगलइ उहाथीसर्वहाथीमांप्रिधान ल्हउनेमि कथणउ चूडामणिमु-
वी कुमार

१६७

९

सिओ। मत्तंवगंधहत्थिं। वासुदेवस्सजेट्ठगं। आरूढो सोहई अहियं। सिरेचूडा

कटजिमशोभइ अथवाएनजीमंतरजुछत्रतेणकरी विजइंथलवामरतेणइकरी दशाइदसारयादवक्षेत्र
तिमतिमिनावशो धरयोतेत्रमेघाडंबरादितेणइक मइंशोभितशोभायमान नउवक्रसमूहतेणइक
भइ री री

१०

मणीजहा। १०। अहऊसिएणछत्तेणं। चामराहियसोहिओ। दसारचक्केणयसो १६०

सघलइदिशिविदिशिनइविषइपरिवरयउ हाथीघोडारथपालीयारविरुसेद रचितमवरवनाइंयथाक्रम
वींयउ इंसेनातेणीइकरीनइ इअनुक्रमइ

११

सव्वओपरिवारिओ। ११। चाउरंगिणीए सेणाए। रइयाए जहक्कमं। तु

रयवाजित्रमादलभेरीढोल दिव्यप्रधानअथवादेवतानावाजि जेहनीकविसर्वविइंकरीएहवी अनइकांतिकां
तमुषतहणइंअत्यंतनादइशा त्रनइशब्दइतेकेहवागगनआकाश कविइकरीनो तितन्नमप्रधान
हुई पणिफरसतउव्यापतउजिणइ १२

डियाणसन्निनाएणं। दिव्वेणगगणंफुसे। १२। एयारिसीए इड्ढीए। जुईए उत्तिमा

तणइकरी नीकल्यउबाल्यउपरणवासणी एतलानंतरनेमिकुमारनेविवा
नइसहित निजआपणउंभवनघरतेहथकी वृष्णिपुंगवयादवमांप्रिधानने हमंडपनइविषइनिर्जंतोजात
मिकुमार उविकु

एइय। नियगाओभवणाओ। निज्जाओवण्हिपुंगवो। १३। अहसोतत्थनिज्जंतो

देषीप्राणीजीवभयत्रासपामीनर वाडावाडिव पांजरांजोदवं तेवंधेवरत्रतिघणउसुदुःष्यायं जीवितव्यनात्रंतनइपु
हुतुषसयइकरीत्रासमनाषिका रहीयापुपइ प्राणीजीनानउ जीमृत्युनिणहीजकारणइसुइ फ्रूरतांबइतेजीवत्राणई
वीह्यातेणइ इकरीनइ षियायणवंडुषीकानाबइ बहुतेजीवहुवेगणुबै
१४

उत्रासा।२२॥ दिस्सपाणेभयद्दुए वाडेहिंपंजरेहिंवा सन्निरुद्धेसुदुक्खिए १४ जीवियंतंतु

टीसइवइ मांसनेअर्थिभक्षलोकनेभषि देषीनेतनेमिनाथजिणिज्ञानइ सारथीगंधहस्तीनोरथवत्रीवण केहनेअर
१८२ वायोग्यवइ करीमातामारीषज्ञानवधली हारतेप्रतिएहवचनकहतउहवो षित्राप्रत्य
१५

संपत्ते मंसट्ठाभक्खियव्वए पासित्तासेमहापन्ने सारहिंइणमब्बवी १५ कस्सअ

र्थेदषीताहवाप्राणी एहसघलाइजीवसुषनाअभिलाष वाडइंवाडीइपंजरइवंधा अनिशयइरुंध्याराष्याषिकार
जीवहोतनाषिका षीवइंदुःषनाहषीवइ लोकांदिकनीरांजीनइक हइवइदुःषसेगवताप्रवर्त्तइ
पवृत्रेवइ री वइ १६

ट्ठाइमेपाणा एतेसव्वेसुहेसिणो वाडेहिंपंजरेहिंच सन्निरुद्धायअच्छहिं १६ १८१

णतलानंतरसारथीहाथीनउकोना एसघलाभद्रकारीयाप्राणीजीव उह्लारीवीवाहनाकार्यनइविषइ सोजनकराविवास
रनिवरयवइकहिवालागउ परसीहादिकनीपरिकवाटनेक गउरवनइविषइ लोघणाजनलोक
रइनहीपनिरवपराधी

अहसारहीतओभणइ एएभद्दाउपाणिणो तुब्भंविवाहकज्जंमि भोयावेउंबहुंज

यारवादि मांसजीनइंतेहसारथीनउंतेर वहुघणाप्राणीजीवनइविना शितविवालागउतेनेमिकुमार दयानइपरिणा
-कनइंराष्या श्रीनेमिकुमारवचनप्राणीप्रति शमरणनउंकरणाहार रमहाप्रज्ञात्रणिज्ञाननउधरण मइंकरीसहि
वइ १७ इं णार

व॰ णं १७ सोऊणतस्सवयणं बहुपाणिविणासणं चिंतेइसेमहापन्ने साणुक्कोसं

नसकउजीव जइम्हरइकारणिमाहरावीवाह हणीस्यइमारीस्यइअतिशयस्य नहींमुझनइएहजीवहिंसादि
नउहितकारी॥ नइअर्थिणसघलाजीव तेवहुघणाजीव कनिश्रेयसकल्याणनउंकरण
१८ हार

जिएहिउ १८ जइमज्झकारणाएए हम्मंतिसुबहूजिया नमेएयंतुनिस्सेसं प

परलोकनइ विषइ अनेरा　तेकुमारकानइ पहिरिवा कुंडल　सत्तकककटिनतकणदोरउ　आसरहारबमुषसर्वस
सवनइ विषइ कसइ　नई युगलवडलुं बिइ कुंडल　तेकुणमेटाइ यउ ानउ धली
२९　निमिकुमार

उत्तरासूत्रा　रलोके सव्विस्सइ २० सो कुंडलाणजुअलं सुत्तगं वमहायसो आसरणालियम

नेलगवंतने मिनाथइम नइं करी　देवताववलीयबोध्वितजिमयोग्यकु
मस्स सारथीकातारनइ पणामएकतै　परिणमसावदीहासूपकीधइवि　इतिमअनुकमइधनिकायनासमवती
१८५　कल्तिं देतउहवैतसन्वे २७　कइदववचनसांसलीवरसीदेइ　श्रीआव्यामनुष्यलोकनइ विषइ

वाणि सारहिस्स पणामए २० मणपरिणामअ कए देवा य जहोइयं समोइन्ना

सपलीकधइ सहितत्रिणिपरष　निक्कमणदीक्षामहोछवकरिवानेअ　सवनपतिव्यंतरज्योतिषीवैमानिकदेवता
दानकइ ए दवइपरिवस्या　तिहांतनेमिनाथनकजेपदहर्षइ　अनइ मनुष्यइं परिवस्यउ

सव्विहीए सपरिसा निक्कमणं तस्स काउं जे २१ देवमणुस्सपरिवुडो सिवि　१८६

शिबिकापालषीनेहिजरत्रबधानपणा　नीकलीनइं अतिघणमहोत्सवस　रैवतनगिरिश्रीगिरिनारनइ वि　सहस्राम्रनामा
थकीउत्तरकरानामइनि णिअवरिब　लितयारिकानगरीथिकी　षइरह्यउसगवंतश्रीनेमिनाथ　उद्यानवनेति
इसउरूउ
२२

आरयणं तउ समारूढो निक्कमिअ बारगाउ रेवयंमि ठिउ स यवं २२ उज्जाणे

हंसमासबुक　अवतीर्थकतस्रउअतमषधानउत्तर　थधानकायेकारीयाए हवइ　एतलानंतरनिरकमइदीक्षालीधीवा
श्रीनेमि　उरुनामाशिबिकापालिषीथकी　सहस्रपुरुषइं परिवस्यउ　रित्रअंगीकरइ विवानइत्नइविषे

संपत्तो उइन्नो उत्तमाउ सीआउ साहस्सीए परिवुडो अह निक्कमइ उ चित्ता
एतलानंतरश्रीमिस्तइ इगंधइ करी　करावलामंडसुकमाउकेविन　पोतइजपोतानइं हाथिइ करीनइं पांचमु
२३　सुगंधस्वसावइ जगंधवंतएहवा　वाकमाषीलोलीयाला　लोचकरिवालागुमस्तकनाकेश　ठिइक
२३

हिं २३ असो सुगंधगंधिए उरिअमउअकुंचिए सयमेव लुंचइ केसे पंचमुठी

रीपांचजनकीधर्मविज्ञानद कृष्णवासुदेवराइ छिकीसमुद्रविजया लोच्याछेकेशमुवालजेणे ताहरउईछ्यउंमनोरथमो
अनिचारित्ररूपसामाधिइक दिकगुणनेमिनाथेषतिइकहतोरवाने जीताछइइंद्रियपांचजेणे कृरूपीउछरिकहिता
रीसहित २४ निमिनाथकेहवाछइ

उत्ता सू०ट।। हिंसमाहिए।२४।वासुदेवो अ णं भणई।लुत्तकेसं जिइंदियं।इच्छियमणोरहे तु

कता पावेसुणामिएतलइकर्मषषणा ज्ञानमतिज्ञानादिकतेणेकरीदर्शन उत्तमयधारणा चारलेइतप कृणाकषाय
वजन रीमोक्ष्यवृद्धिजीसाधिउंदमनीश्वर नसम्यक्तेणइकरीनइ नचारित्रइकरी तेणइकरीने जीपिवइक
इंद्रियजेणजीताछइ २५ नइ री

१८२

रिअं।पावेसू तं दमीस्सरा।२५ णाणेणं दंसणेणं च।चरित्तेण तवेण य।खंतीए मु

मुक्तिलि वृद्धिवंतवधाणइहवउंआसीसव एवंइणेप्रकारइतेपरामवलदे दसइदसारआदिदेईव
लोकपण वनकहउंकृष्णवासुदेवादिके कअनइकेसवकृष्णवासुदेव कृष्णउनयादवलोक नेमिनाथ
नमिनाथप्रतिइं

त्तीए।वड्ढमाणो भवाहि अ।२६।एवं ते रामकेसवा।दसारा य बहुजणा।अरिट्ठ १६२

नगवंतप्रतिइंवादीनइ आव्याद्वारिकानगरीमांहिइं सोउणसांभलीनइराजवरउग्रसेनने घउजादीक्षासातेह
हतीकन्याकुंयरीराजीमती राजीमतीजिननीवं
२७

नेमी वंदित्ता।अइगया बारगापुरिं २७।सोऊण रायवरकन्ना।पव्वज्ज सा जि

करना हर्षरहितबिकीचकतीआनंदप्रमोद शोगइकरीव्यापीजतीहवी तेराजीमतीचित्तमांहिइंइमचीं धिग
तेणरहितथकी नचिवालागी
२८

णस्स उ।नीहासा य निराणंदा।सोगेण उ समुत्थिया २८ राईमई विचिंतेइ।धि

जेहवेउतेणइभगवंतनेमि तउंअयसजीवइउंमादीक्षा अथएतलाअनंतरतेराजीमतीचि
पडउमाहराजीवितव्यनइ सरइन्प्रनितायसपउंयीडां लेवीयुक्तनइजेहवणीसर्जी मरसरीषाकाजाऊतिकोलायमा
री रत्नीपरिछ्दउंपणिसुंषलीयाउ २९ न

रत्थु मम जीवियं।जा हं तेणं परिच्चत्ता।सेयं पव्वइउं मम २९ अह सा भमरसन्नि

तघाकूचबंधमस्तकेइसमारयाफाल सामीनव्रतपदेसमांनजीत्रा धृतिवंतधर्यवंतपुण्यकायरन इम्हवासुदेवा
ककहितांकाकसीनेलइसमारयासोरा डालेइपातइलोचकरइ+ हीडधर्मकिमिवानिश्चल रनेइकहइबइ
समानकीधी केसनउ

१६४ ने।कुच्चफणगपसाहिए।सयमेवलुंचईकेसे।धिइमंताववस्सिआ॥३०॥वासुदेवो

राजीमतीप्रतिइणका लोच्याबइकेशजेणीइंएहवीजइ संसाररूपीयव्रुसमुद्रघोर तरियहेकन्येहेपुत्रीशीघ्रउतावला तरा
रवधनइअनेकारणी लोचकीधाजीताबइइंद्रियजे रौद्रबीहामणुतेहनु वलीरतपसंयमकरीनइ जीम
लहू

अणंभणइ।लुत्तकेसंजिइंदिअं।संसारसागरंघोरं।तरकन्नेलहुंलहुं॥३१॥सापव

तीप्रव्रज्यादीक्षालीधी रहनेमिनासकटमांहिथीनिसरी बहुजनसगानइअन्यइपरिजन शीलवंतीविख्यातशीलनीधरण
धीलेणइएहवीमहोटी प्रव्रज्यादेतीहवीतिहांद्वारिकामां तथापरिवारनइंगुणएतलइइस हारीबहुघणासिद्धांतनीजाणि
हि णीकबुधिणीकीधी

वइआसंती।पव्वावेसीतहिंबहुं।सयणंपरिअणंचेव।सीलवंताबहुस्सुआ॥ १६४

गिरिनारपर्वतइनेमीश्वरनइंवांदीवा वरसानेकरीनइंभीजवीअंतरा वरसातेवरसतइअंधकारइक लयनगुफातनु
तणीजातीथकी विचालइ रीनइवृगटअणदीसतइ मइअंतमांहि

३२
॥गिरिंरेवययंजंती।वासेणुल्लाउअंतरा।वासंतेअंधयारंमि।अंतोलयण

तराजिमतीवियार राजीमतीपहिलीरहनेमिइदीठालीथीबइ यथाजातनग्नपासियांकहि रहनेमिसग्र
हतीहवी तेगुफामांहिध्यानइरहइहइइएतलइवीवरं तांदीठीरहनेमिइनिवारप चित्तसागडम
अंगरूपांविसारतीमोकलाकरवी वी

३३
स्ससाठिआ॥३३॥चीवराणिविसारंती।जहाजाइत्तिपासिआ।रहनेमिभग्ग

यसमार्थबी पछइदीठउतेणीराजीमतीइ रथेमाहरुसीलनउभंगकरेइ एकांतइगुफामांहिजिमनाबीज
विवर्त्तनुहतु बुणजेकोईकबुरूपबइइहां मवीनीमाताराजीमतीपहितेगुफा उकोइनथीनिविड्दाहइकरी
मांहिदृपीनइ कायासंगोफंकहितांमर्कटबंध

चित्तो।पच्छादिट्ठोअतीइवि।भीआसाअतहिंदट्ठुं।एगंतेसंजयंतयं।बाहा

इकरीस्तनकपरिग्रु सीलनउसंगरषेषाइनेमाटइंकंपा अथएनेंछोनंतरतेहपणिराजपुत्र समुद्रविजयराजा
फन यमानघकोनीवीबइसतीहूइ नराजानउदीकरउ नउअंगजातअं

३५

उत्त।अ।२२॥ हिकायसंगोफं।चेवमाणीणिसीअई।३५।अहसोविरायउत्तो।समुद्दविजयं

१६५

गधीक
पत्रुतेह बीहतीजाणीकंपायमान एहवउंदेवनरहनेमिकहेव रहनेमिएहवइनामइहउं सलाए रूपनीध
धणीवघकीदेषीनइं अदवडराजीमतीश्रलिइ बुंदेसहकल्याणकारणि रणहारीवारुमनो

३६

गयंभीअंपवेइअंदट्ठुं।इमंवक्कंमुदाहरे।रहारहनेमीअहंसद्दा।सूरूवेचारुभा
हरसाथा मुक्तनइंदेउनजिअंगिनारकरिअ उत्तनइंपीडाकहहुःषनदीकइइ इहांआविताकहिताबहम
नीबोजण बडामबीहसिउंसजाअंगनीधरण मुक्तसुविषयसविसुषिद्याहि नउआपणाेभोगसोगवियइ
हार हारिअबवानसुपानजाशरीरनीधरणहारि अरेखिया

सिणि।ममंभयाहि सितणुं।नतेपीलाभविस्सई।३७।एहिताभुंजिमोभोए। १६५

मनुष्पनउभवनिश्चयइदोहिलु मुक्तभोगवीईभोगवानिवार जगनाधनइनाषउमार्गमाभूनउ तेराजीमतीदेषं ने
बइवारइंरनमाटइमनुष्पपणउ पडीवडपणइव्रक्रइ पंचआदरीसइआपण इंतेरहनेमिनामा
जरीमागमुघलहीइं ३८

माणुस्सखुदुल्लहं।सुत्तभोगेनउपच्छा जिणमग्गंचरिस्सिमो ३८ दठूणर
सागुउइयोगडमारसंयमनइं राजीमतीअसत्वानअबीहतीति लूणइइकरीआपणउंपउंसंवर
यतीथतिइ विषइस्त्रीनइघरीसहइपराय्ग णिकारणिजाण्युंजेएबलात्का नीभाकतीहवीतिहांगुफामांहि
रहनीलनहीसाजइ ३९

हनेमिंभंतं भग्गुज्जोअपराइअं राईमईअसंसंता अप्पाणंसंवरेतहिं ३९

गतजानंतरनेराजीमतीनीवरधक्षा निश्चलनियमव्रतनइविषइएनजइ जातिमातानउपरूकुलशी रापनीधिकी
नकन्याराजीमतीमाथवीनत इंद्रियपञ्चनमनसंवरीपवर्तनीमकी जुपरूशीलउपम्सवर्य घतनकानी

अहसारायवरकन्ना सुट्ठिआनिअमव्वए जाईकुलंचशीलंच रक्कमा।

धिक्कारहेतझिपतिइइं यइ हइयपितजैरूपइंकरी नइं वैश्रमण ललितमनोहरविलासइंकरीने नलकुबरदेव
कहइछइ धनदपहवइनामइंद्रनउभंडारीते इयइयपितउरूपवरदेवविशाषइ उवइगाबछेन
४० मुनीषत

उत्रा.सू.टा. णीवयंवए।४०।जइसिरूवेणवेसमणो।ललिएणंनलकूबरो।तहाविते
५७६

हीनागनेग
विहानीबुद्धि यद्यपितंसाक्षात्पुरंदरइंद्रतुंअव वलीराजीमतीकहइज्योतिअग्नि धूमबइकेतुचिन्ह
इ तारबइतनउपुणहुंनवांछउं ४२ जाज्वल्यमान रूपजेहनइएहवउ

नइछामि।जइसिसरकंपुरंदरो।४१।परकंदेजलिअंजोइ।धूमकेउ

सधमतबादुः एहवीअगनिमांहिंपडइपरंनवांछ तेहकुलनाउंधनकुलइंनइविषइ धिक्पडउतउनाहरा
दुःसाधबइ इत्युक्तेभोगविवा कपनाजेसर्प रषाकारनइंअपयश

रासयं।नइछंतिवंतयंसोत्तुं।कुलेजायाअगंधणे।४२।धिरत्थुतेजसो १६६

नोवांछ जेहतनअमंयजीवितव्यनाकारणइथ वम्यअन्नार्थ्यवलीपीइवुवां इणिकारणिवंलितमरणइंमरइ
णहारडु. जनयकी उवइडीकालेईभोगवांनी तेश्रेयकल्याणपवरकाम्याभोगन
राकार तन्जवलीवंबइबइ वलीनवांछिवाग्रणसवीमरणश्रय

कामी:जोतंजीविअकारणा।वंतंइछसिआवेउं।सेअंतेमरणंभवे
राजीमतीकहइछइहऊंसाजनराज समुद्रमांहिंश्रेधकजाति
४२ उग्रसेननेहनीपुत्री नतंछइश्रेधकवृष्टिनउसमुद्रविजय कुलनाउपनाएहवागधन
नउपुत्र कुलनासर्पसरिषाश्रपणा

।४३।अहंचभोगरायस्स तंचसिअंधगवण्हिणो।माकुलेगंधणा
नइहोईबउन वांछ्याभोगनइविषइमननकरिवु अनइंजइतउंकरीसिभाव तिवारइजेजेदेषीसिना
रीतविमूलउप तेमाटिइनिश्चलचित्तकरीसंयम चित्तनउंत्यागविषउंभोगन रीस्त्रीतजेगत्रयमानित
छउप्सइतिमप्र वाग्रजइरितउसेवि इविषइ
पलानइ॥

होमा'संजमनिहुओचरा।४४।जइतंकाहिसिभावं'जाजादिछसि।

वायरइ आम्रइ घोलमंपिन्नजिम तिमतुंजी जातिदेषीआस्थिरात्माथाइ जिमगोवालिअगाइनुरषवालुनि
हडोवनस्पतिविशेषहणजिमवा सितारखआत्माऽनिश्चलकुस्पइ मसंरुपालअनेराकिंयाणोवस्त
रनोलइ

नारीउ। वायाविद्धोव्वहडो। अठिअप्पा भविस्ससि।४५। गोवालो भंडवा।

वानोनइ जिमतेद्रव्यागाइकियाणाहिक आमण्यचारित्रनउकुइ मिसो
जालवइ नउअनीश्वरईश्वरकुइनहीते इमअनीश्वरधणीनहींद्रपिण गनीइक्षवाचीचारित्रनउह्नमफ
लेइ हनाफलनंअभोगवी लेतेहना

लोवा। जहा तद्दव्वणिस्सरो। एवं अणिस्सरो तं पि। सामन्नस्स भविस्स

असेोगवकी क्रोधनें माननें नीग्रहनइ माया लोभ सर्वथानीनइ इंद्रियपांचइवसि

सि।४६। कोहं माणं णिगिण्हित्ता। माया लोभं च सव्वसो। इंदियाइं व १६७

करीनइ
आपणपउंवोसरावइ तेहराजीमतीनउंतेरहनेमिवचनसुणी संयतीसाधवीनउसुभसज
४७ सांभलीनइसमुद्दीनइ उवेरागनउंकपजावणहा

सेकाउ। अप्पाणं उवसंहरे।४७। तीसे सो वयणं सुच्चा। संजयाए सुभा।

रूपवुंताखवचनरूप अंकुसइरइ तिवारपछीतेरहनेमिमनआ
रखवन अंकुशइकरीजिमवुंतारनागहाथी हनेमिरूपहाथीमार्गइआण्यउथा संयमथीगोपवतुकुउमनो
नइंगोमिआणइतिमराजीमती रित्रधर्मनइविषइसंपडवाइउथा गुप्तिवचनगुप्तिवुणअसय
पउ ४८ मथीगोपवुंगतवचनगुप्ति

सिअं। अंकुसेण जहा नागो। धम्मे संपडिवाइउ।४८। मणगुत्तो वय

कायाअसंयमथीगोपवीकायगुप्ति श्रुपणा निश्चलचित्रकाय्याइ जावजीवजगीहृढवृतजेन
सहितनइ इन्द्रियलपवर्तवाजागवजितेन्द्रिय चारित्र करीनइफरिसनउथा नाएतेअइगलवुतसुधा
वउ इंद्रियअनइंवनइजरनउवइ॥ लनवहनेनेह माल्या

गुत्तो। कायगुत्तो जिइंदिउ। सामन्नं निच्चलं फासे। जावज्जीवं दढव्वउ।

कर्मरूपवइरीनइं विणासइ निवारइ। जाया बे अनि केवली रहनेमी रहनेमि सर्वज्ञानावरणीयादिकर्मते
ह्वउ उत्तम संज्ञाकरउ एवा साहित तप आव राजीमती केवलज्ञान पामी उत्तम रूपकति एणरूप सर्व षपावी
४८ रीनइ बीजो को नही

उत्रा।सू।टा। ४८ उग्गं तवं चरित्ताणं जाया दुन्नि वि केवली सव्वं कम्मं खवित्ताणं।

सिद्धि मोक्ष उत्तम नाम को हके दवउ अनु एम करइ संबुद्ध बोधि बीजना पंडित बुद्धि रूडी नाथणी आस्त्र नइ
तरव प्रधान एहवउ तप संयम इ करी जाणवइ की संबुद्ध हवा जाणवइ करीनइ विचक्षण डाहा
रूप पामी

५८

सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ४९ एवं करिंति संबुद्धा पंडिया पवियक्खणा।

विशेषइं करीनइं निवर्तइ विषया जिम नेरहइं नेमि पुरुषमाहि उत्तम चारित्र थकी एहराजीमती महासती
दिक काम भोग थकी पडि नइ पुणतन उएहवउ इहां सुधर्मस्वामि अनइ रहनेमी य अध्य
जंबू प्रति कहइ छइ यन बोली समर्थन उअ

५२

विणियट्टंति भोगेसु जहा सो पुरिसोत्तमो त्तिबेमि। २२। रायमईरहा। १६८

सोलेसमा त्रिके जालिवउ॥ सर्वज्ञइ अधपन परीसहनइं जीपनइ जिनरूप आपणइ। इंद्रादिकनी कीधी पूजा नइ
विषनउ धर्मपणुं करउ ते विषनउ धर्मपणउं तेवीसमा पार्श्वनाथ एणइ नामइ। योग्य ते अरिहंत लोक सर्वनि
संशयनइं पवि छइ कहइ ते संशय जिम पोतानउ इसंभग्य वाणीयोग

नेमिज्जं अज्झयणं सम्मत्तं। २२। जिणे पासि त्ति नामेणं। अरहे लोगपूइए

तत्वना ज्ञाननइ जाणइ वइ संबुद्ध। धर्म संसार समुद्र जिणि तरीइ ते।
आत्मा जे हनु सर्व द्रव्य पर्याय नो धर्मतीर्थनाकरणहार सर्व कर्मजी तेपार्श्वनाथस्वामी वरूपमइ इका, तेपार्श्वनाथ
जाणतसर्वज्ञ पिवाथी जिन तीर्थंकर रूपा सिवइ लोकमां दीवासमान नउ आसी

संबुद्धप्पा य सव्वन्नू। धम्मतित्थयरे जिणे। १। तस्स लोगपईवस्स। आसि।

रूउ शिष्य महामोटउ केसी कुमार एहवइ नाम इंकुमा विद्याज्ञान अनइं चरण चारित्र, अवधिज्ञान श्रुतज्ञा
यशजेहनउ रसमण श्रमण परिणइ कुमार, तेबिहुनउ पारगामी नइ बुद्धितत्वनउ जा
श्रमण तपनो करणहार तपसी णमति विनाश्रुतन

सिस्से महायसे। केसीकुमारसमणे। विज्जाचरणपारगे। २। उहिन्नाण

हाजिवउतिमअनरानइं पणि मदहरूपनं संदेहटालिवउ जिमकेसी नइ गोतम मइ संदेह टालउ उत्तनिणि कारणिन
बीसमउ केसी गोतमाध्ययन कहइ छइ - ॐ जीवरूजी =

कहइ ते अणी मति ज्ञानइ करी स हित | शिष्य नइ समूहइं करी नइ समा कुल परिवर्‌यु थकउ | एक ग्राम थकी बीजइ ग्रामि बीजा थकी त्रीजइ इम विहरतउ | श्रावस्ती नाम नगरी प्रतिइं आ व्यउ

१६९ ए बुद्धे। सिस्ससंघसमाउले। गामाणुगामं रीयंते। सावत्थिं नगरिमाग

तिंदुक वृक्ष इं सहित एहवउ आम्र इति तिंदुक नामा उद्यान वनषंडहतु | ते श्रावस्ती नगरी नइ मंडिल नगरी इं ने परिसरि | फासु निर्दोष ऊपना अनइ अनेरा तेहवन नामषी आज्या जे जीवते पाडइ रहि तेनइ वि तणि एहवी शेष्या वसति नइ सांसंथारउ तिहा

ए।३। तिंदुअं नाम उज्जाणं। तम्मी नगरमंडले। फासुए सिज्जसंथारे तत्थ वा

षइ वास रहिवा पामु। अथ वीर एह आ अनंतर तेहज काल | धर्मतीर्थ नउ करण हार तीर्थंकर रागद्वेष ना जीपणहार रागद्वेष जिव्या | भगवंत वर्द्धमान नामि चउवीस मु तीर्थंकर

समुवागए।४। अह तेणेव कालेणं। धम्मतित्थयरे जिणे। भयवं वद्धमाण १६९

कहइ सर्वलोक नइ विषइ विख्यात कही यइ विख्यात छइ जेह | ते श्रीमहावीर लोक मांहि दीवा समा तत्त्व उद्योतना करणहार जेह | आसि हूउ शिष्य महा मोटउ यश ज्ञान तउ धणी एहवउ महिमावंत

त्ति। सव्वलोगंमि विस्सुए।५। तस्स लोगपईवस्स। आसि सीसे महायसे

भगवंत गौतम गोत्र नउ ऊपनउ गौतम एहवइ नामइ इंद्रभूति | विद्या ज्ञान अनइ चारित्र पंच महाव्रतादिक नउ पारगामी | द्वादशांगी चउद पूर्व नउ जाण | ज्ञात्वारि ज्ञानइं करी तत्त्व नउ जाण | शिष्य नइ समुदाय इं करी नइ परिवर्‌य

६ ७

भयवं गोयमे नाम। विज्जाचरणपारए।६। बारसंगविऊ बुद्धे। सिस्ससंघसमा

उ थक अनुक्रमइं ग्रामानुग्राम इ सहू उ विहार करत उ | तेह पुण गौतम स्वामी साव स्ती नगरी इं आव्या | ७ | ते श्री श्रावस्ती नगरी इं कोष्ठक नाम उद्यान वन | तथा व स्ती नग

उले। गामाणुगामं रीयंते। से वि सावत्थिमागए।७। कोट्ठगं नाम उज्जाणं। तम्मी

री नइ मंडिल नग री नइ विषइ | फासु जीव रहित एहवी शय्या वस ति अनइ संथार उ तृणादिक नउ तिहां | वसति तउ वास पाम्य उ | तेहवउ उद्यान नइ विषइ वास प उ स्यउ जेहार | केशीकुमार नामा श्रमण अनइ

नगरमंडले। फासुएसिज्जसंथारे। तत्थ वासमुवागए। ८। केसीकुमारसमणे

वली गोतम नामा गणधर साधु | विहरंता केशी गोतम तिहां साव | मन वचन काया गु | लीइ अनाबाध समाधिवे | विहं
मोटा यश ना धरणहार | स्ती नगरी इं विचरता हवा | प्ति सहित अल्लीण थाइ | तद्‌उपाधीनी राग नावधी | केशी
गुप्तिरत्ना बइ | ज्ञानादिक समाधिवंत

१० गोयमे अ महायसे। उभओ वि तत्थ विहरिंसु। अल्लीणा सुसमाहिआ।९। उभओ

गोतम नाशिष्य ते हनासं | संयमवंत साधु ने तपना कर | ते साव स्त्रीनि विष चिंता आगलि | मूलगुण उत्तरगुण इं सहित ब
घहूंदन इसमूहनइ | णहारनइ | कहीस्यइ ते चिंतन कर्‌पनउ | कायना ६ तिपालक ते हनइ

सिस्ससंघाणं संजयाणं तवस्सिणं। तत्थ चिंता समुप्पन्ना गुणवंताण ताइणं

केहवउ वाविक ल्पइ आ अस्संबंधीय | अनइ आ गोतम गणधर ना शिष्य | वेषादि आचार्य रधर्म नीवा | इना अम
तमहाव्रतादिक धर्म रूपधर्म | नउ धर्म ते वली केहवउ | णधिकावस्था | संबंधिनी वा

१०। केरिसो वा इमो धम्मो। इमो धम्मो व केरिसो। आयारधम्मपणिही। इमा वा

अथवा साते गोतमादि | चारि महाव्रत रूप जे वधर्म एतलइ स्त्री | तथा जे एहवा पांच महाव्रत रूप शिक्षा देषा
कसंबंधिनी केहवी बि | नुव्रत ते पाखि ग्रहमा हिं गण इं तदा | डिजि हां एतलवता पंच महाव्रत रूप धर्म | तउ

कुमर्म ते हना जेवा | व्या धर्म न उभयेन र | ते का इ = ९

सा व केरिसी।११। चाउज्जामो अ जो धम्मो। जो इमो पंचसिक्खिओ। देसिओ वद्ध १७०

वर्द्धमान स्त्री मेहा | अनइ पार्श्वनाथइ वर्जी तचाम्‌ | उमा णोनवम्‌ पखिव विवधउलउ | जह अमानर हित पंच
वीरदेव तेण | ते पार्श्वनाथ अनइ महावीर वेहू | एक जगत श्री महावीर नउ देषाल्‌ उधर्म | वर्णवस्त्र नउ जेव मूउ
महामुनीस्वर | १२ | अरप्रधान बहुमूल्य वे

माणेणं। पासेण य महामुणी।१२। अचेलगो अ जो धम्मो। जो इमो संतरु

त्रानणधर्म श्री | एक माक्ष रूप कार्य साधिवा | वेउ षनइ विषइ सानं नुवितर्क | एतलानं तरंत तिहां श्रावस्ती नग
पार्श्वनाथ नउ | अववर्ग श्री पार्श्वनाथ अनइ श्री | इं कारण उजोजन | री नइ विषइ केशी गोतम नाशि
वृषाम उ | महावीर ते हनइ पाणि | १३ | ष्य नउ

त्तरो। एककज्जपवन्नाणं। विसेसे किं नु कारणं।१३। अह ते तत्थ सीसाणं

जाणी नइ अनिश्चयपवंं | समागम मिलवा नइ विषइ कीधु | तिहां केशी कुमार श्रमण अनइ | श्री गोत
वितर्क विकल्प संदेह | मति जेणइ मना लें जे मिली वु एतुम | गोतम गणधर | मस्वामि
लुजिम शिष्य ना संदेह छेदलइ

विन्नाय पवितक्कियं। समागमे कयमई। उभओ केसिगोयमा।१४। गोय

अथायोग्यविनयस्वरूप शिष्यनइंवृंदइंपरिवस्या ज्येष्ठवृद्धपणिउंलवुमुत्ता तिडुकनामावनषंडइनिश्चा
पनउजाण उघणापरिवारसंघातइ मारइंकुलपार्श्वनाथनासंता वलउहूउगौतमगणधर
नइंविरकतोकहितांविचारतउगिणतउ

उआसु॥१४॥ यमेपडिरूवन्नू सिस्ससंघसमाकुले जेठंकुलमविरकंतो तिंडुअंवणसमागउ

केसीकुमारनामाश्रमणतपस्वीसा गौतमगणधरनइंआव्यताउदे आव्यानीकवितयोग्यश्रा रूडीपरिइंक
धर्नुमहानुभाव षीनइ गौतस्वामिगतिनउकरिवउ

१५ केसीकुमारसमणे गोयमंदिस्समागयं पडिरूवंपडिवत्तिं सम्मंसंपडि

त्रणादि जीवरहित तवनिडकरयान सालिव्रीहिकोद्रवरालकध
रनउह्रवउ कपला हितेद्रो नइविषइ धन्नगरणाइपणइसंबंधिउसा श्रीगोतमगणधरनइबइसि
जवारि षिवजित फनइंयोग्यत्रणादिक वानइअर्पिय

वज्जई॥१६॥ पलालंफासुअंतत्थ पंचमंकुसतणाणिय गोयमस्सनिसिज्जा १७१

शिघ्रकतावलउंआपताहवाबइ श्रीकेसीकुमारनामाश्रमणसा गौतमगणधरमोटायशानउ बिहुंजणाबइठा
सणउमांडिउ फनपसी धणी घकाशोभइवइ
१७

ए खिप्पंसंपणामए॥१७॥ केसीकुमारसमणे गोयमेअमहायसे उभउनिसि

दीपइबइ एकचंद्रमाअनइसूर्यतेहसरीषो एककांतिस्माबइघणानिहांवन पाषंडीयाघनाधणीयोगीस
कांतिनाधरणहार षंडमाहिइ न्यासीकोउककउनहतुषकौतु
१८ गनीपरिइमगअज्ञानी

न्नासोहंति चंदसूरसमप्पभा॥१८॥ समागयाबहूतत्थ पासंडाकोउगामिया

गृहस्थघरनाधणीलोकतेहना साहस्रीसहस्रआव्याविशेष ज्योतिषीवैमानिकदेवतादानवइं यक्षराक्षस
अनेकघणा पणइकरीनइ वलभवनपतिगंधर्व किन्नरव्यंत

गिहत्थाणंअणेगाउ साहस्सीउसमागया॥१९॥ देवदाणवगंधव्वा जरकरकस

ज्ञाति कोइदेवनदीसुरूपएदेवाअदेष नउरूतनउरूवनिदोनमाहिंसमा हिवइबेहूबोजिवागामहरूबेबुतमन
घकोकहदेलीरूहवंतरतेह गममेलावउ इदेतमहासागअविना शकितंन

उत्त।सू।२३।प १७२ किंनरा अदिस्साणंचभूयाणं आसीतत्थसमागमो २० पुच्छामिमतेमहाभाग।

निवारपछीकेसीकुमारश्रमणगोतमप्रते गोतमगणधरप्रति हिंसामृषा०अदत्ते
केसीकुमारश्रमणगणधरप्र तुम्हादीधीइछककइछेवेसगवनजेहवुंतउत्र इइमबोलतवइउ परिग्रहथीअसरिवे
निइबोलनउहउ नेकपजविचारइआवबइकहइइमकेसीकु
मारश्रमणगोतमइअनुमतिदीधइथकेइ

२१
केसीगोयममब्बवी तउकेसीअणुन्नाए।गोयमंइणमब्बवी।२० चाउज्जामो

वृतत्याविमहाव्रतरूप सामाअदत्तमेथुनपरिग्रहनुविरमण पंचमहाव्रतरूपतेतोवर्द्ध च्यारिमहाव्रतरू
जेधर्मजेआदप्रकाहिं रूपपंचमहाव्रतरूपयतीनतेवारिपडि मानस्वामीइंदेषाडउ पतेश्रीपार्श्वनाथ
लुकहइबहइबइबइ इदेषाडउनेबहु

अजोयमोधम्मो जोइमोपंचसिक्खिउ देसिउवद्धमाणेण।पासेणयमहामु १७२

मरा एककोइजपकार्यसाधिवानासा विशेषधर्मविसदरूपतेहनइ धर्मद्विपकारनउदीसइबइ गोतमकिमवि
मुनी बधांनंघयाएहवाश्रीपार्श्वनाथम विषइकुणकारणिकसुंहेउ अद्येमेधावीबुद्धिवंत यस्यअधवि
प्रुर २२ हावीरनइ

णी २२।एककज्जपवन्नाणं विसेसेकिंनुकारणं।धम्मेडविहेमेहावी कहंविप्प

रीनपणुंनथीजा
गनोंतेतुम्हनइ निवारपछीकेसीकुमारश्रम गोतमनामागणधरएहवुंतेबा पबुद्धिसाबुंदेषइतेसुंदेषइधर्म धर्म
एइमबोलइतइविकइ उततउहउ नउंनइ नउ

च्चउनते.२३.तउकेसिंबुवंतंतु।गोयमोइणमब्बवी।पन्नासमिरकएधम्मं।ततं

परमार्थजीवादिकपदार्थतुतअसारपरं पहिलातीर्थकरकृषतेदेवना पछिमेवर्द्धमानतीर्थंकरमहावीर मध्यबिचलाबावीस
ववनसांभलइजअकल्पनीयनोअ वानासाधकऋजुजडपणसरलप अवारानासाधकअनेकल्पबुद्धि तीर्थकरनावारना
कल्पनीयनाअजाण रंजडकुपिडसमझाव्याथिका उपाश्रयकल्पइंकुरीवाकुंजाणे साधुघणुसरल
पडिकमइंचारित्र बकंडीविवंतबेजेहनाअनेजड।। अनइजाणइस

ततविणिच्छियं।२४ पुरिमाउज्जुजडाउ वंकजडायपच्छिमा मज्झिमाउज्जुप

मध्यसुध तेहभणीतेणइंदेतिहंधर्म पहिलातीर्थंकरनावारानाउःषइनिर्मल छेहलातीर्थंकरवीरनासाधुनइमा
र्गआदिक बिहुंप्रकारइकीधउ पणिपमाडीइए वांग्रनिमरलपणामाटे नौथंपालिवुदोहिलुवांकडापापिवि
अइ २५ कल्पनीयअकल्पनीयनाअजाणे कल्पघणाजाणतांइनकरइधर्मआ

१७ र ष्णा उ। तेण धम्मे दुहा कए। २५। पुरिमाणं दुविसोझो उ। चरिमाणं दुरणुपालउ।

निर्वीरना कल्पयतीनुमार्गमध्यमआजि निर्मलपणउंपमाडतांसोहिलुपा गौतमइंकह्यउभिकइकेसीबो पो
साधु नादिपार्श्वनाथपर्यंतेर२तीर्थंक लिवुभुणसोहिलोएतलामाटेश्री लुहेगौतमतारीप्रज्ञासाधु तइ
रनासाधुनासाधुनइ पार्श्वनाथेंच्यारिमहाव्रतकह्या २६ भली

उ। कप्पो मझिमगाणं तु। सुविसोझो सुपालउ। २६। साहु गोअम पन्ना ते। छि

न्नोउज्ञानवडइंतेभलीपरिंहेउ अनइरंउवलीअनेकहिस्य तेहतउतअर्थसंदेहसंशयनइक उमानेसहि
नबीजपरंसिष्यअमोकहेव तेहसंदेहमुझनइसिष्यादिक हिमुझनइहेगोतमगणधर तधउतक्हे
जेहमाहरोएहसंदेहबयोअस्य नइबे २७ सकूपजेधर्म

न्नो मे संसउ इमो। अन्नो वि संसउ मझं। तं मे कहसु गोअमा। २७। अचेल। १७ र

आरंभरहयतीनउ जेएपंचवर्णवस्तुपरकारहितसा पहिरउदेषाडउतेषर्मेव श्रीजयदेषाडउतेश्रीपार्श्वनाथ
अनुवेशकरिवउएधर्ममार्ग देमानश्रीमहावीरइ इमोटोयशनउधणीयइ

गो य जो धम्मो। जो धम्मो संतरुत्तरो। देसिउ वद्धमाणेणं। पासेण य महायसा

मोक्षरूपकार्यसाधिवानइस्यव विशेषएतलउभेदतेहनइविषइस्यु बिहुंभेदेलिंगनइविषइअने उभ
यबिहुंतीर्थंकरनइ कारण मेधावीबुद्धिवंतहेगोतम तइ

२९.

। २८। एगकज्जपवन्नाणं। विसेसे किं नु कारणं। लिंगे दुविहे मेधावी। कहं

किमपतनथांहिसेदूआवि केसीकुमारश्रमणएहबुंबोल गौतमगणधरएहवउबोलता केवलज्ञानइकरीज
श्वासनहीउपजतउ नाघकांवनिइं कहुं हलिंगजेहनइप्रयोग

विप्पच्चउ न ते। ३०। केसिमेवं बुवाणं तु। गोअमो इणमब्बवी। विन्नाणेण स

पुण्यवंतरत्वत्र धर्मनउंसाधनवर्षाकालादिकइ णपतीकइणहवत्रविश्वासक अनेकप्रकारउपगरणवर्षाक
जाणी कल्पउपगरणजेआजरजुवाइ पजाविवासणीलोकनइं ल्पादिकनवविकल्पनकेंलिंदे
पागआवकजइनइंप्रयोग्य ३१ वकीध

१७५ मा गम्मा। धम्मसाहणमिछिअं। ३१। पच्चयत्थं च लोगस्स। नाणाविहविकप्पा

तथायात्रासंयमनउनिर्वाहने
वनइआर्षिजिणवर्षाकल्पादि एहलोकनइविषइजिगवेशधा एतलानंतरवइप्रतिज्ञाश्री मोक्षनास
कविनाहप्याद्रिकइंसंयमनइआ रिवानउप्रयोजन पार्श्वनाथमहावीरनइ सम्साधनजे
बाधाउपजइएहमज्ञानतहनइं = ३२

णं। जत्तत्थं गहणत्थं च। लोगलिंगपउअणं। ३२। अह भवे पइन्ना उ मोक्खस

चारित्रसावद्यविरतिरूपए
णमोक्षनीसाधना ज्ञानमतिज्ञानादिकदर्शन हिजनिश्चइमोक्षनुसाधन हेगोतमताहरीप्रज्ञानली
कुइ तत्त्वनीरुचि वेसतेमवहारमात्रवइ

ब्भूअसाहणे। नाणं च दंसणं चेव। चरित्तं चेव निछए। ३३। साहु गोअम पन्ना ते १७५

आर्दइणनावतोकिणहीप्रकारइसंयमनइविषइआरतिउपनइजाणइजेकुसाक्षनावत्रानउधरणहारवुं = ३ २

वेयउमाहरउसंशयसंदेहणह अनेरउवलीसंशयसंदेहमुझेवे तकेंहमुझनेकहउहेगोतममुनें सत्रुजीपि

३४

छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं। तं मे कहसु गोअमा। ३४। सांकुंअ

वानउंश्रीजुहारकहीइघणा तेहमांदिहरहवइवत्रेवेगोतम तेहवइरीउफनथाइवइसा किमतेवइरीनइंजी
वइरीनामुझहन्ताहरइवे तमपती हमुझथाबेइहवइ तावसिकीधातइ

णगाण सहस्साणं। मज्झे चिट्ठसि गोअमा। ते अ ते अहिगछंति। कहं ते निज्जिआ।

हेगोतम किवारइंश्रीगोतमइमकहइएइ अनइंपांचइंजीतइदशजी दशप्रकारनावइरीजीपीन सर्व
३५ कजीतइपांचजीता नावइरी

तुमे। ३५। एगे जिए जिआ पंच। पंच जिए जिआ दस। दसहा उ जिणित्ताणं। स

अनेकशत्रुवइरीनइ शत्रुवइरीतहकउणकह्य एहवउकेशीगोतमप्रति निवारइकेशीबोलताव
जीपउंछउं ३६ उ बोलतउछउ ति

व्वसत्तू जिणामहं। ३६। सत्तू अ इइ के वुत्ते। केसी गोअममब्बवी। तओ केसिं बुवंतं तु

गोतमप्रतेबुंकहतनेवाजहत एकआत्माअणजीत्योतेअनेकआत्म तिणिकेरेजीतइकषायइं नइवइरीजीवीनइं
हवउ ३७ एकपणावइतेसत्रुजीवतउअजुत इंद्रियपांचएवइरी यथाज्ञानश्रीवीतरा
हर्या

१७५ गोअमोइणमब्बवी ३७ एगप्पाअजिएसत्तू कसायाइंदियाणिअ तेजिणित्तुज
गइउपदेशे तेहमांहिरह्यउथिकउविहरउंछउं अहोगोतमताहरीप्रज्ञाभली टेल्योसंशयमाहरूअनेरउ अनेरउ
हो क्रोधमानमायालोभवैराइंकरीनइ ज्ञानमुनि छिन्नजी नइ मुणि
३८
हानायं विहरामिअहंमुणी ३८ साहुगोयमपन्नाते छिन्नोमेसंसओइमो अन्नो
संशयसंदेहवइसु तेहसुकहनेइंतउंकहि पासनुबांधउ दीसइंघणाइहलोके पासइंकरीनइ शरीरवं
छनइ अहोगोतम ३९ बंधककहीयइ कहइविषइ इवधाणा तजीव
विसंसओमज्झं तंमेकहसुगोअमा ३९ दीसंतिबहवेलोए पासबद्धासरीरिणो
अनइथा मुक्ता हलुउथिक प्रतिबंधरहितकिमतुंविचरइ गोतमकहइबइहकेसर्वपासा नहीइमछउ
सबधकी छउ उपायशेती हइसंयममार्गइहमुनिगा सर्वबंधनिवारीनइहलउथिक निशाय्य
परिहइ नम
मुक्कपासोलहुब्भूओ कहंतंविहरसीमुणी ४० तेपासेसव्वसोछित्ता निहंतूणउ १७५

उपायइ पासथीमूंकाइ हलुउथयउ संयममार्ग हवउ अहोमुनिक पासएहवाकह्यानामइंतेकहउ केसीग
कर्मविश ताउ थकउ इंविचरुंछउं सीसाथ कहइ हवउक
मइ ४१
वायओ मुक्कपासोलहुब्भूओ विहरामिअहंमुणी ४१ पासायइइकेवुत्ता केसीगो
मारअमणगोतम तिवारपछीइकेसीएहगोतमगणधरएहवउंबो रागद्वेषादिकआदि ४२ इइथकी उपजी
प्रतिइकहतोहवा बवितकहितश्रीइं लउ ४२ मोहादिकतेकहवानीबेदोअकरा मानादि
यममब्बवी तओकेसिंबुवंतंतु गोयमोइणमब्बवी ४२ रागद्दोसादओतिव्वा नेह
कनास्नेहउणप्रयउ तेबदीनिवारीपासमयदा विचरउंबउंयथाक्रमइमा केसीकहइहवइअहोगोतम
हपास नाकरणाकार इबीतरागनइउपदेशइ कनइआचारइं ४३ ताहरीप्रज्ञासाधुअतिभली
पासाभयंकराते छिंदित्तुजहानायं विहरामिजहक्कमं ४३ साहुगोयमपन्नाते
टेल्योमाहरउसंसयहवं अनेरउपणवलीसंशयछेइ तेमुझनेकहिविगतिस्यउ हियामांहिविचालइ
टाल मझमुझनइ हेगोतमगणधर इइहप्रापामीक
छिन्नोमेसंसओइमो अन्नोविसंसओमज्झं तंमेकहसुगोअमा ४४ अंतोहियय

फलइ बइ विषनी परिइं षाइ ते । तेवली नइं किम उद्धरीय । तेलतावल
पनी लताने अमे रहइ छइं हे गोतम । एतावता विषफल नइं फलइ । लषी कादी उदागातम । दीसघली
४५

संभूया । लया चिट्ठइ गोयमा । फलेइ विसभक्खाणि । स उ उद्धरिआ कहं ॥४५॥ तं ल १७६

परिइं वदीनइं खंड उद्धरीकपाडी नांषी राग द्वेषा विष रूप बंधी तेराग नइं ज्या दीकणा कर्म रूप विके लताझा
करीनइं दिमूलसहित यइमार गइं आवार थपदेशाइ दारसमको नषीमूकाण उबुंअ

यं सव्वसो छित्ता । उद्धरित्ता समूलियं । विहरामि जहानायं । मुक्को मि विसभक्खणा

केसी कहइ ते लता विलकी इसि दीइ केची गोतमप्रतिइं एहवउं तेवारपछी केसीए हवउं गोतम गणधर
४६ कणकही कहता हवउं कहिता प्रतिइ हवउं कहत पर

॥४६॥ लया य इइ का वुत्ता । केसी गोयममब्बवी । तउ केसिं बुवंतं तु । गोअमो इणम

वउ सर्व संसार नइं विषइ तृष्णा रूप तेहतणी देणहारा तीमही तेलोसवल लतजी वीतराग विहर
लीलतावल ली कही दुःख मय देवावकी फल जकर्मः उद्धरीकाढीनइं तेवपदेश तेवउं

ब्बवी ॥४७॥ भवतण्हा लया वुत्ता । भीमा भीमफलोदया । तमुद्धित्तु जहानायं । विहरा
रूप तेहनेत्र उदयजेहथी ॥४
१७८

वीतराग नइं मार्गं अहा केसी कहइ छइ अहो गोतमना बुद्धि निवारउमाहरउ संशय अनेरउ वृत्तसंशयमुजन
मत्पुनिकर्म हरीबुद्धानुछि सलो यसंदेह एह
४८

मि महामुणी ॥४८॥ साहु गोयम पन्ना ते । छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ म

इव अग्नि उज्ज्वलित अतिशय मुवेबली एहवी अगणि रहइ छइ अग्नि जेबालइ
इ तेमुजनेकहि हे गोतम छठ उद्धारक कह छइ रदी अतिरोउ बलिगमणी गोतम शरीरमांहि
४९

ज्झं तं मे कहसु गोअमा ॥४९॥ संपज्जलिआ घोरा । अग्गी चिट्ठइ गोअमा । जे डहं

छिकी परितापनइ तेहअगति किम उझावी तुहे गोतम कहइ छइ महामोह थी उपना वारि तेवली सर्व
कल्पिवइ करीनइं हे गोतम कथन अतिशय सु गहीनइ पाणी जलमांहि श्रेष्ठ
५०

तसरीरत्था कहं विज्झाविआ तुमे ॥५०॥ महामेहप्पसूआउ । गिज्झ वारि जलुत्तमं

सीची बुझी नथी बाजती मनुक
सिंचउं बुझगति मनतनिरंतर नइ तेहअदा कसी अमण आगनि एहवउं कण कहीइ इम केसी अमण

सिंचामि सययं तउ । सित्ता नो व डहंति मे ॥५१॥ अग्गी अ इइ के वुत्ता । केसी गोअ

गातमवतिवा तिवारपवीकेसीएहवतं कषायतअग्निपरितापनाकरिवा स्रुतसि
लउरूउ कहिताअनिइं गातमइमकहतउहवत्र बकीवीतरागइकह्या हातशी

५२

१२५ ममब्बवी तउकेसीबुवंतंउ गोअमोइणमब्बवी ५२ कसायाअग्गिणोवुत्ता सुअसी

लमहावततप१२सेदतेरूपी सिघांतधाराइंकरीअसि सेदविकीकुइतिसेंलेनबी केशीकहइवइस्रहोगोत
उपाणीतीर्थंकररूपमवघीक हतस्राहणपाषिका बालतीमुकनइस्रहोकेशी मगाहरीपज्ञाबुद्धिसाधक
पनत्र ५३

लतवोजलं सुअधारासिहयासता भिन्नाहुनडहंतिमे ५३ साहुगोअमपन्ना।

ली छेद्यउमाहरउसंशयसंदह अनेरउवुणसंशयसंदेहमुक तेकेहवउमुकनइंकहिअहो दुष्टअश्वना
एहं नइउइ गोतम ५४ धारसाठमाकहइवइ

ते छिन्नोमेसंसओइमो अन्नोविसंसओमज्झं तंमेकहसुगोअमो ५४ अयंसा

कासइनमाकंअमि कवीलापमु-४ आपलुकमसहसाक दुष्टनिपरअसघोपोअणवि हेगातमजेकपरिउंआरूढवे किमउकनइंनवीहरतवउक
अरइंवर्तइअणति बाहिरमाइहउउइवइ ञउउइवहइवइ॥ पछइकिमनवीपमाडतउ ५५

हसिओभीमो दुट्ठस्सोपरिधावई जंसिगोअममारूढो कहंतेणनहीरसी ५५ २५

धातवउकमार्गसमुहउजातउअति सिघांतरूपिणीरासिइंरूक मारउआत्मार्गिइंकुमार्गिइं मार्गइवालइवइअ
शयस्पष्टअहीरायवउउ इद्रांधउरहघोडउ नवीवालतउ होकेशी।

।पधावंतंनिगिण्हामि सुअरस्सीसमाहियं नमेगच्छइउम्मग्गं मग्गंचपडिवज्ज

अस्वघोडउएहवउंकउण केशीगातमप्रतिरएहवउंक तिवारपछीकेसीएहवउं गातमएहवउक
५६ कहउ हतउहवउ कहितांवति

ई ५६ आसेअइइकेवुत्ते केसीगोअममब्बवी तउकेसीबुवंतंउ गोअमोइणं

हतउं मनरूपीअउसाहसीकअणविचा निरंषेधाउअवपलपलइअ तेसमकप्रकारिअतिशयइं
हवउ ५७ रइंबालइएहवोबीहामणउ रहउपरहउधाइवइ करीअहीरायवउवउदउं

मब्बवी ५७ मणोसाहसिओभीमो दुट्ठस्सोपरिधावई तंसम्मंतुनिगिण्हामि ध

धर्मनीसीषसणीधर्मनाअस्यास केसीकहइवइहगोतमता छेद्यमाहरइसंशयसंदह अनेरउवुणसंशयछ
निअमकन्यालवंतनीपरिमनरूप हरीपज्ञाबुद्धिसली एहं मुकनइ
घाकु

म्मसिरकायकंथग ५८ साहुगोअमपन्नाते छिन्नोमेसंसओइमो अन्नोविसंसओम

तहमुझनेकहइतुंअहोगा पंथनउधार कुत्सितपंथमार्गघणा जेणइकुमार्गिंइरयाजीव सहाअदामा
नम ५९ आवमंक रीसंबलोकनइविष घणानामइछइ कुपंथतिजा यनइविषड
हइछइ इछइ

१७: ८ ज्झं तं मे कहसु गोअमा ॥५९॥ कुप्पहा बहवो लोए जेहिं नस्संति जंतवो । अद्धाणे कहं
किमवर्त्ततउ नउतन्मार्गइनथीनासतउपावउ जेहनमधर्मवंमार्गिवीत अनेजेउन्मार्गजगवंतना तेहमवं
षिकउ आपणपइहेगोतम रागनइउपक्षिपइएवर्त्तइछइ उपदेशाषिकीविपरीतपव मुझनइं
६० स्त्री

वट्टंतो तं न नस्ससि गोयमा ॥६०॥ जे अ मग्गेण गच्छंति जे अ उम्मग्गपट्ठिआ । ते सव्वे
जाणमछइ तेहकेसी रणथीहुउ नाशमेनथीविना मार्गपंथएहवउकउणकहउ एहवउकेसीकुमार
शमामहउतनथीअहोमुनीकेशी ६१ अनइकुमार्गतेकउण गोतमपतिइबोल्या

विइआ मज्झं तो न नस्सामहं मुणी ॥६१॥ मग्गे अ इइ के वुत्ते । केसी गोअममब्बवी
कु निवारपथीकसीइमबोल गोतमगणधरएहवुंकहत कुपवचनलोकपिल पाषंडीकुंकि एहसर्वेउन्मा
उ नाववि तहवउ मतिसंबंधीयादिक तउवनाधरण नइविषइ
हार

तउ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी ॥६२॥ कुप्पवयणपासंडी सव्वे उम्मग्ग १७८

पव साधउसुहनिर्दोषमार्गतेहजिन एहमार्गनिश्चइंकरीउत्तमजा केसीकहइछइअहोगोतमता
र्गा श्रीवीतरागनउभाष्यउ णिवउ हरीबुद्धिसाधुभली
६३

पट्ठिआ । सम्मग्गं तु जिणक्खायं एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥ साहु गोयम पन्ना ते
छेद्युउमाहरउसंशयसंदेहगए अनेरोउणवलीसंशयछ तमुझनइंतउकहिगोत अहामोटापाणीना
इमुझनइ म ६४ प्रवाहनइविगइक

छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नोवि संसओ मज्झं तं मे कहसु गोअमा ॥६४॥ महाउदग
रीवहइ हडतावाणानाजेपाणीजीवसंसा राषिवाशरणसमा हइस्थान एहवउदीवपाणीनेसुषदाइके
रीयातेहनइ नजाइवायम्प कनोकरउ उणउंमानइवइअहोमुनि वइ
६५

वेगेणं वुज्झमाणाण पाणिणं । सरणं गई पइट्ठा य दीवं कं मन्नसी मुणी ॥६५॥ अत्थि
एक मोटउदीप वारिमाहि घणउंपिहुलपणे मोटापाणीनावेगनी गतिगमनतेमोटाद्वी
पाणी कुवउ प्रवाहनी पनइविषइ

एगो महादीवो वारिमज्झे महालओ । महाउदगवेगस्स गई तत्थ न वि

नवी जीवनइंसुषदायीतेदीपकहववउक इमकेसीश्रमणगोतमप्रतिकहइ तिवारपछीकेसीएववंक गोतमपहवनं
९९ तुणकहाउ कहतउहवउ हिगाषतिं

१७९ ऊई। इहादीवेअइइकेवुत्तो। केसीगोअममब्बवी। तउकेसिंबुवंतं तु गोअमोइ

बोलतउकहु जरामरणनउपवाहसदावेगवालि बहतावणतांजेपाणीजीवतेहनइ अनधर्मचारित्रधर्मरूपदी
उ वहतेणइकरी नइ पसंसारसमुद्रमांहिमुक्तिनुहेतु
६७
णमब्बवी।६७। जरामरणवेगेणं बुज्झमाणाणपाणिणं। धम्मोदीवोपइट्ठाय

ववकीनइंआश्रयवयोग्यगति केसीकहइसइअहोगोतमता बद्धप्रमेमाहरउसंशयसं अनेरउपणवली
अनइंशरणपधाननेधर्म ६८ हरीवइशासाधुसली देहएह

गईसरणमुत्तमं।६८। साहुगोअमपन्नातेछिन्नोमेसंसओइमो। अन्नोविसंस

संशयवइ तेहमुझनइंकहितवंअहो संसार तरण समुद्र जेहनउंपाणीनवं तिहांनावाप्रवणअतिवा
मुझनइं गोतम ६९ हारवसमुकहेवं नेविषइ मोहउपवाह पसंवउदीपरहीधाइवइ

उमज्झं तंमेकहसुगोअमा ६९। अन्नवंसिमहोहंसि नावाविपरिधावई। जं १८९

जनावानइविषइगोतमतउंरु किमतेहमोटासमुद्रनउपार गोतमकहइवइजेमांहिछिद्रइकरी तेहनावास्क
टआरूढवइववइवइ अंतपारमीसितउ पाणीआवेतेनावाआस्राविणीकही मुद्रनापारन
७० इअनइजेहआस्राविणीनीवाबइ

सिगोअममारूढो कहंपारंगमिस्ससि।७०। जाउअस्साविणीनावा नासापार

इउकवइगहवी जेनावामांहिछिद्रनहीपाणीनस तेसमुद्रनापारनइंपहुचवइछि नावाप्रवहणएहवउ
नहुइ रहतेनिराश्राविणीअनेजेनिरा णिनावइंबइसउबवंकेगी ७१ तेकउणकहयउं
श्राविणी नीवा बइ

स्सगामिणी। जानिरस्साविणीनावा सा उ पारस्सगामिणी।७१। नावायइइकावु

एहवउकेसीकुमारश्रमणगो तिवारपछीकेसीएहव गोतमगणधरएहवउंबोलता अहोकेसीश
तमप्रतिइंबोलतउहुतउ उंकहितंप्रतिइं हवाकहितहवा रीरनइंनावा

त्ता केसी गोअममब्बवी। तउकेसिंबुवंतं तु गोअमोइणमब्बवी ७२ सरीरमाहु

पवहणएहवउं कहइअनुष्ठानिकेसीसंसार आश्रितरूपसंसार जेसंसारसमुद्रनरइमहाऋषीश्व केसी
कहीयइं समुद्रतारइतेमाटइजीवतेहना तेहअर्णवसमुद्रकह्यउ रतपसंयमनाकरणहार कह
वानोषटुणहा

नावित्ति जीवावुच्चइनाविउ संसारोअन्नवोवुत्तो जंतरंतिमहेसिणो ७३ साहु

उइअप्रज्ञागोतमतांहरी छेद्यउमुमाहरउसंशयसे अनेरउवुणसंशयमुफ तमुफनइकहइंहगोतम ७४
महाबुद्धिवली दह नइ

१८० गोयमपणातेछिन्नोमेसंसउइमो।अन्नोविसंसउमज्झं।तंमेकहस्कगोअमा।७
लोकनइअंधाकरइगाहवाघा रहइंछइप्राणीजीवबहुघ कहइगोतमकउणकरस्यइ सर्वलोकनइवि
रवीहामणाअंधकारनइविषेअंध णा अजुआलु ।षइ
कारतुअनुंबारइप्पारमुक हइछइ
ध।अंधकारतमघोरे।चिठंतिपाणिणोबहु।कोकरिस्सइउज्जोअं।सव्वलोगंमि
गोतमकहइछइविमलनिर्मलरा सर्वलोकनइविषइप्रताउ तेहकरिस्यइअजुआलं
प्राणीजीवनइ ७५ ऊगउर नुसूर्य घातनुकरणहार
पाणिणं।७५।उगगउविमलोभारणू।सव्वलोगप्पभंकरो।सोकरिस्सइउज्जोअं
सर्वलोकनइविषइप्राणीया एहवउकेसीकुमारश्रमणगोतम निवारय
जीवनइ ७६ तानुसूर्यएहवउकोणकह्यउ भणितइंबोलतउहुउ बीकेसीए
सव्वलोगंसिपाणिणं।७६।सूरेअइइकेवुत्ते।केसीगोअममब्बवी।तउकेसिंबु १८०

हवउ गोतमगणधरएहवउबोलतउ ऊगउउछइसंसारनउक्षयकीधउज सर्वज्ञसर्वदर्शीनउआणउगछ
कहिताउनिइ हवउ णइएवउकउण थनोजीएणलोगसगवंतरूपीसूर्य
७७ स्कर
वंतं।गोअमोइणमब्बवी।७७।उगगउखीणसंसारो।सव्वन्नूजिणभक्खरो।सो
तेकरिस्यइअजुआलंअंधका सर्वलोकनइविषइप्रा साधु हेगोतम ताहरीप्रज्ञा छेद्युमुमाहरु संशय
रनांकरासर्वविमुखकाशस्यइ णीजीवनइ ७८ भला म हीइबुद्धि रउ
करिस्सइउज्जोअं।सव्वलोगंमिपाणिणं।७८।साहुगोअमपन्नाते।छिन्नोमेसंस
संदेह शरीरसंबंधिआनमानसंबंधि
यउ अनेरउमुण संशयमुफनइछइ तमुफनेकहतांअहोगोतम याएहवाजेदुःखतेणइ बंधाता
७९
उइमो।अन्नोविसंसउमज्झं।तंमेकहस्कगोअमा।७९।सारीरमाणसेदुक्खे।बज्झ
बाधारहिततहेमगरहइएनेइ एहवउंस्थानकआश्रयसं गोतमकहइछइएम्मा
नहवाजप्राणीकहीइजीव अस्ताबरहित्मनावनीबाधा मानइछइअहोमुनेगोतम ८० नकफवनिरुउ
रहित
माणाणपाणिणं।खेमंसिवंअणाबाहं।ठाणंकिंमन्नसेमुणी।८०।अत्थिएगंधुवंठा

लोकनइ अग्रि निश्चइ दुरुहचढवो। जिहांनथीजरा वृद्धपणउ मृत्यु मरण व्याधिरोग जिहांनथी मूलादि स्थानक एहवउं केहउ
सकोइ एहवउ अनइ मृत्यु मरण कनी वेदना जिहांनथी

८२

१८२ णं लोगग्गंमि दुरारुहं। जत्थ नत्थि जरा मच्चू वाहिणो वेअणो तहा॥८२॥ ठाणो अइइ

एहवउं केसी श्रमण गौतमनइ पूछतिं निवारपवी केसी बोलता गौतम एहवउ कहता हवउ जिहां जीवशी
लकहउ कहतउ हवउ पति नउपणउं पामे

केवुत्ते केसी गोअममब्बवी। तउ केसिं बुवंतं तु गोयमो इणमब्बवी॥८३॥ निव्वाणं

जिहां केसी आबाधा सकलकार्य साधइ ते सिद्धि क्षेम शिव अनाबाध जेमाहइ वर्ततइ जाइ तेइ महातक
नथी कनइ अग्रि थिंइ कर्मपरित्यागिइ कारी कारी हित बीजर

वर्तइज इ ८४

ति अबाहं ति सिद्धी लोगग्गमेव य। खेमं सिवं अणाबाहं जं चरंति महेसिणो॥

लोकनां अग्रि निइ विषइ दुःखिइ ज्ञियइ स्थानक पहुत्ताथिकां संसार नाशवा हेतु
तउ स्थानक शाश्वत अनवस्थिति नइ संयमनइ योगइ जइइ पइ शोक नहीं लोकइ हितकइ अंतनाकरणहा

एहवं वे

तं ठाणं सासयं वासं लोअग्गंमि दुरारुहं। जं संपत्ता ण सोअंति भवोहंतकरा। १८२

रमुनीश्वर अहो गौतम तमारी बुद्धि भलु वउ उमाहरउ संशयमंद नमस्कार थाउ तुझ हनइ केहव बलीतां
रयती छिन्नली हगहे उठो संशय संदेह रहित कहवउ

८४

मुणी॥८४॥ साहु गोअम पन्ना ते छिन्नो मे संसओ इमो। नमो ते संसयातीता सव्वसु

सर्व सूत्र सिद्धांत हांद एहवउ पूर्वेली परिइ संशयसं केसीकुमारश्रमण तपसैं आ अभिप्राय मस्तकइ वांदीनइ
आगीनउ समुद्र देह सर्व छेदि इथिकइ संविष इ आकरा पराक्रम सहुधर्णी मस्तकइ करीनइ

८५

त्तमहोअही॥ ८५॥ एवं तु संसए छिन्ने केसी घोरपरक्कमो। अभिवंदित्ता सिरसा

गोतम मोटा यशवंत उधरउ पांचमहाव्रत रूप धर्म साधकनउ अंगीकार करइ भावथकी पहिला तीर्थंकर
सारतपति इ = नइ थिनइ शुद्ध अंतःकरणइं करीनइ अनइ छेहला

पहिला नइ छेहला
व्रतना वइ ज्ञारमा
कुलपवउ पंच म ल
व्रतना अम्हिंइ आ
गीकार कीधो = ३

८६

। गोअमं तु महायसं। ८६॥ पंचमहव्वयधम्मं पडिवज्जइ भावओ। पुरिमस्स प-

तीर्थंकर मारगि निं सुखकरउ धानन इ विषइ ते नेह केसी गौतम आश्रयी नित्य तेहनइ नगरीनइ विषइ हुंत श्र
रनइ मार्गिं कल्याणकारी सहइ सदाकाल लगइ उत्कृष्ट भावउ न

८७

च्छिमंमी मग्गे तत्थ सुहावहे। ८७॥ केसीगोअमउ निच्चं तम्मि आसि समागमे। सु

नानअनइआनलवा॰ नत माहमाधवा रूपमहार्थ निश्चाउना मंनाथोणीपरिषदा सवमानपुष्य हर्षवंत कार्य मा
अतिशायवन्त दिक्माटनु निश्चइनिर्लय हुआ॥ अमुरणी बि समुथनी सघली हर्षवंत हुंतन

१८२ असीलसमुक्करिसो महत्थत्थविणिच्छओ ८८ तोसिआ परिसा सव्वा सम्मग्गं सम

ऊवियइमाव रूडीपरिइहसव्वाविकाव तेकारणसगवंतसजनीकके सीकुमारश्रमणअनंगा। तम पहकेसीगानम
मान सर्वाघकावसमनपाउ गणधरगुहवउकहान श्रीसुधर्मस्वामिजंबूआनिकहेछइ अध्ययनतउअ

उट्ठिआ संथुआ ते पसीअंतु भगवं केसीगोअमित्ति बेमि ८९ केसीगोअमिज्जं

र्थलगमावध आवइवव्वनश्रीमि रूडीपरिसिद्धांतरीतिइवालेतिसमतिकर्डीयुइ पांवदीजसमि त्रि
कीकरयउ॥ २३ शांनरूपिणीमातावइ तथारूडीपरिमनवचनकायागोपवीयेनेगुप्ति तिअनइ ति

सम्मत्तं २३॥ अट्ठपवयणमायाओ समिई गुत्ती तहेव य पंचेव य समिईओ त

गुप्तिकहीश्रीतीर्थंकर ऊवतायजोई विचारीबोलीइते भाषासमिति लघनीतिवडीनीतिषमुखजय मननेअशुभथा
गणधरप्रमुख वालेतेईर्यास तिणाआदिजोईलीजेमूकीये णाइषरिववीइतेवारिहावणी नकहीतिवर्जी
मिति तेआ सनतिक्रियास मति यास मिति णा वेसमिति विधुनम नागुप्ति

ओ गुत्तीओ आहिआ १ इरिआभासेसणादाणे उच्चारे समिई इअ मणगुत्ती व

चाविजइ अध्ययनसंदर्भनवारिवउकरयउ कहनउवचनीसमितिइकहइ कहवचनीसमितिपवचनमाताजाणिवइहू
इनिगिकारणिवउवीसमउआवउवचनमाताध्ययनकहइछइ=३०३ १८२

वचनइं अशुभ कायानइअशुभथीनिवर्तावीइ एहआवइसमितिनइगुप्तिएणिसि समासइकहतांसमपणाअठांतन
नथानकथीनिव तेकायगुप्तिअठवपसमितिनउगुप्ति वातनीविध्धिइंप्रवर्त्तावीइतेगुण इंसमप्रदइकरीनइंनथाणीइइइ
प्रवीइतेवचनगु मिति आवपवचनमाता २ समितिजकहीइ
मि

यगुत्ती कायगुत्ती अ अट्ठमा २ एआओ अट्ठ समिईओ समासेण विआहिआ

बांदसांगीतेश्रीजिनवीतरागनीभाषी मायाबइअंतर्वतिउइपवचनश्रीबं आलंबनइकरीनइकालइंक मार्गइं
तजेआवप्वचनमातापितानइ विषइ रीनइ २

दुवालसंगं जिणक्खायं मायं जत्थ उ पवयणं ३ आलंबणेण कालेण मग्गे

करीनउ तथाजयणाइं गणइचउकाविहंकारणेअतिशय सयतीईर्याइंप्रवर्त्तइ काजि तेहआलंबनादिकनइविषइ
करीनइथ इकरीशुध्धनिर्दोष आलंबनकहेछेजआलंबीनइं

ण जयणाइ अ चउकारणपरिसुद्धं संजए इरिअं रिए ४ तत्थ आलंबणं ना

गमनानुज्ञातं तेन आलंबन चरणं तद्यानि मग्गं ज्ञानादिक कालं ईर्यानउ दिवस मार्ग वत्यपन्न मार्ग निवारइ वर्जिन।
उगमने अनुज्ञान नथी निर्ग्रंथ आलंबन ज्ञान सूत्र अर्थ तदुभय तत्कथन तीर्थंकरादिक रहित ईर्यानउ मार्ग इवा उन्मार्ग
मिथ्यात्व दर्शन समकित चारित्र सामायिकादिकने विषइ इहां रात्रि निषेधइ न्यानी अनइ संयमनी विराधना ५
ण आलंबन

१८२ णं दंसणं चरणं तहा ॥४॥ ॥काले अ दिवसे वुत्ते । मग्गे उप्पहवज्जिए ॥५॥

द्रव्यथी क्षेत्रथकी अथ कालथकी जयणा भावथकी जयणा चिहुं प्रकारइं कही श्री वीतरागि कहुं प्रकारइं सुणउ
जयणा णा गुणजयणा तीर्थंकर अनइ गणधरइ हिवइ विवरी कहइ

दव्वउ खित्तउ चेव । कालउ भावउ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता । तं मि कित्तयउ सु

ण ॥६॥ दव्वउ चक्खुसा पेहे । जुगमित्तं च खित्तउ । कालउ जाव रीएज्जा । उवउत्ते अ

१८५

वस्तु इंद्रियना अर्थ शब्दादिक विषय सज्झाय पंचविध तेहनां पांच भेद तेहीनुं तेह तदुपयोग उपयुक्त
गउ जाणि तेह विवर्जीनइ वारीनइ वाचना पृच्छना परियट्टणा अनुप्रेक्षा धर्मकथा ए पंच प्रकार सज्झाय पुरस्कार आगल करी चालइ
ती

वउ ॥७॥ इंदिअत्थे विवज्जित्ता । सज्झायं चेव पंचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे । उवउ

ईर्या साधुनइ कही क्रोधनइ अभिमान परवंचनइ लोभवांछा उपयुक्तपणे हास्यनइ विषइ भयनइ
मोहरीपणे विषइ इविषइ विषइ नइ विषइ एकाग्रपणे ॥ इविषइ वाचालपणा न
कथा

त्ते रिअं रिए ॥८॥ कोहे माणे अ मायाए । लोभे अ उवउत्तया । हासे भए मोहरि

इवि विकथा चारनइ विषइ तिम ए पांच कर्म बंधइ का ठांणे ए तजे अतिशय अत्यंत वर्जीनइ निरवद्य पाप
रहित जे उपयुक्तपणे आदिकने विषये गमणागमण सोयाग संयम साधु हिव परिमाण

ए विगहासु तहेव य ॥९॥ एआइं अट्ठ ठाणाइं । परिवज्जित्तु संजए । असावज्जं

सहितकालेनविय भाषाबोलइ बुद्धिवंतबुद्धिवंत आहारादिकगवेषणानइविषइ आहारादिकपरिभोगसो
इवस्त्रादिइं साधुएसाषासमनिकही एषणाआहारादिकग्रहिवानइवि गविषइतिहांपुणएषणा
षइराषणा
१०

१८४ मिअंकाले' भासंभासिज्जपन्नवं।।१०।।गवेसणाएगहणेअ।पभोगेसणायजा रि

आधाकर्मादिकदोषइहम बीजीजय
आहारादिअनइउपधिवस्त्रादिअ एणेत्रिविशोधइगवेषणाग्रहणेषणा नामधात्रीदोदिकशदोषउ लेषणात्रि
ण्याउपाश्रयनेहनइविषइ परिभोगेषणाविशोधिवइनिर्मलकरइ।। त्पादननामइएबिहुंपणंगवेष हांसोइग्रा
णातिहांसोधइ

।आहारोवहिसिज्जाएएएतिन्निविसोहए।।११।।उग्गमुप्पायणंपढमे।बिइएसा
किनादिदोषनइटालईवी सेज्याडवडइपात्रधअठसंयोजनरस्त्राहारएआगा
निर्मलकरइ परिभोगेषणानेविषेवउ रअनदधूमएमदोहनीयमांहिअडर्लेवइनि अधिकउपधिअनइंकु
एषणासमिति कक्यारिदोसोधइविरः ध्यारिजकहीइतेसोधइपरिहरइथनकरतो पायहकउपधि
यती
हिज्जएसणं परिभोगंमिचउक्कं।विसोहिज्जजयंजई।।१२।।उहोवहोवग्गहिअं १८४

संडगउपगरणउघिउहोदइआ ग्रहितकेलतउअमइंनिक्खपतउ कडुंजइगहिविधिजइआग बरूहष्टिंकरीनइं
दिविहकारइंमुनिसाधु मूकतउषकउक्योइंकेषानकइ जिकहीसपइतेह

।।संडगंदुविहंमुणी।।गिण्हंतोनिक्खिवंतोअ।पउंजिज्जइमंविहिं।।१३।।चक्खुसा
अषविकेनइऊपयेहकउपधिनइअ
पडिलेहीयाइनइं उपादिकइवाचीनइंपउंजइय ग्रहितउबिकउमूकनबि उवाइअषकीअनइंलावधिकीअनइ
णाइयनीवाविरियउ कउ मदाकालगीआदाननिक्षेपसमिति

पडिलेहित्ता।पमज्जिज्जजयंजई।।आईएनिक्खिविज्जावा।दुहउवसमिएसया

नउधणीयारि वलीनातिविष्टालक्षनी शुषमउ नासिकानउ मलशरीर अन्नादिक उपधिवस्त्रा अनेरउतुण
त्रियउ श्लेष्म बलघउ मलश्लेष्म तुरजउसुप आहार दिकशरीर नधाविध्वरा

।।१४।।उच्चारंपासवणं।खेलंसिंघाणजल्लिअं।आहारंउवहिंदेहं।अन्नंवा।

षटमुषपरिवर्जिवा स्वपक्षपरपक्षसंबंधियालोकनाआ जिहांकहिनतंआविवंटकहतंनथीआ लोकनउटूकहतं
नइयाम्प विवतंनथीअनइवेगलारस्याधिकाहं नइवेगलाबकीलोकदषइबइएवीजो आविवतंबेइप
१५ छिंपुणकहिनीपडतीनथीजिहां तेद रजिहांदष्ठिवेगला

१८५ वितहाविहं॥१५॥ आणावायमसंलोए। अणावाएचेवहोइसंलोए। आवायमसं।

घकीकोइनीप लोकनउटूकहतंआविवंपुण तेहमांहिलोकआपणापारकान अनेगननेउपघातनथीए समी।
कीनथीएत्रीज बेकरंजिसेअनेविगलाधिकोहं अनाविवतअनइवेगलाधीनदेषे नलेसंयमअनेआत्माअ ऊंची
उसेद छिपुणइहअसमसागनएहवांघकिल पडइबइजिहांएवुंअघंसागो नेसिंहनादिकनीहेलार नीची
नइविषइ १६ छिनतिहां

ए लोआवाएचेवसंलोए॥१६॥ आणावायमसंलोए परस्सणुवघाइए समेअ

नहींनथापेंदपालहोकाह अग्निइमुषइकरीअविरषो थिकुलउघो बोसंतेवउअंगुलथ शमथिकीबाहीर्धाव
इंकरीव्यापीनथीतुमिजि डाकालनांकीधांथकिलतहने दउद्दाघमा उमाणहेवलिअवि गलाकंदरसमुषना
हाएहवाधंकिलनेविषइ विषइ त्रे वेसनूमि बिल

ज्झुसिरआवि।अचिरकालकयंमिअ॥१७॥ वित्थिन्नेदूरमोगाढे। नासन्नेबिलव १८५

रहित बेंडिआदि गमंडाविजमुषएके इणइदशगुणकरीसाहतजघंलि एहसर्वविइकहीजयांवइसमि संक्षेपइं
तूमि जीवरहित डियरहित लतिहांवडीनीतिप्रमुषवोसिरावइ तितेह

ज्जिए। तसपाणबीअरहिए। उच्चाराईणिवोसिरे॥१८॥ एआउपंचसमिईउ। समा

करीनइंकही एतलाअनंतरत्रिणिगुप्ति कहिस्यअनुक्रमइ साचामननउयोगतेसत्यमनपरिछिन्नी
रूगावमनुयोगनेहरूर्पिमबीजो

सणविआहिआ। इत्तोअतउगुत्तीउ। वुच्छामिअणुपुव्वसो॥१९॥ सच्चातहेवमो

साचुंतेपुणमषाजंअमिलइतेह साचुपुणजूहिनहीएहवनहीएआव एमननाज्गुप्तिचउंप्रकारइ संरंसतिम
वुमनोयोगानसूपगुप्तित्रीजी हसमनोयोगतहगुप्तिचउथी जाणिवी रूधाइस्य

साय। सच्चामोसातहेवय। चउत्थीअसच्चमोसा। मणगुत्तीचउव्विहा॥२०॥ संरंभ।

तेजिमणमरिम्पइ परजीवनइमारिवानउ त्रिकसंदेमनवर्त्तनप्रवर्त्ततउ निवर्त्तावइजयणाइसाध साधइवचन
एहवउंजसंकल्प ध्याननेआरंभजीवविनयती नयोगतेहनी
रनपीडाकरवारध्या नामारूप
नेलसंमारंभ
२१
उत्रा.सू.टा. समारंभे।आरंभेअतहेवया।मणंपवत्तमाणंतु।निअत्तिज्जजयंजई।२१।सच्चा

साधवंधुणनहीषाटउनहीनेसव
गुप्तिध जूंकांवचनजुयोग साधधुणष्टायनेमिश्रइ हरवचनयोगतेहरूपगुप्तिचउ १० इमवचनगुप्तिविकसेद
मस२ तेहनीगुप्तिबीजी२ वेहनीगुप्तिनहत्रीजी३ चौथ जाणवी
१८६

तहेवमोसा।य।सच्चामोसातहेवया।चउत्थीअसच्चमोसाउ।वइगुत्तीचउव्विहा।

परजीवनइविणासइएहवीज्ञात क्रकरानउंकारणमारिवारू एहवाविकसेदेनेविष निवर्त्तावइजयणासहित
युधादिकगुणेवानउमकल्पपरजी पमंत्रादिकनउजापकरयइ वचनप्रवर्त्ततउधिकउ यतीकहीइवारितियउ
वनइपरितापनमंत्रादिकनउगु तेहआरंभकहीयइ

णवउ
२२।संरंभसमारंभे।आरंभेअतहेवया।वयंपवत्तमाणंतु।नियत्तिज्जजयंजई १८६

कार्यऊपनइकृष्यास्थानकनउं इंद्रियपांचनइ
ऊभउरहिवइबइसिवइतथा सिमजवतीसूइवानइविषइ अतिक्रमणतहनइविषइ विषइनइकाजि
सामान्यप्रकारइगमनमात्रवलंघननइविषइ
२३
।।२३।ठाणेनिसीअणेचेव।तहेवयतुयट्टणे।उल्लंघणपल्लंघणे।इंदिआणय

इंजुजिवइ मंत्रीइंकरीमारउनेहनउंस घातमूर्छानइमारिवईतेआ नेहनइविषइकायप्रवर्त्ते निवर्त्तावइ
मेनवइ कल्पमूविनाधानउ रंभकहीयइइतिमउ साधतिइं जयणासहि
२४
जुंजणे।२४।संरंभसमारंभे।आरंभेयतहेवया।कायंपवत्तमाणंतु।निअत्तिज्ज

नयतीसाधु एप्रवइंकहीनेपांचसमितिइर्यादिक चरणचारित्रनेहनेप्रवर्त्तविवा गुप्तिरस्वेकहीतेनिवर्त्तव
विषइजाणवी उपाहुंउसरिवउतेहनविषेकही।
जयंजई।२५।एआउपंचसमिईउ।चरणस्सयपवत्तणे।गुत्तीनिअत्तणेवुत्ता

परंनेकिमहोटा असुरपाह्मणजमनवच सर्वेइंकहीतपचवचनमा जेकोइक्षइइचकारइ आचरइ मातेसाधक
नकायक्षपयोगवषकी सर्वषकारइस ताआवइ षेकारनी आदरइमुनिवारिविपच नावजवच
यत्नइपुण २६

उत्रा०सू०८॥ अक्कसठेसुसव्वसो २६। एआपवयणमाया। जसम्मं आयरेमुणी। सोखिप्पं

रिगनिक्षसर्वसं विजोषइंकरीमूंकाइनेकवणपंडि एहसमितिरूपवचनमातानो अध्ययनतेअर्थकहावले
मारषकी तमहातपवीपहेवतुहउकर्कसुधर्मी सामानेषी॥ सर्विजइ अध्ययनिइवचनमाताकहीनेतवच
जंबुपतिकहइवइ सवर्यमार्यस्यानइकुतेहसणीब्राह्मणपणउजाणीयइजीया
ध्ययनपचवीसमउकहइवइ २५ व:

१८७ सव्वसंसारा। विप्पमुच्चइपंडिए त्तिबेमि॥२७॥ समिइअज्झयणं सम्मत्तं २४।

ब्राह्मणनाकुलथीऊपनउ हुओब्राह्मणवीजीवारकइयवंतेजाति अववपयनीयनश्रीतलअहिसादि जयघो
तहवउ सुहजणविवासणीमोटायशनउधणी कपचकारयमरूपयज्ञनइविषइ। षणहव

माहणकुलसंभूओ। आसिविप्पोमहायसो। जायाइंजमजन्नम्मि। जयघोसि १८७

इनामइब्रा इंद्रियपनोसमूहतेहनउनिवारण मार्गमार्यनिउ मोटोयतीरकच गकग्रामवीवीजइग्रामइव्रीजा
मण रणहारवसिकरणहारवसिकेर प्रवर्तणहार उविहारनुलउ गामवीत्रीजइगामइविहरता
णहार

त्तिनामओ। १इंदियग्गामनिग्गाही। मग्गगामीमहामुणी। गामाणुगामंरीयंतो

पहुतउवाणारसीपुरइं वाणारसीनगरीइनइबाहिरि उद्यानतेविषइतेउद्यानकहवेछइ फासुआय्यावस
मनोहरछइ

।पत्तोवाणारसिंपुरिं।२।वाणारसीएबहिया। उज्जाणंमिमणोरमे। फासुएसि।

निसंथारउपडा तेवनषंमसंथिरहिवासणी एनऊनंतरतेकालइनइविषे तेहपुरीनगरीनइविषे विजयघोष
दिकमांतिहां आव्या जेकाविजयघोषआव्यउ ब्राह्मण

ज्जसंथारे। तत्थवासमुवागए।३। अहतेणेवकालेणं। पुरीए तत्थमाहणे। विजयघो

इसिद्गनामइ यज्ञप्रतिज्ञाइकरइ वेदवेत्ता उज्जाण एतलाने अवसरे जयघोष अणगार साधु तिहां मासक्षमणनापारणाने वि

तत्थासमाढया। सिन्निनामेणं जणंजयइवेअवी।४। अहसेतत्थअणगारे मासरकमणपार

१८ ८ षइ विजयघोषनायज्ञनइविषइ भिक्षामाटइ व्याने अर्थिआव्यउ अनिश्चय स्पष्टं भिक्षा जेवानइ अर्थिइआ यज्ञनउ अधिकारनइ

णे विजयघोसजन्नंमि भिरकमठाउवठिए।५।समुवठिअंतहिंसंतं जाय

उकरणहारि विजयघोष नहींदेउंनहीं आपउंतुझने भिक्षा अनादिक भिक्षापामतइ अहोयतीजाइअनेरस्थानकिजिम जेवेदनाजाणब्राह्मणजाति

गोपडिसेहई नहुदाहामितेभिरकं। भिरकूजायाहिअन्नउ।६।जेअवेअविऊ १८८

यज्ञकरिवानउ अर्थवइ जेहनइ नइ ब्राह्मण जे ज्योतिषीनां षडंगशिक्षाक जेधर्मशास्त्रसमस्तविद्यानां वलीसप्तउं इंद्रियाकह्निनाद्विजजनाइरिहनहनरूपवीजा ज्योतिष्कनांअंगजाणिविश घनकतहनापारगामी कहइ जेम जेहनइ

विप्पा।जन्नठायजेदिया।जोइसंगविऊजेअ।जेअधम्माणपारगा।७।जेस

मर्थइ संसारसमुद्र परअनेरानइ तथा आपणा नेऊनइ एअन्नादिदेइवुं अहोभिक्षु तेहनइ सर्वकामि घकीउद्धरिवा आपनइ यकह्नितांबइं रसइ करीसहित

मत्थासमुद्धत्तुंपरंअप्पाणमेवय।तेसिंअन्नमिणंदेअं।सोभिरकसव्वकामिअं।

तेजयघोषतेजइज्ञनइविषइनिषेध्यु विजयघोषइं मोक्षस्थउयती रूठउंरीसाण तूठोसंतोषा समतानाउइकरी षिकइ जयघोष उत्तमनंही लउत्तमनही मार्गनाअर्थि

८।सोतत्थएवंपडिसिद्धो।जायगेणमहामुनी।नविरुठोनविउठो।उत्तमठगवेस

वस्त्रपात्रादिक नइं निर्वाहक नउ स्यइं तेहे विजयघोषादिक एहवउं वच
लाभी अन्ननइं अ पाणीनइं अर्थिइं तेहइं इस्तेदनइ हेतिइं नही आह्मणनइं कर्मथी मूकावि नइं आगलि
९ थिइं नइं नही वाणी

१८९ ठाणे नन्नठपाणहेउं वा। नवि निव्वाणाय वा। तेसिं विमोक्खणठाए इमं व

हीयइ वेदवुं कह नथी जाणतउ वेदनउं मुख प्रधानपणउं नथी जाणतउ वेदनीय यज्ञनउं नक्षत्रनउं मुख प्रधानपणउं
तुं हवउं मृषा अपाय परमार्थ नथी जाणत
१०

यणमब्बवी।१०। णवि जाणसि वेयमुहं णवि जन्नाण जं मुहं। नक्खत्ताण मुहं जं

चंद्र जे धर्मनउं मुख उपायतउ जे समर्थ छइ संसार समुद्र थकी उ परआपनइं अनइं आपणा नथी ते हवं
एह नथी जाणतउ ११ इति वाणी आत्मानइं जाणतउ

च जं च धम्माण वा मुहं।११। जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पाणमेव य। ण ते तुमं वि १८९

एहवउ ज
यघोषक अनइं जाणो छइ तउ कहि तेजय घोष नउ प्रश्न नउ उत्तर देवानइं असमर्थ थिकउ ते विजयघोष ब्राह्मण
हइ छइ
१२

याणासि। अह जाणासि तो भण।१२। तस्सक्खेवपमोक्खं च अचयंतो तहिं दिउ स

यणां मनुष्यनी परिषद सहित हा छइ ते मोटा मुनीश्वर प्रतिइं स्य तउ कालि बइ हे वेदनउं मुख स्य कहि यज्ञनउं मुख जव
थइ आलीनइं उपइ ते कहि इत कहि
१३

परिसो पंजलिउडो। पुच्छई तं महामुणिं।१३। वेयाणं च मुहं बूहि बूहि जन्नाण

कहि यज्ञनउं मुख जे छइ ते कह नक्षत्रनउं मुख किस्यउं छइं ते कहे कहे सगवन धर्मनउं मुख कहेवउ जे समर्थ छइ
जे समर्थ छइ संसार समुद्र थकी तारि परआपनइं
वाणी

जं मुहं। णक्खत्ताण मुहं बूहि बूहि धम्माण जं मुहं।१४। जे समत्था समुद्धत्तुं परं अप्पा

तथाग्रायण एतस्मादहइज्ञायस अहोसाधयतीकहइ अग्निहोत्रअग्निकाग्निकोतहहोकर्मरूपइधणवत्रम
आत्मानरुइ देहसघलउ उत्तषिकउतउ सावनाआकुइसिधर्मध्यानमुअग्नि इहीकुतिणअग्निका
रिकाकरिवी १५

१८७ णमेवय ॥ एयमेयंसंसयंसव्वं ॥ साहुकहसुपुच्छिउ ॥ १५ ॥ अग्गिहोत्तमुहावे

सावद्यकीयज्ञतसंयमतहनतग्रथी नउमुषउ मुषनक्षत्रदसहअत्र क्षतधर्मचारित्रधर्मनेहनुमुषका जिमग्रह
उम्रोजनीवहिजयज्ञार्थीवेदामुखद पायतयज्ञ वीसतेहनइउमुषवं श्यपऋषीरूषभदेवजाणवु चउआदि
श्रयोग नउ इमा २६

आ। जन्नट्ठीवेआमामुहं। णरकत्ताणमुहंचंदो। धम्माणंकासवोमुहं। १६। जहा

ईईनइसमवेसहो चिंतानाआदरपिकीकरार वंदताथिकास्कलिकरतानम उत्तमउधानजिमकुइ तिममनोह
तिषवक्षचंदमाश्रति दइशबजोमीनइ स्कारकरतो॥ रविनइकरीमननाहरणहारकुइ
एमऋषभदेवनइंपभिइंद्रादिकअनंतवेनयइमनोहरयण
इवतंइव्रइ॥ १७

वंदगहाइआ : चिट्ठंतीपंजलीउडा। वंदमाणानमंसंता उत्तममणहारिणो १७ १८८

अज्ञानाअजाणअनूइयज्ञवादीएह ब्राह्मणउप्राणदिकाविद्यातेह महमाहवतसहुनगज्ञा रावेहाकाउजेहवउअग्नि
वातनाहरइयाजपणमान्यवे रूपब्राह्मणनीसंपदाजाधणीनेकह यज्ञनइंसद्दानमनेविष नेहवाजालवाणतजबा
वा सहीतेजपणतपणीअ

अजाणगाजन्नवाई विज्जामाहणसंपया। मूढासज्झायतवसा। भासछन्नाइव

नरमिनइकषायइक नउसामीब्राह्मणकउणकहीइ जिमअग्निसूजउसदादीपइ सदाकालतत्वनाणतीर्थकरा नद
शीनपमापविकाश्ववहइ एहवाब्राह्मणकव्याविके ध्यनीक सारेतिमसदावस्त्रक्रियापा दिकतेणइकह्यउ नइ
२८ एवजेलोकनइविषेब्राह्मणकसउ जइ

ग्गिणो ॥ १८ । जेलोएबंभणोवुत्तो। अग्गीवामहिउजहा। सयाकुसलसंदिट्ठं तंव

अत्रकहउंब्राह्म जेब्राह्मणकोईस्वजनादिकनउ अनंस्वजनादिकनइंगामइपरगामि अनेंसदाआर्यतीर्थंकरना
ण १९ संगनकरइ बालतांसोचनकरइजेकुणकुंविना सिद्धांतरूपवचननेविषर
किमकरी॥स

यंबूममाहणं २०॥ जोनसज्जइआगंतुं। पव्वयंतोनसोअई रमईअज्जवयणं

मइसा सुवर्णजम अग्निअयस्पनेधर्मनइमलिसरीषउपापवगउतेहकीधउ रागद्वेषद
तामाने तेहनइअत्रेस्वब्राह्मण वकुह्मा बइजेणमुवर्णकिरनुपाककअग्निइकरीधम्यावमउजे षअग्रीतम

८ नद मि' तंवयंबूममाहणं २१॥ जायरूवंजहामट्ठं निद्धंतमलपावगं हनउ रागद्दो।

पअनइंभयथकीना तेहनेअम्हेकहउंब्राह्मण तपनउकरणहारतपइकरीनइंद मंसूकउहइमांसअनइलोहीजेहनउ
छिकीवगलउ बलउजितेंद्रिय स

१८१ सभयातीतं तंवयंबूममाहणं।२०। तवस्सिअंकिसंदंतं अवचियमंससोणियं
सुभव्रतनउधरणहारथकषाय तेहथतिइंअम्हेकहुंब्राह्मण त्रसप्राण विशेषइंकरीजाणीनइ संक्षेपइंथावरविकीवि
नइनिवारइंपापीवइंसर्वसमाधिजेहनइ नइ स्तरथणइपणिअ

सुव्वयंपत्तनिव्वाणं।तंवयंबूममाहणं २१ तसपाणेविआणित्ता।संगहेण।
नइंथावरपन जेनमारइत्रिविधिइंमनवचनकायाइं तेहथतिइंअम्हेब्राह्मणक क्रोधथिकी हास्यथिकी
इजाणीनइ करइकरणकरावणअनुमोदनाईसहे हउ अथवा

यथावरे जोनहिंसइतिविहेणं।तंवयंबूममाहणं।२२ कोहावाजइवाहासा।
जोलथिकीअथवाभयथकी मृषाजूठउनबोलउजेसाधु तेहनइअम्हेकहउंब्राह्मण सचित्तमनुष्यतिर्यंचादिक अचि

लोहावाजइवाभया।मुसंनवयईजोउ तंवयंबूममाहणं २४ चित्तमंतमचित्तं। १८१

त्तस पउउंअथवाघणउं नथइनलियइअणदीधीवस्तुजेको तेहनइअचितकहउंब्राह्मण देवतासंबंधीमनुष्यसंबं
नारूपादिक इक

वा।अप्पंवाजइवाबहुं।नगिण्हइअदत्तंजो।तंवयंबूममाहणं।२५।दिव्वमाणुस
धीनिर्यंच जेकोइनसेवनमागवइमे
संबंधी क्रन मनेंकरीकायाइंकरीवचनेंकरी तेहथतिइंअम्हेकहउंब्राह्मण जिमपद्मक

तेरिछं।जोनसेवइमेहुणं मणसाकायवक्केणं।तंवयंबूममाहणं।२६।जहा
पाणनइंमीपाणीथाइकरीपालीए एमकामकामेदेइइकउपनोंलोग
मलपाणीनेविषेऊपनुं कीकमवउरइहइ पाणीइंताधउपलकामसोगइनवांछइ तेहनइअम्हेब्राह्मणकहुं

पोमंजलेजायं णोवलिप्पइवारिणा।एवंअलित्तंकामेहिं।तंवयंबूममाहणं
आहारादिकननइंगृहजेसीघउसालपरेभेकउ इन्वउंसाधवज्यनेपरियहइ अमसकबतिबंधराहितगृह तेहनं
अहारजीवइ मुचित स्थानइविषइ अस

२७।अलोलुअंमुहाजीविं अणगारंअकिंचणं।असंसत्तंगिहत्थेसु।तंवा।

कहउं ब्राह्मण   छांडीनइं माता पिता दिकनउ   स्नानि सगा नइ सासू सुसरादिक   जेका इहां वास गादिक   तेहनइं अम्हे
पूर्व संयोग   संगोगत सालाई बंधु बांधव   नइ विषइ राग न करे
२८
१९२ यं बूम माहणं ॥२८॥ जहित्ता पुव्वसंजोगं, नाइसंगे य बंधवे। जो न सज्जइ एएसु, तं वयं बू-
कहउं बा   छोकरादि पशुनउं बंधविनाशनु हेतु सर्व वेद जिणिक   जइं कहितां याजि वणि नेउं पण   नहीं तेह दुःशील नई राखणहार नं
हण   राखइ धइ ... होमीइ एणि वादिक वचनथी   पापकर्मइं पसुवधादिके करइ   अवबाय जण हार पावि
२९
म माहणं ॥२९॥ पसुबंधा सव्ववेया, जट्ठं च पावकम्मुणा। न तं तायंति दुस्सीलं
रोषसहित   जिणि कारणि इहां कर्म बलवंत   नकहीयइ माथउ मूंडावइ   नकहीयइ ऊँकारादिक उच्चारइ   नकहीयइ मुनि अरण्य
की कुश अनो ... ब्राह्मण पाव   श्रमण   कहइ ब्राह्मण   वनइं विषइ वासकी
दारेन- रना आवरण: नही ३०
। कम्माणि बलवंति ह ॥३०॥ न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो। न मुणी रण्णवा-
धइ   कुसचीर वाकल बालीयां वस्त्र पहिरि   न ओंकिम एहवउ इराग द्वेष नइ प्रसावि   सजेज्ञानइ मुनि हुइ वि   अहिंसा
करइ   स्रांमाइं नहीं तापस   समतापरिणामइं श्रमण कहीयइ   ध्यानं सारते ज्ञान   दि
सेणं कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥ समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो। नाणे- १९२
रूप ब्रह्मचर्य नइ आव   तउ अनशनादिक तप नइ तउ   हुस्य तनध्यानादिक कर्म क्रियाइं   शारलेश्याने
रिवइ ब्राह्मण कहइ   पिवइ जनतापस कहइ   करीनइ ब्राह्मण कहइ पहिजन वर्णक   रावइ वेरूप क्रि
जकुंतउ पवेएक वनेसेवं करी व्यारि वर्ण हवा   याइं करी हुनि
ण य मुणी होइ, तवेणं होइ तावसो ॥३२॥ कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ
नीचइ कर्म नइ क्षत्रिय इ ब्राह्मादिक
थकइ   पसुपालिकं वाकुंरसण कार   श्रासमांश्रावेतेह रूपक्रियाइंक   एअहिंसादिक अर्थ सर्वइ   जया
वारूप क्रियाइं करी वेश्य कहइ   रीसूद्र जाणिवउ   गटवी ते बुद्ध श्री महावीरइ   इत्रा
३३
खत्तिओ। वइस्सो कम्मुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥ एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं
दरूइ स्नानक केवली   सर्वकर्म नीचकृति विशेषथी   तेहनइं अम्हे कहउं बा   इम अहिंसादिक सर्वगुणइ
कहइ   जेमकाणउं   ह्मण   करीनइ सहित
३४
होइ सिणायओ। सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥३४॥ एवं गुणसमाउत्ता

जे वेद ते जइ ब्राह्मण मांहि उत्तम प्रधान ते समर्थ ज्ञानी वासमा आत्म उद्धरिवा पर अनेरा नइं अनइं आपणा आत्मा नइं पुण इणि प्रकारइं संशय संदेह निवारी छिंदउ

१९ २ जे भवंति दिउत्तमा। ते समत्था उ उद्धत्तुं। परं अप्पाणमेव य। ३५। एवं तु संसए छिन्ने

विजयघोष नामा ब्राह्मण तेह स्त्री परिग्रह जांणी नइं निवारी पडइ तेणइ जयघोष नाम इं माहरउ सा ईतबा महा मुनि मोटा पदवी छइ घणउ संतोष पाम्यउ विजयघोष

विजयघोसे अ माहणे। समादाय तओ तं तु जयघोसं महामुणिं। ३६। तुट्ठे अ विज

नामा ब्राह्मण एम कहतउ हवउ हा बि बिहुं जोडा जं हाथ जोडी ब्राह्मणपणउं जेह वउ हतउ ते भलुं मुझ नइं उपदेश्यउं देखा डिउ छइ

यघोसे। इणमुदाहु कयंजली। माहणत्तं जहाभूअं। सुट्ठु मे उवदंसिअं। ३७। तु १९ २

अहो ऋषि उत्तम यज्ञ ना करणहार तुम्हे वेद ना जाण मांहि मोटा जाण ज्योतिष ना अंग तेह ना जाण पंडित तुम्हे छउ तुम्हे धर्म ना पारगामी

ब्भे जइआ जन्नाणं। तुब्भे वेअविऊ विऊ। जोइसंगविऊ तुब्भे। तुब्भे धम्माण पारगा २

ण पंडित तुम्हे समर्थ संसारी थी उद्धरिवा नइं पर अनेरा नें अनें आपणा आत्मा नइं तेकारणइ अनुग्रह करउ इम भिक्षा नइं लइ इम करी

।३८। तुब्भे समत्था समुद्धत्तुं। परं अप्पाणमेव य। तमणुग्गहं करेह म्हं। भिक्खं

नइं भिक्षा भिक्षु मांहि उत्तम प्रधान नथी कार्य प्रयोजन माहरइ भिक्षाइं आदिक सिद्धी इं किस्युं तउ स्युं तुं करि वउं हि उत्कृष्ट तावल दीक्षा लइ तउं हे द्विज ब्राह्मण तउ म तु समइ संसार समुद्र रूपीया

भिक्खुउत्तमा। ३९। न कज्जं मज्झ भिक्खेणं। खिप्पं निक्खमसू दिआ। मा भमिहि

आवर्त्त बहु जिहां घोर रौद्र संसाररूप समुद्र मांहि कर्मनउ संबंध ते हुउ उपलेप हुइ छइ अहो भोगी भोग नइ भोगव
हार रुडवो भोगइ छिद्य तानइ विषइ इं तेह कर्मे नइ

४०

उत्त॰सू॰टा॥ सिभयावट्टे घोरसंसारसागरे ॥४०॥ उवलेवो होइ भोगेसु अभोगी णोवलिप्प

करीजी भोगी भोग भोगवतउ संसार भोगवइ ते हकर्मे विक्रीमं आणजनी लउ अनइ संकउ गोलीमाटीसं बे
पडइ नहीं मइ संसार समुद्र मांहि काइ मुंक्क्यामइ बे लाधुं खूंटा नांख्या

१९५

४१

ई भोगी भमइ संसारे अभोगी विप्पमुच्चइ ॥४१॥ उल्लो सुक्को अ दो छूढा गोलया म

एम जागइ विलगी रहइ कं
यानह बेह आफल्या भीत नई विषइ जे हनी लउ गोलउ ते हसी तिनइ विषइ लागइ मइ करी नइ सुकी बुद्धिनन

४२

ट्टियामया दो वि आवडिआ कुड्डे जो उल्लो सो तत्थ लग्गई ॥४२॥ एवं लग्गंति दुम्मे १९४

धणीनी जे नर मनुष्य काम लालसा अने जे विरक्त नइ लागइ नहीं कर्म जिम सुकउ गोलउ लउ नां थउ नीति पणी परि इं तेह जवि
जा गोला जे पट काम ना लालची हुं इ करी न लागइ इं विना विलगइ यघोषना भाइ ब्राह्मण

४३

हा जे नरा कामलालसा विरत्ता उ न लग्गंति जहा से सुक्कगोलए ॥४३॥ एवं से वि

जयघोषनां समीप नइ विषइं वेदनय घोष के हउ अनगार घर रहि दीक्षा लीधी धर्म वीतराग नउ सां
नल्लावता साधु लीनइ प्रधान ४४

जयघोसे जयघोसस्स अंतिए अणगारस्स निक्खंतो धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥

तपावीनइ पाछिला ऊपार्जी कर्म सघ सत्तर भेदे संजम इं करी तप बार जयघोष अनइ विजयघोष बे सिद्धि मोक्ष पा
जाइं भेदे उणइ करी हुता ईसा ध्यनी म्या अनुत्तर

४४ खवित्ता पुव्वकम्माइं संजमेण तवेण य जयघोसविजयघोसा सिद्धिं पत्ता

साहावुंजंबकुंश्रीसुधर्मस्वामी जंबूप्रतिकहइ   एयज्ञीयाध्ययननअर्थकह्य उत्तराध्ययन   साधुनी सामाचारीप्रकाशइ श्रीवीर यइनसाधुसामाचारीकहुंसुधर्मास्वामी धर्मनिश्चयवचन जंबूप्रतिइ

४५ २५ ॥

१९५ त्ताअणुत्तरं निबेमि ॥४५॥ जन्नइज्जं सम्मत्तं २५ ॥ सामायारिं पवक्खामि स

तेहसामाचारीसर्वसमस्तदुःखनी मूंकावणहारीएहवीछइ   जिणेसामाचारीनइनिर्ग्रंथ चारित्रियायतीनेह   तरयासंसाररूपीयसमुद्रमोहप्पारइसरसइमहुत्सवसमइ तुण   छतऑनीआ नामामाटइगुरु तोऽवग्रहमां

व्वदुक्खविमोक्खणिं ॥ जं चरित्ताण निग्गंथा ॥ तिन्ना संसारसागरं ॥१॥ पढमा आ

निरहकउनउवाहेरिनी नीकलायछीजावाचानेकरइइनिष कजवुंआवश्यकीविमान धकीकरवीनेदवणीनिसीहियाना उपाश्रयपहिलीसामा मासामाचारीजाणिवीबीजीर   तबाश्कसामाचारीदिकटाजीनेस वैकार्मेनइविषइगुरुसूत्रविवातिणि आपुछणात्रीजीसामाचारीरीइ   आपु छणा कसायवी कार्यकरवा वारीइ

वस्सिया नाम ॥ बिइआय निसीहिआ ॥ आपुच्छणा य तइआ ॥ चउत्थी प

साविलनइअध्ययनइच्छामुणकयानदतउयनीकवणपामीयइनिणकारणयतीयइनसामाचारीआचरीनेनिर्जि कारणिबीसमर्त्तसामाचारीनइअध्ययनकहइछेइ = २५ हिनी   १९५

वेलावलीगुरुप्र छिवानिणिपछिप उणनामासमाची रीजीणवी ४   आदिकविहरीकेवलीपरअवविहउन दीकितुतउयतीसहुनेनिमत्रणकरिवउ तरहुपवेदणानामापांचमीसामाचारीजा णवी ५   तेबंदणनइविषइइच्छाकारकरिवउ जेयवुसारीइच्छाकुइतवणमिवणा मां दरीसफजीकरिवीएहइच्छाकारछट्ठी समाचारीजाणवी ६   चलनादिसइइय कारइबूकइपमइ बिकइमिच्छाकारवि वामिदुक्कडएहव

डिपुच्छणा ॥२॥ पंचमा छंदणा नाम ॥ इच्छाकारो अ छट्ठओ ॥ सत्तमो मि

उचवनपाहिकहिवउ साधुनइतेमिछाकार सातमीसामाचारीकही ७   गुरुनउआदेशपामीतहत्तिकरिवउ एहतथाकारआठमीसामाचारीजाण वीउ ८   गुरुनइआदेशतदत्तिकरइसम्य णकामनइविषइउद्यमकरिवउ एअभ्युठाणनवमीसमाचारीजाणिवी   उद्यमवंतथईनइअन गच्छथकीज्ञानादिक नीसंपदाआणवीएह

च्छकारो उ ॥ तहक्कारो अ अट्ठमो ॥३॥ अब्भुट्ठाणं नवमं ॥ दसमा उवसं

उपसंपदाद समीसमाचारी रीजाणिवी १०   पर्श्विलादशभेदपदशप्रकार नीसाधुचारित्रयानीश्रीऋषीश्वरस बंध उ   सामाचारीकहिविशेषइंकरीतीर्थं करगणधरइतेहप्ररूपणाकहे बइ   गमनजाइवानइविषइअ समत्तपणइअवश्यकरि वानइयोग्यजव्यापारतेह

संपया ॥ एसा दसंगा साहूणं ॥ सामायारी पवेइआ ॥४॥ गमणे आ

नइ विषइ जे ट्ठ तइ ज्जतेह नउना स्थानक इपात्र मुकी नियइ सितो निषेध आपु छवी नइ आवी एतलइ सर्व कार्य पार
म आवश्यकी एतावता साधु न घमाद्दिकी निवृत्ती दिवउ आत्मा नइ तेह पानइ करइ तिवारइ सङइ ट्ठं उकरू कई
आगमन निःप्रयोजन नदी एक सिकी निसीहिआ ईप्रइ सिता तपसरा मांहि कइ नकर स्व उक्मरा पुछणा जाणि कार्य
मुउ करीवी कहिवी साधु नइ वी

१९८ वस्सियकज्जा ॥५॥ णेकज्जा निसीहिआ आपुछणा सयंकरणे पर

नइ करिवइ श्री गुरु नउ आदेश लहीइ नइ अनेरा पाणी रूप दव्य इंकरी इछा पोता नवआलि आप वे तेणइ करिवउं नइ इछाकारिज्जसि
वउतां जिवारइ कार्य करिवा नइ उवउं हीयइ अनेरा यती नें निमंत्रियइ ते छाकार नाम कहीइ आपणा अथवा परकार्य काइरुं कारयक
तिवार पछी वली आचार्य नइ सर्वी नई एह प साधो तणा रहविबारी आव य पतिइ सर्व आविइ तिहां आत्मा सारणेइ र३=२३ लीवीजी
छिपु छणा कहियइ ५ इतउ निसूरउ छाकार तणा सकु कार्य करउ पसार णे:

करणपडिपुछणा ५ छंदणा दव्वजाएणं इछाकारो अ सारणे ।

मइ नु हव कीधउं एहवउं आपणउ गुरु नइ पासइ वचना दिसां भलीनइ केटा आचार्यादिकनी इछा सरिकनइ वि
आत्मा नउ निंदा वउं मिछामिदुक्कडं एहवउं वचन कहिवउं एह मइ भणसाथे बइ आणी दहउ वकउ अतिशय स्पर्ज
देइ वउ एह मिछाकार कहीयइ तमि स्वामी तहत्ति कीधउ ए देनइ तहकार कइ आहारादिकनउ संपजावि वउ ते अ
हीयइ ६ कहाणि मउ नस्य कहीयइ ॥

मिछाकारो अ निंदाए । तहकारो पडिस्सुए ॥६॥ अब्भुठाण गुरुपूआ १९८

ज्ञानादिक नइ अर्थइ अनेरा गछमां एम पांच उकारने दिगुणा सामाचारी अनेरा यस्यउ कहीती पहिला पहर नउ चोथ
हिस्सा चौथा दिक कनेर हीकृं मदई गच्छे दशउकार सहित दर्शकर गणधर अतीसइ सागर उसले रहि विइ
नीसंपदा आणवी न एहवउ पसंपयाक गमद इ
हीइ

अछणे उवसंपया ॥ एवं दुपंचसंजुत्ता ॥ सामायारी पवेइआ ७ पुव्विल्लंमि च

नउकाल सूर्य कै उगवइ विक इ धर्मरूप क्रिया तउ तेह भाजन नउ वादी पंचांग पण प्रकरी लिम वारप
करीनइ= करण बघउ मुहपती वस्त्रादिक प श्री गुरु धर्माचार्य नइ
हिलही हसिइ जाईनइ ८

उभागे आइच्चंमि समुठिए भंडयं पडिलेहित्ता । वंदित्ता य तओ गुरुं । ८ ॥

सइ विद्यार्थि जाणा वइजे तणइ सउं करिवउं मइ इहां एणइ अंतरं गमावू सहिन इछु छुं न ज्ञानादिकनी वेया
एहवउ पक्कउ वसारिस्त्री भगवन पालिउं पक्ष्ववु देसगवन सहनइ लियइ आम

पुछिज्जा पंजलिउडो । किं कायव्वं मए इह । इच्छं निओइउं भंते । वेयावच्चे व स

॥ अथ वापहि लाओ कामनइ विवबइ सागइ एतजा कोइक कणउ बउछउ सागनें नइ विषइ सर्गओ आ कइ छिकइ पत
णपार सिकइ सांउ पडियइ बमुपम वंउ पग रणेनइ पनिलेरी ह्टिइ योइ तइ पउजी षमाजी बादीति वार पर्बी गुरु र्स आ बायनअनेपइडं ॥

वासज्झायवाचना। गुरुनइं वयावच्चइंनि॰ तं वयावच्च करिवुं अग्लानपणि श्रीगुरुइं सज्झायनइं विषइं अ
दिकपइं कारनइ सुस्रूषा आदे सरीर [illegible] शिरीरनुपद अप्रमत्त अणजेषवत दशविधविकं सज्झायपद्य
विषइ ९ करइ इ कारनेउ

१८७ ज्झाए । ए । वेयावच्चं निउत्तेण । कायव्वमगिलायउ । सिज्झाए वा निउत्तेण

तदसज्झायकदवज्जइसर्वदुः
खकनेउमूकावणहारछइ देवसनाभागच्यारि करइ गारिनियत्रबुद्धिवंतकरीघणउंविचक्ष
णहुउर

१०
सव्वदुक्खविमुक्खणे । १० । दिवसस्स चउरो भागे । कुज्जा भिक्खू वियक्खणे

च्यारि भाग करइ अनंतरं तिहांउत्तर दिवसना च्यारि भाग च्यारि हूइ पहिलाप्रहरनइ विषइ वाचनादि
रगुणसज्झायादिकरइ नइ विषइ केमसज्झायकरइ

११
तउउत्तरगुणे कुज्जा । दिणभागेसु चउसु वि । ११ । पढमपोरिसि सिज्झायं १८७

बीजा प्रहरनइ विषइ मनमांहिं ध्याइ चि बीजो प्रहरइ निद्रा वरी गोचरी नइ त्रीजा प्रहरइ सज्झाय पछिलइपुण
तवनादि ध्यायइ आहारादिक लेवउ वादि निद्राई वादि दिहकरइ लोकामजिणकारणिकीध
करइ उंजोयइ तनिद्राकरइ

। बिईए झाणं झिआयति । तईआए भिक्खायरिआ । पुणो चउत्थीए सज्झायं
जिमण कानइ सीय दीवनडी पोससुदि पनिमइं इविकंपग चत्रसुदि पनिमइ आसुसुदिय त्रिकंपग
बायामवियइ आसाढसुदि पनिमइ पोरिसि हुयइ निमइ पोरिसिढ
बिकंपगइपोरिसिहुइ

१२
। १२ । आसाढमासे दुपया । पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु तिपा

इ आषाढ मासनं पोरिसि हवइ यइ
आढमासनपोरसिनंजोणि अंगुल सातदिवसइं पखवाडइ बिइं अंगुल वाधइ अनइ घटइ
वत्त तहोअोरात्रिइ आणवुं तिहां दक्षिणायनिव

या हवइ पोरिसी । १३ । अंगुलं सत्तरत्तेणं । पक्खेण य दुअंगुलं । वड्ढए हायए

धइवधइ तय मासादिवस इम च्यारि अंगुल आसाढमासनइ अंधारपखइ भाद्रवानइ अंध कार्तिकनइ पोस
लि घटइ घटइ वाधइ धारइ पहइ अंधकारइ नइ
१४ पहइ अंध
१८८ एवावि मासेणं चउरंगुलं ।१४। आसाढबहुलपक्खे भद्दवए कत्तिए अ पो-
पणइ वइंबे इहं मासे एक एक अवमरा हिवइ पडिलेहणा पोरसिनडं मान कहइ छइ जेठ आ
रइ पख वैशाखनइ अंधा फागुणनइ अंधा त्रिपट तां अहोरात्रि न हीएनउ ते वाढआ वृणएतलेमासे तेपोरिसिनउ मानु
इ रइ पख वाधइ रइ पख वाधइ व रसमांहि छ दीहा माघटइ कहइ छइ जेठ नक्षत्रनइ मूलइ नक्षत्र पूर्ण
१५
से अ । फग्गुणविसाहे अ । नायव्वा ओमरत्ताउ ।१५। जिठामूले आसाढसावा-
मां इस्यूं कुइ बीजइ त्रिकर साढ आसो काती इणइ त्रि त्रीजी त्रिकइ मागशि
तिलिम्ये हमा तेरमांहि छ अंगुल वाधइ एतलइ पडउण कइं अंगुल वाधीइं निवार पडी पडपो रिसि र पोसमाह इएणि त्रि
स कहीयइ पोरिसि थाइ नइ मान सिं थाइ कइ अंगुल छ घाति
णे । छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा । अठहिं बिइअ तिइअंमि । तइ दस अठ । १८८

गाथ पोरसिनइ मा इएतले पडलपोर
नइ अनइ अंगुल प सिझाय वयइत्ति रात्रिउण विभाग इं चारि त्रिया करइं विवक्षण डाह्यु निवार पडी उत्तर गुण सझाया दिक
घालीयइ एतलइ कइ फागुण वे त्रि- करइ
पडउण कोरिसिनउ १६
मूल थाइ हिं चउठा ।१६। रत्तिंपि चउरो भागे । भिक्खू कुज्जा विअक्खणो । तउ उत्तरगुणे कुज्जा ।

रात्रिनां च्यारि भाग नइ विषइ पहिली पोरिसिइं सझाय करइ बीजी पोरिसिइं अर्थ मनमाहि चीत त्रीजीपो
वइ रसीइं नि
१७
राईभागेसु चउसु वि ।१७। पढमं पोरिसि सिज्झायं । बिइए झाणं झिआयई । तइआ
द्रा मोक्ष करइ निद्राक्षाये वे वहइ वहइ चउथी सिज्झाय वा जेनक्षत्र सर्व नइ अर्धसि पनि
इ रते निवारइ निवीध आवे ध्यानादिक करइ जोईयइ एहनक्षत्र रात्रिमरिक तेनक्षत्र आकाश न
धपनइ अंसद्यंत मांहि थाय रिस्याइ
र निवारपडी कही वे समय मात्र नथी कहिस्वी॥
ए निद्दमोक्खं तु । चउठी भुज्जोवि सिज्झायं ।१८। जं नेइ जया रत्तिं नक्खत्तं तम्मि ण।

नक्षत्र चउथइ भाग ६ आव्यइं ज्याणी विरमइ निवर्त्ते ६ सज्झाय थकी ते सज्झाय पाउसी काल उपदण करी करिवु पारस्यउ हुंतइ ते दखी निवर्त्ते इसुं चयारि मिथइ निशिदीसनकहतइं

१९९

१९

ह चउभाए। संपत्ते विरमिज्जा। सज्झायपउसकालम्मि।।१९।। तम्मेव य णक्खत्ते

निगम आकासन इ चउथइ भाग इ पाखिजा इ रहइ नइ तिण ही जन कहत आथमइ हुंतइ वेरत्तिय इ अपि शब्द थकी आ वइ नामइ पणइ समइ पाउ पडिलेही कहितां वेरत्ती काल जेह इ वारिति यउ कन्ना सिज्झाय करइ पउ ताउ आघउं काउ सी आ हरती वेरतीय चउथाउ हइ ते उसिज्झाय ना णिव उ साइं काल पडिलेहइ= एतावता काल उपदण लेइ=२

२०

।गयणचउभागसावसेसम्मि। वेरत्तियं पि कालं पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा।।२०।। पु

सामान्य पणइ दिवस रात्रि नउ कर्तव्य करी वली विशेष थकी ते ह जकहइ छइ सर्व दिवस विकी व हिस्य जाउहरे नक्षत्र चउथउ भाग इ पउत= पडिलेही जोई पउजी सर्व उ साधिक उपकरण सा श्री गुरु नइ वांदी नइ सज्झा य करइ ते ह सज्झाय केहवउ छइ : एकक हितां पापते ह नइ छूमू

जइ पडिलेही विध नी दिवसइ=३

व्विल्लंमि चउभाग पडिलेहित्ताण भंडयं गुरुं वंदित्तु सज्झायं। कुज्जा दुक्खविमोक्ख १९९

कालउ हार पोरसि नइ चउथइ भागइ थाकतइ वांदी नइ तिवार पछी गुरु नइ कालपाला ई ते लइ अपडिकम्पइ चउथीपो रिसिइं वली सिझाय करी मइ काल पडिकम्पा पछी सज्झाय न कीजइ भा जन

२१

णं।।२१।। पोरिसीए चउभागे। वंदित्ताणं तउ गुरुं। अपडिक्कमित्ता कालस्स। भाय

न पात्र कहीयइ ते पडिलेहइ दिवपडिलेहणनी विधि कहीयइ मुहपती पात्रा नउं उपगरण ते पडिलेही २५ नइं पडिलेहण करी नइ २५ पात्रा कपरि गेल्पउ छइ नइं नउ गोछउ ते गुणपात्रा नउ उपगरण जपडिलेहइ पडिलेहण २५ करण अंगुली ने विषे लगा डिउ छइ गोछउ जेण इ पहइ चउ विकाउए न जह अंगुली विषे

२२

णं पडिलेहए।।२२।। मुहपुत्तिं पडिलेहित्ता पडिलेहेज्ज गोच्छगं। गोच्छगलइयं

जइ गो वस्त्रा न पडिलेहे जे जा नउ ऊंचउ काय विखी ऊंकहइ ए पडिलेहण करइ वस्त्रा कंपाति न करइ २३ इस पडिलेहउ पडिलेहे सूत्र वसु आति आश्री गक ... पडिलेहइ वस्त्र करइ ऊतावल उ नथाइ कलपकादिकनी पडिलेहण इंम जाणिवी

गुलिउ वत्थाइं पडिलेहए।।२३।। उड्ढं थिरं अतुरिअं। पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेह ।

निवारपडीनीजीवारहाथुक नीजीवारहाथकपप्फोडीवकुइनजयणाइ अखवडिलेहतांआदोरेपरकुंनवावइ अनु
पडिजयणाइकरीनइपप्फो थमाजेइदिवइकिमपप्फोडइथमाजेइते नदीनथावजेदेर्मेनइवसुमरमीयइनदी बंध
इइकहितांफाटकइ दविधिकहइछइ मिर
२४

२०० ता बिइं च पप्फोडे । तइयं च पुणो पमज्जिज्जा ॥ २४ ॥ अणच्चाविअं अवलिअं अ-

नरषणइकुअतेअनुकेमैबंधीनदीअनबंधी पडिलेहविहवारफेरवीनइविणिरपु हाथवीवस्त्रकबउराथइहाथनावन
नेआणाणुसंबंधीणनलइनिरंतरपणइपडि प्फाडीकरइइमइबुरिमांढाडिनीएवं इआकारइराथइपछइपाणिनइ
लहणनकरइनिणिछनेकंवउनोवउसार ७पडेनवेषाउनेहाथकपरिहाणिक विषइकबुइआदिकजीवनेउसा
अकिरनउपडिलेहइ णानहीआधिकीनहीरहीविरीनपुणनदीछ।। धनउमोधनहाथउवारसारीवणिरवा

णाणुबंधिं अमोसलिं चेव । छप्पुरिमा नव खोडा ॥ पाणी पाणिविसोहणं

रथमार्जइनिहांवस्त्रहाथि पडिलीविपरीतकरिवउणवमा तथामोसलीक नेनीजीवमादपडि रजइथरडिवउव
अरूइएवंछसातपडिली दपडिलेहणपडिलीतथावस्त्रना हीइकुपरिनी लेहणतेवर्जवीटाल सुगादइफालेटकि
पडिलेहण१ मणमाहोमाडिमेजइअथवाअपथि बइवस्त्रागाडि वी अंपअस्फाटनाथ
२५ कपरिबुइसइएवीजीवमादपडिलेहण२ वउ

॥ २५ ॥ आरभडा सम्मद्दा । वज्जेअव्वा य मोसली तइआ । पप्फोडणा

अवीष पडिलेहवउवस्त्रअणपडिलहरांकपरिमुंकिवउविति अनिटीलउवस्त्रमांहिइपलंबउ एकेकालेविहुंपाप्पापासाथ
मादप विखिनिजाइवउणणाथमीवमादपडिलेहणाविदिका विषमपणइवस्त्रनाश्रोणनउयह दीवसुवेताणिवुतेपणामास
निलह नासरपांवाववदकांदांष८छडीवमादपडिलेहणउतेवर वउसमिमलवेतुंवस्त्र कदीइअनेकरूपनिहंबार
णकुर पाश्रहोवइयारतिरियावेपारथउरूपयवेइआध१=

चउत्थी विक्खित्ता वेइआ छट्ठा ॥ २६ ॥ पसिढिलपलंबलोला एगामोसा अणेगरू-

लिवइपडिलेहणनउसं
थकांअधिकउ
वस्त्रधुणउकंपा तथातिकसंघवमाणनिदोषमा शंकाकपनइमुषइतथाआंगुलीयइगिणि दोषनिर्दोषपणूकइकं ऽऽऽ
वा दकरइ वानुयोगकरेपणुदोषटालिवा णीनकरवीअधिकीन ।ऽऽ
२७ ऽ।ऽ
।।।ऽ

वधुणा । कुणइ पमाणि पमायं संकिए गणणोवगं कुज्जा ॥ २७ ॥ अणूणाइरित्त- ऽऽ।
।ऽ।
ऽ।।

इकरिवीपरी नपणिनकरवीएणइविकुपकार तेआगमांहिंपधानसागव त्रोषघाकनासागा७अथशासवानूया ।।।
इंगांगाटकपजइछइ थअस्रजाणिवउरूपछइ जाणिवा २८

पडिलेहा । अविवच्चासा तहेव य । पढमं पयं पसत्थं सेसाणि अ अप्पसत्थाणि ॥ २८

गवइयापउंनवेइयानेतेविकुंगाणाधिकीकथादाथराथीइ१अहावेइयानेजाविहंगानेविघणनुंनीषादाथराथीइ२निग्यि
वइयातज्ञतिरिवादाथकरीपडिलेहइउनतउथेइयानेडिवेविहंगाणवाडिरिनाथराथीइ४एगवेइयानेजेणकवाहिरिग
थीइएवछदिकापचकारनीजाणवी=७=१९लि.त्रीनीकारइ५=२ ७:

दिवसइ पडिलेहण करतां जे परिहरि | माहोमाहिं कथा वात | अथवा जनपद देशनी कथा | किणहीनइ पच्चक्खाण द्यइ | अनेरा
वुं ते देषाडइ पडिलेहण करतु मिथ्यो | करइ | करइ | कहितां करावइ | नइ वा

२०१

पडिलेहणं कुणंतो मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा। देइ व पच्चक्खाणं वाएइ

वली पोतइ सूत्र एतलां वानां | पृथिवीकाय माटी प्रमुख माटी सांकर कांकरा इत्यादिकनी भाजनइ विषइ रहितु षिकड पं
द्यइ पडिलेहण करतां न करि | माइ मरि ऊपडतां ऊपमादिव सिवीतेइ तेपाणीइ करी माटी अग्नि वायु कंकण इत्यादिक हलावइ अन
वो २९ | इ जिहां अग्नि तिहां आवस्य वायु हुइ इम छ इ कायानउ विराधक जाणि वउ छइ जत
छवणइ निगाधाव वनातेआयु काय पाणी ते उकाय अग्नि वायु काय वनस्पती काय त्रस

सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥ पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं। पडिलेहणा

काय इम पडिलेहणनइ विषइ जे प्रमादी ते छइ | पृथिवी | आउकाय पा | तेऊका | वायु | वनस्पती | त्रसकाय
कायनउ विराधक हुइ | ३० | माटी | णी | य | काय | काय | जीव इत

पमत्तो छण्हंपि विराहओ होइ ॥३०॥ पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइसाणं।

२०२

पडिलेहण करिवानइ विषइ जे | तेछइ कायनइ आराधक एतलइ पहिली पोरसि | दिवसइ त्रीजी पोरसिनइ | मगध देशनइ वि
आउषउ सावधान छइ | नउ कर्त्तव्य कहउ तलहनइ केहइ बीजी पोरसि | कर्त्तव्य कहइ छइ त्रीजा | षइ त्रीजइ पुहरइ
नउ कर्त्तव्य आषउ बीपजाण ज्यायइ निव | पुहरनइ विषइ | सोजनथाइ बिया
ऊनात | ३१ | कल्पीनइ तउ अर्थ

पडिलेहणआउत्तो छण्हंपि आराहओ होइ। ३१॥ तईआए पोरिसीए भत्तपा

ग्रं वकालिक मांहिकहउ छइ कालेण निक्कमे भिक्खू कालेण | स्वपरषा उपत्रा
य पडिक्कमे अकालं च विवज्जिता काले कालं समायरे॥१॥ सात | आहार अइ दिवइ ते छइ कार | माविवास णीआ
अनइ पाणी सूजतइ नीषपकरइ एषेत्र आश्रीव षनइ छइ | णक हइ छइ | हलिइकार णिष
रणमांहिलइ अनेरइ कारणविशेषइ आश्रइ बिहा॥ | ३२ | षमा

णगवेसए। छण्हमन्नयरागम्मि॥ कारणम्मिसमुट्ठिए॥३२। वेआणा

भूषलागइ ते वेयण | इर्या नइ अर्थिइं | गामनानाउपांगनीप | प्राणजीवतव्यते नइ अर्थि छइ | धर्मचिंतानइ अर्थि
ऊनइ करिवा सली | आहार विनाईर्या | रिसंयमनइ अर्थि | वधिइ आत्मानइ प्राण संकोचिय | धर्मदीपविज्ञानइ अर
आहार लइ कार | समितिन पळइए | आहार लिइ एषो | इत्यआत्मानउ दोषते उणी आहार | विधर्मकहवानइ अर
णलवोजइ २ | त्रीजउ कारण ३ | कारण ४ | लिइ एपांचमउ कारण ५ | छिआहार लिइ एव छइ

वेआवच्चे। इरिअट्ठाए अ संजमट्ठाए॥ तह पाणवत्तिआए। छट्ठं पुण धम्मचिं

२०२

कारण निर्ग्रंथ साधु महा न धृतिमंत धैर्यवंत धणी निर्ग्रंथी साध्वी पणि न करइ आहारादिक छ स्थानक ते प्रवर्त्तनी इम लिंगा आगलि कहीसइ तेण
३३ ६

ताए ३२ निग्गंथो धिइमंतो निग्गंथी वि न करिज्ज छहिं चेव ठाणेहिं इमेहिं

अनेनि क्रमइ ते ते साधु अथवा साध्वी जरादिक रोग कप नइ आहार उपसर्ग देवता मनुष्य तिर्यंच नइ कीजइ आ नकुइ एतलइ कारणइ आहार छांडतां श्री छांडिवउ देवतादिक नइ उपस हार छांडिवुं एतलइ ए सूत्र तावू विषय जिनमार्ग नउ पालिवउ कुइ ब्रह्मचर्य कारणदे ब्रह्मचर्य नइ आहार छांडि नइ विकार ऊपनइ आहार लेवउ पाडइ छइ ३४ ३३

अणइक्कमणाय से होइ ३४ आयंके उवसग्गे तितिक्खया बंभचेरगुत्ती

नजीव नी दया नइ अर्थइ तपनी जाणीनइ दया शरीर छांडिवा नणी अणसण लिवइ आहार गवेषणा किणि विधि वस्त्र नइ हेतिइ आहार छांडिवउ तथा वर्त्तनपद करी आहार न लेवउ पवि काल इंके न जाणइ नइ विषइ विचरइ दृष्टि नतप के विवासणी आहार न लेवउ ण आहार छांडिवा ३५ ते केहे इम उघउ संदकउपगरण लेईनइ

सु पाणिदया तवहेउं सरीरवोच्छेयणट्ठाए ३५ अवसेसं भंडगं गिज्झा चक्खु २०२

इं करी पडिलेहइ परकहितां छकोस ऊर्द्धयोय विहार ग्राम नगरनइ विषइ विहार वि इणि परि गाथा बरी करी ऊपाध्याय उ जाइ अयण इहां नविणा जलगइ हांथि बरइ साधु अधिक जाता पोषा उपीवोरसि इआवी वरीजाइ तीनदोष ३६

सा पडिलेहए परमद्धजोअणाओ विहारं विहरए मुणी ३६ चउत्थीए पोरिसीए

तेजनभाषी गुरु आगलि आलोई वि आहार पाणी आहार करी निवार तेमन्झाय केद्वउ जीवादिक पोरिसि नइ चउ खिरवं कसीकी अवगा श्री गुरुनी पडी सा करनु कर्त्तव्य सज्झाय पञ्च सर्वपदार्थ नउ प्रकासक इ बहुभाग इ थानेक कारन उकरइ पक नइ एतलइ पाति ३७

निक्खिवित्ताणं भायणं सज्झायं तओ कुज्जा सव्वभावविभावणं ३७ पोरिसीए चउ

जीव घर्मी रह वांदी नइं निवार पडी श्री गुरु पसाइ काउ पडिकमी पछे पराई जो पाउ पानअ पडिलेहइ बइ सइ तीइ नइ छिवकां उपाश्रय पडी उतीनइं बीवसादिक उपगरण उ पधि पडि लेहइ ३८

ब्भाए वंदित्ताणं तओ गुरुं पडिक्कमित्ता कालस्स सिज्जं तु पडिलेहए ३८

पछइ लघुनीति वडीनीतिनां ठाम स्थंडिलपडिलेहइ मांडलां २४ क तेकहवउ सर्वदुःखना
निहां थकी मूकइ वारसंमांडलां २७ जोतो पछी तिवारपछी काउसग्ग करइ समूकावणहार
भूमिवडीनीतिनी लघुनीतिनी= ती

२० ३ पासवणुच्चारभूमिओ। पडिलेहिज्जए जई। काउसग्गं तउ कुज्जा। सव्वदुक्खविमो

तेकाउसग्ग करतउ दिवससंबंधीया अतीचार चिंतवइ अनुक्रमइ ज्ञाननइ विषइ दर्शननइ विषइ चा

४०

क्खणं। ४०। देसिअं च अईआरं। चिंतिज्ज अणुपुव्वसो। नाणेय दंसणे चेव। चा

रित्रनइ पानइ विषइ जेअ बीतवीनइ स्थापिकरइ तेकहइ श्रीगुरुनइ वांदणां देइ ने जिमअतीचार चीतव्या हुइ
तीचार लागा ते चीतवइ ४१ काउसग्ग पारीनइ तिवारपछी इ वांदीनइ तिमसघला दिवसना अती
चार

रित्तम्मि तहेवया। ४१। पारियकाउस्सग्गो। वंदित्ताण तउ गुरुं। देसिअं तु अइआ
र मिच्छादिवसनां क्रियाकरी पछइ पडिकमणा नउ अधिकार निहां देव वांदि पडिकमणा मांडिनइ पछी काउसग्गे तिम
वइ ए चेदिज्जा पछी अनुसारि सूत्रोक्त विधिइ वंदणादेवा पछी आलोयणां पछी वांदी देसी पडिकमणा मि गुरु
पगाइ नवकार करइ मिसंतेकरी इच्छामि ठाउं काउसग्गं इत्यादि सूत्रमां हि इकाउसग्गनउ कायुं = उजीयाहिं नीयरइ २० ३

आलोयइ आलोयणइ समस्त यथा पदसंपदा सहित पडिकमी पडिकमणा तिवार पछी श्रीगुरुनइ वा गुरुक्रमणम
क्रमइ अनुक्रमइ अतीचार आलोई सूत्रकहीनइ सर्वशल्यरहित शल्यकाढी वांदणा वांदणां देई इच्छाकारेण
मुं करइ तेहइ वइ ४२ रियउवझाय

आलोइज्ज जहक्कमं। ४२। पडिक्कमित्तु निसल्लो। वंदित्ताण तउ गुरुं। काउस्सग्गं

गाथा कहेली तिवार सर्व दुःखनउ मूकावणहार तिवा काउसग्ग करइ पारीनइ वांदणा वांदणां इच्छा
पछी वांदिनइ विहरदर्श रपछी स्थापिकरि वउंतेकहइ छइ कारसबके जोगमनणी देई श्रीगुरुनइ मोटा
नाचारज्ञाननाचार संबं तिवार पछइ संडि
धीकाउसग्गकरइ तेकाउसग्ग कहवउ ४३ नमो

तउ कुज्जा। सव्वदुक्खविमोक्खणं। ४३। पारिअकाउस्सग्गो। वंदित्ताण तउ गुरुं। क

रवाभणी वांदणां देई सांज समय पाउसिय काल वाघा तिवार पछी मुंकरिवउं तेकहइ बीजी पोरिसिइ
स्तुति थती अनुक्रमइ काउसग्ग करइ पडिले पहिली पोरिसिइ सिज्झाय करइ ध्यानकरइ सत्रा
स्तुति करइ हइ

इ मंगलं च काऊ। कालं संपडिलेहए। ४४। पढमं पोरिसिं सिज्झायं। बिइअं झाण

ःदक नाग्रर्थविवा त्रीजीपोरिसिइं निद्रांमोक्षरइ वलीचउथीपोरसिइंसझायकरीइं जिवारइंरात्रिनीचउथी
रचउथेंहिइंधीनवइ संथारउकरीधर्मकंजागरीजाग एबीजीवारकयउत्तरशिष्यनइसूकइ पोरसिनिवारइंचउथीपो
६ वलीरउपदश्रदइचउचउथासनजाणवुउं

उत्त। सू।ट। झियायई तईआए निद्दमोक्खं तु सज्झायं तु चउत्थीए। ४४ पोरिसीए चउत्थी

रिसि कालजकरत्तीकालनेपडिलेहिया निवारपछीसिज्झायपांचउका जिमराइसांसलीअसंयतजीवजा पोरिसिन
इं कालिगलेईनइं रनीकरइ गृहस्थीएनलइइजूईरकोः-लिकउक्कालिका इंचउथइ
दिकसझायकरइ ४५

२०४ ए कालं तु पडिलेहित्ता सज्झायं तउ कुज्जा अबोहंतो असंजए ४५ पोरिसी

भागइएतलइ पूर्णि निवारपछीश्रीगुरुनइंवांद वेरत्तीकालपडिक्कमीनइंते पाभाईकालपडिलेहइएतलइ
जोबिगमीरात्रिविकइ शावइवांदणादेई इसंबंधीनीक्रियाकरीनइं आवस्सकवेलाआवीजाणीआ

ए चउभाए वंदिऊण तउ गुरुं। पडिक्कमित्ता कालस्स कालं तु पडिलेहए

काउसग्गनीवला वइक्कमकरइ राईपडिक्कमणवंगाईकायनउ तेकाउसग्गकेहवा छइंसर्वदुक्खनां काउसग्गसांकना पडिक्कमणी
आवइछइकिहइ-४ नउबीजउदइनि कृस्सग्गकहितांकाउसग्गआगा मंकालगदार नीपरिहरकरइ पडितचउचारित्राचारना
४६ जाणीइहां काउसग्गशइइ हां= चारतउत्रीजउ ज्ञानाचारनउ

ए। ४६। आगए कायवुस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे। काउस्सग्गं तउ कुं। २०८

नेरकाउसग्गकेहवांसर्वदुक्खनांमूं निश्चयंएतलउछइतिणिषवइतेक वीनवेअनुक्रमेंजिमरलागा ज्ञानई
कालणअसदुड ४७ हेत्रीजेकाउसग्गरात्रिनाअतीचार छइतिमरसंसारीनइं विषइद

ज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं ४७ राईअं च अइआरं। चिंतिज्ज अणुपुव्वसो। नाणम्मि

र्शनजइवि चारित्रमइ विषइतपनइ विषइहि काउसग्गपारीनइं तिवार गुरुनइंवांदीवादशाव पछइरा
षइ वइंजेकरिवउमेकरइछइ ४८ पछइ नवांदणादेइ त्रिसंबं

दंसणम्मी चरित्तंमि तवंमि य ४८ पारियकाउसग्गो वंदित्ताण तउ गुरुं राइं।

पस्संपदासहितपडीकमीपडिक्क श्रीगुरुनइंवांदणा
धीअतीचार अलोइअनुक्रमेजिमरलागाछेतिमर मणसहितकहीसर्वशल्यरहितथइ वलीवांदणादेइगुरु

४९
अ अइआरं आलोएज्ज जहक्कमं। ४९। पडिक्कमित्तु निसल्लो। वंदित्ताण त।

रियनवआयएगा उमुपनइव काउसग्गकरइनेकाउसग्गके सर्वदुक्खनउमूकावणहारछइतिहां आजइअब्भासीअमुपतप
चालणीकाउसग्ग नावीआय- इरउबइ सर्वचिंतवइतेकेहवउछइ ५० कांलिकोसिबउतपपडिवज्जउं
नामर्वपावमूणीति
तारपर्छा= ३०४

उ गुरुं। काउस्सग्गं तउ कुज्जा सव्वदुक्खविमोक्खणं।। ५०। किं तवं पडिवज्जा

एहवं तं चिंतवितवइ जेतपकरइ तिवारपछीगुरुनइंवांदीनइ काउसग्गपारीनइ
तिहांआणीनइराषइ तेकाउसग्गपारीनइ गावर्तवांदणादियइ ५१

उत्त॰ सू॰ ८ । मि । एवं तत्थ विचिंतए । काउस्सग्गं तु पारित्ता । वंदई अ तओ गुरुं । ५१ । पारियका

नवकारकहवे तिवारपछीश्रीगुरुनइंवांद जेतपचीतव्यं तेतपपडिवजइ सिद्धनउसंस्तवकरइदेवसीपडि णकहिवनयनइया
क गांवर्तवांदणावांदी यथाशक्तिपरखाणकरइ कमणानीपरि स्तविरकहीनमोक्षु = थायोगसर्वक्रिया
करवी = २

२०५ उस्सग्गो । वंदित्ताण तओ गुरुं । तवं संपडिवज्जित्ता । करिज्ज सिद्धाण संथवं ।

हिवइअध्ययननीपरिसमाप्ति संषेपाधिकीमनइंकहीश्रीसग जेसामाचारीआचरीनइंआद नस्यासं
कहेछेएसाधुसामाचारी॥ वंतनइकहणइ रीनइघणाजीव सारूपी

५२
। ५२ । एसा सामायारी । समासेण वियाहिआ । जं चरित्ता बहु जीवा । तिण्णा

तसमुद्रपारपहुचंईकेउंश्रीसुधर्मा एहसामाचारीअध्ययननउअर्थकह्यउजेहमांत्रिचकी॥ पूर्वलिङ्अध्ययनिमा
स्वामिजंबूप्रतिइंकहइ ५२ छनीसामाचारीकहीतेहनउआशउपदाइणाछेतेअमुठपणुंजाणवुंवासणीसत्रा
२ वीसमउअध्ययनकहइछइ॥ छ: श्री: छ: ॥२६॥

संसारसागरं त्तिबेमि ॥ ५२ ॥ सामाचारी अज्झयणं सम्मत्तं ॥ २६ ॥ श्री ॥ छ: २०५

धर्मनइविषेथिरतानो मुनीत्रिकालनीअवस्थानो आचार्यने आचार्यपणानेविषे ऊगियंत्रो
करणहारासूत्रनाधरण जाणइंतसर्वशास्त्रनेविषइ गुणेकरिउ बेरहिउ हीबुकीय
हारगर्गगोत्रमाहेगर्गना ऊंचालइ णिज्ञानइ
मा आचार्य

७ ॥ थेरे गणहरे गग्गे । मुणी आसि विसारए । आइन्ने गणिभावंमि । समाहिं

शनवास्त्रिसंबंधीस गाडलादिकनेविषेवहतोछे विनीतवलदादिकनइंकं इमजोगसंजमव्या
माधिनेसाधेपरवो मजेसारवीतिहनइ तारअटवीअतिक्र पारनइविषइस्फटिा
मइ मनइंचलमतां

१
पडिसंधए ॥ १ ॥ वहणे वहमाणस्स । कंतारं अइवत्तए ॥ जोए वहमा

आचार्यादिकनइंसंसारअ गलियारबलदनइंजोकाइ तेविशेषेताडतोमारतोथिको
तिक्रमइसुशिष्यजोविनीत सारथीजोतरेगाडलानइंछेउ किलेशपामइ
पणइंपीआचार्य

२
णस्स । संसारे अइवत्तए ॥ २ ॥ खलुंके जो उ जोएइ । विहम्माणो किलिस्सई

एकारणविकी असमाधिउ साता पुणवेदइ — बलीनेहथेमणाहारनो पुराणो पुणसाजइ — कहाधिकोसारथी कोइक बलदनेवातेकरी भसेकर भंडुबाधांनइ ३ — एककोइ बलदने आरइकरीने

उत्ता सूटा प — असमाहिं च वेयएइ ।। तोत्तउ से भज्जई ।। ३ ।। एगं डसइ पुछंमि । एगं वि

वारंवारवीधइ — एककोइकबलदसमिल गाडानो अंगतेहनेभाजइ — एककोइबलदवंषषम कोनइउन्मार्गेजाइ — एककोइकबलदस मिनेविषइंपासास रिथइपिडे ४

२०५

धइ भिरकणं । एगो भंजइ समिलं । एगो उप्पहपट्ठिउ ।। ४ ।। एगो पडइ पा

कोइकबलदस्तूमिकाइंबे सेवलीत्तूमिकाइथइ — मेंरुकानीप मिलाकद्धे — वलीउंबोर उठलइ — कोइकशठधूर्तबलद न्हीगादेषीतेरुणीमोडइ — इकेक बलदमा यावीबे मा ५

सेणं । निवेसइ निवज्जइ । उक्कुद्दई उप्फिडई । सढे बालगवी वए । माई २०५

रिपडेंतूमिकाइं — इकेककोधवंतथिकउंजाइ धतिपंथइएतलेधसीपाछुवजइ — वलीइकेकमूर्छानालक्षणदेषी करीनइंपडिरहइ — वलीकाईजेतले मावधानकोछोए नेलेवेगसहितति

मुद्धेण पडई । कुद्धे गच्छइ पडिपहं । मयलक्खेण चिट्ठई । वेगेण य प

मच्छईजाइजि मवीजेमिलीन सके — कोईउद्दंतातिनोबलदछेदे ओदेसिंहिसूत्राइकनी — कोइकउद्दंतिजन्मत्तथि कोलाजइंयुगधउंसरा नइं — नेवलीबलदसुसूस्राभि करीफुकाराकरीमइंप ठइ ६

हावई ।। ६ ।। छिन्नाले छिंदई सिल्लिं । दुद्दंते भंजइ जुगं । सो विय सुस्सुआ

वेरणाकरीआपणास्वामी नइंअनइगाकलेलईवेगलु नासइ ७ — एबलदनीउपमागर्गाचार्यशिष्यनेदिइबेते गलियारगोधजिस्याजोत्याविकाधणानइ असमाधिनाकरणहार — तिमएदुष्टशिष्यअवि नीतमाहरानेहवागलि यारसरीषाजाणिवा

इत्ता । उज्जुहित्ता पलायई ।। ७ ।। खलुंका जारिसा जोज्जा । दुस्सीसा वि हु ता

जो च्यंथका धर्मरूपी यां यां नगा मलानइ विषइ ।
धर्मरूपक्रियानुष्टानथी साजे चित्त नाहूबलाथका ।
तेणे गर्गाचार्यना इकेक कुशिष्य ऋद्धिगारवना धरणहारजेमाला श्रावकधनवंतघणा इत्यादिक ८

उत्ता०स्या०२ रिसा जो उ अधम्मजाणंमि सज्जंती धिइदुब्बला ॥ ८ ॥ इड्ढिगारविए एगे

२०७

एकेक कुशिष्य आपणा रसिकन्यागर्वना धणी एहवा थिका तपनथी करता
एकेक कुशिष्य साता गारवंतथका विहारनथी करता
एकेक कुशिष्य क्रोधीघणा कालउगी क्रोधवंतक्रियानुष्ठाननथी करता ९
एकेक कुशिष्य भिक्षा थकी लागा आलसुथि का गोचरीइ जाइवा नही ६इ

एगेत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥ भिक्खालसिए

एकेक कुशिष्य अपमानथकी बीहता केहनें घरिनजाइ अथवा अवमानथकी बीहता थकीबीहता मुक्तनइ इहता आवतो देखीनें रोसकेइ आवता थास्यइ आपणा करहथी अनुराग नाशिष्यादेखो
एकेक कुशिष्य अहंकारवंत तनें जनमाविद्यासमर्थ
किमरी एदेस्यइंहेति इंकरीनइ युक्तिनें देखो विवेकरी १०

एगे । एगे उमाणभीरुए थद्धे । एगं च अणुसासम्मी हेऊहिं कारणेहि य ॥ १०

२०७

तेपुणकुशिष्यसीषवीतो ग्रंन स्तायनो करणहार ॥
ते आचार्यनी अपते दोष करायहे अवगुणग्राही
ते कुशिष्य आचार्यवडा नो जे वचन सीषसंप्रतियत
पाछोवाले वारवार जे इनतुनही

सो वि अंतरभासिल्लो । दोसमेव पकुव्वइ । आयरियाणं तं वयणं पडिकूले

करोत्तुमेह जकानक रो
गुरुइंसी पहीली अमकी नांघर थी आहाराहिक विहराया विवलतो कहेते मुक्तनेंतुलषइनही
अथवातुं जाई सिंपरंते श्राविका मुक्तनइ देस्येंनही
अथवा ते श्राविका हिवणं अनेरें गामि गई कि स्यइ एहवो
११

इ असिक्खणं ॥ ११ ॥ न सा ममं वियाणाइ । न सा वि मज्झ दाहिई । निग्गया हो

मानकंबु इमकरे
अथवा अनेरो साधु कोइ काम जाउ एकलो हुं जनथी तां
ते कुशिष्य कार्य करिवा मोकल्या थिका आपणा ठिकाना रोष अथवा कार्य नीयमजावेनही एम थिकी वली वलिव
ते कुशिष्यवेगला गुरु थी नासें हूं क नावसइ स्युं तं को इका
१२

हिती मन्ने । साहू अन्नोत्थ वच्चउ ॥ १२ ॥ पेसिया पलिउंचंति ते परिंति समं

२

मदेस्य कदाचितपामइबइछाअनेका करइंमितक्रिनिवडीमुहेनिलाड तेकशिष्यसन्नतबाअर्थवंता
मदीधतेत्रराजाननीवेठिपडी नइविपृतिमअनेरीवुणरासमन आसंग्रह्याआपणीनिस्राइंराजा
ग॰ इवदुंमानता नीवेष्टाकरइ १३

उत्रा।सू।ट तंराय वेट्ठिंव मन्नंता करिंति भिउडिं मुहे। १३। वाइआ संगहिआ चेव

नानपाणीइंकरीनगुरुपोस्या पाषआविडपिंकइजिमहंसपंखिय तिमएकशिष्यदिशोदिशिजाइ
ऊडीजाइ बेआपणीइछाइवर्त्तइछइ

२०८

१४

भत्तपाणेण पोसिआ। जायपक्खा जहा हंसा पक्कमंति दिसोदिसिं १

एतलेअनंतरतेसारथीआचार्यतेनत षु०गलीयारबइलेदसरीषे नेउरणेडष्टशिष्येइकुशि इह।
अबेकणतारचिंतविवालागउ।। शिष्यइसहितएकोमाहरी थइंमाहरइकिसिउंकाम लोके
किसीगरजसरेउपिउंकाईन वइ परलो
रमइ।।

४ अहसारही विचिंतेइ खलुंकेहिं समागउ किंमज्झ दुट्ठसीसेहिं। अप्पा

२०८

किमाहरउआत्मासीदाइ तेहवागलियारगादडाजाणिवाएतले तेहगलि
कशिष्यनइंसीदाइपदीषे जेहवामाहराशिष्यछइ तेगलीयारगादहसरीषामाहराशि यारगाद
नमानेआत्मावूणतेदयामे ष्यछइ

मे अवसीअई १५। जारिसा मम सीसाउ। तारिसा गलिगद्दहा। गलि

हसमानकशिष्यनइं छंडविनयणेतेगर्गाचार्य बालयणइ विनन्नइविषवुणा दियानुधर्मीगं
छांडीनइ ग्रहइआदरेतपरइसेदे।। विनयवंत नेहवउजविनीत। सीरकोइपार

गद्दहे चइत्ताणं दढं पगिण्हई तवं।१६ मिउमद्दवसंपन्नो। गंभीरो सु

नपाम्मइस्थिरमन विचरतउनइधनिबंधरहित शीलचारित्रतेहेजउठेएपालिउबंधआत्माइ एहष
विषेमलीसमा चकुमदीछपृथ्वीनइविषइम आपणपेएतलेमहाचारवंतएहवउन्हउंकउं तुंकीय
३ धिनेंमणी नात्मामोटोआत्मानुधणी श्रीसुधर्मस्वामिजंबूप्रतिकहेछइ अध्यय

समाहिउ। विहरइ महिं महप्पा। सीलभूएण अप्पणा त्तिबेमि। १७। खलुं

ननो अर्थ कहि छे ले समग्र आठ कर्मनो विछेद ते मोक्ष तेहनो तेसांभलो जगन्नाथनी भा रिकर
नेथको जेमार्ग ज्ञानादिक ते गति सिद्धग साधी ण आग
२७ तितेहनो जे अवदे ज्ञाते मोक्ष मार्ग गति कहीइ तेके हवी तथ्य साचु पूण

उत्तराध्ययन॥ किंचि समणं॥२७॥ मोरकमग्गगइं तच्चं। सुणेह जिणभासियं। चउ

२०८

लिकहीस्ये तेणेस हित
विशेष बोधक ते ज्ञान सामान्य बोधक ते दर्शन तेहज लक्षण छइ
विशेष बोध कने ज्ञान कहीयइ अनइ सामान्य बोध ते दर्शन कहीइ
चालेजाइ मोक्ष ने विषयण ते चारित्र पुर्विल्यां कर्म नइ खपावे ते त

कारणसंजुत्तं। नाणदंसणलक्खणं।१। नाणं च दंसणं चेव। चरित्तं च तवो

पजा णव ते
एच्यारि बोल रूप मोक्षनउ मार्ग कहिउं
जगन्नाथ वड़ा ज्ञानदर्शन नइ धणी छइ
सा वडं ज्ञान सांच उदर्शन

तहा। एस मग्गो त्ति पन्नत्तो। जिणेहिं वरदंसिहिं।२। नाणं च दंसणं चेव

२०८

चउजाइ मोक्ष नइ विषे
पणे चारित्र पूर्वलो कर्म नइ खपावइ ते तप जाणवो
एच्यार बोल रूप मोक्षनउ मार्ग कहउं जगन्नाथ प्रधान ज्ञान दर्शन ने धणी छइ सा वउं ज्ञान।

चरित्तं च तवो तहा। एयं मग्गमणुप्पत्ता। जीवा गच्छंति सुग्गइं।३। त

अवधिज्ञान मर्यादा सहित दष्व वनंत्रीज उंजाणवउ मनःपर्यवज्ञान मननापुद्गल देखावारूप केवलज्ञान
सा वउ दर्शन उत्तम चारित्र उत्तम तप वली एह मार्ग नइ विषे जे पुरुष ताएह मार्गना आदरणहार

त्थ पंचविहं नाणं। सुयं आभिणिबोहियं। ओहिनाणं च तइयं। मणनाणं

अनेरा गणांनां अनावरूप सह लिज्ञान
एह पुर्विइं कहि उ ते पांच प्रकारे ज्ञान
इत्येणे ते पर्याय ते द्रव्य तेहनु हिइं द्रव्य ने विषे स्वतथी तादिक गुण तेहनु
द्रव्य ने विषे स्वतपीता दिगुण नइ विषे अनुक्रमे ऊठइ ते पर्याय ते

४
च केवलं।४। एयं पंचविहं नाणं। दव्वाण य गुणाण य। पज्जवाणं च स

सघला इन्द्र | ज्ञानज्ञाणवंतकेवलज्ञानेनेध णीइं वीतरागदेवेप्रीतइ | गुणनोआश्रयतेहद्रव्यएतलेइं द्रव्यकेहवोवर्णादिकगुणलहीइ | एकद्रव्यपुद्गलास्तिकाया दिकनेविषेआश्रितआश्रया तेगुण

५

उत्ता।स्।८। देसिं। नाणनाणीहिं देसिअं॥ ५॥ गुणाणमासउदव्वं। एगदव्वस्सिआ

लक्षणजेणेकरीलहीइंतेल क्षणपर्यायनउउबलीएज्या णिवउ | उभयनबेहद्रव्यनएगुणनइ विषेआश्रयाजइ | धर्मास्तिकाय | अधर्मास्तिकाय

२१०

६

गुणा। लक्खणंपज्जवाणंउ। उभउअस्सिआभवे॥ ६॥ धम्मो अहम्मो

आकाशास्तिकाय | समयआवलिकादिककाल पुद्गलास्तिकायजीवास्तिका य | एहषट्द्रव्यनइलोगए हवोकहीइ | जिनतीर्थंकरतेकेहवे अनंतज्ञानदर्शनज्ञान दर्शनितेधरणहार

आगासंकालोपुग्गलजंतवो। एसलोगुत्तिपन्नत्तो। जिणेहिंवरदंसि २१०

धर्मास्तिकाय | अधर्मास्तिकाय | आकाशास्तिकाय | एत्रिणिद्रव्येइकेकबोल्यो तीर्थंकरगणधरइं | अनंतापोतानाअनंतर भेदथकीएहद्रव्यजाणि

हिं।७। धम्मोअहम्मोआगासंदव्वइक्केक्कमाहिअं। अणंताणिअ

वर्तेकेहवा | कालसमयादिपुद्गलअनेजी वएकेदियादिक | धर्मास्तिकायनोलक्षणगतिचलन स्वभावजेहजीवपुद्गलनेकायस्तिका यनुंलक्षण | अधर्मास्तिका यनोलक्षणस्था नथितिरूपथि

८

दव्वाणि। कालोपुग्गलजंतवो॥८॥ गइलक्खणोउधम्मो। अहम्मो

रहेतेअधर्मास्तिका यनोलक्षण | भाजनस्थानकसर्वजीवद्र व्यतेकद्रव्य | नभआकाशतेहनोलक्षणअवका शरूपजीवादिकनेअवकासदि | कालनोल क्षणवर्तने रूपपदार्थ

९

ठाणलक्खणो। भायणंसव्वदव्वाणं। नहंउगाहलक्खणं॥ ९॥ वत्तणा

ते लोनवानेऋनादिकरूपेजा मतिज्ञानादिकरूपउपयोगएजीव ते।कि मज्ञाणीइं जेविषबोध स्पर्षेक
णीइति वर्त्तनाकहो नोलरूणजाणवो ज्ञानेकरीतथा सामान्याववो रीदुःषे
धदर्शनइंकरीने करोजी

उत्रासूटाप लरकणो कालो। जीवो उवउगलरकणो। नाणेणं दंसणेणं च। सुहेण य

वजाणीइं १० जाणिवोतेज्ञानऋनेंदेषिवो क्रियादिककरिवोतेचारित्र क्षायोपशमकर्मयो
तेदर्शनकहीयइ जेह तपाइतेतप गेंसमर्थाइपणोज्ञाना
दिकनेंविषेएकांतप

२२१

दुहेण य। १०। नाणं च दंसणं चेव। चरित्तं च तवो तहा। वीरिअं उवउगो

णोउप एमर्विइकहिउतेजीवनो शब्द ध्वनिरूपतथाऋंधकारोतथा चंद्रादिकनीप्रभाहस्तादिक
योग लरूणजाणवो ११ उद्योतरत्नादिकनो नीछाया सूर्यादिकनोआ
तप

अ एयं जीवस्स लरकणं ११। सद्दंधयार उद्योउ पहा छाया तवो इवा। २११

नीलादिकवर्णसुगंधादिकगंध एहपुद्गलास्तिकायस्कंधादिकते घणापरमाणुऋानेविषेंएकनीबु
तीषादिकरस स्पर्शशीतलादिकजा हनोलरूणजाणवो १२ द्धिजेएकऋनइंएहवोजुउ जिमघट
णवो घकोपटएहषृथक् एकबत्रिण

।वन्नगंधरसफासा। पुग्गलाणं तु लरकणं। १२। एगत्तं च पुहत्तं च संखा संठा

नी संष्यावस्तुनोसंस्था ऋांगुलीप्रमुषनोसंयोगमेलावो जीवाजितका
नऋाकारेएववयदपद बुद्धिनेंविभेदेविस्वाइतेविभाग एहेवसर्वपर्यायनोलरूण १३ यजीवतयऋ
हस्तोमइं तेजाणवो धर्मास्तिकाया

णमेव य। संजोगा य विभागा य। पज्जवाणं तु लरकणं। १३। जीवाजी

दिकऋजीवतत्व सम्यक्त्वादिकशुभतेपुण्यतत्वमि उमिइंकरीऋाश्रवनोरोधतेसंवर तेंएहसावासर्वथा
जीवनेकर्मस्यबांध ध्याद्यादिकऋशुभतेपापतत्व तत्व तपइंकरीकर्मषपाविवातेनि शुद्धनहीतवपदार्थ
वोतेबंधतत्व हिंसादिकपापनोकरणहारऋाश्रव र्जराकर्मथामूकावातेमोक्षतत्व नवतत्वजाणवा

वबंधो अ। पुन्नं पावासवो तहा। संवरो। निज्जरा मुक्खो। संति एत तहिया

२२२

१४ तथा साचा जे भाव सद्दजीवादिक नव तत्वादि जे एह बोजे उपदेश करी ते सम्यक्त्व साचा सद्दह
उच कल्या ते द्रव्य ते भाव इसाचा गुरु ने उपदेशई करी दयाम्यक्त्व णा नो निरूपनी वादिक
ई ६ ताने भावो करी पडि वज ताने तवना कहितो थकि रइ

उत्रा सू॰ २८ प नव॥ १४॥ तहियाणं तु भावाणं सब्भावे उवएसणं। भावेण सद्दहंतस्स

हिवई सम्यक्त्व कहनारे दक स्वभावे तत्वनो अभिलाष ते निसर्ग श्री सर्वज्ञने वच सिद्धांतने
ई १० ई १५ रुचि करीये गुरुने कि दिवे जे रुचि ते रुचिते आज्ञा सांभलिवे
ऊपजे ते उपदेश रुचि कहीयइ रुचि कहीयइ रुचि ते अर्थ

सम्मत्तं तं विआहिअं॥ १५॥ निसग्गुवएसरुई आणारुई सुत्तबीअ

जाणे ते णे रुचि ते द्वीजा रुचि विस्तारे जे रुचि ते धर्मकरणीइ संक्षेपरुचि ते संक्षेप रुचि ८ सूत्र साचा
जाने जे रुचि ते अभिगम रुचि विस्तार रुचि ७ रुचि ते क्रिया श्रुतधर्मादिके जे रुचि ते बताएदस
कहीयइ ६ कहीयइ रुचि कहीइ ८ धर्मरुचि १६ ई पदार्थ एह

रुइमेव अभिगमवित्थाररुई किरिआसंखेवधम्मरुई॥ १६॥ भूअत्थे २२२

वा जाणणा ज
णइ जीव अजीव पुन्य पाप जाति स्मरण तथा जली आश्रव संवर तथा नि
बुद्धि परना उपदेश वि र्जरा बंध मोक्ष उ ने
ना पोताना मतिइं तप रा

णाहिगया॥ जीवाजीवा य पुन्नपावं च। सहसंमुइआसवसंवरो अ रोएइ

थी मनसा जली इं रोचे जे कोई मनुष्य जगन्नाथे दीठा द्रव्य क्षेत्र काल भावे चिहुं प्रकारे तथा तथ्य
रुचि आणे ते निसर्ग रु जीव अजीवादि पदार्थ ते हने नाम थापना द्रव्य भाव जे देस सद्दहइं पर जग
चि कहीयइं १७ विषे ना उपदेश विना न्नाथे

उ निसग्गो॥ १७॥ जो जिणदिट्ठे भावे चउव्विहे सद्दहाइ सयमेव। एमेअ

दीठो ते इमज साचो ते निसर्ग रुचि एहवे नामे रुचि नो धणी एह विइ कल्या जे जीव अजी उपदिस्या
अन्यथा नहीं रुचि नो धरणहार जाणिवो १८ वादि पदार्थ ते जाणे देखे देखाड्यां ज
कोइ छदम

नन्नह त्ति अ स निसग्गरुइ त्ति नायव्वो॥ १८॥ एए चेव उ भावे उवइट्ठे जो

परसाधुप्रमुषसद्दहइ बदमस्थइंअथवाजिनवीत तेपेइउपदेशरुचिएहवेनामेसाचि रागद्वेष
साचाकरीमानइं रागे जाणवी १९ द्वेषअने

उत्राध्याय परेणसद्दहइ छउमत्थेणजिणेणंव उवएसरुइत्तिनायव्वो ।२०। रागो

तिमोहमोहनीयक अज्ञानमिथ्या जेहनेदेशथीतथासर्वथी तीर्थंकरआचार्यादिकनीआ सकादि
षायादिक ज्ञान जाण्योहुइं ज्ञाइरोचवतोअभिलाषआणी तीतेह
सद्दहतोजीवादिपदार्थभावोजाणतो निश्चइ

२२३ दोसमोहा । अन्नाणंजस्सअवगयंहोइ आणाएरोअंतो सोषलुआ

आज्ञारुचिएहवेनामे जेकोईसूत्रसिद्धांतनेअध्यय सूत्रसिद्धांतनउंअवगाहेपामइं आचारांग
रुचिजाणवी २० नकरतो भणतोज सम्यक्त्वसाचातत्व दिअंगइ
करी

णारुइनामं २१ जोसुत्तमहिज्जंतो सुएणउगाहईउसम्मत्तं । अंगेण ११२

तथाअंगबाहिर तेसूत्ररुचिएहवइनामइंजाणवी एकपदइंजीवादिपदार्थअने जेपसरइविस्त
उत्तराध्ययनादि २१ कघणाजीवादिपदनेविषे रेसम्यक्त्वरुचि
क इस्यसम्यक्त्व

बाहिरेणंव सोसुत्तरुइत्तिनायव्वो २२ एगेणअणेगाइं पयाइंजोप

थइंरुचि पाणीनेविषेजिमतेलनोबिंदूओपो तेबीजरुचिएहवेनामेसचिजाणवी
करीय सोतोथकोघणोविस्तरइ जिमएकबीजथीअनेकबीजऊपजे तेहनेइअ
इ तिमएकपदेंकरीघणापदजाणे २२ भिगमरुचि

सरइउसंमत्तं उदएवतिल्लबिंदू सोबीअरुइत्तिनायव्वो ।२३। सोहोइ

अर्थतह्यानअसिद्धांतअर्थथकोदीठो अथवाउत्तराध्य
नामइं जाणवी अथवाअर्थइंकरीनिंश्चयसिद्धांतलहो आचारंगादिइग्यारेअंग यनादिकप्रकी
पाम्यो र्णकदृष्टिवादनें

अभिगमरुइ सुअनाणंजेणअत्थउदिट्ठं एक्कारसअंगाइं पइन्नगंदिट्ठि

द्रव्यतणाउव २३ धर्मास्तिकायादिक प्रसमना अनेव जी प्रत्यक्ष अनुमान उपमान आगम सर्वसमस्त
वाई प्रमुख उपा सर्वभाव एकत्व पृथक्त्वादि पर्यायो सर्वप्रमाणे समस्त पर्याये जे इणे जाण्या हिंजा नैगमादि
गमे विषे पर्याय लाधा

उत्राध्याय वाउग्गा ।२३। दव्वाण सव्वभावा । सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा । सव्वाहिं न

यतीति धइ नयनइ भेदे तेह विस्तार रुचि एहवो नाम कहिइं रुचिवंत जाणवो २४ सर्व सद्दहे णा दर्शन मतिज्ञानादिक ज्ञान सर्वविरति रुपचारि तप १२ भेदे ते विषे विनय ते
भेद विषइं भेद विषइं त्र भेद विषे विषे साचा

२२४ यविहीहि य वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ।२४। दंसणनाणचरित्ते तवविणय

रुमति पंच ते उपाति त्रण भेद विषे विषे जे कोई क्रिया अनुष्ठान ने विषे भाव सहित रुचि करइ तेह निश्चे क्रियारुचि एहवे नामे रुचिनो धणी जाणवो २५

सच्चसमिइगुत्तीसु । जो किरियाभावरुई । सो खलु किरियारुई नाम ।२५ ११४

अंगीगही नथी कुदृष्टि बोध मत तेणे रुचि विरुद्ध उदइ जाणि अर्थ नथी ते अजाण कुइ प्रवच
नादिक रुप जेणे ग्रही परिहरि ऊपशम संवरि वइ नाम रुचि विवेक वउ।। वन श्री जिन मतिनइ विषे
निवेकरा यदि त्रिण तत्व रुचि प्रमइ ठ संदेह धणी
रु विकटी पइ

अणभिग्गहिअकुदिट्ठी । संखेवरुइ त्ति होइ नायव्वो । अविसारउ पवयणे

अनइ अनि ग्रही न अज्ञाण बोध कुपिला जिको ई धर्मास्तिकायादिक षट्द्रव्य सोत धर्म सिद्धांत रुप तथा
दि मत नइ विषइ जेणे तलइ संक्षेपथी गति स्थिति प्रमुख जे धर्म निश्चइ वली श्री सामाय
वजानीउ

२६

अणभिग्गहिउ असेसेसु ।।२६। जो अत्थिकायधम्मं । सुअधम्मं खलु चरि

कचारित्रा तथा ए जीवादि पदा
दिक चारि सद्दहइं ना जिनश्री वीतरागनउ ते धर्मरुचि एहवइ नामइ रुचिवंत र्थ ते रुनइ विषइ संस्त
त्र धर्म व साहित भाष्यउ उस्तुं पिउ जाणिवउ वरूपनो की र्तनउ अ।

त्तधम्मं च सद्दहइ जिणाभिहिअं । सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो । २७ परमत्थसं

उत्रा०अ०२८

घवासस्वियनो करिवो परमार्थनो जाणवो ते ओळखवो। सुद्दष्टिपरमार्थने आचार्यादिक सा धु ते हनो सेविवो विनय वैयावृत्त्यादिक करिवो। व्यापन्नदर्शनी कुदंसणी तेहनो वर्जवो। ए सम्यक्त्वनो लक्षण पाम्यो सम्यक्त्व वमनो उदय थी अनै वमउ। ए सम्यक्त्वनी सद्दहणा

थवो वा सुदिठपरमठसेवणा वा वि। वावन्नकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तस

कहितां सम्यक्त्वनो लिंग जाणवो २८। नथी चारित्र विरति रूप ते सम्यक्त्व विहीन। दीक्षादिक एतलै सो ना व सम्यक्त्व विना चारित्र न होज। दर्शन सम्यक्त्व नै विषे भजना जाणवी एतलै सम्यक्त्व छतै चारित्र होइ सम्यक्त्व पखै चारित्र नो होज। सम्यक्त्व ते भाव सरद्दहणा अनै विरति रूप चारित्र

द्दहणा ॥२८॥ नत्थि चरित्तं सम्मत्तविहूणं दंसणे उ भइअव्वं। सम्मत्तचरित्ता

युगपत साथे क पजै पूर्व सम्यक्त्व जाणवो एतलै पहिलो सम्यक्त्व हुइ अनै पछि चारित्र जाणवो २९। अदर्शनी सम्यक्त्व रहित नै साचो ज्ञान न हुइ एतलै सम्यक्त्व विना ज्ञान न होज। अनै ज्ञान विना न हुइ चारित्र पंचमहाव्रतादिक रूप अनै गुण कहितां पिण्डविशुद्धि आदिक र

इं जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥२९॥ नादंसणिस्स नाणं। नाणेण विणा न होइ च

२२५

गसत्तरीना अगुणकहितां चारित्र गुणरहित नइ मो क्ष कर्मनो क्षय कर्म थी मूकाइवो ते न थी। अनइ अमुक्त ते कर्म इ अणमूंकाणा नइ निर्वाण मोक्ष कर्म रहित नुं थान कथी। दर्शन ना आचार कहइ छइ

१० मे ८७

६५

रणगुणा। अगुणिस्स नत्थि मुक्खो। नत्थि अमुक्खस्स निव्वाणं ॥३०॥ नि

इहलोक परलोकना भय थी सर्वथी शंका न करवी जिनवचन नइ विषइ अन्य दर्शननी वांछा न करवी ॥ धर्मकरणी ना फलनो संदेह न करवो ॥ कुत्सित अन्य दर्शनी देखी सम्यक्त्व दृष्टि इनइ विषइ मूकाइ वतउ न थी। गुणवंत ना गुण नइ प्रसंसि। धर्मानुष्ठान नइ विषइ सीदाता नै थिरता हेतनाक रिवी

स्संकिअ निक्कंखिय। निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी आ। उववूह थिरीकरणे

साहमी नइ सातपाणी इं वछ्छल करिवी। जिनशासन नी उन्नति महिमा वधइ तम करइ प्रभावना दर्शन ना आठ आचार कह्या। राग द्वेषरहित समय परिणाम इस सावद्य योगथी विरमवो ते सामायिक चारित्र पहिलुं। पूर्वे कहितां अतीचार लागइ अथवा अविना तीर्थंकर थयाने सामायिक चारित्र नो भंग थी नइ पंचमहाव्रत नी उपस्थापना करवी इ ते बीजउ चारित्र कहीइ

वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥३१॥ सामाइअत्थ पढमं छेओवट्ठावणं भवे बीअं। परि

२१८

परिहारकहितातपरूपतेणेजकरी सूक्ष्मतेलोभकीटारूपजेसंपरायसंजल कषायतेपचवासतेणेरहितत्तद छ
निर्मलथाइवो १८ मीजोगनेजाणे नलोभरूपकषायजिहांतेउपशममाणि यथाख्यातचारित्रपांचमोक ग
तेचारित्रकहीयइ इलोभनासणनाबोगविवानेसमसइ हीयइ स्थ

उत्रसूत्र।३१। हारविसुद्धीअं सुहुमंतहसंपरायंच ३२ अकसायमहरकायं छ

तेइग्यारमेबारमेगुणठाणेउपशांतमो तीर्थंकरगणधर तपबि
संयोगअयोगने हक्षीणमोहिवर्तताणइहोइअनइजि एपांचप्रकारनोचारित्र ऊइचारित्र रेकहियउ २३ ऊंप्रका
विषवर्तताणइऊइ नवीतरागनेतेरमेचौदमेगुणठाणे=

उमछस्सजिणस्सवा एयंचारित्तकरंचारित्तंहोइआहियं ३३ तवो

रेकहिउ तेकेहवो एकवासउपवासादिकबाजो अभ्यंतरप्रायश्चित्तादिक बाह्यतपतेछप्रकारेक हिउ एमअभ्यंतर तपछुणछप्र

अउविहोवुत्तो बाहिरअभिंतरोतहा बाहिरोछव्विहोवुत्तो एवमभिंतरो

२१८

कारेना णावे मतिज्ञानादिकज्ञानइकरीनइजा णइजीवाजीवादिकभाव दर्शनइवासावीसद्दहणा इंकरीनइसावाकरीसद्दहे विरतिपचखाणादिकचा रित्रइकेयग्रहइअंगीका रकररकरइ

३४

तवो।३४।णाणेणजाणईभावेदंसणेणयसद्दहेचरित्तेणनिगिण्हा

तपइंकरीअतिशयइशुद्धथाइक मेनीशुद्धिकरइ षपावीनइजाइज्ञानावरणीयादि पूर्विलांटकर्मआवकनसउसेद ७सेदसंपइ करीनइ १२सेदतपइ करीयथाद्वष्टि कीज्ञानदर्शनइ करीन

३५

इ तवेणपरिसुज्झई ३५।खवित्तापुव्वकम्माइंसंजमेणतवेणयं सव्व

सर्वलोकदुःखकर्मनाक्षयण अतिशयउगमनकरइजाइमारुथल एहमोक्षमार्गगतिनामाअध्य क्रययाथजिहांलगिमोक्ष महंतमोटाऋषीश्वरएहवउसुधर्मास्वामि यनतउअर्थकह्यउलेशमा तानइजंबूप्रतिकहइ नाहजननइजनइ जेबुक्यकही

सम्यकतुपराक्रमा ध्ययनागुणतीसमउकहइ

दुरकप्पहीणठा पक्कमंतिमहेसिणोत्तिबेमि।३६ मोरकमग्गिअज्झ

पूर्विजइअध्ययनेयंजज्ञानादिकमोक्षमार्गपणइकह्यानेहनेहूनउंमूलतउसंवेगादिकअकर्मनउंकर
णारतेनोवीतरागपणोकुइतेवीशा गयणंसम्यकत्वनेविषयपराक्रमकहइछइ

सार्थलिउ ऐआयुष्मन्शिष्यसुधर्मस्वामिनोवचनजंबूप्रतिइंतेलेजग एहप्रवच
मे वंतइएहआगलिकहीसे तेकहिवसुफनइ ननेविषे
२८ निश्चइ

उत्रा०स्०टी० अथसम्मत्तं २९ सुयंमेआउसंतेणंभगवयाएवमक्खायं इहखलु-

सम्यक्त्वनेविषेतपपराक्रमतेप्रवर्त्तइ स्यक्तपराक्रम तपस्वी ऐश्वर्यादिकवक्त श्रीमहावीरचोवीस काश्यपगो
यप्रवर्त्तइगुणवाणीकरीकर्मवयरी नामाध्ययन इ राईवतइ मो तीर्थंकरतेणइ त्रनेकश्य
नो जयत वर्त्तवीयइंनितांतेस नेनेलेज

२९ समत्तपरक्कमे नामज्झयणे समणेणंभगवयामहावीरेणं कासवे गबु तइ

प्रवदिनापोते जेसम्यक्त्वपराक्रमाध्ययनसम्यक् विशेषपणइप्रतीति तेअध्ययनादिक तथागुणवे अ
कह्या सूत्रअर्थतदुभयसाचाकरीसद्दहीनइ आणीपदइमनए नीरुचिवाढीआ करीमानी ध्य
सामान्यपणे देवोनिश्चेकरी स्पर्शआणीने ने य
ना

णंपवेइए जंसम्मंसद्दहित्तापत्तिइत्तारोयइत्ता पालइत्तातीर ११९

देकने गुरुनेविनयपूर्वकर्म गुरुनोवचनने साचीजेइकेगुरुनीआज्ञा श्रीगुरुनीआ अनुपालीमा घणाइ
तरेक इत्तणयउणहवस्क केफ्रइशुद्धिकरी तेणकरीजेमार्गक्लेशराग झाइकरी वर्त्तमानीनइ कजीव
ताता लिवइवरी साधीनइ तुसदासदवुतेअनुपालीने
तानइ

इत्ता कित्तइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाएअणुपालइत्ता बह

मनुष्य सिद्धगुणइक घातीयांकर्मनिवा सर्वकर्मथ कर्मरूपदावानलनेइ शरीरनामननाजेसर्व
रीसिद्धथाइ रीतत्वनाजाण कीमूकाइ पशमाविवेशीतलथाइ दुःखनेहनउअंतकर

वेजीवासिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं

तेसम्यक्त्वपराक्र णंअर्थकारहणीजाणिवउपहवो तेहजिमछेते संवेगमोक्ष निर्वेगसंसा
मेनोध्ययननउ आगलिकहस्येतेहवुश्रीमहावीरे सकहीयइ नाअभिलाष रथकीविराग
कहीइ

करेंति तस्सणंअयमठेएवमाहिज्जइ तंजहा संवेगे १ निव्वेए २

धर्मनीश्रद्धा वाछा ३ गुरुनी साहम्मीनी सश्रूषा करीयइ सेवना ४ आलोअण गुरुआगलि आपनो आलोववो ५ आप

उत्रा॰सू॰टा॰व धम्मसद्धा।३।गुरुसाहम्मियसुस्सूसणया।४।आलोअणया।५।निंद

पइ आपणा दोष नोनिंदवो ६ लोकआगलि आपणा दोषनो प्रकाशवो ७ समतापरिणाम रूप सामायक ८ चोवीसतीर्थंकरनो नामस्तवन लोगस्स कहिवो ९ गुरुनेवांद णादेइवा १० पापथकी पाछो

२१८

णया।६।गरहणया।७।सामाईए।८।चउवीसत्थए।९।वंदणे।१०।पडि

निवर्त्तवो ११ अतीचारनी शुद्धि निमित्त काया नो त्यजवो ते काउसग्ग १२ मूलगुण पचखाण उत्तरगुण पच्चखाण ते पच्चखाण १३ नमोत्थुणं आदिक स्तव स्तुति ते कआवइ उत्कृष्टी १०८ कहीइ ते रूप मंगलीक १४ वाघादि

क्कमणे।११।काउस्सग्गे।१२।पच्चक्खाणे।१३।थवथुइमंगले।१४।कालप २१८

काल आदिक ४ काल तेहनी पडिलेहणा रूप णा अथवा ग्रहण रूप १५ पापनउं आयच्छित्त दीधउं तपनेहनइ करिवउं तइ १६ अपराधनउं खमाविवउं १७ सज्झायपंचभेद वायणा दिक १८

डिलेहणया।१५।पायच्छित्तकरणे।१६।खमावणया।१७।सज्झाए।१८

गुरुसमीपि वांचना सूत्रनी लेवी १९ सूत्रनो केरी पूछिवउं २० गुरुनइं संदेहनो पूछिवउं सूत्रनो गुणिवउं अनुप्रेक्षा चिंतवउ

वायणया।१९।पडिपुच्छणया।२०।परियट्टणया।२१।अणुप्पेहा

धर्मनी कथा कहक रिवउं २२ श्रुतसिद्धांतनी आराधना २३ एकाग्र अपणो मनतं थापिवउं तबा २४

२२।धम्मकहा।२३।सुयस्स आराहणया।२४।एगग्गमणसंनिवे

उत्रा०सू०टा०प

२१७

संयमपञ्चाश्रव तपश्रणम वोदाणकर्मनी सुखईंश्रत्रणिध्यापरी अप्रतिबन्ध
जाणवो वनीविरति णादिक निर्जरारूप हरिरहितवतेसुखसात नाकर्दाय

२५ २६ २७ २८ २९
समणया २५ संजमे २६ तवे २७ वोदाणे २८ सुहसाए २९ अप्पडि

इनीराग स्त्रीपसुपंडकरहितशयनआसननीसेवनासे पांचइंद्रियनाविषयथकीआत्मा
पणउ ३० विवउ ३१ नउनिवर्तावेवउ ३२

बुद्धया ३० विवित्तसयणासणसेवणया ३१ विणिअट्टणया ३२ सं

ाकगछनाएकमांडलिनाते उपजमुहायतीयालीनइबीजी सदोषआहारपाणीनउपच्चक्खाण कषा
संभोगसाकृतेहनउपच्चक्खाण उपधिनउपच्चक्खाण ३४ ३५
३३

भोगपच्चक्खाणे ३३ उवहिपच्चक्खाणे ३४ आहारपच्चक्खाणे ३५ क

यथनुनुंपच्चक्खाणतिमज मनवचनकायनायोगनउय शरीरनउपच्चक्खाणतेशरीर सस्का
३६ च्चक्खाण ३७ नइवोसिराविवउ ३८ क्तसं

सायपच्चक्खाणे ३६ जोगपच्चक्खाणे ३७ सरीरपच्चक्खाणे ३८ सहा २१८

सस्कायतसंघातीशिष्यात सानयांणीनउपच्चक्खाण सर्वथापणइवारंवारनइकरावइ जिनकल्पीथव
हवैनउपच्चक्खाण ३९ परमार्थपच्चक्खाणजेसीनउहक रकल्पीयतीनम
४० मवउ ४१

यपच्चक्खाणे ३९ भत्तपच्चक्खाणे ४० सब्भावपच्चक्खाणे ४१ पडिरूवया

सरिषउ वच्चक्खआहारा ज्ञानादिकसर्वगुणइंसहित वीतरागद्वेषनउनिवार क्रोध०नउ
रूपवउ दिकनउसहाय पणउ वउतेवीतरागता सजिवउ॥
तपछुउ

४२ ४३ ४४ ४५ ४६
४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४ वीयरागया ४५ खंती ४६

निर्लोभ मानपरिहर रुहइअंतरगत्मा पडिलेहणादिकक्रि
ता वउउनंमार्दव निःकपटपणउ त्मानेसाचसत्या यानइंविधिपइसत्य

४७ ४८ ४९ ५०
मुत्ती ४७ मद्दवे ४८ अज्जवे ४९ भावसच्चे ५० करणसच्चे ५

मनवचनकायनाटा अशुभपदार्थथीमन असुभपदार्थथीवच इमजकायनउपंगोप मननइ
गनइंविधइसत्य नउगोपविवउ नउगोपविवउ विवउ. सुभस्था
५१ ५२ ५३ ५४ ५५
१ जोगसच्चे ५२ मणगुत्तया ५३ वइगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५ म

नकनविषइघापीयइते वचनगुप्तसंघातनकनूइविषघापी कायानइगुप्तसंघातनकनइविषघा
मनसमाहारणनाकहीइ ५६ इतेवचनसमाहारणीकहीयइ। ५७ पियइतेकायसमाहारतणना ५८

उत्त॰सू॰ट॰ ७ णसमाहारणया। ५६। वइसमाहारणया ५७ कायसमाहारणया। ५८

ज्ञानइंसहितपणउं सम्यक्तइंसहितपणउ यथाख्यातचारित्रसहित क्रोनना विहय
पणु

२२० नाणसंपन्नया। ५९ दंसणसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया। ६१ सोइंदि

नोजीपवो ६२ नेत्रनां विषयनोजीपवो ६३ नासिकाना विषयनोजीपवो ६४ जिह्वाना

यनिग्गहे। ६२। चक्खिंदियनिग्गहे। ६३। घाणिंदियनिग्गहे ६४। जिब्भिंदि

विषयनोजीपवो ६५ फरिसनेंद्रियनाविषयनोजीपवो क्रोधनोजीपवो ६७ माननोजीपवो ६८ मायानोजीप
६६

यनिग्गहे। ६५ फासिंदियनिग्गहे। ६६ कोहविजए। ६७ माणविजए ६८ माया २२०

वोतपरवंचनातेमा ६९ लोभनाजी रागद्वेषअनेमिथ्यादर्शनमिथ्यावना चोदमेगुणठाणे
काक पवो ७० जीपवो ७१ रहिवातसलेसी
विजए। ६९। लोभविजए ७०। पिज्जदोसमिच्छादंसणविजए। ७१ सेलेसी। ७२

कर्मरहितपणे ७३ संवेगतेमोक्षनोअभिलाष अतेभगवननीवप्राणीस्य संवेगेकप्रधानउत्तमरा
ऊपराजे

अकम्मया। ७३। व। संवेगेणंभंते जीवे किं जणयइ। संवेगेणंअणुत्तरं

धर्मनीश्रद्धावऊपराजै अनुत्तरधर्मनीश्रद्धाइं संवेगनो मिलापशीघ्रऊता नरकगतिनाआवलोआवइ

धम्मसद्धं जणयइ। अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ। अणंताणु

पणतारउइअनुतानुबंधीक्रोधमानमायालोभषपावइ नवाकर्मनबांधइ तेकषायक्षयक्षयनिमित्तजेदर्शनशुद्धइहवी मिथ्यात्वनीविशो

बंधिकोहमाणमायालोभेखवेइ। नवंचकम्मंनबंधइ। तप्पच्चइअंचणंमि

धिसर्वप्रकारे करीनइ क्षायकसमकितनउ आराधक सम्यक्त्वनी विशोधि इस्यइ तेनिर्मल थकै एक
क्षयते थतिइं कुइ हुयके

उत्त॰ सू॰ ८॥ प छ्ववविसोहिं काऊणं दंसणाराहए भवइ। दंसणविसोहीए णं विसुद्धाए अ
कजीवभेक एहवी नीयरिइं तेणे सीझइं सिद्धि सम्यक्तनी अत्यंत विसुद्धताइ त्रीजे वलीभवनउ
जतवि कुयइ करीनइ ग्रहण अतिक्रमन
नीएनलइ उत्कृष्टा

२२१ त्थेगइए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ। सोहिएणं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहं

सम्यक्त्वनउ धणी त्रणि सामान्यप्रकारइं संसार जीवप्राणी सिवंत्रय संसार करीइ वांछी देवता अनइ
भवमाहि मोहजाइं धीकी विरागइं अलोलगा राजइं स्यउ एहवइ निर्वेद मनुष्यअनि
वर्ने इकरी

णं णाइक्कमइ ॥१॥ निव्वेएणं भंते जीवे किं जणयइ। निव्वेएणं दिव्वमाणुसति
निर्यंचसं जे कामभोगपांचइं निर्वेद जेणे अनर्थनाकरणहार सर्वजा विषयते हनइ विषे विरमइ
र्यंभवा छियनाते हनेविषे एणं काईजनहीलाए हवं उरेष्ट कता पावउउसरइ
वतुपामइ

रिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेयं हव्वमागच्छइ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे

सर्वविषयनइ विषविरक्तपणउं धरेता करणादि धनादिमूर्छा तेहविहूनउ परित्या तेआरंभ
म
आरंभ परिग्रह गडांफिवउकरइ

इ। सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिग्गहपरिच्चायं करेइ। आरंभपरि
अनइ परिग्रहनउ परित्यागक संसारनउ मार्ग जिस्यउ विरत्या सुद्ध निर्मल सम्यक्त्वरूप जे सिद्धिमार्ग मा
रतुच्छिकउ दिकते हनु छेदइ नाश करइ हमार्ग तेहनउ पडिवजणहार हुयइ

ग्गहपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ। सिद्धिमग्गपडिवन्ने य भवइ
धर्मनी श्रद्धा करिवानउ सावंत जीवप्राणी स्यउं उपराजे गुरु कहे वइअहो साता सुखे जे विषय सुषतेहन
एइ करी श्रद्धा भगवन् णी जिणधर्मनी श्रद्धा विषेराग हव धरता थिकउ।

॥३॥ धम्मसद्धाए णं भंते जीवे किं जणयइ। धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमा
नराग पआणणत लेविप गृहस्थनउ धर्म गृहस्थावासनें पंडअणगार हुइ शरीर अनें मानस मानसना दुक्खा
यथकीउसरइ बांधइ परीहरइ एणंकार अलंका ष्ठिकी जीवउ नेकेह
रत्तणीवइ

णे विरज्जइ। अगारधम्मं च णं चयइ। अणगारेणं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खा

बेहिवे का बेहिवे फा अनेअशुभवस्तुनो संयोग दुःखनेविछेद आव्याबंधस्कधजेमोहनाक गुरुश्री
पिबे मिबे अशुभवस्तुनोवियोगएहवं नाशकरइ गतेनीपजावइ ३ धर्मना

उत्रा॰सू॰टा॰ णं बेअणसेअणसंजोगादीणंवोछेदंकरेइ अबाबाहंचणंसुहंनिव्वत्तेइ ॥ गु

यअनेसाहमी तेहनीसुश्रूषाइ अहोभगवन् जीवप्राणी स्युंउपा गुरुकहेछेअहोशिष्य सुश्रूषाइ
यती सेवाइंकरीनइ राजइ गुरुसाहमीनी सेवाइकरीने

२२२ रुसाहम्मिअसुस्सुसणयाएणंभंतेजीवेकिंजणइ ॥ गुरुसाहम्मिसुस्सुसणयाए

विनयनीप्रतिपत्तिकहीयेकरिवानोअं उपजा विनयपडिवजीउछेजेणेएहवो गुरुनीआसातनानोस्वभा
गीकार वइ थिकोजीवप्राणी वनथीजेहनेअवर्णवादादि
कनेपरिहरइ एह वो

णंविणयपडिवत्तिंजणयइविणयपडिवन्नेअणंजीवे अणच्चासायणसीलेन

नारकी तिर्यंचनी योनितेहज तथामनुष्यनीयोनितेहरूपणीदुर्गतिमेवादि वर्णश्लाघाअनेगुणनोबोलिवो
नी जे दुर्गति कनाअवतारअनेदेवतारूपनीदुर्गतितेकल्प तेसंजलनअनेभक्तिसाधनोजोगवेब
षीपणो तेहनेधइअति शयस्य निवारइ हुमानअतर गप्रीतितेहनेकरी

रइअतिरिक्खजोणियमणुस्सदेवदुगईउनिरुंभइ वन्नसंजलणभत्तिबहुमाण २२२

नइजा संसारमांहेरहिताथका मनुष्यनीगति सिद्धिमोक्षनीरूपिणीगतिविशे प्रसस्थनव वि
णवो अनेदेवतानीगतिअतिशयस्य षेकरीशोधइ तेनिर्मलकरइमोक्ष नाप्रशंसा न
बांधइ कारणसम्यक्त्वादिकतेनिर्मलपणा कारीया य
थिकी

याएमणुस्सदेवसुगतीउनिबंधइ सिद्धिसोगइंचविसोहेइ ॥ पसत्थाइंचणंवि

वमूलजेहनो ज्ञानदिकसघलाइकार्य आपणपेरूडेमार्गचालेअंते ४ गुरुआ
एहवा साधइ परभविमोक्षपामइ अनेराघणानव्यजीवनइविन गलिआ
यमार्गदिखाडीनेआदरावेविन पणाआ
यकरावइ

णयमूलाइंसव्वकज्जाइंसाहेइ ॥ अन्नेयबहवेजीवेविणयत्ताभवइ ॥ आलो

आनादोषनाप्रकाशवंतेआलोयणाइ गुरुकहेछेअहोशिष्य कीयाछेतपनोविचिवा अने
करीने अहोभगवन् जीवस्युंउप आलोयणाइआप तेरूपशल्य विपरी
राजइ णापाप मायारूपशा तमति
ल्य

अणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ ॥ आलोअणयाएणंमायानिआण मिछा

मिथ्यात्वरूपतेहज मोक्षनामार्गनइंविषेअंत वलीकेहवाअणंतासंसारनी उद्धरणकरइउद्धरी
राल्यतेशल्यकहि रायनाकरणहार वृद्धिनाकरणहार तेहनो नें परहाकाढीयइ
वा

उत्ता०सू०२।१। दंसणसल्लाणंमोक्खमग्गविग्घाणंअणंतसंसारवद्धणाणंउद्धरणंकरेइ उज्जु

वलीतेहआलोयणनोलेण ऋजुभावसरलपणो अपिनिश्चय जीवते मायारहि स्त्रीनोवे नधान
हारतेसरलपणोउप पडिवजितवैजेणइ इ माणी त द पुंसक
राज एहवो नोवेद

२२२ सावंचणंजणयइ।उज्जुभावपडिवन्नेवियणंजीवेअमाईइत्थिवेअनपुंस

नबांधइअंगीकार एहवेदनोजउहर्वइबंधपाछित आपणपेआपणादोषनोनंदिवोते तेपापनी
नकरइ ऊइतेउनिर्जरावइ ५ निंदताइअतेभगवनजीवस्यंफऊप निंदाइक
राजे रीनइ

गवेअणबंधतिपुव्वबद्धंचणंनिज्जरेइ।५। निंदणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ।निंद २२१

हासंमत्तुंकंकाधीएहवोपश्चात्तापप्रतिऊपरा तेपश्चात्तापेंकरी जीववैराग्यपऊतो अपूर्वकरणे
जइ वैराग्यपामतो गुणनीश्रेणित

णयाएणं।पच्छाणुतावंजणयइ।पच्छाणुतावेणंविरज्जमाणेकरणगुणसे

पडिवजइआदरेअपूर्वनथा पडिवजीबेंजेलेकरणनीश्रेणि साधुचारि मोहनीयदर्शन जेकमति
आव्योतेहतणीअपूर्वकर एहवोबिको त्रीउ मोहनीयादिक हनेंअ
णकहीयेंअथवा तिशयइ
खपावइ

ढीपडिवज्जइ करणगुणसेढिंपडिवन्नेअअणगारेमोहणिज्जंकम्मंउग्घाए

पवेंमोक्ष अनेरालोकआगलिआपणादोषकहिवा तेगरहणा गुरुकहेछेंहेशिष्य गर्वरहितपणो
पामइ इकरीहेभगवन जीवप्राणीस्यंफऊपराजइ गरहणाइपापप्रका उपराजइ
६ ६ शवइकरी

तिइ।६।गरहणयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ।गरहणयाएणंअपुरक्कारंजणय

अनें जिवारेंगर्वरहित थयो एटलें व तिवारइं | कर्मबंधना हेतुकारण अप्रशस्त पाडूआ | मन वचन कायना योग तेह थकी निवर्त्तेइं वेग लो थाइ | अलगो मन वच नकायना योग

इ। अपुरक्कारगए णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो नियत्तेइ। पसत्थेहिं अप

तेहनें विषे प्रवर्त्तेइं | प्रशस्त भला मन वचन कायाना योग पडिवज्यो छै जेणे एहवो | साधवा रित्रीउ | ज्ञानावरणीयादिक कर्मना पर्याय जे अनंतज्ञान दर्शनना भिनिवारण सार तेहनें खपावइं ७ | समताप रिणाम रूपसा

वत्तइ। पसत्थजोगपडिवन्ने य णं अणगारे अणंतघाई पज्जवे खवेइ। ७। सामाइएणं भं

मायकइं करी भगवन् जीव स्यं ऊपराजे | समता परिणाम रूप सामायकइं करी | कर्मबंधनादि कारण जे पाप मन वचन कायाना योग तेहनी विरति ऊपरि वो ८ | चोवीस तीर्थंकरनो स्तवन लोगस्स तेणइं

ते जीवे किं जणयइ। सामाइएणं सावज्जजोगविरइं जणयइ। ८। चउवीसत्थएणं भं

भगवन् जीव स्यं ऊपराजे | चोवीस तीर्थंकरनो स्तवन लोगस्सइं | दर्शन सम्यक्त्वनी विसोधि निर्मलपणो ऊपराजइं ९ | श्रीगुरुनें वांदणें करी

ते जीवे किं जणयइ। चउवीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ। ९। वंदणएणं भंते

अहो भगवन् जीव स्यं ऊपराजइं | गुरुनें वांदणें करी | नीच गोत्र कुलनें विषे अवतरिवो जेणे तेनीचें गोत्र कर्म खपावें निवारइं | उंच गोत्र कुलनें विषे अवतरिवो जेणे एहवो उंचैगोत्र कर्म बांधइं

जीवे किं जणयइ। वंदणएणं नीयागोयं कम्मं खवेइ। उच्चागोयं कम्मं निबंधइ

तेहसोभागीपणो समस्त लोकनें वाल्हा सपणो पामइं तेकेहवो अप्रतिहत किणहीनें निवार्यो | न जाइं अनें वली आज्ञा तेहफल एतावता अखंड आज्ञा सारनी पजावें | अंगीकार करें अनें समस्त लोकनें अनुकूल पणो ते दाक्षिण्य भाव करीइं ते ऊपराजइं १०

सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ दाहिणभावं च णं जणयइ। १०

पापथीउसरिवो तेपडिकमणो त जीवस्फऊप पडिकमणेकरीनेव्रतपच्चरकाण टाक्याछेजेणे
णे करीने अहो भगवन् राजइ नाछेद्रिद्र अतीचारनइ ढांकइ

उत्रा०सू०टा०प पडिक्कमणेणं भंते जीवे किं जणयइ। पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पेहेइ पेहियव

२२५

व्रतनांछिद्र तेवलीजीव निरुध्धरुंध्याछे हिंसादिक आश्रव जे
णइ सबलकाबरो
नथीचारित्र जेहनें
स्तु मति पंचसमिति त्रणगुप्तिरूप आठ प्रवचन माता
तेनेविषे सावधा तेहनेविषे सावधा
न थका

यछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते

संयमयोगथी जुदो न थाय संयमनेविषे समाधिवंत एणे
अलगोनथी इंद्रीयनो विवेके सावधान थइने विचरे
अतीचारनी शुद्धि पछी कायानो तजिवो काउसग्ग
तेकाउसग्ग तेणे काउसग्गे भगवन् जी
करीने
१९ वत्सफल पामे

अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ॥११ काउसग्गेणं भंते जीवे किं जणयइ काउस्सग्गे २२

अतीतकालनांवर्तमान कालनांकीधाछे जे प्रायश्चित्त अतीचारनें विशेषेविशुद्ध करेछेकहे विस्फछेवप्रायश्चित्तजेह नाएहवाथिका जीवशा णी
निवृत्तथयुंछेहृदय जेहनुं

णं तीअपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ। विसुद्धपायच्छित्ते य जीवे निव्वुयहियए

ऊतारयुछेभारजेणेएहवो भारवाहकनी परिइ प्रसस्तधर्मध्यानने करतोथका सुखेसुखेपरम्परायं विचरइ मूलगुणपच्चखाण उत्तरगुणपच्चखाण
१२

ओहरियभरोव्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ॥१२ पच्चक्खा

विधपच्चरकाणादिकतेपच्चरकाणें करीने भगवन् जीवस्युं उपराजइ पच्चरकाणेंकरी जीवप्राणातिपातादिक आश्रव कर्मनादि ढांकइ बलीपच्चरकाणें करी

णेणं भंते जीवे किं जणयइ। पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुंभइ पच्चक्खाण

इछावांछाआहारादिकनीते अनेइआहारादिकनीवांछानउनि सर्वद्रव्यनइविषइवि नीतरागइ
हनउनिरोधनिवारत्तेकर रोधगतेपामिउथकइजेणेएहवुजी छइ तृष्णाजेहनी
६ ७

उत्रा॰सू॰ट॰१७ णं इछानिरोहं जणयइ इछानिरोहं गए णं जीवे सव्वदव्वेसु विणीअतन्हे सी

बाह्यअभ्यंतरशीतलताछे नमोत्थुणंइत्यादिकस्तवनस्तुतिजेउत्तमार्थदेवतादिकनाहे थवथुइमंग
थिकविचरइअभ्यासादिकन तेरूपमंगलीकतेणेकरीहेभगवंतनीस्थापनादिकअंगलिस्त लनमोत्थुणं
इविषइ वस्तुतिमंगलीककरीवइअहोभगवन्जीवस्युउपराजइ दिकसगेवं
१३

२२५ अलत्ते विहरइ ॥१३॥ थवथुइमंगलेणं भंते जीवे किं जणयइ॥ थवथुइमं

तनीथाप करइतेणेकरीमतिज्ञानादिकज्ञानदर्शनसम्यक्त्वविर
नादिक तिरूपचारित्रतेरूपजेबोधिलाभपरिणतिअरिहंतनाधर्म ज्ञानदर्श चारित्र जिनधर्मनी
आगलि र्मनीप्राप्तितेउपराजइ

गलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ नाणदंसणचरित्तबोहिला २२५

प्राप्तिइंसहित थक कर्मनीअंतक्रियातेमोक्ष कल्पदेवलोकसोधर्मादिकविमानग्रैवेयकअनुत्तरवि
उ नोपामिवउ मानपतेहनइविषेउपजिवउंअनेइज्ञानादिकनुआराधि
वउ

नसंपन्ने अ णं जीवे अंतकिरिअं कप्पविमाणोववत्तिअं आराहणं आराहेति

कालग्रहणअसिक्कवाध्यायकालादिकतेहनीपडिलेहणासिद्धांतनीवि गुरुकहेशिष्यवाध्यायआदिक
धिइंसज्झायपट्टवणाउद्दिशुंनइंप्रतिजागरिवुतेकालपडिलेहणा कालपडिलेहणाइंदिकइंकरी
इंभगवन्जीवसिउंउपराजिइ
१४

॥१४॥ कालपडिलेहणयाए णं भंते जीवे किं जणयइ॥ कालपडिलेहणयाए

जेणइज्ञानननइआवरणकरतेहज्ञा जीवनेपापनीसुद्धिकरेतेप्रायश्चित्तकहीइंआलोयणादि
नावरणीयकर्मखपावइज्ञानमुलगु कतेप्रायश्चित्तनइंकरिवइहेभगवन्जीवसिउंउपराज
करइ ६
१५

णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥१५॥ पायच्छित्तकरणेणं भंते जीवे किं जणयइ

गुरु कन्हइं आलोइ शिष्य प्रायश्चित्त करिवइ　जीव पापनंइ अशुभ कर्म तेहनी विशुद्धि विशुद्धि ते उपराजइ　तेह अतीचार रहित थाइ

उत्रा.सू.२९.प　पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ । निरइआरे आवि भवइ

रूडी परिइं प्रायश्चित्त प्रतिइं　पडिवजतउ अंगीकार करतउ थिकउ　मार्ग के हितां सम्यक　अनइं मार्गनो फल ते ज्ञान ते विशोधइ अजूयालइ घणउ निर्मलउ करइ　चारित्र रूप आचार आनइं

२२९

सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ । आया

आचारनो फल जे मोक्ष ते हत्रा राधइ सेवइ　अपराध माहरो ते खमो आप एहवे इम नइ हीक सहीये व मादिक तेह मावणाइ भगवन जीव स्युं उपराजइ　१

१६

रं च आयारफलं च आराहेइ ॥१६॥ खमावणयाए णं भंते जीवे किं जणयइ　२२९

तेह खमावणाइं करी नइं　आगिला नइं पल्हादन भाव कहितां चित्त नी प्रीति संतोष उत्पत्ति उपजावइ　पल्हादन भाव विइगत सहित थिकउ सर्व

खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ । पल्हायणभावमुवगए य सव्व

प्राण सर्व कहित बेंद्रिय जीव पृथिवी आदि देइ सत्व　तेहनइ विषइ मित्रभाव पर नइ हितनी चिंता उपजावइ　परजीवनइं विषइ मैत्रीभाव　उपगत प्राप्त थको　जीव प्राणी राग द्वेष　१

पाणभूयजीवसत्तेसु मित्तीभावं उप्पाएइ । मित्तीभावमुवगए आवि जीवे भा

नउ निवारउ करीन इ　इहलोकादिक भय रहित निर्भय थाइ　पांच प्रकारनी सिझाय ते भणाइं करी भगवन जी वस्यु उपराजइ　सझा इं करी

वविसोहिं काऊणं निब्भए भवइ ॥१७॥ सज्झाएणं भंते जीवे किं जणयइ । स

ज्ञाननाआवरणनाकरणहार कर्मतेषपावेज्ञानमी कलुकरइ वाचनाइनमिवेंनणाविवेकरीअहोभगवनजी वसिउउपराजइ

उत्रा॰सू॰२९ ज्झाएणं णाणावरणिज्जं कम्मं षवेइ ।१८। वायणयाए णं भंते जीवे किं जणए

२२८

वाचनाइंकरी कर्मनीनिर्जरा कर्मनउंफाटकिंवनउपराजइ छतसिद्धांतनीआसातनानइप्रवर्त्तेजेसिद्धांतनीवाचनानेंवसिद्धांतनीअवज्ञाथीआसातनाकइ करइ सिद्धांत

यइ वायणयाए णं निज्जरं जणयइ सुअस्स अणासायणाए वट्टइ सुअ

नीआसातनानइंप्रवर्त्तनउथिकुंजीव तीर्थंकरगणधरतेहनउधर्मसिद्धांतेरूपअथवातीर्थश्रुतज्ञानतेहनोधर्मसिद्धायअबलंबेसेवइ तीर्थधर्मनइंअवलंबतोआश्रयतउ

स्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ । तित्थधम्मं अवलंब २२

महामोटीकर्मनीनिर्जराजेहनइंतथा मोटउकर्मनउतथासंसारनोपर्यवसानछेहजेहनइंएहवोथाइ सूत्रादिकसण्यानावलीसंदेहपूछेतेपडिपुच्छणातेपडिपुछणाइंहेभगवनजीवसिउउपराजइ

माणे महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ।१९। पडिपुच्छणयाए णं भंते जीवे

पडिपुछणाइंकरीनइं सूत्रसिद्धांतअनइंतेहनाअर्थतेबहुइनउसंसयरूपमलटालिविशेषकरीसोधेशुद्धकरइ कांक्षासंदेहजेएहइमछकेनथीएटलारूपतेहनइ

किंजणयइ । पडिपुच्छणयाए णं । सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ । कंखामोह

विषेमूर्छाईहेतेमोहनीयकर्मअनिश्चय छेदइ सूत्रपाठनउगुणिवउंतेपरिवर्त्तनातेलेंकरी अहोभगवन जीवप्राणी सिउउपराजइ परिवर्तनाइं

णिज्जं कम्मं वुच्छिंदइ ।२०। परिअट्टणयाए णं भंते जीवे किं जणयइ परिअ

करीनइं
वंजनअक्षरनें कयजाविगुण
नीवीमरूआअक्षरनइ मंना
कर्मना क्षयोपशमथकी पदानुसा
रिणी अक्षरनी लब्धि उपजावइ
सूत्रनाअर्थनिचिंतीतवि
चरते अनुप्रेक्षा कहीइ
ते अनुप्रेक्षाइ भगवन्

२६ २१

।उत्त।सू।टा।प ट्टणयाएणं वंजणाइं जणयइ। वंजणलद्धिं च उप्पाएइ। २१ अणुप्पेहाएणं

२२८ जीवश्रेणी मिच्छयपराजे
अनुप्रेक्षाइं करीनें
आयुषारूपकर्म
तेहवर्जीनइं टाली
नइ
बीजा जे ज्ञानावरणीयादिक
सनीप्रकृति मूलप्रकृति उत्तर
प्रकृति १५८ भेद
अपु
तगा
दीआ
करी

भंते जीवे किं जणयइ। अणुप्पेहाएणं। आउयवज्जाउ सत्त कम्मपयडीउ

निकाचितबंधनेंक
रीनइं बांधीतेह
अनुप्रेक्षाइं करी निकाचित आकरीबे तेपुण अपव
र्तन करवायोग्य शिथिलबंधनरूप करें एतलइ द
ढबंधन करइ
दीर्घकालनी स्थिति घणाका
ललगी भोगविवायोग्य जेक
र्मते इ प्रकृति
शुभअध्य
वसायने
जोगेथि
तिनाबंध

।धणिअबंधणबद्धाउ सिढिलबंधणबद्धाउ पकरेइ। दीहकालठिइआउर २२८

नें अपवर्तविं भरीनें थोडा कालनी एहवीथि
तिबंजेहनी एहवी करइ काले जनागवी पू
राकरीयइ एहवा करे अल्पकालपामइ जे
कर्मनी प्रकृति तीव्र आकरां
अनुभाव रसजेहना ते
मंदनिबल जेअनुभावसामर्थ्य जे
हनो एहवी अतिशय स्पंदकरइ
बहुप्र
णाक
र्मनाप्र
देशक

हस्सकालठिईआउ पकरेइ। तिव्वाणुभावाउ। मंदाणुभावाउ पकरेइ। बहु

र्मप्रकृतिजे
हनाबेएह
वीनइं
अल्पथोडाप्रदेशकर्मपु
द्गलजेहनाएहवीअतिशय
स्पंदकरे
आऊषारूपीयोकर्मसियकदाचित बांधइ
संसारमाहि रहित उश्वसआयुषानो बंधकरेऽथ
वा आयुःकर्म आधकाने जे सागादिकइजबां
धइ शेषकालेनबांधइ
कदाचित नबांधेपुण
आत्मप्रयत्नेमुक्तिजा
इतिवारेनबांधइ

पएसग्गाउ। अप्पपएसग्गाउ पकरेइ। आउअं च णं कम्मं सिअ बंधइ। सि

असातानऽवेदिवउंरूपकर्मप
ज्जीअनुकंपप्रकृतिरूपअसा
तावेदनीयकर्म
वारंवार उपचयनकरेनबांधेवारंवार कहितेस्या माटे
जकारणियनी प्रमादथानिकप्रवर्त्तेकोइक प्रमाद सेवे
तिवारेंबांधेपुण
जेहमं
मारना
आदि
करक

अ नो बंधइ। असायावेयणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ। अ

२५

हिंडे नहीं इत्यादि आगळे तिअंभेत वेहे कर्ते नथी एतले अनंतकाल | एहज कारण दीर्घ ज्ञाबु अर्ध्वा अभिवानो मार्ग जेहनो नारक तिर्यंच मनुष्य देवरूप्या दि गति रूप अंत अवयवरूप तस संसार रूप अटवी तेह क्षिप्र उतावलत | अतिक्रमे वेहे कुआण मोहपामे

उग्गासृ॰टाप णाइअंच णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं खिप्पामेव वीतीव

उपदेशरूप धर्मनी कथा इंकरी | सगव न | जीव | सिषं उपराज इ | धर्मकथाइं करी नइ | श्रीसिद्धांत नइ प्रभाव बुद्धकाम इश्रीसिद्धांत नइ दीपावइ

२२

यइ ॥२२॥ धम्मकहाएणं भंते जीवे किं जणयइ धम्मकहाएणं पवयणं पभा

श्रीसिद्धांत नो प्रभावक | जीव प्राणी | आगामिया कालनइ विषइ आव निरंतर भद्र कल्याण ते हय णइ सहित | कर्म एहले शुभ कर्म बांधइ

२३

वेइ पवयणपभावएणं जीवे आगमेसस्स भद्दत्ताए कम्मं निबंधइ ॥२३॥

२८

श्रुत श्रीसिद्धांतनी आराधनातणइ | सगवन | जीव सिष उपराजइ | श्रीसिद्धांतनी आराधनाइं सेवनाइं

सुअस्स आराहणयाएणं भंते जीवे किं जणयइ सुअस्स आराहणयाएणं

अज्ञान षपावे ज्ञान पामइ | रागद्वेषना अभावथकी मन क्लेश कोरइ क्लेस न मइल ही | एकाग्र मन तेआलंबन ते अमइ एकाग्रकरी यइ। एवं जे चित्तनइ नी संनिवेस नाथाइ | था पना इ

२४

अन्नाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ॥२४॥ एगग्गमणसन्निवेसणयाएणं भं

सगवन जीव सिषं उपराजइ | एकाग्र पणं मननी संनिवेशना इंथा पनाइं | उरइ उपरइ उन्मार्ग हुं ताना जेचित्त अन: करणतहनो रुंधि वनकरइ

२५

ते जीवे किं जणयइ एगग्गमणसन्निवेसणयाएणं चित्तनिरोहं जणयइ ॥

हिंसादिकथी आश्रव निवृत्तिरूप संयमे करी नवा कर्म । जीव सिं उपार्जइ । संजमें करी । आश्रवपापरहितपणो उपार्जइ एतले नवा कर्म न लागइ । २६ । बारमे

उत्तराध्याय संजमेणं भंते जीवे किं जणयइ। संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ॥२६॥ त

२३। इत्यादिक करी भगवन् जीव स्युं उपार्जइ । तपें करी वोदान कहितां पूर्विला जे कर्म बाध्या ते टालइ ते पावइं सत्ते निर्मलपणो उपार्जइ । २७ । पूर्विला कर्म टलइ निर्जरिया भगवन् जीव

वेणं भंते जीवे किं जणयइ। तवेणं वोदाणं जणयइ॥२७॥ वोदाणेणं भंते जीवे

सिं उपार्जइ । कर्म निर्जराइं करी । अतिक्रिया कहितां पक्ष परत क्रिया नामा शुक्लध्यानने चोथो उपार्जइ । क्रियारहित थइ तिवारपछइ

किं जणयइ। वोदाणेणं अकिरियं जणयइ। अकिरिआए भवित्ता तओ पच्छा २२।

समस्त अर्थ साधी मार्ग पूर्के थइ । ज्ञान दर्शनें करी कृतार्थ सारयां मरइ । संसार रथी थाइ । अनित्य नित कथा इक मंजय अप्रगत्यो विवा था । सर्व समस्त दुःख जन्म जरा मरणादिकनो अंत करइ । २८ । सुखे सातारि अरूप यथी निर्व

सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ॥२८॥ सुहसा-

नविषयनी राकलपणइं रहित विषैने रूपसातायें तेणें करी भगवन् जीव स्युं उपार्जइ । रूपमाय इत्यादि थवा सुपशांत इं । अनुत्सुकपणो कामभोगने विषे निस्पृहपणो उपार्जइ । अनुत्सु

याएणं भंते जीवे किं जणयइ। सुहसाएणं अणुस्सुअत्तं जणयइ। अणुस्सु-

कपणाइं करीने जीव । आगलानें दुःखें देखीने सकंपइ । अभिमानरहित श्रृंगाररहित किंकम्मालान करइ । इहलोकादिकना यनइ विषइ सोक न करइ । मोहन अर्थ इत्यादिकमा अध्यवसायने क्षपणी करी चारित्रमोहनीय कर्म क्षय करइ

अएणं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोए चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ

बाह्य

अप्रतिबद्धतानी रागपणाइंकरी भगवन् जीव सिउं उपराजइ   अप्रतिबद्धता नीरागपणेंकरी नइ

२९

तवास्सुःराउ ॥ २८ ॥ अप्पडिबद्धयाए णं भंते जीवे किं जणयइ । अप्पडिबद्धयाए णं नि-

रागी जे संगते रहितविषइ

नीरागपणउ उपराजइ   निःसंगपणो रहित जीवएकलु रागरहित रहइ   धर्मनइ विषइ एकाग्रचित्त एकांत मन जे रहइ तं रहइ एह बउकुइ दिवस अथवा रात्रिइं   बाह्य रजा संग

२३२

स्संगत्तं जणयइ । निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिआ वा राओ वा अस-

अणुरिम नउ अणध रतउ   प्रतिबंध रहित जिनकल्पी विहारादि करइ विषे उद्यम सावकरी विचरइ प्रवर्तइ   ३०   विविक्त स्त्री पशुपंडक रहित   शयन उपाश्रय तथा आसन पाटउ णादिक तेहनी सेवना इंकरी

ज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ ॥ ३० ॥ विवित्तसयणासणसेवणयाए णं

२३२

भगवन् जीव सिउं उपराजइ   विविक्त   शयनासननी   सेवनाइंकरी   चारित्रनी गुप्ति कहितां रक्षा उपराजइ

भंते जीवे किं जणयइ । विवित्तसयणासणसेवणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ

अनें गुप्त छे चारित्र जेहनुं एहवु जीव विविक्त

पुष्टिना करणहार विगइ परहित आहार जे हनो एहवो छइ   दृढचारित्री   संयमनइ विषइ एकांतरागी   मोक्षभावनइ विषे जेहनो विप्रभुक्त थयो तउ मोक्षनउ अभिलाषी

। चरित्तगुत्ते अ णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभावपडिव-

क्षपक श्रेणि पडिवजीनइं आठकर्मरूपिणी गांठि निर्जरइ षपावइ   ३१   विनिवर्तना इंद्रिय विषय थकी कायाने निवर्तावि वइं भगवन् जीव सिउं उपराजइ

न्ने अट्ठविहं कम्मगंठिं निज्जरेइ ॥ ३१ ॥ विणिवट्टणयाए णं भंते जीवे किं जण

पण
इमथ्यकह निश्च
विषयथकी आत्मा नइ निवरत्ता सावद्य जे पापकर्म तिहनें अणकरिवा इ एतलेइ मज्जा मृषावादनइ विरम इक्षादिव्रत्त निवृत्ति पूर्वबांध्या कर्म तिह
विवइ लइ जे मे पापकर्म सर्वथा नवो करिवो इमावृषावाइ इकर्म तिह

उत्तराध्ययन यइ विणिवट्टणयाए णं पावाणं कम्माणं अकरणयाए अब्भुट्ठेइ पुव्वब

मणी तेहनी निर्जरा इ नवकहितां तेह कर्मपापनि यतेइ निवर्त्तावि इ तिवारपछे च्यार गतिक संसाररूप अटवी तेहअतिक्रमे क्रुत २६

२३२

णयं निज्जरणयाए णं एतं नियत्तेइ तओ पच्छा चाउरंतं संसारकंतारं वीइवयइ

एकमाण्डलेबेसी आहारादिकलेवी ते संभोग कहीइ तेह संभोगनें
पच्चक्खाण इगीतार्थ पणे जिनकल्पादिक उद्यतविहार पडिवजि संभोगनइ पच्चक्खाणे करी रहेमादवेव
३२ वेपरिहार तेणें भगवन् जीव सिउ उपराजइ अथक्रिव

॥३३॥ संभोगपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ संभोगपच्चक्खाणेणं आलंब २३३

नबनु एरवा जे आलंबनाग्रहितनइ आयस्थितकहितां मोक्षइं ज अर्थप्रयोज
लंबनकहिवाइ ते ववली नजेहनइ एहवा मन वचन काया ना योग ह पोतानइ पामिइ अ संतोष
षपावइ ३इ हारपाणी यादिकइ तृप्तिया

णाइं खवेइ निरालंबणस्स य आययट्ठिया जोगा भवंति सएणं लाभेणं संतु

मइ तर्कनेही मन ईहइ हीइहांत प्रार्थनही व अभिलाष पुरुनकेर
परनउ लाभ सिउ जो एवस्त वस्तु नी श्रद्धा धरी चवइ करी ए अभिलाष तेवस्तु नी
नइ वाछइ नही मुफनेदेवस इ मननइ एकट वस्तु मुफनेदि लाभ छिइ स्वा
कल्पन करइ पणेन करिवुं इइमनमागि
वु

स्सइ परलाभं नो आसाएइ नो तक्केइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलस

परनो लाभनी आसा विषय अणकरतउ तर्कनइ अणकर तउथिकु ईहानइ अणकरतउ स्पार्थना अणक रतउ प्रार्थ अभि लाप

इ परस्स लाभं अणासायमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अ

५

अणकरतउ बीजीवेमुखशिय्यातेप्रतिइं अंगीकारकरीनइंविचरइ अर्थेतेजिहवी गमाहि ३३ उपधउसुल्पातीजे उपधितेहनइंपचखाण

उन्नासाटाय णभिलसमाणे दोच्चं सुहसिज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥३३॥ उवहिपच्चक्खा

२३४ करीनगवन्‌जीवसिउंउपराजइ उपधिनइंपचखाणेकरी सिझायकरिवानोव्याघातपलिमंथतेणेंरहितते अपलिमंथउपरा उपधिरहि ३३

णेणं भंते जीवे किं जणयइ उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ निरुवहि

तथकउजीववस्त्रादिकनीइछारहितथकउ उपधिविनातेहजीव कदाइंक्लेसपामेंनलहइ ३४ सदोषआहारनेपचखाणेकरीनइं

एणं जीवे निक्कंखे उवहिमंतरेण य न य संकिलिस्सइ ॥३४॥ आहारपच्चक्खाणेणं २३४

अहोभगवन्‌जीवशाणीसिउंउपराजइ सदोषअसनादिकच्यारिप्रकारआहारनेपचखाणेकरी जीवितव्यनीआशंशाअभिलाषतेहनउं व्यापारकरिवउतेहदेनिवारेहनलेजीवितव्यनउअभिलाषनिवारइ

भंते जीवे किं जणयइ आहारपच्चक्खाणेणं जीवियासंसप्पओगं वोच्छिं

जीवितव्यनाअभिलाषनउकरिवउंतेटालीनेनिवारीनइंपछी जीव आहारादिककदाचितनमिल्योतोआहारपाखे अतिशयसिंकिलेशनपामइ ५

दइ जीवियासंसप्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ

कषायनाभेद४तेहनइंपचखाणइंभगवन्‌जीवसिउंउपराजइ कषायनेपचखाणेंकरीनइं ३५

॥३५॥ कसायपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ कसायपच्चक्खाणेणं

रागद्वेषरहितपणो वीतरागपणो | उपराजइ | वीतरागनो भाव पडिवजियो जेणे | एहवो जीव | समानछे सुख साता दुःख असाता जेहनइं

उत्ता॰ सू॰ टी॰ वीअरागत्तावं जणयइ। वीयरायभावं पडिवन्ने अणं जीवे। समसुहदुक्खे

२३५

एह | वउ | योगकहितां मन वचन काया ना व्यापार तेहनइं पच्चक्खाणइं | भगवन् | जीव सिउं उपराजइ | योग नइं पच्चक्खाणइं करी होइ ३६

हवइ॥ ३६॥ जोगपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ। जोगपच्चक्खाणेणं

अयोगीपणो उपराजै | अजोगी चउदमे गुणठाणे वर्ततो जीव | नवा कर्म ज्ञानावरणीयादि कनबांधइ | पूर्वे बांध्या कर्म जे च्यारि कर्म वेदनीय आयु नाम गोत्र तेहनइं | शैलेसी नइं विषइ | खपावइ

अजोगत्तं जणयइ। अजोगी णं जीवे नवकम्मं न बंधइ। पुव्वबद्धं निज्जरेइ

२३५

शरीरनें पच्चक्खाणें शरीरनइं वोसिराववइं करीनइं | भगवन् | जीव सिउं उपराजइ | शरीरनें पच्चक्खाणें करीनइं सिद्धना अतिशय जे गुण आठ केवलज्ञान केवलदर्शनादिक सिद्धनां गुण तेह नीपजावइं ३७

३७॥ सरीरपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ। सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्ध

गुणत नवउपजइ नहीं इत्यादि | सिद्धना अतिशय गुण तेहइं संपन्न पाम्याछे | तेजीव | लोकनो अग्रभाग लोकाग्र पदप्रति प्रति पहुचै थका

इसयगुणत्तं निव्वत्तेइ। सिद्धाइसयगुणसंपन्ने अणं जीवे लोगग्गमुवगए

घणं सुखीया थाइ | सहाय सहाय ते शिष्यादिकनें पच्चक्खाणें अभिग्रह विशेष नइं विशेषे ३८ | भगवन् | जीव सिउं उपराजै | शिष्यादिकनें

परमसुही भवइ॥ ३८॥ सहायपच्चक्खाणेणं भंते जीवे किं जणयइ। सहाय

पच्चरकाणेंकरी एकीसाथएकपणंउपराजे एकीभावपणेएकपणों पामोथिको जीव एकाग्रपणउंसावतनउं एहवोंअभ्यासमनोथिक ते अल्पशब्द बोलिबुंजेह नेइणेअ

उत्तराध्ययन पच्चरकाणेणं एगीभावं जणयइ एगीभावभूएणं जीवे एगग्गं साचेमाणे अप्प

अल्पश शब्दि आ वु अल्पझंझवचन संबंधीकलहजेह नइ अल्पवेकषायक्रोधमानादिकजेहनइं अल्पकलहएसचकषजेहनइ अल्पतुमंतुमतइंकी कलइंनकीधउइमतो मउराहवतकरिवो सतरभेदसंयमबहुलघणउजेहनइं

२७

सद्दे। अप्पझंझे। अप्पकसाए। अप्पकलहे। अप्पतुमंतुमे। संजमबहुले

आश्रवनोरोध रूपसंवरबहुल उजेहनइं समाधिघणीजेहनइं समाहिएकहितांज्ञानदर्शनचारित्रनीसमाधिवंत ३९ सक्रियपरिग्रहादिकपच्चरकाणकरतोसावद्यपापनिइंपच्चरकाणइ

संवरबहुले समाहिबहुले। समाहिए आवि भवइ ॥३९॥ सव पच्चरकाणेणं भंते २३८

सगवझजीवघाणीमिटे नुपराजेह सातनइंपाणीनइंपच्चरकाणइकरी अनेकसवअवतारसहस्रतेहनेंअघदूषणावइ ४० मर्व थाप णवा

जीवे किं जणयइ सव्वपच्चरकाणेणं अणेगाइं भवसहस्साइं निरुंभइ ॥४०॥ स

रंबारनकराहपस्माथपणइपच्चरिकिवउंतेम सावएतलेसर्व पणसलेसीबुंकरिवोबकठदंमगुणठाणेतेससावनइंपच्चरकाणकरीसगवझजीवसिद्धउपराजेह सद्भावनउंपच्चरकाणकरतो मुक्तिअणपामिइजेहनउंपतिवत्तिवउंउसरिखुंनहीएहवोशुक्लध्याननचउथउभेदउपराजेह

सावपच्चरकाणेणं भंते जीवे किं जणयइ सब्भावपच्चरकाणेणं अणियट्टिं जणय

पछिवलीबअणियट्टिनेणइं एहवोअणगाररक्षारित्र चारिजेकेवलीनइंकर्मनाअंशठरीबाकतंसघातियातेहखपावइअणगारकरइ तेकहइंबेह वेदनीयकर्म

इ अणिअट्टिपडिवन्ने अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ तं जहा वेअणिज्जं

आऊ:कर्म नामकर्म गोत्रकर्म तिवारपछे सकलअर्थ तत्त्वनाननी कर्मथकी कर्मतापथीमूंका
साधीसीझे जाणथाये मुकाइ इत्वइशांतलतादाथा

उत्रा.स्या.टा.प. १ आउअं २ नामं ३ गोत्रं ४ तउपछा सिझइ बुझइ मुचइ ६ परिनिवायइ

प्रतिकल्पितां स्थविरकल्पामरी सूत्रं वसवइ जेह नो तिहप निस्य
सर्वसमस्तजेदुःखकषायकर्मतेहनउ पकल्पाइतेहपणउं तेप्रतिरूपताकल्पाइतेप्रतिरूपतांइकरीनइ प्रतिरूपताइ
अंतकरइ ४१ वस्त्रावसितउपरानइ

२३७

सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ४१ पडिरूवयाएणं भंते जीवे किं जणयइ पडिरूव

अधिकउपधिनइ परिहरिवे द्रव्यथी उपधिलाघवथी भावथी अप्रतिबद्ध तेणेकरी स्थविरकल्पी प्रशस्त
करी करीहलुआपणोउपराजइ अप्रतिबद्धपणएहवुं वधइ दिवसइ लिंगव
हलुउं हुउजीव लोइ तिहाउट रजोहरणमु
लिंगजेहनउ हपती

याएणं लाघवियं जणयइ लहुभूएणं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थ २३७

क्रियाइकरीनइनिर्मल सत्यधर्मनइसमितिप सर्वप्राणबेइंद्रियादि पंचेंद्रियजीवपृथिवी
सम्यक्त्वजेहनउ तेणेपरिपूर्णछतउ कस्सलवनस्पती आदिसत्त्वतेहनेविषे

लिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमितिसमत्ते सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु वीस

विश्वासयोग्यरूप उपधिघणीनथी जीताइंद्रिय घणोप्रकारेतपअने समितितेणेकरी एहवउं
जेहनउं इहलोकप्रतिबद्धपणोतेहणो इंद्रियेणे तेणे घणोप्रकारइ सहितछइ कउ
जहनइ

सणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउलतवसमितिसमन्नागए आ

दि विवरइअमन आगरीकनउसहायदेवउतेवेयाव सिवउपरा कलादिकनेवेयावच्चइक
गरनइविषइ वकदीयइतेवेयावच्चइकरीनइवलीव जइ रीनइजीवतीर्थंकरनामकर्म

वि भवइ ४२ वेयावच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ वेयावच्चेणं तित्थयर

तीर्थकरगोत्र नामि कहितें ते कर्म अतिशा यसकेवलज्ञान पामीनें लहइ तीर्थकरनामगोत्र उपार्जइ ४३ ज्ञानादिक सर्वगुणसहितपणें भगवन् जीव स्युं उपार्जइ

उत्तराध्ययन णामगोत्तं कम्मं निबंधइ । ४३ । सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ ।

२२८ ज्ञानादिगुणसंपूर्णताइं करी सर्व वलीयाजोआविवर्त्तनथी जिहांथी एहवी मुक्ति उपार्ज इ मोक्षस्थानक पाम्युं थिकुं

सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ । अपुणरावत्तिं पत्तए अ

जीव रोगादिक शारीरनां दुःखकष्टमादिक मननां दुःख कृतेहनउ भागीकहीइं पामणहारउ नथाइ ४४ रागद्वेषनउ अभा

णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ । ४४ । वीयराय २२८

वंतवीतरागपणउं तेणें वीतरागपणें भगवन् जी व स्युं उपार्जइ वीतरागपणइं करी पुत्रादिकनइं विषें स्नेहराग थी जे कर्म नउं अनुबंध बंधाइ छइ ते इत्यादिक नाइ तृष्णा

याए णं भंते जीवे किं जणयइ । वीयरागयाए णं नेहाणुबंधणाणि तण्हाणु

बंधाते तेहवी कर्मनुबंधाइ छइ तेहनइं विच्छेद करइ छइ मनोज्ञ अनें अमनोज्ञ मनगमता शब्दवाजिंत्रादिक फरिसमुकमालादिक रसतीखादिक रूपसुंदरादिक गंधसुगंधादिक तेहनइं विषइ रागनउं अ णइ पाणी उमरे न

बंधणाणि य वोच्छिंदइ मणुन्नामणुन्नेसु सद्दफरिसरसरूवगंधेसु चेव विरज्जइ

४५ क्षमाइं करी भगवन् जीव स्युं उपार्जइ क्षमाइं करी कदाचित कोइ कष्ट आवइ ते सहेजे परीसह ते जीपइ ४६ मुक्ति निर्लो

इ । ४५ । खंतिए णं भंते जीवे किं जणयइ । खंतिए णं परीसहे जिणइ । ४६ । मु

संपजइ भगवंतजीवसिज्झउपराजइ निर्लोभिपणं अकिंचनकहितांद्रव्यरहित द्रव्यरहितअपरिग्रहीजीव
नपणोउपराजइ

उत्त।सूत्र।। त्तीएणंभंतेजीवेकिंजणयइ।मुत्तीएणंअकिंचणंजणयइ।अकिंचणेयणंजीवे

अर्थकहितांद्रव्यतेहनाजेलो अप्रार्थनीयथाइकइएतलेनिर्द्धनइं
भीपुरुषचोरजुहारीप्रमुखतेह तेहवोवांछितपुरुषमनवचनकायाइंक सरलपणोमायानिवारिवइअवक्रप
नइं रीप्राथइवाजइनहीं ४७ णोंकरीभगवंतजीवसुं उपराजइ

२२८

अत्थलोलाणंपुरिसाणंअपत्थणिज्जेभवइ ४७ अज्जवयाएणंभंतेजीवेकिं

कायानवंसरलपणोंरूव भाविइंमननुं भाषाइंअविकारता पूरजी
सरलपणइकरी मादिकपणोरहितपणों द्विविकारादिक भानिवारतवचुकुंना वनेवे
अणथीतविवव भानोसरलपणो नरिवु
इमननुंसरलपणो

जणयइ।अज्जवयाएणं।काउज्जुययं।भावुज्जुययं।भासुज्जुययं।अविसं २२९

ठगाईकरिविवितणइंर कायानउभावनउभाषानउअवि जीवनिर्मलक्रियानउधणीवीतरागनाधर्मनउ मार्द
हितपणोतेहअविसं संवादनमसरलपणउपणोउथिकं आराधकथाइइहांतथाआगिलइस वपणं
वादनकरइउपरा विधर्मफलसकरइ ४८ करी
जइ

वायणंजणयइ।अविसंवायणसंपन्नेणंजीवेधम्मस्सआराहएभवइ।४८ मद्दव

अभिमानटालिवइनमणस्वभावेकरीभ
गवंतजीवसिझउपराजइ मार्दवपणोसुकमालपणें अनुस्सितपणउनिरहंकारपणोउ
करीजीवप्राणी पराजइ

द्दवयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ।मद्दवयाएणंजीवे।अणुस्सिअत्तंजणयइ।

मृदुद्रव्यगवमार्दवस जातिकुलबलरूपतपश्रुतलाभ श्रुइडे
अनुस्रतपणइकरी जीव नतुंस्फकमालपणोभा वऋद्धिमदजेआठतेहनाथानक ऽस्थेत
सिउथिकं तेनीगावइछपावइ ४९ रआत्मा

अणुस्सिअत्तेणंजीवे।मिउमद्दवसंपन्ने।अट्ठमयट्ठाणाइंनिट्ठवेइ।४९ भाव

असत्यपणइ रहित शुद्धभावे सांचु करीन | भावसत्येक | भावनीजे विसुद्धि निर्मलपणो अध्यव | भावनी विशुद्धिनइ
गवन्न जीव कोण्य सिउं उपराजइ | री | सायनउ तेऊपराजइ | विषे वर्त्ततउ थव

उत्ता॰अ॰२९ प सच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ भावविसोहीए

न्तिउ जीव | अरिहंतनो भाष्योजे धर्म तेहना | आराधिवानइ अर्थि | ऊठेथवन्ने | अरिहंतनो भाख्यउ जेह | धु

२४० एवट्टमाणे जीवे अरहंतपन्नत्तस्स आराहणाए अब्भुट्ठेइ अरिहंतपन्नत्त

मचारित्रधर्म तेहना | आराधिवानइ अर्थि | ऊठी थवन्नीन इ | परलोकना परलवना धर्मनउ आराधक थाइ पर भविइ सुकुलि उत्पत्ति पुरुषवइ धर्मसोहिल थयामइ

स्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोगस्स धम्मस्स आराहए भवइ

करण सत्य पडिलेहणादि क्रियानइ विषइ सत्य तेणेंक | क्रियासत्येक | क्रियाकरिवानी समर्थाईक
५० री भगवन्न जीव सिउं उपराजइ | री | उपराजइ

इ ५० करणसच्चेणं भंते जीवे किं जणयइ करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ २४०

क्रियासत्यनइ विषइ वर्त्त | जेहवे मुखं करीबोलेते हवाज कायाइ क्रियानुष्ठानादिक | मनवचनकायाना | भगव
तो थिकु जीव | इवत्र्तइ | ५१ योगनइ सत्यइक | न्न जीव
री

करणसच्चे वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी आवि भवइ ५१ जोगसच्चेणं भंते जी

स्युं उपराजइ | योगसत्ये करीनइ | मनवचनकायाना जोग नेसोधवे निर्मलपणो करइ ५२ | अशुभ पदार्थ थकी मनगोपवि वइ संवरि वे भगवन्न जीव स्युं उपराजइ

वे किं जणयइ जोगसच्चेणं जोगविसोहेइ ५२ मणगुत्तयाए णं भंते जीवे किं जणयइ

मनगोपविवइ करी | जीव | धर्मने विषे एकाग्रपणो एकं नपणो उपराजइ | धर्मनइ विषे एकाग्रचित्तं करी नइं जीव | पाद्या अध्यवसा यथी गोपवतुं मन | सतरसंजमं यमतेहनइ आ जेणइ एहवउ

मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ एगग्गचित्तेणं जीवे मणगुत्ते संजमाराह

राधकथतिथा ऊकुऊइ | अकुशलथी कपवचन गोपवि वइ संवरि वइन गवन्न जीव स्युं उपराजइ | अकुशल थिकी वचन गोपविवइ करीनइं विक थारूप विकारते णइं करी रहित पणोउ पराज
५३

ए भवइ ५३ वयगुत्तियाए णं भंते जीवे किं जणयइ वयगुत्तियाए णं निव्विकारत्तं ज

विकथादिकविकारस्हि नजीव — गोप्यवित्तवैवच नजेणएहवोथकउ — अध्यात्म जमनतेहनउजयोग धर्मध्यानादिकनतेहनांजसाधनएकरीसहितहुइ ५४

उत्रा सू॰ ८ णयइ। निव्विकारेणं जीवे वइगुत्ते। अज्झप्पजोगेसाहणजुत्ते आवि भवइ ५४

अस्फालकत्वथकीकायानेशरीरनइंगोपविवंसंवरिवइसगवन्जीव मिउउपराजइ — अस्फलथीकायानइंगोपविवइ — पाहृयाश्रवनकायानायोगरूंधिवारूपसंवर — संवरेकरीगुप्तइकाया

२५१ कायगुत्तियाए णं भंते जीवे किं जणयइ। कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ। संवरेणं

जेहनीएहव उथिकं — वलीअहिंसादिकपापश्रविवानाजेमार्गतेहनउनिरोधरूंधिवउंकरइप्रमाचरइ — ५५ — मननइंसम्यक्प्रकारइमर्यादासहितसिद्धांतनेमार्गेथापीयइतेमनसमाधारणतेणीइंकरी

कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ। ५५। मणसमाहारणयाए णं भंते जी

रूजीवसमुत्रउपराजइ — सिद्धांतोक्तमार्गइमर्यादासहितमनेनइथापिवइकरी — धर्मनीविषेएकाउपणइकपरउजइ — धर्मनइविषेएकाग्रपणोकपरउजीवइ — ज्ञानवेद

वे किं जणयइ। मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ। एगग्गं जणइत्ता णा २५२

ज्ञानतिज्ञानश्रुतज्ञानादिकनापर्यायिनाणिवृत्तेनेकपराजइ — ज्ञाननापर्यायनउपराजीकरीनइं — निर्मलजेवचननीरुचिरूपसम्यक्तनेतेहनइंविशोधइशुद्धकरइ — अनेवूलविरूपजेमिथ्यात्वसचितेहनिर्जरक्षयइएवेइ

णपज्जवे जणयइ णाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च णिज्ज

५६ — सिद्धांतोक्तमार्गेमर्यादासहितस्थापिइवचनथापीइंतेवचनसमाधारणकहीइंतेवचनसमाधारणपणइकरीनेजीवसमउउपराजइ — वचननीसमाधारणाइंकरी — वचनसाधा

रइ ५६ वइसमाहारणयाए णं भंते जीवे किं जणयइ वइसमाहारणयाए णं

रणवचनेकहिवायोग्यपदार्थअनइ — दर्शनसम्यक्त्वनाजेपर्यायतेहनइंविशोधइनिर्मलकरइवचनसमाधारणाकरतोसाधकरतोथकोयोगनेअसामान्यनेकनयनेजाणिवेकाकरतोथनिवारिवइसम्यक्त्वविशोधइ — वचनेसाधारणनावचनावचनिकहिवायोग्यजेपदार्थतेवचनसमाधारणअनइदर्शनसम्यक्त्वनापर्यायविशेषीनिर्मलाकरीअर्थादिकनइअभ्यासइका

वइसमाहारणे दंसणपज्जवे विसोहेइ वइसमाहारणदंसणपज्जवे विसोहि

टालिवइ — परभविइधर्मनइसोहिलउंपामिवउंतेसुलभबोधिपणउंकपराजइ — धर्मदुर्लभउपामिवोतेहजीवबोधिपणोनिर्जरइक्षयावइ — ५७ — संयमनेविषयइंलीयइंकायानउवर्तवितेकायसमाधारणातेने

त्ता सुलहबोहियत्तं निव्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्तं णिज्जरेइ ५७ कायसमाहार

णइं करी भगवन्त जीवस्यूं उपराजइ संयमयोगनइविषेकायप्रव/र्त्तिविवइ जीवडा/णी चारित्रनातेभेदपर्यायक्षयोपशमकि ना(ते) विशोधइ निर्मलिक/रइ

उत्रा।स्त्रा।८ णयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ। कायसमाहारणयाएणंजीवेचरित्तपज्जवेविसोहेइ

चारित्रनापर्यायतेदस/दविशोधीनिर्मलिकरी/नइ यथाख्यातचारित्रनिर्मलकरइ इहांकोइ कायथाख्यातचारित्र आण्युं तो निर्मल/किमकरे तिहां कहइ नरइ सर्वथा अणाचरनी अतथनिनथी यथाख्यातचारित्र/मोहनीयइ क्षय मइ हवइ थयउ तेहयथाख्यातचारित्रविशो/धीनिर्मलकरीनइ

२४२

चरित्तपज्जवेविसोहित्ता अहक्खायचरित्तंविसोहेइ अहक्खायचरित्तंविसोहित्ता

चारित्रकेवलीसंबंधियाकर्मनाअंससंवेदनीय१ आयु२ नामकर्म३ गोत्रकर्म४ खपाव तिवारपछीसीझेसक/लअर्थसाधइ तत्त्वनोजा/णइ कर्मथकी/मूकाइ कषायगतिनिवारी/नाटोथाइतथा

चत्तारिकेवलिकम्मंसेखवेइ। तओपच्छासिज्झइ। बुज्झइ। मुच्चइ। परिनिव्वायइ

समस्तजेदुःखकर्मतेहनोअं/तकरइमोक्षपुहुचइ ५८ श्रुतज्ञानइंसंपन्नसहितपणइ भगवन्तजीवस्युंउपराज/इ श्रुतज्ञानें

सव्वदुक्खाणमंतंकरेइ॥५८॥ नाणसंपन्नयाएणंभंतेजीवेकिंजणयइ। ना

२४२

सहितपणइजीव सर्वजेभावजीवाजीवादिकतत्वतेहनोअ/धिगमज्ञानप्रणोउपराजे ज्ञानेंकरीसहितजी/व च्यारिगतिरूपजेसंसारतेहरू/पकांतारअटवीतेहमाहिंइ

णसंपन्नयाएणं। सव्वभावाहिगमंजणयइ। नाणसंपन्नेणंजीवेचाउरंतसंसार

विनाशनपामेजेम/सूथीवेगलूंनथाइ तेऊपरिसूईनइदृष्टांतकहेछे/जिमसूईसूत्रसहिततंतुसहित कचरादिकमाहिंपडीविण/सइहीजाइनहीं तिमजीवपुणसूत्रेस/हितश्रुतज्ञानेकरीस

कंतारेनविणस्सइ जहासूईससुत्ता पडिआइनविणस्सइ तहाजीवोविस

हित संसारनइविषेविणसेनहीकि/वारइंकरीकल्याणिकजाइ ज्ञानअवधिज्ञानादिक/विनय एसेतपचारित्रनायोग/पामइ सम्यक्प्रकारें स्वसमयपर/सिद्धांतसम

सुत्तोसंसारेनविणस्सइ नाणविणयतवचरित्तजोगेसंपाउणइ ससमयप

यतअपरशा/स्त्रतेमा/हि निपुणविसार/दजाणतेमा प्रधानपुरुषपणइसंघायणिज्जेकहि/तांमलिवायोग्यकहइएतलेंपंडितमाहिं/मलिवायोग्यकहइ ५९ क्षायोपशमकसम्यक्त्वइंसहितपणइभगवन्तजीवस्युंउपरा/जइ

रसमयविसारए संघायणिज्जेभवइ॥५९॥ दंसणसंपन्नयाएणंभंतेजीवेकिं

क्षयोपसम्यक्त्वसहित पामइ ।। सर्वसंसारनोहेतु जेहमिथ्यात्वतेहनछेद नकरइ एतले क्षायकसमकितपामइ परंकहितां निवारण्णी श्री ज्ञानरूपी नवारित्रप्रकाशनेनोविज्झाइउ ल्हइनही ॥३७॥

उत्रा.सू.ट जणयइ। दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तछेअणं करेइ परं ण विज्झाइ प

तेज्ञानदर्शनचारित्रनाप्रकाश नइअणहोलवतोथिका २ क्षायकप्रधानजेज्ञानदर्शन तेसंघातिइं आपणोआत्मासंजोइवतोथको सम्यक्प्रकारे सम्यग्भावितलातउपयोगआपण ३ आत्माप्र

२४२ रं अणेज्झायमाणो। अणुत्तरेणं णाणेणं णेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं

तिइवसिकरतोविचरे केवलीथकुं यथाख्यातचारित्रसहितपणइसगवइजीवस्यउं उपराजइ चारित्रमहि

६०
भावेमाणे विहरइ।६०। चरित्तसंपन्नयाए णं भंते जीवे किं जणयइ। चरि

शैलेसीकहितांशैलपर्वतनेहनोईशजकरमेरुपर्व तेहनापरिनिश्चलपणावोशैलेसीसावैंउपराजे निश्चलरहइमेरुनीपरइ तपणइ शैलेसीकरणेपुहतोथि कउ आणगारमा कवती चारित्र केवली

त्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ। सेलेसिपडिवन्ने अणगारे चत्ता २४२

मोहनीयकर्मनाअंसवेदनीयउआयु२ नामउगोत्र४तेखपावइसर्वादमइगुणठाणइ निवारणतेभघलाकर्मखपा वीसाकइ कर्मथकी मूंकाइ कषायअग्निउल्हवा मेतलीतलथाइ सर्वदुःखकयापनत नहनाउजा णथाइ

रि केवलिकम्मंसे खवेइ। तउ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वायइ सव्वदुक्खा बुज्झइ०१

अंतकरइ ६१ श्रोत्रविषयनइंविषेप्रवर्त्तताकाननियत्रीराखइतेश्रोत्रेंद्रियनिग्रहकरइइं तेणेंकरीसगवइजीवस्यउंउपराजइ श्रोतेंद्रियकानकहइतेहनइनिग्रहकरी।

णमंतं करेइ।६१। सोइंदियनिग्गहे णं भंते जीवे किं जणयइ। सोइंदियनिग्ग

मनोज्ञसलासहअमनोज्ञपामह्यारागद्वेषतेविषेसर्वथापणइ रागद्वेषनोनिवारिवउपराजेएतलेरूडाकपरिणगनधरइइंनाकपरिहेषनधरेरागद्वेषनिवारीनइइसबईद तेरागद्वेषनिमित्तकर्मन

हे णं मणुन्नामणुन्नेसु सद्देसु रागद्दोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न

बांधइ पूर्वेजेरागद्वेषनेंउपार्ज्याछेतिकइतनिर्जरावइखपावइ ६२ रूपथीचक्षुरिंद्रियनइंनिग्रहइसगवइजीवस्यउंउपराजइ

बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ।६२। चक्खिंदियनिग्गहे णं भंते जीवे किं जणइ

चक्षुरिंद्रियनिग्रहे करी रूडा अणरूडा रूपनेविषइ रागद्वेषनो निग्रह जीव पामइ करे एतले रूडा रूपरि राग न करी अणरूडा रूपरि द्वेष न करी

उत्त॰ सू॰ ट वरिंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु रूवेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ

रागद्वेषनिमित्तजे कर्म ते न बांधइ पूर्वेजे रागद्वेषनइ योगे कर्म बांधियां छइ ते निर्जरइ क्षपावइ ६३ गंधथकी नासिकाने निग्रहे करी भगवन

२४४ तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ। पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥६३॥ घाणिंदियनिग्गहेणं भंते

जीव सिउं उपराजइ घ्राणेंद्रियनइ निग्रहे जीव पामइ रूडा अणरूडा गंधनेविषइ रागद्वेषनो निग्रह जीव पामइ ते उपराजे एतले रूडा

जीवे किं जणयइ। घाणिंदियनिग्गहेणं मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु राग

गंधऊपरि राग न करी अणरूडा गंधऊपरि द्वेष न करी ते रागद्वेषनिमित्तजे कर्म ते न बांधइ पूर्वेजे रागद्वेषनइ योगइ कर्म बांधियां छइ ते निर्जरा करइ क्षपावइ ६४

दोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ। पुव्वबद्धं च निज्जरेइ॥६४ २४४

रसथकी जिह्वानइ निग्रहे हे भगवन् जीव सिउं उपराजइ जिह्वेंद्रियनइ निग्रहे करी रूडा अणरूडा रसनइ विषइ

जिब्भिंदियनिग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ। जिब्भिंदियनिग्गहेणं मणुन्नाम

रागद्वेषनो निग्रह जीव पामइ उपराजे एतले रूडा रसनइ राग न करे अणरूडा रसनइ विषइ द्वेष न करइ रागद्वेषनिमित्तजे कर्म ते न बांधइ पूर्वे रागद्वेषनइ योगइ जे कर्म

णुन्नेसु रसेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ तप्पच्चइयं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं

बांधियां छे ते निर्जरे क्षपावइ ६५ स्पर्शथकी स्पर्शनेंद्रियनइ निग्रहे हे भगवन् जीव सिउं उपराज स्पर्शनेंद्रियनइ निग्रहे जीव पामइ करी

च निज्जरेइ॥६५॥ फासिंदियनिग्गहेणं भंते जीवे किं जणयइ। फासिंदियनिग्ग

रूडा अणरूडा फरसनइ विषइ रागद्वेषनो निग्रह जीव पामइ उपराजे एतले रूडा फरसनइ विषइ राग न करे अणरूडा फरसऊपरि द्वेष न करे रागद्वेषने जीपीनइ प्रवर्तइ ते रागद्वेषनिमित्ते कर्म न बांधइ

हेणं मणुन्नामणुन्नेसु फासेसु रागदोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं क

एवंजे कर्मबांधिउ हुइ ते निर्जरइ खपावइ ६६ क्रोधविजयनइ जी पिवइ हग वन्त जीव स्युं उपराज्ज क्रोधनइ जीपिवइ

उत्रास्टाप म्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६६ कोहविजएणं भंते जीवे किं जणयइ कोहविज

क्षमाउपशमते उपराजइ क्रोधवि० क्रोधनइ उदयें वेदीयइ ते क्रोधवेदनीयक र्मकिसीइं ते न बांधइ कर्म नु बंधन थाय इ एवंइं क्रोधें करी कर्म बांध्यो हुइ ते निर्जरइ खपावइ ६७ अभिमाननें

२४५

एणं खंतिं जणयइ कोहवेयणिज्जं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६७ माणवि

जीपिवइ हग वन्त जीव स्युं उपराजइ अभिमानें जीपिवइ मार्दव सकुमालपणो उपराजे एतलें अभिमान जीपीन मृदुपणो आणइ अभिमानें करी जे कर्म वेदीइ ते मानवेदनीय कर्म थिति

जएणं भंते जीवे किं जणयइ? माणविजएणं मद्दवं जणयइ माणवेयणिज्जं कम्मं

अभिमाननें योगइं पूर्वें जे कर्म बांध्यो हुइ निर्जरइ खपावइ ६८ परनइं वंचिवउं ते माया मायानइं जीपिवइ वसि करिवइ हग वन्त जीव स्युं उपराजइ न बांधे मायानें जीपि

नं बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६८ मायाविजएणं भंते जीवे किं जणयइ मायाविज २४६

वइ ऋजुभाव आरजवपणो उपराजे करी कुटिलभाव परिहरे मायानें योगें वेदीयें जे कर्म ते मायावेदनीय कर्म न बांधें न इ कर्म नउ बंधन करइ एवंइं मायानइ योगिइं कर्म बांध्यो हुइ ते निर्जरइ ६९ लोनइ

एणं उज्जुभावं जणयइ मायावेयणिज्जं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ६९ लो

भनें जीपिवइ करी लग वन्त जीव स्युं उपराजइ लोभनें जीपि संतोष नें भावसंतोषीपणो उपराज इ संतोष आणइ लोभें करी कर्म वेदियइ ते इ लोभवेद

भविजएणं भंते जीवे किं जणयइ? लोभविजएणं संतोसीभावं जणयइ लोभवेयणि

नीय कर्म न बांधइ कर्म नो बंधन थाय इ एवंइं लोभ थकी कर्म बांध्यो हुइ ते कर्म निर्जरइ खपावइ ७० प्रेम राग द्वेष रीस मिथ्यादर्शन शास्त्रादिक विपरीत मति तेहनइ जीपिवइ हग वन्त जी

ज्जं कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च णिज्जरेइ ७० पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भंते जी

व स्युं उपराजइ राग द्वेष मिथ्यादर्शन नइं जीपिवें करीनइ प्रमादें नंव सिंह आराधना करइ ते दर्शन ज्ञान दर्शन सम्यक्त्व चारित्र तेहनी आराधना वइ अर्थिइं

वे किं जणयइ? पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं णाणदंसणचरित्ताराहणा

कवेमाववमन थाइ। आठप्रकारना जे। कर्मनेहमाहे कर्मगांठिया नीयाकर्मनेछंजाल मूंकाविवानेनणीसाववधानथाइ। तेहमांहिपहिलउंजिमआनुपूर्वीइंअनुक्रमइं।

उत्त.सू.टी.प याए अणुपुव्वि अट्ठविहस्स कम्मगंठिविमोयणयाए तप्पढमयाए जहाणुपु

२४५

छकषायनवनोकषायइमो हनीयएवं२८प्रकार मोहनीयकर्म नइहातेखपावेक्षपकश्रेणिवमोथिको पांचप्रकारेज्ञाननाआवरणमतिश्रुतिअवधिमनःपर्यायिकेवलनामिइं निद्राप

व्वीए अट्ठवीसतिविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ। पंचविहं णाणावरणिज्जं न

दर्शनएवंनवप्रकारेदर्शनावरण दानांतरायादिकपांचप्रकारइं अंतरायकर्मतथा ज्ञानावरणीय२दर्शनावरणीय३अंतरायएत्रणिकर्मनांजेअंशतेयुगपतसाथिइंखपावेक्षपकश्रेणिचढितोथिको तेकर्मखपाव्याथकाऽनंतर

वविहं दंसणावरणिज्जं पंचविहमंतरायं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ। तओप

अणुत्तर सर्वमांहिप्रधान अनंतअर्थनोग्राहकअथवाजेहनोअंतनपामीइं सकलवस्तुनोग्राहक समस्तआपणापारकापर्यायनोग्राहकतेथीसंपूर्ण समस्तआवरणरहितवली अज्ञानरूपतिमिरेकरीरहितते सर्वदोषरहितनेविशुद्ध लोकऽनेअलोकतेहना

च्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुण्णं। निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालो २४५

स्वरूपनोप्रकाशकतेलोकालोकप्रभावकछइ केवलसहायनाअभावथीवरप्रधानअन्यनीअपेक्षाइं एहवोकेवलज्ञानअनइकेवलदर्शनसम्यकप्रकारिइंऊपाडिइंऊपजावइ जांसयोगीसयोगअछइमनवचनकायानायोगसहिततेरमगुणठाणवर्त्तइ तांलगिइरियावहिकीक्रियानो

गप्पभावगं। केवलवरणाणदंसणं समुप्पाडेइ। जाव सजोगी भवइ ता

बंधपछेपरंतेहनइंआवकर्मबंधवालउसंपराइक्रियानोबंधनकरइइर्यापथिकालिवनेतेहथीकर्मबंधतेइरियावहीकहीइं आत्मानाप्रदेशसुंस्पर्शकारमयइजिहनु बेसमयनीथितिजेहनीतेकहइं तेहपहिलइसमयबांधउफरिसनाणी

व इरियावहियं कम्मं बंधइ सुहफरिसं दुसमयठितियं। तं पढमसम

बीजेसमयवेदिउकहितांअनुभव्योकायाइकरीनइ त्रीजेसमयतेकर्मनिर्जराव्योखपाविउएतलाउपरांतकषायवतनइंजबंधहुतउइपरंकेवलीनइंनकरइ तेजीवप्रदेशसुंबांध्यो फरस्यउंआकाशपरवर्त्त उदीरिउंउदयआणिउंफलअनुभवउ

ए बद्धं वेइयं। तइयसमए निज्जिण्णं तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं

वेदितफल अनुभवतवि तसुखरूप सु — निर्जीर्णंक्षय पामिव इ — आगामिसमयइं कालिइं बंधथासमया दिकनइ विषइ अकर्मक कर्मरहित निःकर्मः — ए — केवलज्ञान पाम्या ऽनंतरम् हूर्तं आदि देई देसूर्णकोडिआ उखुपालीनइ — वेदूके अंत मुहू

उद्धामा । ७१ । वेईअं । निजिणं । सेआले अकम्मं वा वि भवइ ॥ ७२ ॥ अहाउअं पालइत्ता अं

अंतर्मुहूर्तशेषवाकता आउखुं बइ जेहनइ ते केवली — मन वचन काया ना योग तेहनो निरोध रूंधिवउं करइ तो थिको — सूक्ष्म जिहां क्रिया छइ जिहां वली — पडिवुं नथी तिहां थी पाछुं वलवुं तेते अप्रतिपाती

२४७

तोमुहुत्तावसेसाउए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरिअं अप्पडिवाइं

एहवा सुक्लध्यान नुं त्रीजउं भेद ते हध्यायतो थिकउं — तिहां पहिलाउ जमन नउ जे योग व्यापार विस्तारि वउ ते हरूंधइ संवरइ पर्याप्ता मात्र जे सन्नी नउ मनो योग ते हथी थोडउ ते मनो योग आणिवउ — मननो योग रूंधी नइ संवरी

सुक्कज्झाणं झायमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ मणजोगं निरुं २४७

नइ — पर्याप्ता बेंद्रियानाजघन्य योग थी थोडा वचन न उयोग व्यापार तेरूंधइ — ते वचन नो योग व्यापार रूंधी संवरीनइ — सूक्ष्म अत्येक नाजघन्य काययोग थी थोडु काया नो योग व्यापार ते रूंधइ — ते काया नो योग व्यापार

भित्ता वइजोगं निरुंभित्ता कायजोगं निरुंभइ कायजोगं निरुंभित्ता आ

तिवारपछइ रूंधीनें सर्वथा संवरीनइ — पछे आणपाण सासोस्वास तेहनो निरोध संवरिवउं करइ सासउ सास रूंधीरा ५६ — ईषत् थोडो अव्यासक रिखो पंच एहवा ह्रस्व पांच अक्षर अ इ उ ऋ लृ रूप उच्चरतां जेतलो काल नीमान थायते तेतलो काल लगी ए अलंकार लणी

णपाणनिरोहं करेइ आणपाणनिरोहं करित्ता ईसिं पंचरहस्सक्खरु

अनगार साधु मिति — अतिशायस्सूक्ष्म छेदणीछे क्रियाजिहां — ते थानक थी पाछो वलिवउं नथी ते अनियट्टि — शुक्लध्यान नो चउथो भेद ते ध्यायतो थिको सीझइ रहितउ थकउ

च्चारद्धाए अ णं अणगारे समुच्छिन्नकिरिअं अणियट्टिं सुक्कज्झाणं झियमाणे

एहिच्यारकर्मनाजेकर्मनाजेअंशाके वलीसंबंधीए नतवि
वेदनीयकर्मः१ आयुःकर्मः२ नामक मं३ गोत्रकर्म ४ अघातीयाधकर्मकहीयइतेजुगपतसाथइखपावइ दनीया ७२ दिक

उत्त। सू०ट वेयणिज्जं। आउअं। नामं गोअं च एए चत्तारि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥७२॥ तः

धकर्मक्षयथयात्याऽनंतरकतरिकाः कार्मणशरीरादिकीतेजसरूपसर्व शरीरसघलीत्र विछजहनातेविशेषइंकरीनाछिवानाछकारतेणइ विशेषपरिहरीइं तजीसर्वथासरी रछकारकीनइ समीजेआकाशनीश्रेणिनिरां पधतजथिकोपलेमोक्षजाता वाकत्रनजाइ

२४८

उ उरालिअकम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढीपत्ते

जेतलाआकाशप्रदेशजीव अवगाह्याबेतेतलाफरसे ऽधि कानफरसइजिहांएहवीगतिजे हनी एहवोथिकोउंचउएक समयेकरीजाणवो अविग्रहकरीगांवांकीगतिनइ अणकरिवेतेमोक्षनइविषेजइनइ सागरोपयुक्तेज्ञा नेनउपयोगेसहित थिकं मीकें सघला कार्य

अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागरोवउत्ते सिज्झ

२४८

नोसा धण नार अत्रनो जाण थाइ थाइ कर्मथी मूंकाइ कषायरूपताप उपशमावीताढो थाइ सर्वदुखकपापकर्मनिउअंतकर इ एहनिअध्ययसम्यकत्वपराक्र मउ

इ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥७३॥ एस खलु सम्मत्तप

महामा अध्ययननउअर्थपरमार्थ तपस्वीइं एहवर्यवंत श्रीमहावीरना भगोवंसमेतरी सकिरइ कहिउसामान्यप णइ

रक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेणं आघविए

विशेषपणा लेःथवापर्या यनेकहिवुज लाम्सु हेतुफलादि कनाविशे षनेअणावि वेवरूप्या स्वरूपने कहिवेदे षाडिउ अनेकसेदनेजणाविवेनिदंसणउएहवुं कहउंश्रीमधर्मास्वामिजंबूप्रतिइंक हइछइ एहसम्यकत्वपराक्रमाध्यय

पन्नविए परूविए दंसिए निदंसिए उवदंसिए त्ति बेमि। सम्मत्तपरक्कमं णा

तेनोअर्थकहिउंछे समाप्तथको = २९ यथाजिमज्ञानावरणीयादि पापकर्म रागद्वेषइवडेसंचयोछे बिहुइं करीउपराजिउंबांधिउं तेपापनेनिर्ज रइतपकरी

उत्रा०ध्या०प मज्झयणंसम्मत्तं।२९।जहाउपावगंकम्मं।रागदोससमज्जिअं।खवेइतव

पूर्विलिउंअध्ययनवा तेरागपणोकहिउंछेते लेअध्ययनेमोक्षमा र्गनणीतपकहिवोते हसणीतपोमार्गअधि ययननाषाक्रीसमो ध्ययनकहेछे ३०

तेस्तेलेकरी यती तेहएकाग्रचित्तथकोतंअ होशिष्यनतेसांभलि १ प्राणीजीवनइ हणवुं मृषाजूठवानउं लेवुं अणदीधी वस्तुनउं लेवउं स्त्रीसंयोगनउंकरिव उंलोभबुद्धिइंप्राणीप

साभिरकू।तमेगग्गमणोसुणा।१।पाणिवह मुसावाय।अदत्तमेहुण परिग्ग

रिग्रहमेलि वउएथकी विरमिउथि कउ तथाऽन्नपानखादिमस्वादि मएच्यारिप्रकारनाराविसोज नथीविरम्योथिकउ जीवप्राणीहवइनिराश्र वपापआविवानाबारणा तेआश्रवतेणइरहित २ पांचसमितेस मितो त्रिणगुप्तिक इंगुप्तो कषा ४२

हाविरउ।राईभोअणविरउ।जीवोहवइनिरासवो।२।पंचसमिउतिगुत्तो।अ

२५८

हितइंद्रियपजीव गारवत्रिणप्रकारनातेणइंकरीर हितत्रिणशल्यतेरहित एहवाजीवहोइनिराश्रवपापेर करानइरहित प्राणातिपातवि रतिप्रमुखजेए वेबोलकह्यांते

३

कसाउजिइंदिउ।अगारवोअनिसल्लो।जीवोहवइनिरासवो।३।एएसिंतु

एतेविपर्यास इकरी रागद्वेषेकरीनेजेपापकर्मउ पराजिउंहोइतेह खपावेअलगाकरइयथाजि मभिक्षुकरइंवाविबिउ अहोशिष्यतेएकाग्रमन थकोएकचित्तथकोसांभ लि जिम

४

विवच्चासे।रागदोससमज्जियं।खवेइउजहाभिरकू।तमेगमणोसुणा।४।ज

मोटातलावनउ पालिइंकरीनें रुंधिइंसंवरिव पाणीनेंआविवेंएत लेनेवपाणीइंनिवा रिइथिकइ ६ अरहटादिकेसींचवी कादइथकइ सूर्यनाकिर णनइतापइ करी अनुक्रमेरस वेपाणीनीसो षणसोषाइ

हामहातलागस्स।संनिरुद्धेजलागमे।उस्सिंचणाएतवणाए।कमेणंसो।

वंछे ते होइ | एवं इणे प्रकारइं तु निश्चयइं संयतसाधुनइं पणि | ज्ञानावरणीयादिक पापकर्म तेणइं निराश्रवरहित सा | भवः अवतारनी कोडिइं करी संच्यो एकठो कीधउ जे पापकर्म

उत्त॰सू॰टी॰प सणा॥४॥एवं तु संजयस्सावि पावकम्मनिरासवे भवकोडीसंचियं कम्मं

२५०

ते तपनिं बारइं सेइत तपइं करी निर्जरइ षपावइ | ते तप बि प्रकारइं इक श्री तीर्थंकर गणधरइं | एक बाह्य बीजउ अभ्यंतर हाति मा॥ | बाह्य तप छ भेदे कहि उ जेहनी तप कीध बाहिरि सकं देषे

तवसा निज्जरिज्जइ॥५॥सो तवो दुविहो वुत्तो बाहिरब्भिंतरो तहा बाहिरो छव्वि

तेवा ह्यत प | एम अभ्यंतर ते छ भेदे जाणिवो बाहिरं दिन जणाइ आत्मा अभ्यंतर जाणे ते अभ्यंतर तप | उपवासादिक मासी तप पर्यंत ते णइं | बत्रीस कवल थकी ऊणो आहार ते ऊणोदरी | भिक्षाचरी गोचरीइं ... भिक्षाचरिका | विगयघृतादि परिहारिवउ ते रस

हो वुत्तो॥एवमब्भिंतरो तवो॥६॥अणसणमूणोअरिआ भिक्खायरिआ य रसपरि २५०

काया ते उपसर्ग... काय किलेस | पोताना अंगोपांग संवरी नइं रहवउं ते संलीनता | ए छ बाह्य तपकहयउ | इत्वर थोडा कालनेइ नोनइ इत्वरिक मरणपर्यंत काल अवसर जेहनो ते मरण

च्चाओ कायकिलेसो संलीणया य बज्झो तवो होइ॥७॥इत्तिरिअमरणकाले

इम अणसण बिहुं भेदि हुइ | ते मांहि जे इत्वरिक ते सा कांक्षा आकांक्षा जे विषनी आविकपनी अ रनी वांछा ते णइ | अ आदिक नी वांछा ... निरवकंषा कहीए एव बीजिइं ते ए जाणिवउ | जेइत्व

अ अणसणा दुविहा भवे इत्तिरिआ सावकंखा निरवकंखा उ बिइज्जिआ॥८॥जो

रिथोडा कालनउ तप | ते संक्षेपनी बइ छ प्रकारइं कही ... | श्रेणितप प्रथम १ | प्रतरतप बीजो २ | घनतप त्रीजो ३ | ... वर्गतप

सो इत्तरियतवो सो समासेण छव्विहो सेढितवो पयरतवो घणो अ तह होइ वग्गो

वर्णमार्गवि निवारयवीवर्यरणंकमोण्ड बछउवकारवकी(ततिपजेश्रीजिदि मनइछितमनोवांछितअनेक एहवोजा
र्ग्रंथनिवर्णक नामवर्वसेदयवृत्थकीजाणयो रवनारत्तितेनइ एकारनाअर्थदेवलोकतेजोत णवोहइ
रीइ वर्णगुणोकोजहतेवर्णवर्णत रूपादिकजेहपक

१० ५

उत्रास्मूऽ३०५ अ णंतरो अवगावगाए पंचमो छठपइन्नतवो मणइछियचित्तत्थो णायव्वो

एकसविचारवेष्टा
इत्तरिक अणसण जेतेह अणसण मरणेने समयक बिकुवकारइंतेकहिउं श्रीतीर्थंकर इंसहितसकवत्पा
११ ६ गणधरइं पानादि

२५१

होइइत्तिरिओ ११ जासा अणसणा मरणे उ दुविहा सा वियाहिआ सविआरा

बीजुं अविचारखे कवादिवउसुयादिवोइत्यादि अववावलीविक्तसेदेतेकेदाणकस बीजउं अपरिकर्मतेह्यी विपरीत
चारहितपादय कायनीचेष्टा आश्रीषमिव समरिकर्मीविश्रामणादिकरिवुंतेसक णमनकदातीर्थंकर गणधरइं
गमन १२ परिज्ञाइंगिनीतेणइंसहित

अविआरा कायचेठंपईभवे १२ अहवा सपडिकम्मा अपडिकम्मा यआ २५१

गामनगरथीकादीइंतेहना आहारादिकनुंछेदिवउंनलेवुंबेहुं दिवइंऊणोदरीकहेछेक
नारिमकाढिवुंनकइतेअ सपरिकर्मअपरिकर्मअथवानी णोदरीतेहपांचेइ संखेपथिका
नाहरिमजणपारेपगमनतें नारिमअनीहारमेकइ कारइं

कइ १३.

हिया। नीहारिमनीहारी आहारछेउदोसुवि। १३ उमोअरियं पंचहा समासे

कहिउं श्रीतीर्थंकर द्रव्यथकीक्षेत्रथकीकालथकी भावथकीपर्यायथिकाय जेहनेजेतलोआहारहूवइ
गणधरइ लथीउ १४

णवियाहियं दवउखेत्तकालेणं। भावेणं पज्जवेहिअ १४ जोजस्सउ आहारो।

करएने गाइवक
तेतलामांहिथीऊणउंजेकरे थोडोंतउ एकसीथादिक एमद्रव्यथीऊणोदरीजा सहेतेगा कतुंवास
वउआचारलिइ उछउ णिवी म नहतेनग
१५ र

तत्तोऊणंतुजोकरे। जहन्नेण एगसित्थाई एवंदव्वेणऊभवे। १५ गामेणगरेतहा

राजानरहेनेवास गामनिवसेतेराज धानी वाणीयानोघणो वासतेनिगम लूणसोनानीपजतपणि गामतेआगर हकैकरीआश्रितेह पालि धूलनोगटदजिहांते षेडसामान्यनगरते कर्वट समुद्रनीवेलिआवेतेद्रोणमुख जलथलपंथजिहां तेपाटण चउपषेरअढीकोस गामजेनहीतेमडंबजिहांचउवर्णलोकघणु

उज्झासूराए रायहाणि। निगमे य आगरे पल्ली। खेडे कब्बड दोणमुह पट्टणमंडब संबाह

२५२

वसहतेसंबाध १६ तापसादिकघणारहेतेआश्रमपद इतेविहार यात्राथैलोकरहाकुइतेसंनिवेस पंथीघणामिल्यारहेतेसमात गूजरलोकगोकलनोसमूहते घोष सम्प्रति अउंचुंपदेशतेथ० ७ वनुसीकटकनोसमूहतेसेना कटककतरवाणागमनेखंधा २ क्रियाणादिकेसहीतेसार्थसमूहएकवालोकमिलितेसवर्तकटी

॥१६॥ आसमपएविहारेसन्निवेससमायघोसेय। थलिसेणाखंधारे। सत्थेसंवट्टको

डूंगटेकरीसहितगामतेकोटकहीइ १७ वरंडीइवींटयुघरतेवाडो अथवापाडोघरनीवकटानीसरीतेरच्छा घरेनेविषइ एणइप्रकारइएतलोजेषेत्रभूमिकाविशेषते २ कल्पेआहारादिकनेअर्थिएहआदिदेइनीसालपडि सालकअभिग्रह ७ इमखेत्रथीउ

ट्टेय। १७ वाडेसुयरच्छासुयघरेसुवाएवमेत्तियंखित्तं। कप्पइउएवमाईएवंखित्ते

२५२

पेटानीपरिआकारेंचउखूणीगोचरीतेपेटा अर्धपेटानेआकारेगोचरीतेअर्धपेटा इघबसादिकहलहनोमूतेनमारगदीवाकउपनमउकरंतिलिपरिगोचरीपतंगीयानाकरवानापरिइबूटइघरेगोचरी४ शंखनाआवर्त्तनीपरिमांहिथकीबाहिरलगीबाहिरिथीमांहिआवेएहवीगोचरी सरलपुरिथा

णाउदरीहोइ

णाउभवे। १८। पेडायअद्धपेडा। गोमुत्तिपयंगवीहिआचेव। संबुक्कावट्टायय। गंउ

वेहलालगीजेपाछावलेतेगतुपच्चागतनामिछठीगोचरी १९ दिवसनीजेपोरिसिचुहर २ आहिइनोजेतलोकोइकालएतलेजकालमिकाभिग्रह एणेप्रकारेविचरतोहोमनबखलुनिश्च

पच्चागयोछट्ठा। १९। दिवसस्सपोरिसीणं। चउन्हंपिजत्तिओभवेकालो। एवंचरमाणे

थइकरी कालथीतेऊणोदरीपणउजाणिवउं २० अथवावलीत्रीजीपोरिसिइत्रीजइइत्रीहइ कांइकऊणइथकेग्रासआहारपाणीगवेषतोग्रहणकरतउ तेपोरिसीउत्पनथागे

खलु। कालोमाणं मुणेअव्वो। २०। अहवातइआपोरिसीए। ऊणाएघासमेसंतो चउ

क्रणी इगाथिकीपा कमइलामेक्रणाइ कइ — णमूणं अकारकाअधिकी वुणो दरीहइ — स्त्रीजाति अथवा पुरुष — आसरंसहित अथवा आभरणादिरहित

उत्त०अध्या०३० सागूणाएवा।एवंकालेणऊभवे।२१।इत्थीवापुरिसोवा अलंकिउवाणलंकिउवा

अनेराइबालकवय अथवा यौवनवय अथवा गरढपणं एतलामांहिकोइकवयने विषेवर्तइ — अथवा अनेरेकोइकवस्त्रइं धोलोसालोकाला धणीना फूलडारेकेसहित — रीसकरि अथवा हर्षितमुख इत्यादिकअवस्था एहमाहि लइअनेरेकोइकविशेषे सहित — कालमो अरादिकइ वर्णसहितअलंकारादिकसावसंक्रानाथि कलहदातादस्य नाहइ

२५२

२२

विअन्नयरवयत्थोवा।अन्नयरेणंववत्थेणं।२२।अन्नेणविसेसेणं वन्नेणंभावम

उसकतंनछेलंतं — दुणी परिहर्ष विकुरताव वर्णतानइमलुनिश्च यइ — तेहसावथकी उणोदरीय णोजाणिवउं — द्रव्यथकी असनादिकने विषेजथी गामादिकनइविषइ — भावथकी स्त्रीपुरुषादिकनेविषे जेजभाव

२३

णुमुअंतेउ।एवंचरमाणोखलु।भावोमाणंमुणेयव्वं।२३। दव्वेखित्तेकाले।भावम्मि

२५२

पर्यायीयवनादिकवर्णना भेदविवृत्तिगमकरायपर्याय — एतोद्रव्यक्षेत्रकालभावादिकेसघलेउणमकणोदरीपणइवर्त्तउ — पर्यवकहोइतावुंउणोदरीतिवारेतवात नेभिक्षुसाधुइतपर्यायनी अथवा पणइ विविधा जाणवी अनेइत्यादिके यथायोगि जाणवी — मेसइ१मसंमदा२ — पेतादिकइपर्वदेशा व्यचनाक्रकारमांहिलाकादिरलाघाव — नीउकमुगतिवकग — पर्यावलियाचेवं ४ ३ ४ हियायपुटहियाद ३ सियधम्माय ७ सत्र मिया ॥ इत्यथीमां ओडिकाक्षेत्रथीदेवल९मादिबादिरकाल थकीभिक्षावलिवारिइंसावथकीदूस तउरमतनहेत्मइन्ना आराणादिकलवा गअतियलनत्तउ

यआहियाउजेभावा।एएहिं ओमचरउ पज्जवचरउ भवे भिक्खू।२४।अट्ठविहगो

तिदणकथा वगोवरीसद — तिमसातमेएषणास्नेसे इआवगोवरीनासेद७ सेद — द्रव्यक्षेत्रकालभावादिक जेजेअनेराअभिग्रहबेतेक रइ — तेहनइसिक्षागोचरीकहीतीर्थकरगणधरप्रमुखेइंसत्तिहाव ए — २५

यरग्गंतु।तहासत्तेवएसणा।अभिग्गहायजेअन्ने।भिक्खायरियमाहिया।२५। खी

आदिदे ईसर्वावि दही घी गय — मरमपुष्टिनउंकरणहारेजे पालीऽनइंसाततिणिमरस घरजिसिद्धकामदीपइ — एरसानउंजेवजिवनंपरिह रिवुं — तेहनेरसविवर्जनरसपरित्यागनामातपकहिउतीर्थकर इ

रदहिसप्पिमाई पणीअं पाणभोयणं परिवज्जणं रसाणंतु भणिअं रसविवज्जं

कायानीस्थिति वीरासनंउक् इत्यादिन नैकहवाजीवनैमोक्षना स्कथ उग्राज्याकरी जनिइःकराजमः
गामिरापिवी सिंकुलेज्यादि गादोदाह नात्र्यावणकार धरीइकायाइ सिवियइ तेकायकिलेशं
राइवासथा नश्रमुह

२६

उत्तराध्य॰।२।१ ठाणा वीरासणाईआ। जीवस्स उ सुहावहा। उग्गा जहा धरेज्जंति कायकि

एकांतलोकरहितस्त्रीआ
नामातपकलि दिकनउआयातजितेन स्त्रीऽनपसुरहितथानके शयनउपाश्रयआसनपाटिया
वर्जितहनइविषइ ब्लापाटीयातेहनउसेवि
२७ वउं

२५४

लेसं विआहिअं।२७। एगंतमणावाए। इत्थीपसुविवज्जिए। सयणासण सेवणया

विविकशयनासनसंलीनता
नामाबडउलेहतप एवंकिहिउएहबाह्यतपन संक्षेपथिकीकहिउ अभ्यंतरतपबहुप्रकारनाए
नउजाणिवउं हप्रकारइ
२८

।विवित्तसयणासणं।२८ एसो बाहिरगतवो समासेण वियाहिओ अब्भिंतरतवो

२५४

तउ करउंछउंअनुक्रमइ पापस्यातपन वजानउवि आचार्यादिकनउवेयावच्चकरिवो उत्तम
ऽने उपनिवजिउं नय सूत्रादिकनोसज्झायपप्रकारइ ध्यानध्
तर २९ रिवउं

एत्तो वुच्छामि अणुपुव्वसो २९ पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ झाणं

पापनउआलोइवउंगुरुनइंस
काउसग्गकरिवउ एहअभ्यंतरतपछप्रकारइं सलाविवउंवनआलोयणारिहं पायच्छित्तदशप्रकारनउं
जाणिवउ तेआदिदेई
३०

उस्सग्गो विय एसो अब्भिंतरो तवो ३० आलोअणारिहादीअं पायच्छित्तं तु दसवि

जेसिक्षुवारिमियउवहइरू वजगुवादिकआव्यइऊलुथाइवुंव तिमज
नीपरिइकाबाइ प्रायश्चित्तनामाऽभ्यंतरतपतीर्थंक लीतेहआसिलहाथनउजोडिवुं वलीते
मवइ॥ हिउनीर्थंकरगणधर हनेव
३१

हं जे भिक्खू वहई सम्मं पायच्छित्तं तमाहियं ३१ अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेव

सिवासणी आसनप ... गुरुउपरमनसहितसावस्रूश्रूषा
तबगादिकनतेदेइ ... गुरुनतं आरेशाषमाणकरिवु ... विनयस्यरहतपकहितीर्थंक ... श्री आचार्यादिकने
वत ... २६ ... ३२ ... विषइ

उत्राध्ययप ... आसणदायणं गुरुभत्तिभावसुस्सूसा विणउ एस वियाहिउ ३२ आयरियमाइअंमि

धर्मसाधननेउकारणअशनादि ... आसेवनातेवेयावच्चसंबंधी ... वेयावच्चतेहकहितुं श्री ... गुरुपासिसह
कआणीदेवुतेवेयावच्च १० प्रका ... यथाशक्तिआत्मशक्तिनाव ... तीर्थंकरगणधरे ... नादिकनीवा
२५५ ... रतेदस इविषइ ... लपराक्रमसरिषउ ... वेनाजेवी
३३

मिअ वेयावच्चंमि दसविहे आसेवणं जहाथामं वेयावच्चं तमाहियं ३३ वायणा

संदेहऊपन ... तिमजवलीवास्त्रसणणा ... सूत्रादिकना ... धर्मनाउपदेस ... एपांचप्रकारेसझायऊइते ... आलोयण १ पडि
इवागुरुन ... बेतेहनउवारवारगुणि ... अर्थानुचिंता ४ ... नउदेइवउं ... सझायरूप अभ्यंतरतप ... उरकथा ... कमण २ मीस ३
इछबिउं २ ... वउ ३ ... ५ ... कहिउ ... ऊपनउं ... विवेग ४ तत्ताकिउ
तेआर्त ... स्सग्ग ५ तव ६ छेय
३४ ... ७ मूल ८ अणव
ठप ९ पारंचिय
१० ... २५५

पुच्छणा चेव तहेव परिअट्टणा अणुप्पेहा धम्मकहा सज्झाउ पंचहा भवे ३४ अ

ध्यानहिंसादिकचीतववी ... ध्यायेकसमाधिसहितथिरहट ... तेसिउधर्मनांदशविधशुकलध्यानचउभेदे ... तेध्यानरूपअभ्यंतरतप
इतेरौद्रध्यानवर्जीने ... चित्तथिकउ ... धर्मक्रमनांक्रोधकर्नु टालिवुतिणेपतलेट ... बुधतीर्थंकरादिकवदइ
६ ... कर्मनेएणणहारएस्क्षध्यान

ट्टरोद्दाणि वज्जित्ता झाइज्जा सुसमाहिए धम्मसुक्काइं झाणाइं झाणं तं तु बुहा वए

आसनबेसिवाने ... जेहसिक्षुचारितियनेवाव ... कायानउं वोसिरावुउ ... छठो अभ्यंत
सूवानइ ... विषइकुसारिवा ... रेकहितांहालिवउंचालिवउं ... चेष्टादिकइथीनवा ... रतपसबंधी ... आयरिय १ उवज्झा
विषइ ... नइविषइ ... नचरइ ... रिवउ ... भेदकहितो ... ए २ थेर ३ तवस्सी
३५ ... ४ गिलाणय ५ से

ए ३५ सयणासणठाणे वा जे उ भिक्खू न वावरे कायस्स विउस्सग्गो छठो सो

तो
एहततपबाह्यतअभ्यं ... जिकोइसम्यकप्रकारइंसनी ... तेहिउकताकलोसर्वसंसा ... ७ कुल ८ गण
र्थंकरगणधर ... अंतरबिउंसदेजविस्ता ... परिइं आचरइकरेमुनियती ... रनरकतिर्यंचमनुष्यदेवता ... ९ संघ १० संगइ
रपूर्वइकहिउ ... रूपथिकी ... नमिस्काययवांगा
३६

परिकित्तिउ ३६ एवं तवं तु दुविहं जे सम्मं आयरे मुणी से खिप्पं सव्वसंसारा

उत्रा०स०३०।३१ २५८

वितोषेवहिंजु म्रकाइअतनु थाइ | पंडितवारित्रिवतन हवुस्कधर्मस्वामिजंबू प्रतिकहइछइ | एहतपोमार्गाध्ययननोअर्थक हिउंतेसमाप्तथकामइ | वारित्रनोमार्गतेहकहिस्यइ

विप्पमुच्चइपंडिएत्तिबेमि ३० तवमग्गिज्जंसम्मत्तं ३० चरणविहिंपविरका

जीवनेसुषनोआपणहार | जेआदरीअंगीकारकरीनेघणाइकजीवप्राणी | तस्याअगतिहुएसंसारसमुद्रकिहवांतरइंतेरस्यपुण | एकबाजुथानकथिकीविरतिनिवर्तिवउकरिवउअनइ

मि:जीवस्सउसुहावहंजंचरित्ताबहूजीवा।तिण्णासंसारसागरं १ एगउविरइंकु

एकहायअसंयमहिंसादिकथीनिवर्तिवउसरिवउ | एकबीजनइविषइप्रवर्तवउउद्यमकरिवउउद्यमकरिवउ | तेकेसंयमसतरभेदतेहनेविषेप्रवर्तिवउआदरकरिवउ | रागप्रेमअनइद्वेषअप्रीतितेबेहुपापकहितापाहुआमइलो

ज्जाएगउअप्पवत्तणं।असंजमेनियत्तिंचसंजमेअपवत्तणं २ रागद्दोसेअदोपा

२५८

पापकर्ममिथ्यात्वादिकनेस्थापवर्तविणहार | जेसिक्षुचारित्रियउरुंधइनिवेवीनइअलगाकरइसदाका | तेनरहेमंडलसंसारमांहिएलेतेसंसारमांहिननमइ | मनोवचनकायदंडमनअहंकारसातागारवनऋद्धि

वेपावकम्मपवत्तणे।जेभिरकूरुंभइनिच्चं।सेनअच्छइमंडले ३ दंडाणंगारवाणं

मायाशल्यआदिदेईशल्यतेनकनउविकर | जेभिक्षुचारित्रियउत्यजेयफिहरइनित्यसदाका | तेनरहेनेसमेसंसारमांहिनरहेइविषइ | देवतानाकीधाजेउपसर्गहास्यद्वेषकशादिकपरीसहतथा

वसल्लाणंचतिअंतिअं।जेभिरकूचयइनिच्चं।सेणअच्छइमंडले ४ दिव्वेअजेउव

तिमतीर्यचनाकीधाउपसर्गअनेमनुष्यनाकीधाउपसर्ग | जेभिक्षुसमेइआहीयासेनित्यसदाकाल | तेनरहेनेसमेसंडलअगतिरूपसंसारमांहि | विकहजेकथातेविकथाच्यारिप्रकार | क्रोधादिककषायच्यारउकार

सग्गे।तहातिरिच्छमाणुसे।जेभिरकूसहईनिच्चं।सेणअच्छइमंडले ५ विगहाकसा

हिंसा० देवतानाकीधाउपसर्गनाछप्रकार हास्य १ पडवेस २ वीमंसा ३ पुढोविमाया ४ इत्यादि० तीर्यचनाकीधाउपसर्गचारप्रकार भयथी १ द्वेषथी २ आहार ३ अपत्यरक्षण ४ इत्यादि मनुष्यनाकीधाउपसर्गचारप्रकार हास्य १ प्रद्वेष २ विमासा ३ कुशील ४ इत्यादि आत्मकीधाउपसर्ग बालकनाकीधा ...

आगारादिकसं ज्ञाध्रकारनीत दनइ — तथा ध्याननंतं दिक विध्यांनएक आर्तध्यांन बीजो रौद्रध्यांन — जे भिक्षु वारि तिज्यउ वर्जइ परि हरोइ नित्य सदा कालइं — ते नरहे नरमइं मंडल ज्यारि गतिरूप संसारमां हि

उत्रा०सू०टा०प — य समाणां झाणाणं च दुञं तहा। जे भिक्खू वज्जई निच्चं से ण अच्छइ मंडले ॥६॥

२५७

पंमदा हतनइ विषइ — इंद्रियपंना ऽर्थ शाब्दादिकनें विष इ — समितिपांच नइ विषइ — कायकि याआदिदेइ आकियापंच नइ विषइ — जे भिक्षु साधु यतनकरे समिति नइ विषे इंद्रियार्थनइ विषे मध्यस्थपणानइ विषे क्रियाप रिहरिवानइ विषय थायो गइ निरोधनत्या दनरक्ष अनुरोधनक रिवइ — तेनरहे नसमें उल्या रिगतिरू

वएसु इंदिअत्थेसु समिईसु किरियासु अ। जे भिक्खू जयई णिच्चं से ण अच्छइ मं

पसंमा रमाहि इ — लेश्यानइ विषइ — छकाय पृथिवी आदिकनइ वि षइ — वेदनादिकने आहारनां कारणदकदां छते हन इविषइ — जे भिक्षु वारि तिज्यउ यतनकर इसारवधांन थाइ नित्य सदा काललगइ — तेनरहे नस मइं मंडलत्या रिगतिरू

डलेए॥ लेसासु छसु काएसु छक्के आहारकारणे। जे भिक्खू जयई णिच्चं से ण अच्छ

२५७

पसंमा रमंहि — मछादिक आहार गृहिवाना अभिग्रह पडवाल्याछइ — इहलोकना आदि भयस्थानक बोलकह्यातेहनइ विषइ — जे साधु यतन करेइ याजोय आर रपरिहारादिकभाव ध्यानकरइ सदा काल — तेनर हेन न मइंम

८

इ मंडले॥८॥ पिंडुग्गहपडिमासु भयठाणेसु सत्तसु। जे भिक्खू जयई णिच्चं से ण

इल्यारिगति रूपसंसारमां हिं — जातिमदादिकनें विषेइ आठमदनइ विषइ — ब्रह्मचर्यनीगुप्तिनें विषे एकवाक्ति नें विषे यतीधर्मदशविध तेहनइ विषइ जा णवो — जे भिक्षु दसविध ब्रह्मचर्यगु प्ति सेवइ यतीधर्मपालेइ मयत्नकरइं नित्य सदाका

९

अच्छइ मंडले॥९॥ मएसु बंभगुत्तीसु भिक्खूधम्मंमि दसविहे। जे भिक्खू जयई णि

लिलगइ — तेनरहइ न हीन नमइं परमंडल ज्यारिगतिरूप संसारमांहि १० — श्रावकनी प्रतिमा अभिग्रहविशेष दसा ए तपादिक ११ प्रकारनी तेहनें विषइ — यतीनाजेमासादिक नी प्रतिमा अभिग्रह वि शेष १२ प्रकारनी तहने विषइ — जे भि क्खु

च्चं से ण अच्छइ मंडले॥१०॥ उवासगाणं पडिमासु भिक्खूणं पडिमासु अ। जे भिक्खू

मीउदिनव्रत्यवनपणो ठुडामसामावीरमसारू दे॰ इग्यारमीअपनेरावितीवठनयवर्तविचारकरी॰ उपवासइं अनेगविगांम बाहरिकाउसगकरे॥ बारमी ४९ हारनी समसांनमांकाउसगपवामइ १२४ निरूपण १२॥

मत्रअंतरापासिंकराव्वे दन वमी एकांन रात्रीपणा पोलिसारंआरंभसमाव य नकरावेरहसामी नआअस्करमीवरजपे तनधासीबाराथ१०ऽरपा रमी एत्वारित्रनीयानी परिक्रमनिआदिगु णकरीमलितमास११ इमश्रावकनीप्रतिमा नेंविषइ॰ब॰ भिक्खू प्रथममासनीएक दातऽनपाणीनीबी जीबंदतनीमासमरवी जीद्तिनीमासइवी थाम्तनमाषडइम वमीछठीदाननमा महमोनमी७दाननि तेवाजुवणिकादि नीरसमुदाररत्ना वमीउनात्रिनाठवठ नपगामबारिरदना मणकरेटनवमीपाल इमत्र७दिनलगीदम

नरक ४८ आदनी ११ प्रतिमोइन वे गदेमणा १वपरमामाद यउपोस८ प्रतिमापः बंभदमविरत आरंभ टपमत उत्ति ६ रक्त ९९म मण ११ १ मासम मन्के पानिमप्रक नाह आगारमाकल्यानत्म वडी बीजामास २ आगा हतपपालि ३ त्रीजोतम यकालिसामायकको उ बाघीप र्वतिथिपोसध करिध पांचमीकाउसग माहितरहतपालि छ डीरात्रीभोजननकरिछ ७ सातमी नव ओदि ब्रह्म चर्यपालि ७ आठमा नकरि ८ नवमा परिग्रहि का उ नमा ऋकरछ दीनगसिमीलइदमानन मीनमविकआदान सपद्माम उआवमीइ पोन अनसमावटनक छपतिंजाक्किानि

मनीपरिसहय नकरेणलइ — तेनरहेनसमइमंडलथ्या रिगतिरूपसंसारमांहिं — अर्थदंडादिक्रि याउनेविषइ — भूतग्रामकहीइं १४भेदजीवनातें हनेविषइ — अ मुग्धवीरामीआदि १५भेदपरमाहमीनइ विषइ — जसाधु यतक रहमा

११

भत्तपच्चाय जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले ११ किरिआसु भूअगामेसु परमाहम्मिएसु अ जे

परिसहद्देधरणा निरतीचारपइसहइ — तेनरदेनसमंमडलथ्यारि गतिरूपसंसारमांहिं — गाथासोलसअध्ययनउजे छइतेगाथाषोडशसूयगडांग प्रथमश्रुतस्कंधनासोलअध्य यनतेहनइविषइ — तिमवलीपृथिवी संमादि कसत्रप्रकार संयमतेहने विषइ

२५८

१२

भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले १२ गाहासोलसएहिं तहा अस्संजमंमि य

जेभिक्षुव्रारितित्रयत्नकरइ अपसिवेवांछिवेनिसमइ — तेनरहेनसमइमंडलथ्या रिगतिरूपसंसारमां हिं — ब्रह्मचारिकादिक १०भेदहसहनेवि षेज्ञातानाध्ययनार१तेहनइवि षइ — असमाधिस्था

१३

जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले १३ बंभंमि नायज्झयणेसु ठाणेसु २५८

नकर २०भेद नइविषइ — जेभिक्षुव्रारितित्रयत्नकरता थिवेजांणिवेवांछिवेसदाकाल — तेरनरहेनसमंमंडलथ्यारि गतिरूपसंसारमांहिं — वारित्रनेकालगेकरेतेएकवीस सबलातेहनइंविषइ

१४

असमाहिए जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले १४ इक्कवीसाए सबलेसु

क्षुधादिकपरीसहरराय तेहनइविषइ — जेभिक्षुव्रारित्रियउयत्नकरइसा वनानेसाविवेकालयत्नणवेवइन समदाकालगइ — तेनरहेनसमंमंडलथ्यारिगति रूपसंसारमांहिं — तेवीससूत्रकृतांगना माध्ययनतेहनइ विषइ

१५

बावीसाए परीसहे जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले १५ तेवीसाइ सु

१०भवनपती८व्यंतर५ज्योतिषी१विमान कादश२४देवतानेविषअथवा२४तीर्थंक रनइविषइ — जेभिक्षुव्रारित्रियउयत्नक रइधरइआराधेनित्यसदाका लगइं — तेनरहेनसमंमंडलथ्यारिगति रूपसंसारसमुद्रमांहे — पांच महा व्रत

१६

रूवाहिएसु सुरेसु अ जे भिक्खू जयई निच्चं से न अच्छइ मंडले १६ प

नी२५जेसावनाते फनइविषइ । दशाश्रुतस्कंधा कल्पव्यवहारना २६ उद्देशाकाले ते हनेविषेमे । जे भिक्खु वारित्रियेउ यतन करइ साव गमनइ विषे कालग्रहणादिकनइ लेषेनि त्यसदा काललगइ । ते हनर हेनसमहमंडल व्यारिगति रूप संसारस फइमांहि

उन्नास्सुटाप णवीसइ सावणाहिं। उद्देसेसु दसाईणं। जे भिक्खू जयई णिच्चं से ण अच्छइ मंडे

वयवक्कादिकजे अणगार साधुनेहनागुण २७ तेह नइविषइ । यतीनोउक्त आचारांग नाअध्ययन २५ तेहनइ विषइ । जे व्यारित्र यतनकरइ पालिवे प्रयविवेकरी नित्य सदाकाल लगइ । तेनरहेनसमे मंडलव्यारगतिरूपसं

२५८

१७

लोए अणगारगुणेहिं च पकप्पंमि तहेव य। जे भिक्खू जयई णिच्चं से ण अच्छइ

सारस मुइमांहि । पापश्राविवा नांशास्त्रनिमित्ता दिते २९ प्रकारनइविषइ । मोहनीयजिहांरहेनि मित्रणावं ईइते मोहनी ३० तेहनइविषइ । जे भिक्खु वारित्रयचयतन करे णपरिहरइ सदा काललगेनि त्य । तेनर हेनसे मइम उअव्या

×नक×

१८

मंडले। १९। पाणवसुअपसंगेसु मोहठाणेसु चेव य। जे भिक्खू जयई णिच्चं से

२५८

रिगति रूपसंसार समुद्रमांहिं । सिद्धपरमात्मआदिगुणे लिसमये जयते सिद्धनादि कगुणइ ते हनइ विषमनवचनकायानाशुभजो गव्यापारनलासेते हनाउरलेद आत्रोयणादिक । तेहनेविषे रिहताविकनीआशा तनाते बीसनउ तेहनेविषेउवजात वार्यनीआशातनातवरते हनइ विषइ । तेसाधुयतनकरइ सदहे वपरिहरे रूडीप रिनित्य सदाकाल

१९

ण अच्छइ मंडले। १९। सिद्धाइगुणजोगेसु तित्तीसासुअ जे भिक्खू जयई सायणे

तेनरहेन समंसंडलव्यारिगति रूपसंसारसमुद्रमाहि । णाइ प्रकारे एह पूर्वकिरा जेथानकतेहनइविषइ । जेचारित्रिपंचयतनकरेयथायोगस उहिवइकरिदपरिहरिवइपालवादि कइ सदाकाललगी । ते हि अर्थापि ऊगाव

२०

निच्चं सेण अच्छइ मंडले॥२०॥ इइ एएसु ठाणेसु जे भिक्खू जयई सया सेखि

लोसर्वव्यारिगतिरु पीयासंसारसारथि की । खिप्पमुच्चइ मूंकाइ अलगाउथाइ पंडितक ननाजाण एहवुं सुधर्मास्वामिजंबू प्रतिकहे । एकारणविधि अध्ययननो अर्थ कह्यो लेस मात्रथकी

२१

प्पं सव्व संसारा। विप्पमुच्चइ पंडिए त्ति बेमि। २१। चरणविहि अज्झयणं सम्म

॥ इति श्री चरणविधि अध्ययन इवारित्रपालिवउ कह्योने हवारित्र पालिवउं तेआउ मादस्थानकें साधुपवर्त्तानइं कुस्थेनहमलीपहित पुरुषे प्रमादपरिहरिवउं तेहदेखाडिवाव प्रमादस्थानक नामा अध्ययनबत्रीसमउ कहइछइ ३१

३१ अनादिकालनो तेके हवो अविरतिरूपमूल तेणे सहित सर्व दुःखमयजे संसार तेहनो जे प्रमोदमूकाइवो एतले दुःखनो नीगमवो तेनाप्रोक्ष्ये मुझ नइ विषइ पणिन धीपणानो प्रतिहू

उत्तराध्याय ॥३२॥ अच्चंतकालस्स समूलयस्स सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो। तं भासओ मे पडि

पूर्णचित्तजेहनो एहवा तुम्हे अविक जीवो सांभलो तेके हवो छे एकांतहितनो करणहार २ मतिज्ञानादि सर्वज्ञानने प्रकासवै निर्मलकरवइ करीनइ मतिअज्ञानादिक अज्ञानइ ना

२८०

पुण्णचित्ता सुणेह एगंतहियं हियत्थं ॥१॥ नाणस्स सव्वस्स पगासणाए अन्ना

दर्शनमोहनीयने विशेषै वर्जिवो परिहरिवइ करी चारित्रनें घातनाकरणहार एहवा रागनें द्वेष तेहनइ संक्षेपइ सम्यग्प्रकारइ क्षइ एकांतिनिराबाधरूप एहवोते हसम्यक्प्रकारे पामें मोक्षमुक्ति स्थानकप्रतिइ पामइ २

णमोहस्स विवज्जणाए रागस्स दोसस्स य संखएणं एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं

२८०

तेह हवे इ मोक्षनो उपायकहो तेहनो एकही छैते मार्गश्री गुरुधर्माचार्य शास्त्रनाजाण श्रुतपर्यायादिक हवे द्ध तेह नीसेवा एतले गुरुकुलवासेवसिवो साधस्येवाकरवी विशेषइ वर्जवा परिहरइ णावालजन पासत्थादिकनी हरिवेगलीकरिइ सज्झायपप्रकारे उर्ध्वलाईहालीने

॥२॥ तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा विवज्जणा बालजणस्स दूरा। सज्झायएगंतनि

एकांतनें विषे निर्देष सेवणाकरवी सूत्रअनेंसूत्रनाअर्थनो चिंतविवो तेहनें विषे धृति एकाग्रपणो एतलानो पदार्थ वांछें जेज्ञानी एकाग्रविनाज्ञान प्राप्ति न हुइ ३ तेह साधु एहवो आहारवांछे मितप्रमाण गवेषणीक ४२ दोषरहित वांछे रहितो

सेवणा य सुत्तत्थसंचिंतणया धिई य ॥३॥ आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं सहा

यको एहवा शिष्यनें वांछइ निपुण जाण अर्थ जीवादिकनें तत्त्वनें विषइ जलीबुद्धि जेहनी तेह साधु एहवो निकेतउपाश्रय रहिवानो ठाम नें इहइ वांछइ स्त्रीपशुपंडक तेणें करी रहित ज्ञानदर्शन चारित्रनी समाधिनो वांछणहार अमण तप ना करणहार श्रीतेक २

यमिच्छे निउणत्थबुद्धिं निकेयमिच्छेज्ज विवेगजोग्गं समाहिकामे समणे तवस्सी

थ कदाचित् न लहइं नपामें निपुण सहाय शिष्य बुद्धि गुणें करी सहित समान बइ ॥ तेगुण केरवो ज्ञानादिक गुणें करी अधिको ॥ अथवा ज्ञानादि गुणइ समान सरिखो ॥ तउ शिष्य विनाए कलो पिण

उत्रअसूत्राप ।। न वा लभिज्जा निउणं सहायं गुणाहियं वा गुणओ समं वा। इक्को वि पावा

पापना कारणकरणीय विवर्जतउ परिहरतो एक ॥ संयममार्गनइ विषे विहरकरइ मन चित थिरकरें ॥ पांचइंद्रियना कामभोगनें विषे अमजमतो प्रतिबंध अणकरतो . ५ ॥ हिवइं मोहनीयनीउत्पत्ति कहेछें जिम इंडाथी ऊपनो तीपनो बालक पंखीआ

२५८ इ विवज्जयंतो विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ।।५।। जहा य अंडप्पभवा

अनें इंडउते बलाक पंखीथी ऊपनो जिम ॥ इम मोहनो आयतन ऊपजिवानो वाम रहवुं निश्चें करीनें तृष्णा वांछा जाणवी ॥ अनें मोह तृष्णा वांछानो थानक वदइ कहें तीर्थं

लागा। अंडं बलागप्पभवं जहा य एमेव मोहाययणं खु तण्हा मोहं च तण्हाय २५८

करगणधर एम ॥ राग सनेह लेण ॥ रोग तेमाया नें लोभ द्वेष क्रोध मान एसर्व कर्म आठ प्रकारें ते हनो उत्पत्ति थानक एतलें रागद्वेष थी ऊपजइ ॥ अनें आठ प्रकार कर्म ते हमोहनीय थकी उत्पत्ति एहवो कहइ तीर्थंकर गणधर ॥ अनें आ

णं वयंति ।।६।। रागो य दोसो वि य कम्मबीयं कम्मं च मोहप्पभवं वयंति कम्मं

ठ प्रकार कर्म तेह जाति सहित जन्म अनें मरण नउ मूल बइ एतलें कर्मइ जन्म मरण पामियइ ॥ अनें जन्म मरण ते दुःखनो कारण हारव दइ कहइ तीर्थंकर गणधर ॥ ७ ॥ दुःख हणणो परऊं घयो जेहनें तेहनें नऊइ मोहनीय कर्मक षायादिक

च जाईमरणस्स मूलं दुक्खं च जाईमरणं वयंति ।।७।। दुक्खं हयं जस्स न होइ

मोह मोहनीय हणणो परहो घयो जेहनें तेहनें नहोइ तृष्णा वांछा ॥ अनें तृष्णा वांछा जेहनें हणाणी बइ ॥ तेहनें नहोइ लोभ ॥ अनें लोभ हणाणो छें जेहनें ६

मोहो मोहो हउ जस्स न होइ तण्हा तण्हा हया जस्स न होइ लोहो लोहो

तेहने नहीं किंचनता द्रव्य एतलें द्रव्यनें केहेंजो म । रागप्रेम द्वेषअप्रेम तोष । अनेंमोहनीयक र्म तेहप्रतिहं । उद्धरिवानी कामना वांछा तेहें घणोई । किमसूलजा लकहीयेंब ना सहित

उत्ता०सू०३२प

उज्झस्सनकिंचणाइं ७ । रागंचदोसंचतहेवमोहं । उद्धत्तुकामेणसमूलजालं । जे

जेजे उपाश्रयकहितां रागद्वे ष मोहटालिवाना हेतु । पडिवज्जिवाअंगीकार करिवा । तेउद्धरिवाना कारण ऊंकीर्तिसिउंकहिस्यउ । आनुपूर्वीइं अनुक्रमइं ८ । रसदूधदहीआदिक विगइ

२५२

जेउवायापडिवज्जिअव्वा । तेकित्तइस्सामिअहाणुपुव्विं । ९ । रसापकामंन

तेअतिशयइं नसेविवा । प्रायंहिते रसअनेंप्राधिकां दीप्तिनेधातु वीर्यादिकनाकरणहार वधारणहार ऊइं मनुष्यनइं । दीप्तवीर्यादिवंतनें कामकंदर्पतेह नेंवधारें । अतिशयस्यूं मानुष्यआवें एतलें कंदर्प नें बलजालणवो । केहनीप रिजिमदु महवृक्ष बा दवंतफ

नसेविअव्वा । पायंरसादित्तिकरानराणं । दित्तंचकामासमभिद्दवंतिदुमंजहा

२५२

लजेहवोतेहनेंपंखीया मनु ष्य आवइ फलनें कार्जे ॥ १० । जिमजिहांदावानलनउअगनि घणोंइंधणकाष्ठकहां जिहां एहवावनअटवीनेंविषे तेहवलीअगनि समारुतवायरेंकरी सहितजिकोउपशांत पणोनपामेंवहितोउप

साउफलंवपक्खी । १० । जहादवग्गीपउरिंधणेवणे समारुओणोवसमंउवेइ

समिंनही वाज्याज करे । एणेंदृष्टांतेंइंद्रियरूपअगनिप्राणिअति सरसघणाआहारनोलेणहारनइं । ब्रह्मचर्यधारीकोईनइंहितसुखक रणोनहोयइ ११ । स्त्रीपसु नपुंसकइं रहितजनइ

। एविंदिअग्गीविपगामभोइणो । नबंभयारिस्सहियायकस्सई । ११ । विवित्त

यनउपाश्रयतिहांआसनरहिवोतिहां तिर्यचजनएकांतइं एतलेंआश्रय निर्दोषनासेवनहारनइं । ऊणोदरीतपना करणहारनइं । इंद्रियनादम णहारनइं । रागरूपीउवेरीधर्षनहीपरा भवनकरइंचित्तनइंसाध नामूमतानइं

सयणासणजंतिआणं । ओमासणाणंदमिइंदिआणं । नरागसत्तूधरिसेइचि

जिमव्याधिकोढादिकरोगगुरुचायादिकउपधेक विलाडमार्जा वसतिनामूलकहि इस्त्रादिरनीजा
रीपराजितपराभविउतेहनइपीडनकरइ जिम रनीस्त्रा तांघरनेसमीपने तिनइवसतिर
विषे हिवोप्रसस्तनही
१२

उत्तराध्य० त्तं।पराइउवाहिरिवोसहेहिं।१२ जहाबिरालावसहस्समूले नमूसगाणंवस।

२५२

मलीनही रहेइहा स्त्रीतघानकुंप्रकनानिलयर ब्रह्मचर्यनाधरणहारनेनिवासरहिवो स्त्रीने
नइ दिवानावामनें मांहिइ युगतोनही तेहसंगतिथीब्रह्मचर्यनिर रूप
६६ १३

हीपसत्था एमेवइत्थीनिलयस्समज्झे। नबंभयारिस्सखमोनिवासो १३ नरूव

बोलाविवा वस्त्रआभरणनी हसनोवच अंगनेउपांग बांकेलो स्त्रीजातिसंबंधीउअनेमलोदीसे
नीचतुराई शोभा नकहिवो नेमोडिवो चनेदेष. बेंएहवोचित्तनेविषेकल्पनाकरी
वो धापीने

लावण्णविलासहासं नजंपिअंइंगिअपेहियंवा।इत्थीणचित्तंसिनिवेसइत्ता

२५२

देषिवाअणीनव्यवसेत्कहितांअध्यवसायन दर्शनजोइवो निश्च अभिलाषवां रूपवेषशृंगारादिकनो
करइ श्रमणसाधुतपउपवासादिकनो इच्छिकरीने इ बानकरवी चिंतनकरिवोनिश्चइं
करणहार १४ नामेकरी गुणेकरीकी

दट्ठुंववस्सेसमणेतवस्सी।१४।अदंसणंचेवअपत्थणंचअचिंतणंचेवअकित्त

र्तनक एतलेस्त्रीकांनक उंआर्यजेधर्मादि तेहितनोकरणहारसदासर्वदाब्रह्म अतिशयस्फ
रवो रिवो कतेहनेयोग्यएहवोजे चर्यनइविषइरागीवइ तेहनइं मनुष्यलोपर
ध्यान १५ हारहो देवांग

णंच।इत्थीजणस्सारिअझाणजुग्गं।हिअंसयाबंभवएरयाणं।१५ कामंतुदेवी

नाइंतेदेवतानीदेवांगनाकेहवी तेणीइगुणसंयमथीषोभवीनसक्या तउगुणएकांतहितनोकर
विभूषितअलंकारइसहित त्रिकुगुप्ते गुप्त णहारइमजाणीनइ
बइ धर्मपालइनिश्चे

हिंविभूसियाहिं।नचाइआखोभइउं।तिगुत्ता।तहाविएगंतहिअंतिणच्चा॥

स्त्री पशु पंडक रहित जे थानक ते भाव ते स्तुति यतीने प्रशस्त प्रसंस्नीय जाणवो १६
मे सनाअन्नि जाणा वां बाल धरण हार मनुष्यचारि गति रूप संसारथी जिकोई बीहेछै ते हनइ
ऋतध र्मादिक

 विवित्तावो मुणिणं पसत्थो ॥१६॥ मुरकासिकंखिस्स विमाणवस्सा संसार भी
नइं विषे रहितछै ते हनइ
नथी नाथी तेहवो अनेरो कोई स्वरहो दितो लोकनें विषे
तेहवी स्त्रीजाति बालक अज्ञाननामन नी हरणहारी ७

रुस्स विरुस्स धम्मे । न तारिसं दुत्तरमत्थि लोए । जहित्थिउ बालमणोहराउ ॥१७॥
एहवि जिक सासंग संबंधी स्त्रीजाति संबंधीया ते अतिशयस्फं अतिक्रमा निवारीनें
पछे सुखइ ऊतरीइ एहवाई थवी जा था कता ६ व्यादिकना संग ही ६
ते ऊपरि दृष्टांत कहेछै जिमम्मो ता समुद्र अयं सुखन इं ऊतरी नै

एअ संगा समइक्कमित्ता । सुउत्तरा चेव भवंतिसेसा । जहा महासागरमुत्तरित्ता ।

गंगा समान जे मोटी नदी ते सरषे तराये एतले एहवा ऊडं तो नानी नदी नो संकाहिवो १८
कामभोग नी जे अनुगृद्धि वाबा ते हथी ऊपना जे खलु निश्चें करी दुःख अमा ता रूप
समस्त लोक प्राणी ना समू हनें छै ते केहवो

नइ भवे अवि गंगासमाणा ॥१८॥ कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुरकं सव्वस्स लो
सदेव कहितां देवता ई सहि त एतले देवताई पिणकाम नी वृद्धिका जे दुःख नें का जं इऊ पजई
जे काया ने दुःख रोगादिक मानसिक मननी वांछी वस्तुना वियोग थी ऊपनो थो मो पिण ते कहइ
ते दुःख अमा सतानो अंतवे हनो पार पामइ वीत रागका मभोग नी इच्छा नो निवारण

गस्स सदेवयस्स । जं काइअं माणसिअं च किंचि । तस्संतगं गच्छइ वीअरा
हार छइ १९ जिमवली
किंपाक विषवृक्षना फलमननै रमणीक रुचिना करणहार
रसें करी वर्ण इं करी गंध इं करीनें शुणपाई ताथका एहतो ओ कमां हि प्रसिद्ध छइ
ते खु इक

गो ॥१९॥ जहा य किंपागफला मणोरमा । रसेण वन्नेण य भुज्जमाणा । तखुद्द

१०

हितां उच्छासो पक्क पाणे पाम्यतां मरणं एहवी उपमाइ कामभोग ज्याफलने उदे जे इंद्रियपनाविषयशब्द रू
म एहवा जीवितने तइ रूकक्ष इम मरण ने विषे जाणवा एतले कामभोग ज्यां अ परस गंध फरस जे मनोज्ञ
पश्चमाणविपाक आपइ नंतरिजन्म २० मनो हर मनने ए लेताबइ

उत्रासू.टा.१८ एजी विअप्फमाणा एवमाकामगुणा विवागे ॥२०॥ जे इदियाणं विसया

२५५

ते इंद्रियना विषयने विषे चित्तनो अभिप्राय तिमरे करे अमनोज्ञ पाडुआ इंद्रियना विषयने विषे चित्त
प्रवर्तावइ नहीं तो साक्षात करे इंद्रियनो स्कंक हिवो मन अंतःकरण करे इंद्रियप उपण प्रवर्ता नोए
विइ काग्र

मणुन्ना। न तेसु भावं निसिरे कयावि। न या मणुन्नेसु मणं पि कुज्जा। समा

पणे राग द्वेष उत्तरिवानी कामनी तेहनो वर्ण संस्थानादिक जे रूप ते ग्रहण जे रूप जे मनोज्ञ मनो
यावा इजेहनें तेसा रिषी समाधिका कहितां ग्रहणहार कहइ तीर्थंकरादिक कहै हर ते राग प्रेमनो उपजा
मीश्रमण वारित्री उत्तपस्वी तपनो करणार नेत्रनो रूप ने रूपटालइ वणहार कहतां हवा तीर्थ

हिकामे समणे तवस्सी ॥२१॥ चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्न

२५५

करादिक कइ समउ राग द्वेष रहित रहितजे ते हपा रूपआ रूपने विषे रूपनें चक्षु नेत्र ग्रहे एतले नेत्र रू अनें नेत्र
जला रूपने विषे ते वीतराग २२ पने ग्रहे एहवो कह्यो तीर्थंकरे नो रूप ग्र
गणधरादिके हणग्राह

माहु समो अ जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥ रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति। चक्खुस्स

कएतले रूप तें नेत्रनें ग्रहैं वाद्यो मनोज्ञ कहितां गास रूप तेणें सहित एहवो अने अमनोज्ञ रूप रहित मनोज्ञ
ग्य इम कहे तीर्थंकरादिक नेत्र रागनो हेतु कारण कहितां हवा कहै पि चक्षु ते द्वेष अयं तो एहनो हेतु का
णकहे अपिण रण कहिवा कह्यो तीर्थंकरादिके

रूवं गहणं वयंति। रागस्स हेउं समणुन्नमाहु। दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु

३३ रूपने विषैं जे कोई गृद्धि मूर्छा अभिलाष तीव्र यथा स्थिति आउखानी ते हथिकी उहरवते आ के हवो प
आकरा उपेंति कहितां धरतां धरें तेह काल करीयै ते कालें विनाश मरण पामइ रिइं जिन
राग आउ

॥२३॥ रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं रागाउरे से ज

रत्तो मणोवा दित्तेपतंगिया वोरिंश जीव उभणो · अलोकदीवा नीशिपाक दीतेकालीने विषेलोलंतलं पटथकोमरणपामे · जेकोईपाहृत्यारूपदेषीतेहनेविषेद्वेषअणतिपामइ तोवृस्याकरोपामइ

२४

उत्तराध्ययन

दुदंतदोसेण सएण जंतू न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥ २४ ॥ एगंतरत्तो रुइरंसि रूवे अतालिसे से कुणई पओसं । दुक्खस्स संपीलमुवे

दुवापयंति आलोयलोलसमुवेइमच्चुं ॥२४॥ जे आविदोसं समुवेइतिव्वंतंसि

तेदिनहंगएस्वव्यरतेविषेतेहउरकाचिंतनोसंतापउ पतिकहितापामइ · डःखेदमासकाइस्तेडदंत एहवेतेजनेतेषेपोतानेकोधाहनदीपरनइकोधइ जीवडःषपामइ · परंतेहनेपाहृउरूपकोइअपराधपाहउनथीकरतोएतलेरागद्वेषवेतेपाहूसाढइ

रकणेसेउउवेइडुक्खंडुद्दंतदोसेणसएणजंतूनकिंचिरूवंअवरज्झईसे ॥ २५

२५ एकांतपणेघणोरागीरातो मनोहररूपनेविषइ · तेमनाहराते हवोनहीएतलेपाहृत्यारूपनेविषइ · द्वेषअप्रीतिअतिशयसपउकरइ · डःरकसंबंधिनीअतिशयअत्रपामानोसमूह · पामइबालकअबुधनामुनि

पाएगंतरत्तोरुइरंसिरूवे अतालिसेसेकुणईपउसं डुरकस्ससंपीलमुवे

२५६ · २६६

नतीपावेतेषेषरूपडःखदइकरीनेतेकारणमुनिश्वरमाधरागरहितजइरागपुणडःषनोहेतुकारणजाणवउ २५ · एहवामनोहररूपनेअनुगकेनइप्रवर्त्तइएहवेबोआशानेकेनइप्रवर्त्ततोएतलेरूपनीआशाइप्रवर्त्ततप्राणीजीव · वचवा

इबालेणलिप्पईतेणमुणीविरागो ॥२६॥ रूवाणुगासाणुगएअजीवेचराच

लतोत्रसअनेथावरएथवीप्रमुषनेइत्येअनेकजातिनाविविधप्रकार · चित्रविचित्रअनेकप्रकारशस्त्रइकरीनेतेप्राणीनेडःषऊपजावइ बालकअज्ञानीपापाकरेतोथको · पोतानेअर्थेइदुकतेहितथाक्लिष्टरोगादिकपरिणामेपीडित २७

रेहिंसइणोगरूवे । चित्तेहिंतेपरितावेइबालेपीलेइअत्तट्ठगुरूकिलिट्ठे २७ रू

मनोहररूपनेअणहारगाढिकइ · परिग्रहमूर्छाप्रयतेतेकरीनइ · उत्पनवाऊपराजिवानेविषइचोरादिधीराषिवानइविषे · अनायारकाप्रयोजनअणीविनाशनेविषेविरहनेविषइ · किहांथकीसुषतेहनइहोयइतेसनासंजोगवियाकना

वाणेरक्खणसंनिओगे वए विओगे अकहिंसु

वाणरवाणणपरिग्गहेणउप्पायणेरकणसंन्निउगेवएविउगेअकहिंसु

कालमें विषइ । अरतिनिअसंतोषतेहनो लोभकरीने किस्यो पीमुपरोइ २८ रूपनेविषेअतृप्तअसंतोषीपरिग्रहकोतेहनापरिग्रहनेविषेसक्तसामान्यपणेआसक्तघणोजुडे तेमाटे उपचयतो कहितोघणोआस

उत्रा॰सूत्र हं से ॥ संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥२८॥ रूवे अतित्ते अ परिग्गहंमि । सत्तोवसत्तो

रूपवेधुणउष्टिसंतो पामइ मानेरोरआरूपदेवाअसंतोषनेदोषइ दुःखीउघिकोपारकोरूपवंतवस्तुदे षीने लोभेकरीकलुष उपचितथको अणदीधीवस्तुप्रतेचोरीपिए

२५७

न उवेइ तुट्ठिं । अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स । लोभाविले आययई अदत्तं ॥२९॥

लोभेकरीपराभविउवे जेतेहनई अदत्तनालेणहारचोरीनाकरणहारनइ रूपनेविषेअतृप्तनइ असंतोषीने तथापरिगृहनेलेवे असंतोषीनइ मायासहितमृषाजूठवचबोलिवो तेवाधइ हाठिपानइ

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो । रूवे अतित्तस्स परिग्गहे अ । मायामुसं व

२५७

लोभनादोषथी लोभीचोरी करेलोभपडीकोइहाबइतो मायामृषाबोलइ तिहांपिणमृषाबोलिवानीवृद्धिकेदुःखनइ थीनमूकाइरषेकोइजाणे एणेप्रकारेतेविषयी मृषानेपछेरूपनोलोभीजूठबोला लोभइपकडूजूठबोल्यानीपछा मापडुःखधरे वलीमृषानेपरिहरिवेदुःखआगलेएहसरूपजेस्त्री नोभर्तारकिमवंचिसिउंइमकरतो दुःखलहइपामइ

ड्ढइ लोभदोसा । तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥३०॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्थ

प्रयोगकालेबोलिवानेअवसरविरषेजेबोलवोआगलेति णिवानेतेदुःखपामेउदरतईकहितादुखपामेअनिविडि वितथकीपरमवतुर्गतिइसादिकथकीजनलेरवो जिमजूठबोलितिमअदत्तलेतो पारकोअणदीधोलेतोथको मनोहररूपने विषेअसंतोषी

ओ अ । पओगकाले अ दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो । रूवे अतित्तो दु

थकोदुःखी आमआत्मारहित निश्चारहितते पामोकोइनक मनोहररूपनोरक्तरागीतेहनोनर मनुष्यनइ एवंएणेप्रकारेइ किहांथकीकेषकडइअपितुनहइ कदाइकाइदुःखनामपइदुःखजहोइ

हिओ अणिस्सो । रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं । कत्तो सुहं हुज्ज कयाइ किं

तितः रूपना ज्ञोगववानें विषे षिणक्लेशद:रक जीपजावइ ते करइ दइ जे मनोरररूपनो रपद दी
पामे उपतिनऊइ तालगइ धोमोथाइ बइ गविवाने कालिं दु:षज्ञात्मानइ कष्टइ जीवार
पामे ३१ लिया.

उत्रा सू०२०५ चिंतओवसोगे विकिलेसदुक्खं। निव्वत्तइ जस्स कएण दुक्खं॥ निव्वत्तइ ज ३२

गोवे ते षोटो वै एणी परिइ जत्तोजिमरूपऊपरि रागऊइ वे तिमअतिरायस्यउदेष पामिवो तेथामइ दु:षनासमूहनी परंपरा श्रेणि

२५८

स्स कएण दुक्खं॥ ३२॥ एमेव रूवंमि गओ पओसं। उवेइ दुक्खोहपरंपराओ। प

देषइ करी सहित जिवारे चित्त अंतःकरण हवो तिवारपछी चीकणाबाधइ घणोइक तेह कर्मतेह नेवली तेहइ दुरकनो कारण विपाकअनुत्रविवानइ कालिं इहलोक परलोकइ मनोहर रूपने विषे वि रक्त राग अणधरतो एहवो तेदुष्रबइ ३३

दुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं। जं से पुणो होइ दुहं विवागे॥ ३३॥ रूवे विरत्तो मणुओ

२५८

तथा शोक रहित एजेमदे दु:रकपापनी परंपरा श्रेणि ते नलीपाइन जवमध्यकार मांहि घको तेऊपर
तयको कसा. णीकरीने रवरमाइ जमतो निवर्ते दृष्टांतक हेबइ जि

उविसोगो। एएण दुक्खोहपरंपरेण। न लिप्पई भवमज्झे वसंतो। जलेण

मपाणीइ करीने पुष्करणीनाकमल नेपानमो लिपाइ ब्रिपइ नहीं मनुष्यउणेवि रागीजाणवो एगाथाइ करीने कानने ग्रहणने विषेशब्द कहे तीर्थंकर तेमनोहरश ब्दकानने गीतादि कते

वा पुक्खरिणीपलासं॥ ३४॥ १२॥ सोअस्स सद्दं गहणं वयंति। तं रागहेउं तु

रागधेमनोहेतुकार णकहताहवावीत रागादिक ते अमनोज्ञपाहजाशब्द तेद्वेष अमनो पनो हेतुकारणकहे तेने ग्रहइ घणो दोषजा ग एतला माटि एदेषाधो ते दूरुतां शब्द अनेपाहजा शब्द तेविषे जे समतावंत तेवीतरागजाणवो ३५

मणुन्नमाहु। तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु। समो य जो तेसु स वीयरागो॥ ३५

शब्दनोग्रहण श्रोत्र कांनएह्वावदइ
श्रीवीतरागादि
क
कांननोग्राह्यक शब्दएहवोपिणक
श्रोत्र जगन्नाथइ
द्वषनोहेतुकारण
समशब्दमनोज्ञस

सद्दस्ससोअंगहणंवयंतिसोअस्ससद्दंगहणंवयंति।रागस्सहेउंसमणु

न्तिश्रोत्रप्रतिक देजिम ३५
शब्दनेविषेजेकोईगृद्धिमूर्छा तीव्रस तेस्मकालिइ पामइ सत उपसरिविना
पामइलदशवि नाशमरण रागाक रागाहि
६

वमाहु॥३६॥सद्देसुजोगिद्धिमुवेइतिव्वं अकालियंपावइसेविणासं।रागा

तुजिमहिरणमृगतेह्नीपरिमुग्ध सोलोइसमृगशब्दसामान्यपणो नाचाढे तिणहिरणरूपजेमृगपशु
शब्दनेविषेअतृप्तथकोमरण पामइ ३७
जेकोईपाछ्याशब्दनेविषेद्वेष घणोआणइआकरो

उरेहरिणमिगेवमुद्धेसद्देअतितेसमुवेइमच्चुं॥३७॥जेआविसद्दंसमुवेइति

तेणेतत्क्षणेकालिईतदपामेदुःषकि तेशा
दुर्दांतश्रोत्रेंद्रियनउदोषतेणेपोतानै जकोधइजोतआलोदुःषपाइ
परंपाछ्याशब्दतेकाईतिं दषुःषनइअपराधनथा करतोरागद्वषनकरइवे

व्वंतंसिरकणेसेउउवेइदुरकं।दुद्दंतदोसेणसएणजंतू।नकिंचिसद्दंअवरज्झ

३८ एकांतपणेघणोरातोतिरुचिरमनोहर शब्दनइविषइ
पाछ्याशब्दनेविषेतेजीवकरइ पामइ तिणघणोद्वेषअनीतिक
प
दुःषअसातासं बंधिनीघणीपा नापामइ

ईसे॥३८॥एगंतरत्तोरुइरंसिसद्दे।अतालिसेसेकुणईपउसं।दुरकस्ससंपील

नलीपाइनरखरनाइतेणेद्वेषरूपदुःषइ करीमुनिश्वरयतीवइरागीरागरहित ३९
बालमूढ
रूपाशब्दसंबंधिनीआशानेकेनिनीदम वर्त्ततो
च र त्र

मुवेइबालेणलिप्पईतेणमुणीविरागो॥३९॥सद्दाणुगासाणुगएअजीवेचरा

सत्रसथावरजीवनेहणइं घणाप्रकारनाशस्त्रस्वकायपरकायरू जीवनेपी आत्मापोतानिअ क्लिष्टरागादिय
मारेघणाजीवअनेकजाति पइकरीनेतेपरितापकरइगावइअज्ञानी डइ र्थिगुरूमाटइंतथा त्रिणामपीडइ
नानइं वाली

उत्त।सू०। चरेहिंसइणेगरूवे।चित्तेहिंतेपरितावेइबाले।पीलेइअत्तठ्ठगुरूकिलिठ्ठे॥४०॥
मनोहरशब्दनेअ तथापरिग्रहइक इम्यनाउ वेणादिकनीराखवानेविषेआपणापार विनाशनेविषे जिहांथकी
नुरागेकरी रीनइं पराजिवा काथ्योजनसणीसलाछवर्तवानइ विरहनइविषे सुखतेहने
नेविषइ विषइ ऊइ

२७०

सद्दाणुवाएणपरिग्गहेण।उप्पायणेरक्खणसन्निओगे।वएविओगेअकहिंसु
तेहनाभोगविहानाकालनइविषेहपिसंतोषतेह सकसामान्यप्रका
नइलाभइअणकुंगइकिहांथकीसु शब्दनेविषेअसंतोषीपरिग्रहनेविषइ रइउपसमकच्छगतअ
सक
४१

हंसे संभोगकालेअअतित्तिलाभे॥४१॥ सद्देअतित्तेअपरिग्गहंमि।सत्तोवसत्तो २७०

छकउनपामइउ मोहराअ्पाशब्दएहवाअसंतोषनइंदोषइंक लोभेंकरीमळ उदपारकीअणदीधी लोभेंक
ठिसंतोषवतिइं रीदुखीथायियारकोशब्दवतवस्तुदेषीनइं लउथिकउ वस्तुएतलइचोरीपुण रीपरा
करइ व्यामनु
४२

नउवेइतुठ्ठिं।अतुठ्ठिदोसेणदुहीपरस्स।लोभाविलेआययईअदत्तं॥४२॥त
शब्दनइविषइअसंतोषीनेतथाप मायासहितमृषाजुठुबो लोभनादेषथा
थनें चोरीनाकरणहार रिग्रहनेविषेअमनइं लिवुनेवाधइ लोभीचोरीकरेले
छापवीपृथ्वाथि
कांमायामृषाबो

ण्हाभिभूयस्सअदत्तहारिणो।सद्देअतित्तस्सपरिग्गहंमि।मायामुसंवड्ढइलो
तेहमृषाबोलिंथिकइपुणतेदुखथीनमूंका शब्दनेलोभीजूठबो किमगीतादिकसांभलि बोलिवानेपस्ताथि
नइ इअपेकोइजाणेइमजाणइतेविषयवंत लीपछेपश्चातापक सिउइममृषानइपहिला कसेअहीलाभजा
रेउपधरइ पण णइतेथीबीहतुंड
४३

हदोसा।तत्थाविदुक्खानविमुच्चईसे॥४३॥मोसस्सपच्छायपुरत्थओअ।पओगका

तथा मइ — अत्तंतपामइ अत्रत्ते नइहलवपरसेवि जेहनइ — जिमजवंतजोलेतिमयारकतेअदत्तधनथा नादिकलेतउथिकउपवनहि — मनोहरशाब्दनेविषेअसंतोषीथिकोदुष्खितथा निश्रारहितकाइणासउनकरइ

उत्रा०सू०टा० लेअउदीउरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो । सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो

मनोहरशब्दनेरागीजेहतेहनरमनुष्य नइइणाइकारइ — किहांथिकीसुखहुइअथिंतेहुइकदीइ पुणकासुखइअइतउसरतउषीइजहुअ — तिहांशब्दना सेगनइविषे पुण — को शने ड:

२७१

४४

। ४४ । सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं हुज्ज कयाइ किंचि । तत्थोवभोगे

रकजाआश्रिन दवइनाकेस तुंडषदवउ — नीपजावइवइ करइवइ — तेशब्दसोगविवानइकाजि तिङषआपदावइ — एणीपरिइतिमशब्दअपरिरागबंतिम कदाचितसुखपुणपामिनंथिकउ

४५

विकिलेसडुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं । ४५ । एमेव सद्दंमि गओ पओसं

२७१

पामइ दुक्खनासमूहनीपरंपराश्रेणि — द्वेषइंकरीसहितजिवारेचित्तअंत:करणहवउ तिवारइंकठितोबांधइकर्मघणाक्षतिइं — जेकर्म तेहने — वलीहोइदु:खकनोकारण विपाकअनुसविवानाकाल नइविषइहइपरलोकि

उवेइ दुक्खोहपरंपराउ । पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं । जं से पुणो होइ दुहं वि

शब्दमनोहरनेविषे विरक्तरागरहित मनुष्य — विशोकशोक रहितथिकउ — एहजेपूर्वेइंकहउंदु:खकपापनासमूहनीपरंपराकहितांश्रेणितेणइंकरीनइं — नलीपाइसंसारमांहिं वसतोथि

४६

वागे । ४६ । सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो । एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पई

कोपुण — तेऊपरिदृष्टांतकहेछइंजिमपाणीइंकमलिनीनउं पांनकमलपइनीपइनही — तिमनीरागीमनुष्यपुणतेरागाथाइअधिकारहवउ — घ्राणनासिकानउग्रहणविषयगंधपरिम

भवमज्झेवि संतो । जलेण वा पुक्खरिणीपलासं । ४७ । ३२।२ गाणस्स गंधं

लकहेश्रीतीर्थंक रगणधरादिक तेहेगंधनलोतेप्रतिइंरागनोकारणक हइतीर्थंकरादिक तेहगंधअमनोज्ञपामुउतेहद्वेषनउअसं तोषनोकारणकहइश्रीतीर्थंकरादिक तेहसमाण्य म्हागंधनेवि षेजेहनैएतले

उत्रास्त्रू।८।१५ हणंवयंती।तंरागहेउंसमणुन्नमाहु।तंदोसहेउंअमणुन्नमाहु।समोअ

जेहेरागनहीमाहृयादे षनहीतेहवीतरागजाणि वउ ४८ रुडापामूआगंधनउग्रहणग्राहकघ्राण नासिकाकहइश्रीतीर्थंकरादिक घ्राणनासिकानोग्रहणग्राह्यगंधनें कहेतीर्थंकरगणधरादिक

२७२

जोतेसुसवीअरागो॥४८॥गंधस्सघाणंगहणंवयंति।घाणस्सगंधंगहणंवयं

रागस्नेहनउहेतुकारणतेसमनोज्ञप्रस न्ननइतीर्थंकरादिक द्वेषअप्रीतिनोहेतुकारणतेअमनोज्ञनइकहइ तीर्थंकरादिक

४९

ति।रागस्सहेउंसमणुन्नमाहु।दोसस्सहेउंअमणुन्नमाहु॥४९॥

२७२

गंधनेवि षइ जेकोईमनु ष्यादिकगृद्ध मूर्छा धरेतीव्रघणी अकालिइंपामइतेहजीवविनाशमरण जिमराग उर उषधीकाढीबिलि बमकषनागंधनेवि षेगृद्ध

गंधेसुजोगिद्धिमुवेइतिव्वं।अकालिअंपावइसेविणासं।रागाउरेवसहि

सर्पलोगनइऔषधिइंबिलथकानिकल तउ जेकोईतेहपामुआगंधपामानैतेहनेविषइद्वेष अप्रीतिघणीआणइतीव्रआकरउ

५०

गंधगिद्धेसप्पेबिलाउविवनिरकममंतो॥५०॥जेआविदोसंसमुवेइतिव्वं

तेलक्षणअवसरनइविषइतेदुःखनउ सोगवणहारउःखकविजंतुसतापमेः उदंतिजेदोषघ्राणेंद्रियनोतेणेंक रीपोतानइजकोधइजीवउरकः लहइ परंगंधतेहनइकांईअपराधन थीकरतउउरागद्वेषजेतेहनंअ दितकरहवइ

तंसिक्खणेसेउउवेइदुक्खं।दुद्दंतदोसेणसएणजंतू।नकिंचिगंधंअवरज्झ

एकांतरक्तनस्यानंगंधकस्तूरीया दिकनइविषइ | पामइ आगंधनइविषे तेहजीवकरेषेष असातारूप | दुषसंबंधिनी अतिराच स्यउपीडापामइ बालकअ
५१

उत्ता०सू०टा०प ईसे ॥५१॥ एगंतरत्ते रुइरंसि गंधे। अतालिसे से कुणई पओसं॥ दुक्खस्स संपील

ज्ञानजीव | नलीपेनषरडाइ तेणे द्वेषरूपइ रकें करी मुनिसाधु वेरागीएतलेरागपुणउ रकनउंजहेउ | सुगंधजेगंधतेहसंबंधिनी आशानइंके डिंइ भवर्त्तिउथिकउजीव | बराबर उसषाव रअनेक

२७३

५२
मुवेइ बाले न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥५२॥ गंधाणुगासाणुगए अ जीवे चरा

जीवहणें अनेकजातिनाबइं | नानाप्रकारनास्वकायपरकायादिक शस्त्रेंकरी तेजीवनइंपरितापउपजावेबाल अज्ञानी | पीडपीडाकरें तेह | पोतानेंअर्थइंगुरुमो टउ | क्लिष्टरागादिपरिणा मइंपीडाउ
५३

चरेहिं सइणेगरूवे॥ चित्तेहिं ते परितावेइ बाले। पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे॥

२७३

गंधकस्तूरीआदिक नइरागइकरीनइं | परिग्रहेंकरीनइं | उपराजिवाने विषइ | गंधद्रव्यरा षिवानइविषइ | परनेंआपि वानइविषइ | तेहगयइथिके वियोगाथकिइ | किहां थिकी
षइ इ

गंधाणुवाएण परिग्गहेण। उप्पायणे रक्खण संनिओगे॥ वए विओगे अ कहिं

सुषतेह वाकउ णीयानइं | गंधनाविषयनासोग नाकालनइविषइ | तृप्तिसंतोषतेहनइं अणकुंतेकिहांथि काकहब | गंधनइविषइअसंतोषीअनेंपरिग्रह विषइपुणतिम | सामा न्यपणें आस क्तपु
५४

सुहं से। संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥५४॥ गंधे अतित्ते अ परिग्गहंमि॥ स

सक्तनेंघणंआसक्ततेजीवसं तोषनपामइ | गंधनेंविषेअसंतोषरूपदोषइंकरीनइं दुषीयउथकउपारकोगंधद्रव्या दिक | लोभेंकलुषथि कउ | ग्रहेअदत्तअण दीधउंथकउ

त्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं। अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स। लोभाविले आययई अ

गंधनइ लोभे परासयो नइ तथा अदत्तलेणहारने वली गंध वइ विषइ असंतोषवंतनइ तथा परिग्रहनेविषेऽ संतोषीनइ माया अनेमृ

५५

ओसहाय दंता।५५। तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो। गंधे अतित्तस्स परिग्गहे अ। मा २७४

विणं अदत्तना लेवाने विषे पुण दुखी तेहनमूंका

षावाधइ लोभना दोषथिकी दुखेथी छुटा लेणहार मुकनेको इजाणइ मृषानें पछे पुण पहिलांइ पुण

५६

यामुसं वड्ढइ लोभदोसा। तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से।५६। मोसस्स पच्छा य पु

मृषाऽनइ लाषना अवसरनइ विषें दुखें कोजाणइ इमड एणेप्रकारइ अदत्तपुणपारका लेतोथिकउ गंधनें विषेऽतृप्तो

खीजइ दुष पामतु अतइ हपरसवइ जेहनइ

रच्छओ य पओगकाले य दुही दुरंते। एवं अदत्ताणि समाययंतो। गंधे अति २७४

दुषीजइ निश्रारहित गंधनारागीनर मनुष्यनें एणेप्रकारइ किहांथिकी सुषहोइ कदाइ पुण का

५७

त्तो दुहिओ अणिस्सो।५७। गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं। कत्तो सुहं हुज्ज कया

इथोडुंइ तेगंधना भोगविवानेविषे किलेशनुं दुरक नीपजावइ जेगंधभोगविवानइ काजिइ दुरक आत्मानइ कष्ट एणेप्रकारइ जिम गं धनेविषेरा

५८

इ किंचि। तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं। निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।५८। ए

गइतिमकदाग्रिद्वेषप्रा पामइ दुरकना समूहनी परंपरा श्रेणि अतिशायस्य द्वेषवंत चित्तथिकउ वधाइ कर्मषति इ

मेव गंधम्मि गओ पओसं। उवेइ दुक्खोहपरंपराओ। पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं

जकर्मतेहनइबली परलोकइ दुरकनां कारणाविपाकिं अनुभविवाना कालनइ विषइ ५९ मनोहरगंधनेविषेविरक्तरागरहित मनुष्य विशोकसाकरहितहुइ एदुजेपूर्वेकह्यो दुरकनासमूहनीपरंपराअ

जं से पुणो होइ दुहं विवागे।५९। गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो। एएण दुक्खोह

णिने णीइंक रीनइं नलीपाइन भरताइ संसार मांहि वसतो थि कउ तेऊपरि हष्टांत कहइ जिमपाणीइं करीकमलिनी नुं पान ऊंलीपै लेपेन ही तिम निसनारा गीमनुष्य ६० गतरगाथाइं अधिकार रचो

उत्रा०सू०टी०प परंपरेण नलिप्पई भवमज्झे वसंतो । जलेण वा पुक्खरिणीपलासं । ६० । ३३ ।

२७५

जीभनइं जीणमधुरादिकरसनो ग्रहण तेहरसराग नइ हेउ कारण समनोज्ञ रसलक विषइकहइ तीर्थंकरादिक लीर्थकरगणधरादिक तेहरसद्वेषनइं अमनोज्ञ पाहु असंतोषनउहेउ उते कहइ तीर्थं

जिभाए रसं गहणं वयंति । तं रागहेउं समणुन्नमाहु । तं दोसहेउं अमणुन्न

करा तेहरसपाहुआर सनइ विषैसमतरूपोर दि गनहीतेह इहेषनही तेवीतराग जाणिव रसपाहुआसनो ग्रहणग्राहकक हे जिभा तीर्थंकरादिक जीभनइं रसपाहुआर सते ग्रहणग्राह्य कह

माहु । समोय जो तेसु सवीयरागो । ६१ । रसस्स जीहं गहणं वयंति । जिभाए रसं गह

इं तीर्थंकर दिक रागसंतोषनउ हेउकारणात समनोज्ञरसमनकहि ताइवातीर्थंकरादिक द्वेषसंतोषनो हेउकारण अमनोज्ञअरसमनकहि ताइवा तीर्थंकरादिक रुपार सनइ

६२

णं वयंति रागस्स हेउं समणुन्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु । ६२ । रसे

२७५

विषेजि कोई गृद्धिपामी तीव्र अत्यन्त अकालिइ अकस्मात पामे तेविनास मरण रागें करीय दिउ लोहाने कांटइ करीनइ भेदाणोवीक्षणीकायजे

सुजो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालियं पावइ से विणासं । रागाउरे बिडिसविभि

नइ को जिम माछिला मांसने लो सें गृद्धलोलथि ऊकोइ तीषादिकरसने विषइ द्वेषे तेहजलक्षण अवसरने विषे जीव

न्नउ कउ मरणपामइ दुःख ६३ असंतोषपामे तीव्र पाकरउ

न्नकाए मछे जहा आमिसभोगगिद्धे । ६३ । जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं । तंसि

पामइदुःख केस दुर्दांत मनें इंद्रिय ते दोषकरी पोताइ जीवइ जकीधइ जीव असाधीइ परंतेरसपाहुआरस ते पुरुषने काइं अपराधनथी करतउ

६४

क्खणे से उवेइ दुक्खं । दुद्दंतदोसेण सएण जंतू । न किंचि रसं अवरज्झइ से ६४

एकांत पोताना गगधरतेउथकउ मनोज्ञमीठादिक रसनेविषइ पाहूआरसनेविषेद्वेष करइ दुःखसंबंधिनी अतिशय पीडा प्रति पामइ बालक अज्ञान

एगंतरत्ते रुइरंसि रसे अतालिसे से कुणई पओसं दुक्खस्स संपीलमुवेइ बा

नळीपाइ तेणेंरागद्वेषेंकरीनइंमुनिसाधु रागरहितथिकउ रूपादरससंबंधिनीआशाकेडिप्रवर्त्ततउजीव त्रसथावरजीवनें हणेंअनेकप्रकार
६५

उत्तराध्ययनसूत्र।ट।प ले। ण लिप्पइ तेण मुणी विरागो ।६५। रसाणुगासाणुगए अ जीवे चराचरे हिं

रसनाइं नवकूपरजि रंधिवाने आपणपरनेथयो बह्यइथिकइविरइ किंहांथीसुखतेमा रसनालेगवि वानइविषइ विषे उनेंपछुंजिवानेवि क्लेशथिकइ पीडाणीनइं वानाकालने
७६

२७९ सइणेगरूवे। उप्पायणे रक्खण सन्निओगे। वए विओगे अ कहिं सुहं से। संभोग

वि रमिसंतोषनइंलोभेइअणक सनइ असंतोषीथि तथापरिग्रहनइवि सामान्यपणेसक एहवउथिकउनपा
ष तेकिंहांथीसुखकइ विषइ कउ षइ उपसकतेपणउ मइतुष्टिसंतोषप
६ ६७ आसक तिइं

कालेअ अतित्तलाभे। ६७। रसे अतित्ते अ परिग्गहंमी सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं

असंतोषनेंदो दुषीयउथिकउपर लोभेंकलुषउथिकउग्रहइअणदी रसनइलोभेंपराभव्यान
षइकरीनइं नउवस्तादिक धउंवस्तु ६८ इ

। अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स। लोभाविले आययई अदत्तं ।६८। तण्हाभिभूयस्स

घणाप्रकारनेसमेंकेरीतेजीवनइंपरितो जीवनेपी पोतानाआत्माने क्लिष्टरागादि मधुरादिकेरसनेरागइकरीनइत संतोषनेंपार
पपरितापकउजावरनेबालअज्ञानी डइ अर्थिगुरुमाटउं क्लेशनोधणी ६६ मापरिग्रहइकरीनइ बइ

चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ।६६। रसाणुवाएण परिग्गहेण। उप

२७९

अवत्तनालेणहार सरसरसनइविषेअसं तथापरिग्रहनेविषे मायामृषानइंमावाधे लोभनादोष तिहांमाया
नइ तोषवंतनइं अतसंतोषीनइं थिकी मृषानइवि

अदत्तहारिणो। रसे अतित्तस्स परिग्गहे अ मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा तत्थावि

षेपुणदुःखथीतेजीवनमूकाइं मृषानइंपहेलापछिइउपु मृषासाथानाअवसरनेविषेतेदुषीअकइड इपाहूतअ
र्षेरसिनालेणहारबीजामुफनेजाणइर ७ नइदलोकपरलोकेजेदखउ

दुक्खा न विमुच्चइ से ६९ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ पओगकाले अ दुही दुरंते

एवंपणेंप्रकारइंअदत्तहार रसनेविषेअ दुषीयउरेइनिश्राररहित रसनाआगीनइंनरस
कउपुण लेतोथिको तृपतोथिको थिकउ ७० मनुष्यनेंहाइप्रकारें

एवं अदत्ताणि समाययंतो रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ७० रसाणुरत्तस्स

किहांथीसुखहइकहइपुणकांइथोडउं तिहांरसनाभोगविवानइविषेपुणकि नीपजावेबे
लेशनुंदुःखपामइ करइबइ

नरस्स एवं कत्तो सुहं हुज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं निव्वत्त

जे दुःख संयोग वियोग नइं कार्जि दुःख आत्मा नइं कहइ | तेणें करी जिम रस ने विषे रागवइ इति मकरादि दृष्टांत थकउ | प्रमादइ दुःखना समूह श्रेणि सिद्ध पति | नागश्री नी परिइं

७१

उत्त्रा सू॰ टी॰ प॰ इ जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥ एमेव रसंमि गओ पओसं उवेइ दुक्खोहपरंपराओ पदु

प्रणउ द्वेष चित्त नो धणी थिणइ एकठा करइ कर्म प्रति इं | जे द्वेष कर्म नि ते केवली दुःखनउ कार पाविपाक संयोग वियोग काल ने विषइ | मनोज्ञरस ने वि विरक्त राग उत्प मनुष्य विशो

७२ थकउ

२७७ ट्ठचित्तो य चिणाइ कम्मं । जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥७२॥ रसे विरत्तो मणुओ वि

करइ कर एजे पूर्वे कहि दुःख पापना समूहनी परंपरा श्रेणि तेणइं करीनइं | न लीपाइ नव रइ संसार मांहि वसतो पुण | केहनी परिइं जिम पाणी इं करी कमलिनीनउ पान न लेपइ जी पेनदी

वसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण । न लिप्पई भवमज्झे वसंतो जलेण वा पुक्ख

त्रिम नीरागी पुरुष एतर गाथा इं ... | कायास्पर्श नि ग्रहणहार कहइ | कायास्पर्श ने सर्व शरीरने ... | तेहक फरिस ... राग नो हेतु कारण कहइ श्री तीर्थकरादिक | करणधरादिक

रिणीपलासं ॥७३॥ १३ ४ कायस्स फासं गहणं वयंति । तं रागहेउं समणुन्न २७७

तेह फरिस पामहतें तेह द्वेष आवी तिनो हेतु कारण कहइ तीर्थंकरादिक | ते फरिस रूडा पामवा नइ विषे जे समो मध्यस्थ तेह राग द्वेष रहित नइं वीतराग कहाइ | ताहा उन्हा फरिस नो ग्रहण हारक का

७४

माहु । तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु । समो य जो तेसु स वीयरागो ॥७४॥ फासस्स

या शरीर ने कहे तार्थ | तथा काया सर्व शरीर नो ग्रहण हार फरिस ताढा उन्हा दिक कह्इ तीर्थंकरादिक | तेह काय सम मनोज्ञ मनोज्ञ फरस सहित राग नो थी तिनु हेतु कारण कहे तीर्थंकरादि | अम नोज्ञ

क

कायं गहणं वयंति । कायस्स फासं गहणं वयंति । तं रागहेउं समणुन्नमाहु । दो

पामइ फरिस सहित ते द्वेष आवी तिन हेतु कारण कहइ तीर्थंकरादिक | रूडा फरिस जि को ग्रहिपामें तीव्र अत्यंत ते केहइं | तेह अकालिइं अ पामइ ते विना कस्मात्र | श मरण

७५

सस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥७५॥ फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं । अकालियं पावइ स

जिम राग सहइ तिइं | ताढा पाणी मांहि पड्यउ थिकउ | जिम ग्राह जलचर ग्रहिउ थिकउ मांहि मरण पामइ | महिष पाडो अटवी | जि को फरिस ने विषे तीव्र आ

७६

विणासं । रागाउरे सीयजलावसन्ने । गाहग्गहीए महिसे व रन्ने ॥७६॥ जे यावि दो

७२

करइ द्वेषपामइ अप्रीतिपामइ । तेहइ जक्षण अवसरनै विषइ दुक्खक्लेसप्ता एवपामइ लहइ । दुर्दांतस्वइंद्रियनइ दोषैं पोतानइं जं घइ जंतुजीव अम्हाल लहइ । परंतेह नापाणकृष्या रूपउफरिसनेह पुरुषनें कांइ अप

उत्ता।सू।टा।७ संसमुवेइ तिव्वं। तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं। दुद्दंतदोसेण सएण जंतू न किंचि फा

रागनथी कहतउ ॥ ७७ ॥ एकांतरागउ रागुरागभरतउ सला सुहा लादिफरसनइ विषइ । फरसुपाफरिस नइ विषइ नेकरेद्वेषअसंतोष दुःखसंबंधिनी

२७८ सं अवरज्झई से। ७७ एगंतरत्तो रुइरंसि फासे अतालिसे से कुणई पओसं। दुक्ख

घणीपीडा पामइ बाल अज्ञानी परनलीपाइ तेणरागेद्वेषेकराइं मुनि साधु रागरहित थिकउ ७८ रूपाफरिसनी आशानइं केडिइं प्रवर्ततो जीव

स्स संपीलमुवेइ बाले। न लिप्पई तेण मुणी विरागो। ७८ फासाणुगासाणुगए अ

चराचरत्रसथावरजीव अनेकप्रकारना हणइ चित्रअनेकप्रकारस्वकायपरकायादि कराइं करीनइं परितापपमाडइ बाल इ मूढ पीडेजीव आपणाआत्मानें अर्थि गुरुमोटो क्लिष्टरागादिकपरिणामइ पीडित

जीवे चराचरे हिंसइ णेगरूवे चित्तेहिं ते परितावेइ बाले पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे २७८

मकोमलपाषादिकनें रागें करीनइं तथा परिग्रहेकरीन इं नवउंउपराजवा नइविषेराषिवा नेविषइ पोतानिंपरनिं भोगजनिं भुंजिवानइ विषइ गयउ थिकउ विरहलयइ थिकइ

७९ ७९ फासाणुवाएण परिग्गहेण उप्पायणे रक्खणसंनिओगे वए विओगे अ

किंहांथी सुषते हुनइं फरिसनासंयोगविकाना कालनइ विषइ तृप्तिसंतोषनें अणलाभते हुंतेकिहांथकी सुषकइ फरिस नेविषे असंतोषी थिकउ फरिसनापरिग्रहन इछाइ

८०

कहिं सुहं से संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ८० फासे अतित्ते अ परिग्गहंमी

सामान्यपणे आसक्त घणउंआसक्त फरिसनइ वि षइसंतोषेन लहइ असंतोषनइ दोषेंकरीनइं तेह दुषीथाइ परकोलोभइंकरीनें कलुषथिकइ स्त्रीयादिकअणदीधउंलिइ गुणकरहवारइ

सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स लोभाविले आययई अ

इमफरिसनेंलो अणदीधीव नालेणहा फरिस असंतोषी परिग्रहे तथाअसं मायासहि लो
भेपरान्व्यानइ रूक रनेंतथा नेविषे नइ नइविषे तोषानइ तमृषावा त
धइ नादो

उत्ता॰सू॰टा॰प दृतं ८१ तण्हाभिभूयस्स अदत्तहारिणो फासे अतित्तस्स परिग्गहे आ मायामुसं

षथीलो पुण्युमायामृ तिहांपुणदुःखथकी पापथकी नमूंका मृषाबो
भीदत षाबोलइ इअदिस्वासविकल्यादिककलहइंकरी मृषाबोल्यानइंपछेपहिलुंपुण लिवाने
लेइ अवसरि

२७९

८२

वड्ढइ लोभदोसा तत्थाविदुक्खा न विमुच्चई से। ८२ मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य

कषेकोजाणेइमतेडखीअहेइ एमएणेप्रकारेंअदत्तप फरिसनइ असंतोषि दुखीयो निरधार
दुष्टप्रणाउअंतअवसानइए रकीलैंवस्त लेतोथिको विषइ कउ कइ हित
लोकिपरलोकिजेहनउ

उगकाले अ दुही दुरंते। एवं अदत्ताणि समाययंतो फासे अतित्तो दुहिओ अणि

२७९

फरसनाराशीनरमनुष्य एवंएणेंप्र किहांथीसुषसाताकइ कदीइंपुणकांई तेफरिसनालोग
नइ कारइं इंथोनुइपुण विवानइंविषइ
पुण

८३

स्सो ८३ फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि तत्थोवभोगे

किलेशानुदुःख नीपजावेछे जेफरिसनालोगविना एणेंप्रकारइंजिमफरिसनेविषे पामे
पामइ करइछइ नेंकाजिंदुःखआत्मान रागद्वेषनिमद्वेषपामिउथिकउ दुःख
इं नास

८४

विकिलेसदुक्खं निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ८४ एमेव फासंमि गओ पओसं उ

दुःखनीपरंपराश्रेणि फरिसनेविषेद्वेषवंत निंदाकरतोकपरा जेहपापकर्मितेहनइंपुणेवलीदुःखइदुःखक
चित्तथिकउ जेपापक नोकारणतेकिवारेंविपाकअनुसविवानाका
र्म लनइविषइ

वेइ दुक्खोहपरंपराओ। पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं जं से पुणो होइ दुहं विवागे

मनोज्ञ स्पर्शने विषइ विरक्त रागद्वेष ... मनुष्य विशोक शोकरहित ते स्याइ ... एह जे हवि कहीउ दुक्खनी परंपरा ते लिगारई करी नइ ... न लीपाइ न बंधाइ संसार मांहि वसतो रत्नापुणो ... (कमलनी परि)

८५

८५ फासे विरत्तो मणुओ विसोगो एएण दुक्खोहपरंपरेण न लिप्पई भवमज्झे

ते दृष्टांत कहे छे जिम पाणी इं करी कमलिनी... पानडू लिप्त न थाइं तिम नीरागी मनुष्य पुण राग द्वेषं करी लिपाइ नही ... एह गाथाइं अधिकार पांचमु हूउ ... भावक हितो वियानउ आसय परि णाम ते ग्रहणा आस्य कहइ तीर्थंकरादिक ... ते मन

८६

वसंतो जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥८६॥ मणस्स भावं गहणं वयंति तं रा

मोहरूप भाव ते रागनो हेतुकार ण कहइ श्री तीर्थंकरादिक ... ते हज भाव द्वेषनो कारण ... अमनोज्ञ भाव हतो ... हकहे तीर्थंकरादिक ... ते दृष्ट भाव ध्यानने विषे जे मन कल्पितो रागपुण न दी द्वेषपुण न दी धर्मध्याननो धणीने वीतराग

गहेउं समणुन्नमाहु तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु समो य जो तेसु स वीयरागो

मन नो ग्रहण ग्राहक भाव स्थियानउं आ ... स्थियान उं आस्य भाव ते हनो ग्रहण ग्रा... सय सर्व भाव सुख तिने कहे तीर्थंकरा दिक ... हय मननें कहे तीर्थंकरादिक ... रागनो हेतु कारण ... समनोज्ञ अमोद्वंत नइ कहइ

८७

॥८७॥ मणस्स भावं गहणं वयंति भावस्स मणं गहणं वयंति रागस्स हेउं समणु

तीर्थंकरादिक ... द्वेषनो हेतु कारण अमनोज्ञ ... तमनन इं कहे तीर्थंकरादिक ... भावसाद ... जे कोइ भाव ने विषे वांछा नइ विषइ ... तीव्र अत्यंत गृद्धि मूर्छापणइ ... ते अकालि

८८

न्नमाहु दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥८८॥ भावेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं अकालि

अ... काररिणाम विनाश मरण ... कामगुणने रूपादिक ने विषे गृद्ध थयउ थको राग इं पीडिउ ... कउ ... करेणुमार्गइं करेणु हाथणी इंपो ताने मार्ग अवहित व्यापा र मिउ गज हाथीनी परि ... जिम हाथी मदोन्मत्त हाथणीने देखीने ... रूपादिकने विषे ... शब्दादि ... रादिकने विषे ... विनाश ... तुर ... पुरुष ... दिक अकालि इं विनाश पामे ॥

यं पावइ से विणासं रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे करेणुमग्गावहिए व नागे ॥८९॥ जे

८९

जेकोइम समासकृतनइविषेतीव्रद्वे तेउअवसर तेहजीवदुःखकेअणुभवइ उद्दंतिइंद्रियमननेदोषेपोतानेकरी
तुष्यादिक प्राप्तमइ नइविषइ पामइकुबागादिकेंकरी धइजेउजीवअसातालेहइ

उत्ता।सू।टी।प
२८२

आविदोसंसमुवेइतिव्वं।तंसिक्खणेसेउउवेइदुक्खं।दुद्दंतदोसेणसएणजंतू

वीतरागपदार्थरूपभावतेहबलात्कारइंक एकांतेरागतउरागीसलाभावजेक रूढिगणरूपादिकवीतरागप
रिणेकाईयइतेहनेअपराधनथीकरतो हिगर्वरसगर्वशातागर्वनइविषइ दार्थथकीविपरीतभावनेवि
षेजीवद्वेषकरइपोतेजजेह॰
९०

नकिंचिभावंअवरज्झईसे।९०।एगंतरत्तोरुइरंसिभावेअतालिसेसेकुणई

तणीरुजेअसा उपनीपीडापामइबा परंनलीपइजनपरभाइतेणइंरागद्वेषेक भावअभिप्रायरू
गीउ लअज्ञान रीमुनिवारित्रियउरागरहितवैरागी लानइअनुकूले
गतपरिवसिथि
९१

पउसं दुक्खस्ससंपीलमुवेइबालो।नलिप्पइतेणमुणीविरागो।९१।भावाणुगा
२८२

कोजी
व
उसथावरअनेकरूपजीवहणेकिहांरजीव
केहइरमारुइमध्यातवथिकउ
चित्तविधकल्पनाइंमुकेउपद्रवेकरी
धाउपाडइमकरीलासकूडइमजा
णीजीवइंपरितापेअज्ञानी
पाडइ

साणुगएअजीवेचराचरेहिंसइणेगरूवे।चित्तेहितेपरितावेइबाले।पीलेइ

आत्मानाकार्यमाउनेवि
षेगुरुमोटुक्लिष्टकपापव
मिथकउ
भावउअमरुत्यादि
कनउतेहनेभागइ
तथापरिग्रहे
लक्ष्मीनावि
मारूपइ
नवउउपराजिवानेविषेकिमभुकनेपप
दार्थमिलस्येएचिंतानेविषइआरोग्यकुटुंब
रूपसागवरावितानेविषपरनेकुबव्यादिक
देहवानइविषइ
९२

अत्तट्ठगुरूकिलिट्ठे।९२।भावाणुवाएणपरिग्गहेण।उप्पायणेरक्खणसं

निद्रास्मृतिअभावव्ययनेविषइक्रापेशादे
वासमर्थबुद्धिकुशलादिकनावियोगछते
किहांथीसुखतेथीतवणहारनइ
संभोगकालिंचिंतासरिखानइंअवसरिहर्षसिनें
अलाभइसातत्पनापणनासंजणवइअपरिइं
सुखनलहइ
सुखासुखभा
वनेविषइअ
संतोषीथिको
९३

निओगे वएविओगेअकहिंसुहंसे।संभोगकालेअअतित्तिलाभे।९३।भावेअ

तथापरिग्रहनेविषइ सक्तोमूर्छासक्तउपसक्तघणउंआसक्तउत्कृष्टीमगनउसंतोषनपा मइ असंतोषनेंइदोषे करीनइ उत्सइ नथदेषी डुषीकुइपर लोभे करीक्त

उत्रा॰सू॰टबा॰ तिन्नेअपरिग्गहंमि सत्तोवसत्तोनउवेइतुठिं अतुठिदोसेणडुहीपरस्स लो

लब्धिकअदत्तअणदीधउलिइ ८४ तृष्णालोभिइंएहराअभिभूतपणइ पारकाअदत्तनालेण हार सावद्मरूपादिकनइविषेअसंतोषीनेतथाप

२८२

भाविलेआययईअदत्तं॥ एध॥ तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो सावेअति

रिग्रहनेविषइतृप्तिसंतोषी मायामृषावाधइयथारुउंमोटुंकविद्यातापंडितइत्यादिकमायामृषाबोलेमहत्वठांतत्वलोभनादोषथी तेमृषाबोलिइंपुण्याइसातानीपरिइंदुःखथकीनमूकाइंतेजीवपाणीइं ८५

त्तस्सपरिग्गहेअ मायामुसंवढइलोभदोसा तत्थाविदुरकानविमुच्चईसो॥८५॥ २८३

मृषानइपछेतथामृषानेपस्लिंपुण्य मृषाबोलिवानाकालनेविषइ डुषीथाइडजेहनो एलोंप्रकारइंअणदीधउंलेतरूपतेलेबीजानागुणतेपोतानाकरीदेषामनउ

मोसस्सपछायपुरत्थउअ॥पउगकालेअडुहीडुरंते॥ एवंअदत्ताणिसमाययं

विकल्पनेंकरिवेअतृप्तउडुषीथाइनिश्चारहितधर्मशुक्लध्यानरहितआर्तध्यानरोद्रध्यानवेतडइ पोतानोऽसिद्धायतेसावतेहनेविषेराताराग्गीनरमतुष्यनेइलोंप्रकारइ किणंथसुषक्कइजथमेतका २६

तोसावेअतित्तोडुहिउअणिस्सा॥ एहू॥ सावाणुरत्तस्सनरस्सएवंकत्तोसुहं

लतावृथिकीविवरतानावकरइबेजेरुसावविषयाकिवारेपुणकाइयइं तेरुसावनाऽनुरागनेविषेउपभोगविस्कालचितनइंकिलेशानुडुरकथाइ दिकनेकाजिइंडुरकतेआत्मानेक

कूउकयाइकिंचि॥तत्थोवसोगेविकिलेसडुरकं॥ निव्वत्तईजस्सकएणडु

एणइप्रकारेंसावनें षामेडुषनीसमूहनापरंपराअणिजमालीगोपारेजिणितेरुजमालिश्रीमहावीर देववंतनि
८७ विषेद्वेषपामिउथिकरूवनासाषितसावनेंविषेद्वेषपामिउअकिल्विषीदेवतापलेंकेतलोएकसंसार नेथडुक
उ ।पणिइत्तभिसइ मनाम्नंघ

रकं॥८७॥ एमेवसावंमिगउपउसं॥ उवेइडुरकोहपरंपराउ॥ पडुठचित्तोअ

यकरेतेकार्यछलक तेहकर्मतिहनेवलीदुःषनोकारणविपाकछे मैकल्यादिकभावनेविषे विरागक
रतउदुःखमस्यनीपरि फलभोगविवानाकालनेविषइ ८८ रागश्रणधरतामनुष्य शोकर
६

उत्रासूटाप विणाइंकम्मं। जंसेपुणोहोइदुहंविवागे।८८। सावेविरत्तोमणउविसोगो

तिकइ एहसर्वेकसीदुषनासमूहनीपरं नलीपाइंभवसंसारमांहिवसि तेऊपरिदृष्टांतकहे कमलनी
परा श्रेणि तेलीइंकरीनइ तोपिण जिमपाणीइंकरीनइ नोपानको

२८२ ८९। एएणदुक्खोहपरंपरेण।नलिप्पईभवमज्झेवसंतो।जलेणवापुक्खरिणीप

नलीपाइं तिमनीरागीमनुष्य एगाथाइंश्रधि एणेप्रकारेइंद्रि मननोजेअर्थसंक तेहदुःखकमाजेहेतु मनुष्यरा
पिणरागद्वेषेंलीपाइवायेंनही कारबछेकउ यनजेअर्थरूपादिक व्याविकल्पादिक कारणएहबइ गवंतद्वेष

लासं।८९। इंदिया। एविंदिअत्था यमणस्सअत्था। दुक्खस्सहेउमणुअस्स

वंतहनें तेहजइंद्रियनाअर्थनाअर्थाथोमोपि वीतरागनेरागद्वेषरहितनेंकांइपिणशरीर कामभो
णकदाचिकिवारैंपिणदुःखनपामे मननाुदुःखनकरइ १०० गथइंद्रि

राइणो तेचेवथोवंपिकयाइदुक्खंनवीअरागस्सकरिंति किंचि।१००।नका २८३

यनाकामभोगतेहरागद्वेषनाअभाव शब्दादिकभोगतेकाईक्रोधादिकविकार तोकोणकारणतेहतेहनेंविदेहे
रूपसमतानपामइं एतलेंकामभोग नेंपामें मनथीउपजावेंतानथी एतलेंकामभो षयाणेंठइ१ इंद्रियपरिग्रह
समतानोकारणनही गविकारणनही धिधरिते अनेदुःखी

मभोगासमयंउविंति।नयाविभोगाविगइंउविंति।जेतप्पउसीयपरिग्गहेय

तेहविषयादिकनेंविषेंमोहथीरागद्वेषमोहनी क्रोधमानभाग्नि तिमजवली अनेलोभ दुगंछा उद्वे
कर्मथकीक्रोधादिकविकारलहैरागद्वेषरहि मानअनइरा माया ह्रषोद्ध अग्नु गन्छ
ततसमतातेजलहैपामइं १०१ स ७ छि पते
अरति

।सोतेसुमोहाविगइंउवेइ।१०१। कोहंचमाणंचतहेवमायं।लोभंदुगंछंअरइ

रतिविषया हास्यनेकरवो वियोगरूपमननेदुःषधृकष नपुंसकस्त्रीपुरुष विविधघणाप्रकारना पानें
दिसक नयबीहक वेदथाअभिलाषास्त्रीवेद पाभिलाषतेनपुं जेहभावपुरुषादिक एते
पणे तेनेंअभिलाषी सककहीइं १०२ प्रक
रइ

इरइंच।हासंभयंसोगपुमित्थिवेअं।नपुंसवेअंविविहेअभावे।१०२।आ

अनेकप्रकारनाअनंतानुबंधीया एहवा सर्वइक तिस्यादिककामगु अनेरा इजेक्रोधादिकनाकीधा
क्रोधादिक स्यातेहवा णनेविषेजेविल विशेषपरितापरूपदुर्गतिपर
गीरहिउहइ वारूप

उत्तराध्यय वज्जइएवमणेगरूवे।एवंविहेकामगुणेसुसत्तो। अन्नेअएअप्पभवेविसेसे

दया मनोअसंतदीन लज्जावंतसर्वनइ सिक्षाआदिककि यानेविषेतेकल्पतयोग मेएहकरइकि
अप्रीतिकारीथको १०४ एहवो पिण्डशिष्यादिकनवांछेतेअवाल्पनो सुंअंगीकार
कंकदिवो दुःकनेएहवोसामग्रीकरस्येएहवो कीकंइमपवइ
जे सखा यंतेवांछितोथको कहइ चारित्रलीधाप

२०५ कारुणदीणेहिरिमेवइस्से।१०३। कप्पंनइछिज्जसहायलिछू।पच्छाणुतावेअ

छी तापतेपश्चात्ताप एहवा विकारदो जेहनोपारनपा इंद्रियरूपीआचो कषायवे
करीयइनथातप ष मीइ तेअनेक पामइजेहे रनेविषेथिको १०४ दादिकवि
तेप्रकारअवातरि प्रकारकहीय कारपाम्या
अकेनहा वांछइ इहअवने इ

तप्पभावं एवंविआरे अमिअप्पगारे।आवज्जइइंदिअचोरवस्से।१०४। तओसे २०५

पाम्याअनंतरतेहनेअनंतरप्रयोजन बूडवादिवाआ मोहरूपीयामहासमुद्र सबना वांछणहारदुःखवि
नविषयादिसेवावाहिंसादिकउप पणाआत्मा समुद्रनेविषे नोदवाषपाविवानणी
रइ ने

जायंतिपओअणाइं।निमज्जिउंमोहमहन्नवंमि।सुहेसिणोदुक्खविणोअ

सर्वइकस्याजेप्रयोजनतेहनेअर्थेउद्यमकरइ विरागधरतोरागद्वे तेशब्दा
गवर्जइ रागद्वेषथिकोपामइ १०५ षअणकरतानइ इंद्रियपांचनाअर्थ दिकस
स्वरूप

णट्ठातप्पच्चयंउज्जमएअरागी।१०५।विरज्जमाणस्सयइंदियत्था।सद्दाइआ

रसगंध तावइयकहितंजेतलाप्र तेहनेरागद्वेषअण मनोज्ञपणोनती
स्पर्श कारजेहनारवरमधुरादि धरतानेसघलाइं पजावेनकर अमनोज्ञपाहृआपणोनतीप
कर्मेदिठे तेजाणवा इ जावइ १०६

तावइअप्पगारा।नतस्ससव्वेविमणुन्नयंवा।निव्वत्तयंतीअमणुन्नयंवा।१०६

एलि प्रकारि आवणा पामइ संकल्पनि रागद्वेष मोहादि अध्यवसाय तेहनी विकल्पना दोषना बनी तेहनें विषइ | उपस्थित उद्यम धर्मनें संजायेई उत्पन्न कहितां मध्यस्थपणो | तथा अर्थनिवादि पदार्थ तेहने संकल्पउ करतानें श्रुतअर्थनें चिंत

उत्रासूत्रप एवंससंकप्पविकप्पणासु। संजायइ समयमुवट्ठियस्स। अत्थे अ संकप्पयउ

२०५

वता नें तउ कहितां ते समय अरथी से तेहने हाणिपामइ हीणथाइ कामनागुणनें विषे | मध्यस्थानें विषइ १०७ | ते लोभनष पावीवीतरा गरागद्वेषरहितथा इ | इस्मैं गुणवालो तनकीधा कर्त्तव्य जेणइ | एहवो तेणइ मुक्ति

तउसे पहीअए कामगुणेसु तण्हा॥१०७॥ सवीअराकयसव्वकिच्चो। खवेइ नाणा

पाम्या जे सरीखो न ताना वरण एकक्षण समय मात्रइ षपावइं | तिमज वली दर्शननें जे आवरे ढांके तेदर्शनावरणीयकर्म पिणषपावइ १२ ने दुबे | जे अंतराय दानादिक लब्धिनें विघ्ने विशेषे करे कर्म ति अंतराय पिणषपावइं १०८ | सर्वलोकालोक कहितां नाना

वरणंषणेणं। तहेवजं दरिसणमावरेइ। जंअंतरायं पकरेइ कम्मं॥१०८॥सव्वं

२०५

वरणष पाम्या पछी जाणै विशेषें तथा देखइ सामान्यपणइं जा लो | मोहनी रहित थाइ | तिमवली अंतराय रहित होइ य | अनाश्रव पापरहित थाइ ध्यान जे शुक्लध्यान तेणे समाधिपरम स्वस्थपणे तेणें युक्त थिको

तउजाणइ पासए अ। अमोहणे होइ निरंतरा ए। अणासवज्झाणसमाहिजु

आउषपायइ उपलक्षण थी नाम कर्म गोत्र कर्म वेदनीय ए अघातीआ कर्म षपावइ मोक्षपामै क्षद्धकर्ममलरहित थको १०९ | लहे ते मोक्ष नो पामण हारआत्मा | ते सर्व हि जन्ममरण थकी तथा असमस्त दुःख थकी मुक्ति थइ | जे बाधइं बांधइ

त्तो। आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धो॥१०९॥ सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को। जंबाहई

पीडै सहित निरंतर जंतु जीव दीर्घ जा बा स्थितिथकी एहवा कर्म मयते हज्जने तेह प्रत्यक्ष दीसंइ तेहनें | पापनाप माहिं प्रमादिक रोग तेह थी विप्रमुक्त संसारयोग्य थाइ | निवारय अत्यंत वंथाइं घणो | दुःखी उत्कृष्ट का थी सर्व कर्त्तव्य जणाइ ११०

मेवं सयय जंतु दीहामयविप्पमुक्को। पसत्थो। तो होइ अच्चंतसुही कयत्थो॥११०॥

एतलेमिठेथाइंअनादिकालनोएहवो । समस्तदुःखपापकर्मतेहनो । प्रमोक्षमोक्षनोविवाने एहमार्ग कहिउश्रीती र्थकराइं जेहुः खरहि तमार्ग

उत्तराध्य० ३२ अणाइकालप्पभवस्सएसो। सव्वस्सदुक्खस्सपमोक्खमग्गो। वियाहिओजंस

सम्यग्प्रकारेपडिव जी जीवघणाइ अनुक्रमेंचअतिहंपडिवजिइंअनंतकषायाइंमोक्ष लहइंएहवोस्रुधर्मस्वामिजंबुप्रतिकहइछइ सर्वलिइ अध्ययनेंप्रमादपरिहरिवोकहिउ तथाप्रमादनुथा= एहप्रमादस्थानकअध्य यनोअर्थ कहिउ मेंतेशमा नथका नककहिउतेनि प्रमादेंकर्मनी प्रकृतिबंधाइ तेहभणीतेत्रीस मोकहीयेकर्म प्रकृतिनाअध्य यनकहइछइ

२०५

मुविच्चसत्ता। कमेणअच्चंतसुहीभवंतित्तिबेमि। १११। पमायठाणंअज्झयणं

३२ मिथ्यात्वादिकेंकरीनेंजीवइंकरीयइते कर्मकहीयइं तेआठकर्मकहिस्युं आनुपूर्वीइंतेआनुपूर्वीअप्रकारे परंजेकर्मतिपूर्वानुपूर्वीइंअनुक्रमइं एणेकर्मइंकरीनेंबांधणी एहजीवआणीकर्मसहित थिको च्यार

३२। अट्ठकम्माइंवोच्छामि। आणुपुव्विंजहक्कमं। जेहिंबद्धोअयंजीवो। सं

२०५

गतिरूपसंसारनेंविषेंभ्र मणादिपर्यायइंकरीनेंवर्त्त इ अनेक भेदपामइ जाणीइतेज्ञानतेहनेंजेढांकें तेमवस्त्रसूर्यनेंज्ञानावरणी देषीइतेदर्शनतेआवरें जिमपोलीउराजानोद र्शनतेदर्शनावरण वेदाइतेवेदनीय रूपदुःखअनुभवि रूप मोहेंज्ञा नीनेंपणतेमो

सारेपरिवत्तई। १। णाणावरणंचेव। दंसणावरणंतहा। वेअणिज्जंतहामो

हणीज्ञानी नेंविकल्पें आवइयोतानेंकर्मपामइनर कादिगतिथीनीकलवानेंबांधें बोलावीइंनानेंमोटेंशब्दइंतेगोत्र कर्म कहीइं २ नसामैगति४मांविधगाभावने पमाडैचीतारानीपरिंतेनामक र्मकहीयें दानादिकदेतांविघ्नें विघ्नपणेंआवें तेअंतरायजेराजभंडारी समान एणेप्रकारे एकर्म

हं। आउकम्मंतहेवय। २। नामकम्मंचगोअंचअंतरायंतहेवय। एवमे

सघलाइं आठसमासंक्षेपथीविस्तारपणें जेतलाजीवनाभेदतेतलाथाइ ३ कर्मनीमूलप्रकृतिकहीहिवेउत्तर प्रकृतिकरें ज्ञानावरणीपांचप्रका रेजाणवी तेकुणअक्ष तज्ञानाव रणीआभि

याइंकम्माइं। अट्ठेवउसमासओ। ३। णाणावरणंपंचविहं। सुयंआभिणि

बोधिकतेमतिज्ञाननेरुश्रावरणसहितनेमतिज्ञानावरणी । अवधिज्ञानअावरणसहितनेअवधिज्ञानावरणजी जेउ । मनःपर्यवज्ञानावरणथ । केवलज्ञानावरणएपसेद ४ । सुखजागेतेनिद्रा१ । तिमजकसावहदोत्र्यावइतेप्रचला २

उत्रा स्रा टा प णबोहिअोउहिनाणंवतइअो मणनाणंचकेवलाध।निद्दातहेवपयला

गादीनिद्राडुखेजागइतेनिद्रानिद्रा ३ । बालतोहीनतोअावेतेप्रचलाप्रचला ४ । विकारमहीअसुखनेयोगेकुइस्मान यडवगहिजेरलोसरागदेषनेविषे थवाहूलकावासुदेवनाथीअर्द्धबलरदू एतिलंतेथीणद्वीनिद्रा५ । दिवसमतरचीतविउरा विइनिद्रामाहिकरेतेद रुपपांचमीनिद्राहवइ नेहजाणिवी ५ । चक्रुनेरेदेखइरूपतेचक्रुदर्शनतेदनइअावरेतेचक्रुदर्शनणाव

२००

निद्दानिद्दायपयलपयलायातत्तायथीणगिद्धीउपंचमाहोइनायव्वा॥

रणबीजेइंद्रियइंदेखेतेअचक्रुदर्शनतेहनोअावरणतः चक्रुदर्शनावरणहसीइ अवसामान्यप्रकारेमर्यादासहि तदेषइतेअवधिदर्शनज्ञाननेहनेउदर्शनेहनेविषे अावरणतेऽवधिज्ञानावरण । केवलदर्शननेविषेअावरणतेकेवलदर्शनावरण ए४ दर्शनावरण । अनेंपूर्विलीनिद्रापएवंसवमिलीनवविकल्पएकारनउ जाणिवो

थाचक्खुमचक्खुउहिस्सदरिसणा।केवलेअअावरणा।एवंउनवविगप्पाणा २००

दर्शनावरणीयकर्म ६ । वेदनीयकर्मपणिबिहुंप्रकार । जेणइशरीरमननासुखपामेतेसातावेदनीनहीजेसातावेदनीयकहिउ । सातावेदनीयना

यहूंदरिसणावरणं। दुवेअणिअंपिअडुविहंसायमसायंचअाहियंसाय

घणलेश्रनुकंपादिकसेदेंघणाप्रकारगाणवा । इमअाहिलोधादिकअसातावेदनीयनामुणउघणाभेदथाइ ७ । मोहनीयकर्मपणिबिहुभेदेवेदनीयनीपरिइजाणवउ । नवरुविरुपदर्शननेविषेविरतिरूपचारित्रनेविषेतिमजवलीसर्वपणिजोलइतेरूसमामदर्शनमोहनीय

स्सउवक्कसेअा।एमेवावायस्सवी।उ।मोहणिअंपिडविहंदंसणचरणत

दर्शननेविषेत्रणिप्रकार कहाश्रीतीर्थंकरइ । चारित्रमोहनीयचारित्रनेविषेबिहुंलेरकहइ । मावोनावतेसम्यक्त । बोरेभावनेसिथ्याकुग्रसरूपरिणाम । कांईसमउकांइअाकउविपरीतनेंसम्यकमिथ्याबिहुंपरिणामकहइ ८

हा।दंसणेतिविहंवुत्तं।चरणेडविहंतवोध।समत्तंचेवमिछत्तं।सम्मामिछत्तमेव

एह एवं कही वेह त्रिणि ३ कृति — मोहनीय नाम दर्शन सम्यक्त्व ने विषइ — ९ — जे चारित्र ने विषै मूंझाई इसे ते चारित्रमोहनीय कर्म चारित्र ना फल जाणतां आदरे नहीं — ते हविहं ते दे कहि छै तीर्थंकर गण

उत्रासू.ट थीणद्धीउत्ति निद्दापयडीउ ॥ मोहणिज्जं दंसण १० ॥ चरित्तमोहणकम्मं दुविहं

धरादिके — क्रोधादिक षायइं करी चारित्र ने विषै मूंझाइ ते कषायमोहनीयकर्म — कषाय साथि जे वर्त्ते ते नोकषाय हास्यादिक तेणे करी मूंझाइ ते नोकषाय मोहनीय कर्म कहीइ — १० क्रोध मान माया लोभ अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यान संज्वलन ए सेद च्यारि गुणा सोल सेद ते ह सोल से द जाणिवउ

२०८

दुविहं आहियं ॥ कसायमोहणिज्जं तु नोकसायं तहेव य ॥ सोलसविहभेएणं

कषाय थकी ऊपनो जे कर्म ते कषायज कर्म — हास्य १ रति २ अरति ३ भय ४ शोक ५ दुगंछा ६ वेद ७ ए सात प्रकार पुणि हास्यने पुरुषवेद स्त्रीवेद नपुंसक वेद ए ज्याइ करी इति वारे ते नव पुणि हुइ — कर्म नोकषाय थकी ऊपनो ते नोकषाय मोहनीय कर्म — ११ — जेला फल राक्षित पाप बहु जेनारकी नुं आउ एके द्रादि क तिर्यंचि नुं आयु २

कम्मं तु कसायजं ॥ सत्तविहं नवविहं वा कम्मं च नोकसायजं ॥ ११ ॥ नेरइयतिरिक्ख

२०८

मनुष्य कहितां श्रीकृष्ण ते ह नाजे संगाम ते मनुष्य ते ह नुं आउखु — देवता नुं आउ चउत्थं ४ — इम आउ खाय कर्म ने — च्यारि प्रकारे — १२ — नामकर्म बेइ प्रकारे नउ

उं मणुस्साउं तहेव य ॥ देवाउयं चउत्थं तु आउकम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥ नामकम्मं

सर्वथि गोत्रा ते सकल नाम कर्म ति हि परीत असकल नाम कर्म कहि उचगवंत इं — च कतव कते ते हे शुभ नाम ना घणा से द अनंत प्रकार पुणि कहइ नं व रउ ते हे पुणि मध्यम सा बहु कहइ — इम अशुभ ना पुणि अनंता से द कहइ म ध्य पणे र भेद कहइ — १३

तु दुविहं सुहमसुहं च आहियं ॥ सुहस्स उ बहू भेया एमेव असुहस्स वी ॥ १३ ॥

गोत्रकर्म बिहुं प्रकारे जाणिवउ — इक्ष्वाकु ज्ञातादिक ऊंच गोत्र ऊंच वंश राजादिक नीच गोत्र कहिउं तीर्थकर इ — जातिमद कुलमद इत्यादिक अम द ने उणकरि ते आठ प्रकार उंच गोत्र — जातिमद इत्यादिक आठ मद करी नीच गोत्र जन ते हे ए कारण थिके कार्य नीच पवारिह एवं गोत्र नीच गोत्र कहिउं

गोयं कम्मं दुविहं उच्चं नीयं च आहियं ॥ उच्चं अट्ठविहं होइ एवं नीयं पि आ

१४ दीजे दानते हने विषे लाभन इविषइ । १ बारलोगवीइं ते भोग पुष्पादिक तेहने विषइ । बारंवार भोगवीइं ते उपभोग ते स्त्री आदिकने विषे तथा विशेष चेष्टा करीइं ते वीर्य तेहने विषइ । पांचप्रकारे अंतरायकर्म संक्षेपथी कहिउं

उत्रा.सू.८ हिआ ॥१४॥ दाणे लाभे अ भोगे अ उवभोगे वीरिए तहा । पंचविहमंतरायं स

अर्थ करें पूर्व विशेषपणें तो अनंतानो दथायइ । १ एह पूर्वें कही ते ज्ञानावरणीयादिक मूलप्रकृति । उत्तरप्रकृति ते श्रुतज्ञानावरणीयादिक कही । प्रदेश परमाणुआ तेहनें अग्र परिमाण ते प्रदेशाग्र १५

२८९

मासेण विआहिआ ॥१५॥ एआओ मूलपयडीओ उत्तराओ अ आहिआ । पए

बांध्या कर्मनो जीवडे देशाग्र ते अनुक्रमें क्षेत्र तिते काल स्थावते अनुभाग कर्मना पर्याय प्रकृति थिति प्रदेश अनुभाग उत्तर आगलि कहइ सुं तें सांभलि १६ सर्वसमस्त जे ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीयादिक कर्म प्रदेशाग्र परमाणुआनी संख्या अनंत इंक हिलाऽनंत जिम कार्पणि अनंत परमाणु तिम एक । मुद्रीपणें ते लेश्या ग्रंथ करा ऽनंतगुण सिद्ध थकी हीन ए देशाग्र कर्म निर्जरा ... एकस म इआ हुं कुल कर्म आश्री एजा

सग्गं खित्तकाले अ भावं चादुत्तरं सुण ॥१६॥ सव्वेसिं चेव कम्माणं पएसग्ग २८९

हठ नाग ग्रंथ नुं परिणामने ग्रंथिला इ कवी ह आवीय कीपति वेदनरी आ वीनजा इ एह वा शाब्दए तले ऽसव्वजीव ते हथी अतीत ऽनंत गुणें ऽधिक । तथा सिद्ध थकी अनंतमुं भाग जीव सिद्ध अनंतगुणा कइं इम कहिउं तीर्थंकरइ । एकेंद्रियादिक सर्वजीव नइं ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म ग्रहवा सर्व संग्रह इ छइ दिशि गतला

मणंतयं । गंठिअसत्ताईअं अंतो सिद्धाण आहिअं ॥१७॥ सव्वजीवाण क

वाक्या संग्रहवानी क्रियानइ विषइ सर्वप्रकार छिमदर्शिन आकर्षधानेंदयइ ६ छदशिनइ विषइ गत शाह इ । सर्वसमस्त जानदीकेत लाएक आकाशना आत्माइ आश्रया दिकप्रदेशानइ विषइ कर्म जीवने सर्वथी वायोग्य कुइ । तेके मध्य दधपाणीनइं न्याइ सर्व आत्मानुबंध कुइ इप बकार नदीत्तर एकेरी आत्मप्रदेशाइ छइ बद्ध बेध पामिउ । उदधि समु इतहनाम रीषउंनाम

म्मं तु संगहे छद्दिसागयं । सव्वेसु वि पएसेसु सव्वं सव्वेण बद्धगं ॥१८॥ उदहीस

नहेइ सागरा पमनो । त्रीसकोडाकोडि । उत्कृष्टी थिति हउइ । अंतर्मुहूर्त्त बिघडी मांहि जघन्य थोडी ते उ

रिनामाणं तीसई कोडिकोडिओ । उक्कोसिआ ठिई होइ अंतमुहुत्तं जहन्नि

ज्ञानावरणीयदर्शनावरणीयएबिहुकर्मनी उत्कृष्टीथितिसागरोपमकोडाकोडित्रीसजघन्यअंतमुहूर्त वेदनीयकर्मनीथितिपणइ३०कोडाकोडसागरउत्कृष्टीथितिजघन्यअंतमुहूर्त अंतरायकर्मनइविषइउत्कृष्टीथितिसागरोपम३०कोडाकोडिजघन्यअंतमुहूर्त

उत्रा॰स॰१८ ओ १९ आवरणिज्जाणदुण्हंपि वेयणिज्जंतहेवय अंतराएयकम्मं

एहथितिबिहुकर्मनीकहीश्रीतीर्थंकरइ २० उदधिसमुद्रनासरिषुनामएतलइसागरोपमनी सत्तरकोडाकोडि

२९० मि ठिईएसावियाहिया २० उदहीसरिनामाणं सत्तरिंकोडिकोडिउ

मोहनीयकर्मनीउत्कृष्टीथितिजाणिवी अंतर्मुहूर्तजघन्यथितिजाणवी २१ तेत्रीससागरोपमनी

मोहणिज्जस्सउक्कोसा अंतोमुहुत्तंजहन्निया २१ तेत्तीससागरोवमे उ २९०

उत्कृष्टीमाहीकहीतीर्थंकरइं एथितिआयुःकर्मनीजाणवी अनइअंतर्मुहूर्तजघन्यथितिजाणिवी २२

क्कोसेणवियाहिया ठिईउआउकम्मस्स अंतोमुहुत्तंजहन्निया २२

उदधिसमुद्रनासरीषउनाम वीसकोडाकोडि एतलइसागरोपमनी नामकर्मगोत्रकर्मनीउत्कृष्टी आठमुहूर्तजघन्यथितिजाणवी २३

उदहीसरिणामाणं वीसइकोडिकोडीउ णामगोआणउक्कोसा अट्ठमु

सिद्धअनंतामइइहेरसिद्धिनइअनंतमइभागइ अनुभागकर्मबंधनारसनाभेदहवइ सघलाइअंतसागेन विषइविहवीनउपदेशा

हुत्ताजहन्निया २३ सिद्धाणणंतभागे अणुभागाहवंतिउ सव्वेसुविपएस

ग्रंथा सर्वजीवथी अधिक तेहथी इ ग्राय नेहकारणथी कर्मं ग्रहणं सर्व तेजक ग्रा अनुभाग कर्म नाम विशेष संभाग
ग सर्वजीवथी अनंत गुणा ३ अइ कर्म ते जुना नाकारणजाणीनइ
२४

उत्रा.सू.टा.प ग्गं सव्वेजीवेसुइच्छियं २४ तम्हाएएसिंकम्माणं अणुभागेवियाणिया
एह कर्मनइ संवरिवइ अग्य थयाबइ अवनक एहवंतेश्रीसुधर्म पहइ आवकर्म प्रकृतिनामाध्ययन नवइ अर्थक
ग्रहवइ रुंधिवइ निर्जरा व रहतवन स्वामि जंबूप्रतिक हितुं लेसमाप्त थयुं ॥ सर्वि जइ अध्ययनि आठ
इ उजाण हइबइ २५ नुसर्वी इकर्म प्रकृति नी थिति कहीने हकर्म प्रकृ
२९१ तिनी थिति लेश्या मात्रे नवउ अध्ययन कहवी

एएसिंसंवरेचेव खवणे अजएबुहोत्तिबेमि २५ कम्मपयडी अज्झयणस
अध्यवसाय विशेष तिलेश्या कहीइ ते लेश्या आनूपूर्वइ अ तिनं अध्याकर्म बइजेकर्म लेश्याकहिता
समजेक संबंधि जीअध्यायनकहिस्यतं नुसविस्तिकुध सर्वनुसवीइ कर्म थिति नी नी प्रजावण
हइबइ कागइ नुक्रमइ हाणि नपुइलपुइलइप

म्मत्तं ३३ लेसज्झयणंपवक्खामि आणुपुव्विंजहक्कमं छण्हंपिकम्मले २९१

स्पने नेहनुभावरस सांसलवसुफक जेश्यानां नाम जेश्यानाकाजादि षरषवादिकरसजे ग आश्रवेसविवा
रनवइ विशेषलेह हितांथति २ कवर्ण तीखादिक रस सुगंधादिक ध्यानादिक परिणाम दिकजकहण
जेह गंध

साणं अणुभावे सुणेहमे । णामाइं वण्णरसगंधा फासपरिणामलक्खणं ।
उत्कृष्टादिक थानरहिवानउ काज थिति न तेहलेश्यानाइण्पार नामकहइवइ पहिली कृष्णलेश्या २ बुहवीनेजा
रकादिक गति बअपरंआउत ते उत नजइ आधा हवो उसांसलउ सुफ बीजी नीलले श्या २ त्रीजी कापोतलेश्या लेश्या धतथं
कत हआगिला सवनी लेश्या परिणमइ कहितापति ह २

ठाणंठिइंगईचाउं लेसाणंतुसुणेहमे १ किण्हानीलायकाऊयातेऊपम्हात
पंचमीव
जीवयल शुक्ल लेश्या छठी कहीयइ एह लेश्यानां नामतां आवइतव लेश्यानउ वर्णकहीइपाणीइजेहव पाना
श्यापय वलायवलाध अजीमूर्नमघतरुसरिषउ सीगड्ड
वउ

हेवयासुक्कलेसायछठ्ठाउनामाइंतुजहक्कमं २ जीमूतनिद्धसंकासागवलरि

काजुअरीवुफलअथ षंजगाफानावुंगलनुंमलअजन गफ्रफनलेश्यावर्णथकीएवी नीलअजनजेहवुअआकहइन
उणकाकेनस्मरीषी काजलअनइनत्रीसेनीकीकी जाणवी ४ स्मरीषी
समाने

उत्रा०सू०८ ह्मासन्निभा षंजंजणनयणनिभा किण्हलेसाउवण्णउ ४ नीला सोगसंकासा

२८२

वासंनीलवामनहनउजेस्वउ वेडूर्यरत्नसनेजनस्मरीषीजाण एणइथकारइनीललेश्यावर्ण ऽलसीआनामा
पीबनसरीषी वी षिकीजाणवी ५

चासपिछसमप्पभा वेरुलियणिद्धसंकासा नीललेसाउवण्णउ ५ अयसी

ध्कन्यविशयनेस्ना काइलपंषीयानीपांषसरीषी पारेवानीकांटिसरीषी एमकापोतलेश्यावर्णथकीजाणिवीका
फूलसरीषी इकालीइराती ६

पुफसंकासा कोइलछदसन्निभा पारेवयगीवनिभा काउलेसाउवण्णउ ६ २८२

हिंगुलोजेधातुतेहसरीषी ऊगनतासूर्यसरीषीतथा सूडानवमुखअणइदीपदीव एमतेजोलेश्यावर्ण
उतेहसरीषी

हिंगुलयधाउसंकासा तरुणाइच्चसंनिभा सुअतुंडपईवनिभा तेउलेसाउव

थिकाजा हरिआजनवसेदवर्णतेहसरीषी हलिदनवसेद तेहसरीषी सणनामाधान्यअनइअसनवीअउ
णिवी ७ हलिद्नाषंड वनस्पतीतेहनाफूलसरीषी

ण्णउ ७ हरिआलभेअसंकासा हलिद्दाभेयसमप्पभा सणासणकुसुमनि सा०

संषअनइअंकनामामणिअनइ षीरदधतेहनउधारधारा रूपानउअन
एवीपद्मलेश्यावर्णथिकीपीलीजाणवी कुंदहइफूलनउफूलतेहसरीषी तेहनइसमप्रभासरीषी इहारमोतीनउ
८

भा पम्हलेसाउवण्णउ ८ संषंककुंदसंकासा खीरपूरसमप्पभा रययहारसं

तेहसरीषी एमशुक्ललेश्यावर्णथिकी जिवलेश्यानउरसकहइछइजिमकडू जीवडानउरस कडूइरोहिणीवनस्प
जाणिवी जाणिवीउजली आंतुंबडानउरसस्वाद स्वादजेहवउ तीनीजातिनउरस

कासा सुक्कलेसाउवण्णउ ९ जह कडुअतुंबगरसो निंबरसो कडुअरोहिणि

स्वाद जेह एह दृष्टिकी अनंतगुणउ अनंतसं तेहवउ रसस्वाद कृष्णलेश्यानउ अ जिम त्रिकटु त्रिकडुनउ रस
कउ था इ राशि इ गुणपउ जेहवउ कडुउ निश्चयं कहूं उ जाणिवउ १० स्वाद जेहवउ
हवउ कडु

उत्तराध्याय रसो वा एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ किण्हाए नायव्वो १० जह तिकडुअस्स र

अनइ तीष उ जेहवउ हस्तिपीपर गजपी एह थी पणि अनंतनी राशि गुणउ तेहवउ रसस्वाद नीललेश्यानउ अति
परिनउ रसस्वाद उ जेहवउ कडुउ तीषउ जाणवउं ११

२९३ सो तिक्खो जह हत्थिपिप्पली एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ णीलाए नायव्वो ११ ज

जिम अधपाका आंबानउ रसस्वाद तुंबरकषाय लवअधकवउ कउ एह थी अनंतगुणउ अनंतसंख्या तेहवे
काइ षाटउ काई मधुरउ तउ नउ जेहवउ रसस्वाद हउइ इ राशि गुणउ जेहवउ कडुउ उ रस

ह तरुणअंबयरसो तुंबरकविट्ठस्स वावि जारिसओ एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ

स्वाद कापोतलेश्यानउ अति जिम कोठीतनउ पाका आंबानउ रस अथवा पाका कवठनउ जेहवउ रस मधुर
कपोत लउ जाणवउ स्वाद काइ षाटउ काइ मधुरउ

काऊए नायव्वो १२ जह परिणयंबगरसो पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ए २९३

एह थी अनंतगुणउ अनंतराशि एहवउ रसस्वाद तेजोलेश्यानउ वरप्रधान वारुणी मदिरा विविध घणा प्रकारना जे
गुणउ जेहवउ कडुउ काई षाटउ कोई मधुरउ जाणवुं तेहनो जेहवउ रस आसव मद्यनउ
१३

त्तो वि अणंतगुणो रसो उ तेऊए नायव्वो १३ वरवारुणीइ व रसो विविहाण व आ

तह नउ जेहवउ तथा मधु मद्य विशेष तेहनउ अनइ मे एह थी पद्मलेश्यानउ परएणं कहितां जिम षजूर पिंड अनइ मु
रसस्वाद रकाणसरप तेहनउ जेहवउ रसस्वाद अनंतगुणउ जाणवउ काई षाट द्राक्षा तेहनउ रस म
उ काइक कसायलउ जाणिवउ १४

सवाण जारिसओ महुमेरगस्स व रसो एत्तो पम्हाए परएणं १४ खज्जूरमुद्दियर

द षीर दूधनउ अनइ षांड तउ तथा साकर एह थी अनंतगुणउ अनंतनी राशि तेहवउ रसस्वाद शुक्ललेश्यानउ
रसस्वाद हनउ रसस्वाद इ गुणि तउ जेहवउ हउइ अति मीठउ मधुर जाणिवउ १५

सो खीररसो खंडसक्कररसो वा एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ सुक्काए नायव्वो १५

जउ पाचनउ गंधकडुउ हउइ जिम गाय गुणा कुतिरानाम जिम अहिसर्पनाम मानउ एह थी पणि अनंतगुणउ अधि अशुभ
इनई मुउ तेहनउ गंध जेहवउ नउ जेहवउ गंधवास गंधवास कउ लापा

जह गोमडस्स गंधो सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स एत्तो वि अणंतगुणो ले

फाडक्ड़ी जइथा कडवी तुंबडी जिम सुगंध जाइ केवडा आदि अनइ वली कपूर आदिक पीसवा ना गंध थी सहू थी
पंचनन्तगंध जाणिवउ १६ कक्कनन्तगंध अनेरा तेजकडवापीसीनाथी वीतागन्तगुं गंध जाणिवउ

 साणं अप्पसत्थाणं १६ जह सुरहिकुसुमगंधो गंधवासाण पिस्समाणाणं एत्तो
अनंतगुणउ प्रसस्तसली जे तेजो पद्म शुक्ल त्रिणि लेश्या जिम केतकी सुत्रधार काष्ठ कापइ तेहनु वली बहू दगाइनी
तेहनउ गंधजाणिवउ १७ तेहनी वस्तु तेह गंध थी सकल लेश्या जीवनउ जहांइ फ

 वि अणंतगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि १७ जह करगयस्स फासो गोजिब्भाए व
रसिहुडकंठिनपणास गउरिषीपुणअनंतगुणउ अप्रसस्तपाडइ जेह लेश्या कृष्णनील जिम बूरवनस्पती नाफलनउ
गनाफानउतुं जहांइ फ बहुउ कापोतनइ तनु फरिस जाणिवउ १८ फरिस अतिसूहालउ
रिसघरखरउ
सागपत्ताणं एत्तो वि अणंतगुणो लेसाणं अप्पसत्थाणं १८ जह बूरस्स व फासो
तथा नवनीतमां सिरीसहकुसुमनाफूलनउसुकमाल गडरुसी पणिअनंतगुणउ तेहन प्रसस्तली जे तेजो पद्म लेश्या पदम
षणतउफरिस जफरिस जहांइ उ शुक्ल त्रिहुं नउ फरिस जाणिवउ १९

नवणीयस्स व सिरीसकुसुमाणं एत्तो वि अणंतगुणो पसत्थलेसाण तिण्हं पि १९ २९४

त्रिविध लेश्या नउ परिणाम कहइ छइ सत्तावीस प्रकारइ केतला जघन्य मध्यम उत्कृष्ट त्रिसइ त्रयालीस नउ जघन्य लेश्या
त्रिहुं प्रकारइ जघन्य मध्यम उत्कृष्ट ते वली इकासी प्रकार त जघन्य मध्यम उत्कृष्ट ते वली मध्यम उत्कृष्ट ते वली २४
ते वलि नव प्रकारे तेहके जघन्य मध्य उत्कृष्ट जाणिवी २ इनाए
मध्यम उत्कृष्ट ते वलि
तिविहो व नवविहो वा सत्तावीसइविहेक्कसीओ वा दुसओ तेआलो वा ले सा
ह परिणाम इम कहइ छइ त मध्याग त्रिविध लेश्या नउ कृष्ण कहइ छइ त्रिहुं गुप्ति अगुप्त गुप्त मोकल उमन वच नीव्र
इंकरी परिणाम नी संख्या कही नम हिंसा मृषा अदत्त मैथुन परिग्रह ना कायादिक छ जीव काय नी हिंसा थी न आरं
काय नउ अनंत पणा थकी २० छ काय मिथ्यात्वादिक पांच आश्रव इक सरिखउ तनही बकाय नु जव दूषण हार तेन
रीषमाटी
णं होइ परिणामो २० पंचासवप्पमत्तो तीहिं अगुत्तो छसुं अविरओ य तिव्वा
परिणमइ सर्व जीव नइं अहित कारी छ छ कृपण इहलोक परलोक ना दुःख नी शंका रहित अकार्य करतउ इंद्रिय
मत्तनहइ आलविमास्या कार्य कारी मनुष्य स्त्री मा कार्य करतां परिणाम जेहना इसां काइ नही नथी जी
हिक २१ ताजण
२९४
रंभपरिणओ खुद्दो साहस्सिओ नरो २१ णिद्धंधसपरिणामो निस्संसो अजिइं

ह्म॰ एतलइ योगिइं आश्रवादिकइं कृष्णलेश्यानइं परिणमइ २२ परनागुणनी अणखमक तपबारभेद क्रिया
सहितविकत्र अदेखाई रागद्वेष नुसाव सूपा

उत्तराध्य॰ ३४ दिढे एयजोगेसमाउत्तो। किण्हलेसंतुपरिणमे।२२। इस्साअमरिसअतवो अ
वपरनइ अनाचारनइ विषयलं रूषसावेइ पापाचारअनाचार सरसरसनइवि किमसुधा जनइंसुखक
त्ववइना नीललेश्यानउ पर सहित दनउकरणहार षइलंपटतथा सइइमसातानउगव
षणहार २३

२९५

विज्जमायाअहीरयागिद्धी।पउसेअसढेपमत्तरसलोलुएसायगवेसए अ'२
कृत्यादिकआरंभथीपाणीना सर्वनइं अविरतकारीअण विमासितं एतलइ सर्वि योगइसहि नीललेश्यानइपरिण
उपद्रवनवीउसरितनथी कामकार्यकरइजिकोनरमनुष्य लिइं तनेह मइ

३॥।
३। आरंभाअविरओखुद्दोसाहस्सिअनरो।एअजोगसमाउत्तोनीललेसंतुपरि

२९५

परिण वचनसवांकाबोलइतथावांकइ मनिइवांक किमइकरीवांकउटा पोतानादोषढांकउलवकप
मइ कार्यकरिवेषवर्त्तइ ६३ जीनसकीयइं इइजअवर्त्तइ

२४
णमे।२४।वंकेवंकसमायारे।णियडिल्ले अणुज्जुए।पलिउंचगओवहिए

विपरीतपणउवइजहनइंअर्थ परमइअर्थकोसि रागद्वेषइंदुष्टइ चोरीकरइपारकीवस्तुलिइअनेरा गहइ
तलोजपणरहित २५ हमहित विरूपबोलइ नीसंपदादेषीनसकइ विज

मिच्छदिट्ठीअणारिए।२५।उप्फालगदुट्ठवाईअ।तेणेआविअमच्छरी।एअ

इत्यागइसहितनइ कापोतलेश्यानइपरिणमइ नीचाविनीमनवचनकायाइंकरीनीचव मायार चपल
परिणमइ २६ मानरहितपणइवर्त्तइचपलपणारहित कुत निना

जोगेसमाउत्तो काउलेसंतुपरिणमे।२६।णीआवित्तीअचवले।अमाईअकु

दृढ़ दृढला विनीत विनयकरानउअ्रसस मिथ्यादिक उपधानवंतसिद्धांत धर्मनाऽनुष्ठान बलफहरका पाप
दिकरहित जेकरइगुरुप्रुक्त विनयजेणअ्रे नइविषइमा सणिवानइउ्रबंइ नीरुविबइजे पानउनिर्ण मी
र्व इंद्रियदमाबइजणइ पारवंत योगनउवहणहार हनइ हणहार

उत्राध्या०अ तहले विणीअविणएदंते।जोगवंउवहाणवं॥२७॥पिअधम्मेदढधम्मे।वज्जभी

लीहतउबइ पहमविजइयोगइंसहित नेजोलेश्यानइपरिणमइपरिण पातलाछेक्रोधइंक्रोधउ्रानइमा
मइ २५ नअ्रेइंमानजेहनइ

२५८

रुहिएसए।एयजोगसमाउत्तेतेउलेसंतुपरिणमे॥२८॥पयणुकोहमाणेअ

वलीमायापरवंधनाअ्रनइंलोभबाबापातला रागद्वेषबकीउपशमुबेबि मनवचन आत्मादिक
जाबापाउबइजेहनइ तजेहनइंदमुबइआत्मा कायानायो गनउपकरे तथाथोलवउ
गवमिबइ उबइ २९
जहनइ

माया लोभेयपयणूए।पसंतचित्तेदंतप्पा।जोगवंउवहाणवं॥२९॥तहाप २५८

उकृष्टनहीवरिउवीसमोइंद्रिय एतेसर्वलिइयोगें पद्मलेश्यानेंपरिणामें
नेनोबोलणहार पनीताबे जिणे सहित परिणमें

यणुवाईअ।उवसंतेजिइंदिए।एअजोगसमाउत्ते पम्हलेसंतुपरिणमे

आर्तध्या अनेरौ परिहरीनइं धर्मध्यान ध्यावइंचितमां रागद्वेषथोउपसमोटेंदिव्रजे स
३० न द्रध्यान नघाशुक्ल दिधरइं मना दमितछेआत्मजेहने मि
ध्यानसह

॥३०॥अट्टरोद्दाणिवज्जित्ता।धम्मसुक्काणिझायइ।पसंतचित्तेदंतप्पा।समि

तिपांचसमेतो गुपतित्रिसे सरागीसंजम अवीतरागक रागद्वेषउपस इंद्रियप एतदेसर्वलिइयो
करीगुप्तो नेधर्प. कायना दायघ माबे जेहना जीताजे गेंसहित
३१ कीउपसमवाबका तेबइ तो

एगुत्तेअगुत्तिसु॥३१॥सरागवीयरागवा।उवसंतेजिइंदिए।एअजोगसमाउत्ते

शुक्लेश्यानेंपरिणामेंपरिणमै असंख्यातीउसर्प्पिणीजिसंसमयरूपकताश्माव र्प्पिणीसमयरूपकता
३२ तेहनेउत्सर्प्पिणीकहीयेतथाअसंख्यातीअवस माववजिसंतेअवसर्प्पिणीकहीयेतेहनाजेसमय

उत्ता०सू०प्र० सुक्कलेसंउपरिणामो ३२ असंखिज्जाणोसप्पिणीणउवसप्पिणीणजेसम

२८७

अनेअसंख्याताजेलोकाकाशना देश तेतलाइकथानकलेश्यानाछेचरतो पनतोशुक्लःअशुक्लनिर्मलपणउत्कल ३३ अंतर्मुहूर्त्तनुअर्द्धजघन्यथकीतेनोकृष्णलेश्याथकीपातरीजाणवी ते त्री स

या संखाइआ लोया लेसाण हवंति ठाणाइं ३३ मुहुत्तद्धं उ जहन्ना तित्ती

सागरोपमअंतर्मुहूर्त्तअधिकेइहांमुहूर्त्तसमयथिलमुहूर्त्तनउपकदेशलीजेइहांअंतर्मुहूर्त्तजाणवो उत्कृष्टीएहस्थिति एतलेजीणवीकृष्णलेश्यानीस्थिति ३४ अंतर्मुहूर्त्त

संसागरा मुहुत्तहिया उक्कोसा होइ ठिई णायव्वा किण्हलेसाए ३४ मुहु ३०८

२८७

जघन्यथकीनील दशसागरोपमअनेंपल्योपमनंअसंख्यातमेंभागेंअधिक ए समस्ताएथवीनेंविषे पांचमीनाउपरलाप्रतरआश्री उत्कृष्टीएथवीनेंस्थिति

त्तद्धंउ जहन्ना दस उदही पलिअमसंखभागमब्भहिया उक्कोसा होइ

तेहजाणवी नीललेश्यानी ३५ अंतर्मुहूर्त्तजघन्यस्थिति त्रिणसागरोपम पल्योपमनेंअ

ठिई नायव्वा नीललेसाए ३५ मुहुत्तद्धं उ जहन्ना तिन्नुदही पलिअमसंख

संख्यातमेभागेंअधिकवालुकाएथवीनीअपेक्षा उत्कृष्टीमोटीएहस्थिति तेहजाणवीकापोतलेश्यानी ३६ अंतर्मुहूर्त्तजघन्यथकी

भागमब्भहिआ उक्कोसा होइ ठिई णायव्वा काउलेसाए ३६ मुहुत्तद्धं उ

स्थिति बिहसागरोपमपल्योपमनेंअसंख्यातमेभागेंअधिकवैमानिकदेवलोकनीअपेक्षाइं उत्कृष्टीस्थितिएहतेजाणवीतेजोलेश्यानी

जहन्ना दो उदही पलियमसंखभागमब्भहिआ उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा तेउ

तेत्रीस सागरोपम मुहूर्तइं अधिक पांचमो
जाणवी ३७ अंतमुहूर्तनी जघन्य स्थिति विमान सर्वार्थसिद्धि तेहनी अपेक्षाइं उत्कृष्टी स्थिति

उत्तराध्य २०४ लेसाए ३७ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना दसउदही होंति मुहुत्तमब्भहिया उक्कोसा होइ

होइ तेमा जाणवी शुक्ल लेश्यानी ३८ एरवलु तिश्रेलेश्यानी तेत्रीस सागरोपम मुहूर्तइं अधि
पदम पांचमो विमान सर्वार्थसिद्धिनी अपेक्षाइं

२९८ ठिई नायव्वा सुक्कलेसाए ३८ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना तेत्रीसं सागरो मुहुत्तमब्भ

उत्कृष्टी होइ स्थिति तेमा जाणवी शुक्ललेश्यानी ३९ एह रवलु तिश्रेलेश्यानी सामा
न्यम

हिया उक्कोसा होइ ठिई नायव्वा सुक्कलेसाए ३९ एसा खलु लेसाणं ओहेणं

कार स्थिति वर्णवी जाणवी च्यारे गतिनेविषइ एतला अनंतर लेश्यानी स्थिति कहिस्यइ दशसह
प्रत्येकइ ४० हस्रव

ठई उ वन्निया होइ चउसु वि गईसु एत्तो लेसाण ठिई उ वोच्छामि ४० दसवा २९८

रिस कापोतले
श्यानी स्थिति जघन्य पहिली पृथवीइं पहि
लइं पाथडे मध्यम त्रीजइं त्रणि सागरोपम अनेंपल्योपमनो अ
संख्यातमो भाग अधिक उत्कृष्टी स्थि
ति कापोतनी त्रीजी वालुका पृथवीना

ससहस्साइं काऊए ठिई जहन्निया होइ तिन्नुदही पलिओवमसंखभागं

उपला पाथडानी जाण
वी अपेक्षाइं ४१ त्रिणि सागरोपम अनेंपल्योपमनो असंख्यातमो
भाग अधिकी नील लेश्यानी स्थिति त्रीजी वालु जाणवी
कापृथवीनें अपेक्षाइं जघन्य थोडी तो दश सागरोपम अनेंप
ल्योपमनो असंख्यात
मो भाग अधिको उत्कृ

च उक्कोसा ४१ तिण्णुदही पलिओवमासंखभागं जहन्नेण नीलठिई दस उदही ८४

ष्टी स्थिति नील लेश्यानी जाणवी पांचमी धूमप्र
भा पृथवीने विषें उपरिला पाथडानी अपेक्षा ४२ दश सागरोपम अनेंपल्योपमनुं अ
संख्यातमो भाग जघन्य स्थिति
होइ धूमप्रभा
पृथवीनइं विषे

पलिओवमसंखभागं च उक्कोसा ४२ दसउदही पलिओवमसंखभागं जहन्न

अपेक्षाइ तेत्रीससागरोपमनी उत्कृष्टी स्थिति होइ क्रस्नलेस्यानी सातमी तमतमःप्रथवीनाअपेक्षाइ ४३ ए नारकी सगलाईनी

उत्राध्य० प ओ होइ तेत्तीससागराऊ उक्कोसा होइ किण्हाए ॥४३॥ एसा नेरइयाणं ले

लेस्यानी स्थिति वर्णवी विस्तारपणे जाणवी तिवारपछीकहिस्यं तिर्यचनी मनुष्यनी देवतानी ४४

२५९ साण ठिई उ वण्णिया होइ तेण परं वुच्छामि तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥

अंतमुहूर्त्तनोकाल लेस्यानी स्थिति जघन्य मध्यम अनेउत्कृष्ट जिहां पृथवीकायादिक नेविषे जेशुक्ललेस्या तिर्यचनेअनेसमूर्छिम मनुष्यादिकने वर्जिनइ दिक जेहने जेम जघे तेजाणवी

अंतोमुहुत्तमद्धं लेसाण ठिई जहिं जहिं जाउ तिरियाण नराणं वज्जि २५९

तालाने केवललेस्या शुक्ललेस्या प्रतिइ ४५ अंतमुहूर्त्तजघन्यस्थिति उत्कृष्टीतेयइ स्थितिसर्वकोडिनं तेहनेंन वइ वरसे

त्ता केवलं लेसं ॥४५॥ मुहुत्तद्धं तु जहन्ना उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ नवहिं

करीऊणी जाणवी शुक्ललेस्यानी स्थिति एतले सर्वकोडि आउ केवलज्ञानपामें पृथवीपाणी वनस्पती तेहनइ पहिला च्यार लेस्या तेउ वाउ विकलेंद्रियसमूर्छिमतिर्यंच मनुष्य एहतिर्यचनी अनेमनुष्यनी लेस्यानी स्थिति विस्तर

नारकीनेपांचतीनिलेस्याछाजमेनेछेलेस्याउत्तम इ उ०

वरसेहिं ऊणा नायव्वा सुक्कलेसाए ॥४६॥ एसा तिरियनराणं लेसाण ठि

पणेजाणवी एतलेंअनंतरिकहीस्यं लेस्यानी स्थिति देवतासमस्तनी ४७ दससहस्र

ई उ वण्णिया होइ तेण परं वुच्छामि लेसाण ठिई उ देवाणं ॥४७॥ दसवाससह

कृष्णलेश्यानी थितिजघन्यथोनीतो कहइ छइ(?)र पल्योपमनउ असंख्यातमो उत्कृष्टी
बरसना भवनपतीनी अपेक्षाइ भाग

उत्ता॰स्॰ ट॰ स्साइं॥ किण्हाइ ठिईजहन्निआ होइ॥ पलियमसंखिज्जइमो॥ उक्कोसा
तेइ कृष्णलेश्यानी स्थिति ४८ जे कृष्णलेश्यानी स्थिति निश्चइ उत्कृष्टी समय एकें करी नइ अधिकी एतली

३००

हो इ किण्हाए॥४८॥ जा किण्हाए ठिई खलु उक्कोसा सा उ समयमब्भहिआ
नीललेश्यानी थिति पल्योपमनो असंख्यातमो भाग नीललेश्यानी पहिलानी अपेक्षाइ उत्कृष्टी स्थिति जाणवी ४९ जे कृष्णलेश्यानी थिति बइ खलु निश्चे सहित

जहन्नेणं नीलाए पलियमसंखं च उक्कोसा॥४९॥ जा नीलाए ठिई खलु उ ३००

उत्कृष्टी ते वली एकें समें करी अधिकी जघन्य थोडीती कापोतलेश्यानी स्थिति जाणवी अने पल्योपमनो असंख्यातमो

क्कोसा सा उ समयमब्भहिआ॥ जहन्नेणं काऊए पलिअमसंखं च उक्को
भाग उत्कृष्टी ५० एतले अनंतर कहि सिउ तेजोलेश्या जिम सुर देवतानां गण समूह नेठइ तिम तेह कहिनइ कहिइ भवनपतिने व्यंतरने जोतिषीनइ वैमानिकनइ भवनपति व्यंतर

सा॥५०॥ तेण परं वुच्छामि तेउलेसा जहा सुरगणाणं॥ भवणवइवाणमंतर
ने जघन्य दश हजार वरिस उत्कृष्टी व्यंतरने पल्य १ पल्योपम एक जघन्य थोडी उत्कृष्टी तो सागरोपम २ झाझेरां भवनपतिने उत्कृष्टी कोडि २ उ सागरोपम ज्योतिषी तेजोलेश्यानी थिति जाणवी तेजोलेश्यानी स्थिति जाणवी वेमानिक आश्री जघन्य पहिले देवलोकें ने जघन्य पल्योपमनो आठमो भाग उत्कृष्टी पल्य १ वर्ष लाख

जोइस वेमाणिआणं च॥५१॥ पलिउवमं जहन्ना उक्कोसा सागरा उ दोन्नि हि

कृष्ट बीजे देवलोक

बे सागरोपम जाझेरो पल्योपमने असंख्यातमइ भागे अधिको हो इतिम जाणवी
तेजोलेश्यानी इति जाणवी ५२
दश सहस्र वरसनी

उत्रा सू० ८ आ पलिअसंखिज्जेणं। होइ भागेण तेऊए॥५२॥दसवाससहस्साइं
सूत्र
२०१

तेजोलेश्यानी स्थिति जघन्य थकी तो दश हजार वरस भवनपति आश्री जाणवो बे सागरोपम अनै पल्योपमनो असंख्यातमो भाग उत्कृष्टी तेजोले

तेऊए ठिई जहन्निया होइ। दो उदही पलिओवम असंखभागं च उक्को।

श्यानी स्थिति जाणवी बीजा देवलोकनी अपेक्षाइ ५३ जो पद्मलेश्यानी स्थिति आवइ उत्कृष्टी ते एक समय करी अधिक जघन्य स्थिति शुक्ललेश्यानी स्थिति जाणवी त्रीजा देवलोकनी अपेक्षाइ

सा।५३।जा पम्हाए ठिइ खलु उक्कोसा उ समयमब्भहिआ जहन्नेणं सुक्का २०१

तेत्रीस सागरोपम एक अंतर्मुहूर्त्त अधिको उत्कृष्टी शुक्ललेश्यानी स्थिति जाणवी अनुत्तर विमाननी अपेक्षाइ ५४ हिवे लेश्यानी गतिद्वार कहे छे कृष्ण नील कापोत लेश्यानी स्थिति जाणवी त्रणि एह लेश्या अधर्म पापनी जाणवी जेहनी पापआविक

ए।तेत्तीसं मुहुत्तमब्भहिआ॥५४॥ किण्हा नीला काऊ तिन्नि वि एआओ अहम्म

नाकारण त्रिणि अधर्म जकहीयइ एणि त्रिण प्रकारे लेश्याइ जीवप्राणी दुर्गतिने नरक तिर्यंचनी गति ऊपजइ ५५ तेजोलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्या त्रिणि एह लेश्या धर्मलेश्या

लेसाओ एआहिं तिहि वि जीवो दुग्गइं उववज्जई॥५५॥तेऊ पम्हा सुक्का तिन्नि वि एआओ

कहीयै निर्मल धर्मना कारणथकी एणे त्रिणे लेश्याइ जीवप्राणी सद्गति देवलोक मनुष्य गतिइ ऊपजे ५६ लेश्या सघलीइ कृष्ण नील पकापोत तेजो शुक्ल लेश्याइ हि

धम्मलेसाओ एयाहिं तिहि वि जीवो सुग्गइं उववज्जई॥५६॥लेसाहिं सव्वाहिं पढमे स

वलि आश्री पहिला समयने विषे परिणमाइ आत्मा परिणमइ तेणीइ क नथी कोई जीवने ऊपजिवो परभवने विषे पहिले समय लेश्यापमाडि ऊपजिवो न होइ लेश्या इकरी

मयंमि परिणयाहिं तु न वि कस्स वि उववाओ परे भवे अत्थि जीवस्स॥५७॥लेसा

मगलीइहंपदृस्तला चरिमे समये सम्यग्ने विषे परिणमी। नविनिइकोईजीवनेउपातक्रप परंभ्रने
दिक मीदपणेऊईतणीइकरीनइ जिवा अवतरिवा राजवने

उत्ता०स्र०१३५ ह्निसव्वाहिं चरिमे समयंमि परिणयाहिं उ। न वि कस्स वि उववाउ। परे भवे अ

विषेरतलेंठदलेंसमयजेलेश्या लेश्यानेअंतमुहूर्त्तइयरणमि अनेअंतमुहूर्त्तथाकेथ लेश्यापरिण
आविइ ऊपजिवोनहोइ ५८ येथके के णमेजेहवा

२०२

त्थि जीवस्स। ५८। अंतोमुहुत्तंमि गए। अंतमुहुत्तंमि सेसए चेव। लेसाहिं प

लेश्यारूपनीपरिणइआवे जीवप्राणीयोपरलोकि जेहनणीअप्रशस्तलेश्याथीदुर्गति नाअणजीव
तेवेदीयइ नरक तिर्यंचमनुष्यदेवगति प्रशस्तलेश्यानीमदतिनिणेएमहदलेश्या ग सरूप

रिणयाहिं जीवा गच्छंति परलोअं। ५९। तम्हा एएसिं लेसाणं अणुभावे वियाणिआ

विपाकथकीजाणीने अप्रशस्तपापरूपीकृष्ण प्रशस्तजतीतेजोलेश्यापद्मशुक्लरूप३ मिजइ पलेश्यानो
किवारीनें कापोतप३णिलेश्यावर्जीने पत्रिवेनेआश्रीचारित्रीउपरनोसधर्मान्या प्रतेकहे अध्ययनइ

अप्पसत्थाउ वज्जित्ता। पसत्थाउ अहिट्ठिज्जा मुणि त्तिबेमि ६०। लेसज्झयणं सम्मत्तं॥३४॥ २०२

सांभलोमुक्तकादितांप्रतिअहोशिष्य मार्गमोक्षनोमार्गबुद्धिक श्री जेमोक्षमार्गप्रतिइ दुःषनोअ
एकाग्रमनथईनइंसांभलो तीर्थंकरदेवजीइंदेषाड्यो आदरतोचारित्री वपापकर्म
उ नोक्षयक

॥ सुणेह मे एगग्गमणा। मग्गं बुद्धेहिं देसियं। जमायरंतो भिक्खू। दुक्खाणं

रणहार १ घरनोवासअथवाघररूपी प्रव्रज्यादीक्षामहाव्रतरूपने तेणेइहआगलिक
ऊइ उवासंबाधनें आश्रयोमुनिचारित्रीउ हस्मै तेहसंगपुत्रध
नादिकसंसारनाहेतु

तकरो भवे। १। गिहवासं परिच्चज्जा। पवज्जामस्सिए मुणी। इमे संगे वियाणिज्जा

जाणपाजो तेणेंसमेसंक्रातिबंधाइछेकर्म तेकेहासंगजीवमाहिंसा चोरीनोकरिवोमैथुन वां
ईइ इकरीमानवसंसारीमनुष्या असत्यनोबोलिवो ननोसेविवो बा
दिक २

ज्जा जेहिं सज्जंति माणवा। २। तहेव हिंसं अलियं। चोज्जं अबंभसेवणं।

रूपजे काम अनें लोभ एतलें चारित्रीउ वर्जेइ परि मनोहर एहवो चित्रांमण उंचिइ रूलें अनें अगरादि
परिग्रह हरे ३ सहित घर इ रंग धूपें वासित सुगंधकीधं

उत्ता सू०८ चाकामं च लोहं वा संजउ परिवज्जए ३ मणोहरं चित्तघरं मल्लधूवेण वासिअं

कमाडें करी सहित ऊजलो एहवो घर थानक उपाश्रयादिक न जे एना कारण थकी इंद्रियनी हवेंइ
२०३ चंद्रुआ सहित प्रार्थेन वांछें ते साधक कहीइ ४ पापें साधु चारित्रियाना काहि
तेन करइ उतेइ

सकवाडं पंडरुल्लोअं मणसा विन पत्थए ४ इंदियाणि उ भिरकुस्स तारिसं

वा उपाश्रयनें दोहिलां निवारतां पडें चपल कामरागने वधारणहार तो रहइ किहां ते कहेइ छइ
विषें रहे आपणी इछाइं प्रवर्त्तवाथी एहवो उपाश्रयनु विशेष शमशाननें विषें सूनाघर
थइ णनही नें विषइ रहिवो

मि उवस्सए दुक्कराइं निवारेउ कामरागविवड्ढणे ५ सुसाणे सुन्नगारे वा

२०२

इ रूना मूल रागद्वेषरहित स्त्रीपशुपंडकरहित एकांतघर वसिवउ रहिवो ते श्मशा प्रासुक अ
नें विषइं थको एहवें पोतानें अर्थि नीपजाव्यो नादिकनें विषें ६ चित्त भूमिका
तिहा

रुरकमूले व एगओ पइरिक्के परकडे वा। वासं तत्थाभिरोअए ६ फासुअं

नें विषें आत्मानें अनेरानें जेह स्त्री जातिनो उपद्रव न थी ते एहवा श्मशानादिक नें विषें चारित्रीउ परम संयमी
जिहां आबाधा न थाइ एतलें स्त्रीजाति जिहां रहिता न थी एहवी परिवास रहिवो मोहनो अर्थीछे ७

मि अणाबाहे इत्थीहिं अणभिदुए। तत्थ संकप्पए वासं भिरकू परमसंजए ७।

पारकें वा मरइं ते आचरणी जोइं अनेरा पासि पुणकरावइ नही ईट करावि वा माटीपाणी अ मूतमार्गी एकें
यतीपोते घरें उरणादिक चोरादिक ति मवली जातुकीधो अनुमोदेनहि पावि वा एहवा घर आरंभ क्रियादिकनो
नकरे नें विषइ

न सयं गिहाइं कुव्विज्जा नेव अन्नेहिं कारए गिहकम्मसमारंभे भूआणं दि

उपी सही सम्रुव ऊणनि जीवनें वध होइ श्रम बेंद्रि सूक्ष्म बादर त्रस थावर अपवास्तमनी ते ही जकारण थकी
थइस्या ८ यादिक थावर पृथवी आदि विराधना अशुभ भावनाइ तनबादरमोटा घरना आरंभ

स्सए वहो ८ तसाणं थावराणं च सुहुमाणं बादराण य तम्हा गिहसमारंभं
जीवने तेहनो विनाशवो

उत्तरा०सू०टा

३०४

साधुन्वा रित्री उ अतिशय तिम दिवे आहारनो विधि कहे छे पचिवा रांधिवाने विषे अनेरा प्राणबेंद्रियादि
स्फे वर्जे परिहरइ ९ तिमवली भातने पाणीने विषइ पादिपचाविवाने विषे कछवी आद

संकप्पपरिवज्जए। तहेव भत्तपाणेसु पयणेपयावणेसु अ पाणभूअदयट्ठा १

ते दया पोतें पचइ नही अनेरा पाणी निश्रित एकेंद्रिय तथा हरादिकधान पृथिवी निश्रित पृथ्वीजीव मा
ने अर्थे पादिपचावें नही १० निश्रित एकेंद्रिय तथा ईल धनेरादिक जंतु अनथा अन्य काष्ट निश्रित वनस्प ती जीव कणादिक

ए न पए न पयावए॥१०॥ जलधन्ननिस्सिआ जीवा पुढवीकट्ठनिस्सिआ ह

हणाइ मरइ भातपाणी ते कारण भिक्षु पोतें पादि विसर्पणशील धणो छाइ घणा प्राणीनो
ने अर्थे पचावें नही पचताने अनुमोदे नही ११ सर्वदिसें शस्त्रधारानी परें धा रजेहने वनें विनाशइ

म्मंति भत्तपाणेसु। तम्हा भिक्खू न पयावए॥११॥ विसप्पे सव्वओधारे बहुपाणि[

तो कारण सार नथी माटि अगनि सरी ते कारण थकी साधु जाति बली साधु स्पोक दिइं जे दि
सो बीजो कोई शस्त्र तरवार अग्निने दीपावें नही १२ रण्यजाति रूपो सोनो अनेरो

वणासणे। नत्थि जोइसमे सत्थे तम्हा जोइं न दीवए॥१२॥ हिरण्णं जायरूवं च ३०५

गुण धन धान्यादिकने अर्थे समान सरिषो लोष्ट पाषाण अनें विरमिउ उसरिउ छे क्रयले मूलि ईं करी कि
प्रार्थइ वांछे नही उ वचनका कांचन स्वर्णादि जेहनें एहवो सा वाथा विक्रयवेचवा थकी १३ याणो ते लेतां क्र
याइ किस क्ष

मणसा वि न पत्थए। समलेट्ठुकंचणे भिक्खू। विरए कयविक्कए॥१३॥ किणंतो क

य करी साधु मा क्रियाणादिक वेचितउ थको क्रयक हितो लेवो विक्रय वेचिवो भिक्षु साधु न हुइ तारिसो तेहवो
न जो कसरिषो व्यापारे करी माटि वाणीउ क तेहने विषे प्रवर्त्ततो थको जेहवो सूत्र बोलिउ छे आचारित्री उ

इओ होइ विक्किणंतो अ वाणिओ। कयविक्कयंमि वट्टंतो। भिक्खू न हवे तारिसो॥१४॥

न उसिउं करिवो भीषिवो योग्य वस्त्र भिक्षु ईं चारित्रीयें तेहवो भिक्षुनें क्रयविक्रय महादोषमो अनें भि
उं पाची लेवो परं मूल्यें वेचातो ते लेवो मागिवानी वृत्ति छे जेहनें टा दोष क्षावृत्ति ते

भिक्खिअव्वं न केअव्वं भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा। कयविक्कउ दोसो। भिक्खावित्ती

सुषनी आपणी गणधरनी समुदाई ते उंछ गोचरपरं घ ते उंछ जेहवो सूत्र छे तेहने विषे आहारादिक लादि
हारछे भिक्षाल्यइ परं एक लोनही ते सम मरानी बोली ते हवो पिंड आपणी पार नो पिंड न जाछि उ तो
नीनव्हिइ परेंलेइ कीनिंदा हरहि त

सुहावहा॥१५॥ समुआणं उंछमेसिज्जा तहासुत्तमणिंदिअं। लाभालाभंमि सं

उगसंतो साधुपिंडनिक्षानोपात्रेयडिवो जिमजोजननकरइतेकरैवे जोमनेलेद वासीइत्यादिकरुम शरीरनोरम
टिपेयरहतसी बाधको नेपिंडयाचरैआसेवइ १६ स्वपरनेविषेवयजननीरमने जीवेवमिकरी लाभाविवेअप्रर्छित धातुतेहनी
ने

उत्राध्यासूट॥ उंछे पिंडवायं चरे मुणी १६ अलोले न रसे गिद्धे जिब्भादंते अमुच्छिए न रसट्ठाए
इवृद्धिनेअर्थेअपूर्व यावत्संयमनानिर्वाहनेअर्थे अर्चिवोपुष्पादिकेपूजाकरवी वांदिवोस्तव जिमसजिवोवस्त्रा
भोजनकरइ आहारलिइ महामुनीश्वर १७ वोवइबेसाडीयादिकनोमनन तिकरवो दिकेप्रतिलाभवो

कर . वो
३०५ भुंजिज्जा जवणट्ठाए महामुणी १७ अच्चणं रयणं चेव वंदणं पूअणं तहा इ
श्रावकअघदाउपगरणअघवालब्धि पतजावानामनेकरीगुणनभा वलीमितकरेशुक्लध्यानलोध्यायइजिणि नी
रूपिणीऋद्धिसत्कारइव्यादिसन्मानदे धेउववचनकायादिकेनप्रार्थे ध्यानेजीवकर्मक्षपावीनइ आ

ड्ढी सक्कार सम्माणं मनसावि न पत्थए १८ सुक्कझाणं झिआएज्जा अणि
णारहितकीधंतपनवे कायादिकवोसरावीवैजेणइएहवो जिहांलगेकालमरणनोप्रस्ता मलेष
चेधनादिकेरहित विकोअप्रानेवंधविहारेविचरइ वपर्यायआवे तिहांलगइ १९ नानेक

आणे अकिंचणे वोसट्ठिकाए विहरिज्जा जावकालस्सपज्जउ १९ निज्ज ३०५

रवइअनुक्रमेछांडीनेअ कालधर्ममरणनोअवसरआ छांडीनेमनुष्यनोसरीर मनुसमर्थाईनोधणीदु
हार४प्रकारनो विइधकइ बोंदितेशरीर रवमरारनोतेमूंकाइछूट

हिऊण आहारं कालधम्मे उवट्ठिए चइऊण माणुसं बोंदिं पहू दुक्खे विमुच्चई २०
ममतालोक अहंकारअभि वीतरागद्वेषराग कर्मनंआ पामिवोमिकोकेवलज्ञान सास्वतोक कर्मक्षयथावि
रहित मानरहित रहिततथा विवोतेलें पांचमोसमस्तअर्थनो हीइंवितेन बाधकासर्व
रहित ग्राहक जाइं पणेउसास्वो

निम्ममो निरहंकारो वीअरागो अणासवो संपत्तो केवलं नाणं सासयं परिनिव्वुडे त्ति
वीसमोधकोएह एहअणगारमार्गनामाअध्ययननोअर्थ उपयोगसहिततेजीवएकेंद्रिया सांभलो
वोश्रीसुधर्मास्वा लेशमात्रकह्यो तिमजाणवो समक ३५ दिकनोपयोगरहिततेअजीवका अहोशि
मिजंबूप्रतेकहेवे वो ष्ठादिकतेहनाविभक्तिविस्तवोतेह ष्यसुध
२१ नोविवरोकरीनेविभागेंधापवोतेह

बेमि २१ अणगारमग्गिअज्झयणं सम्मत्तं ॥३५॥ जीवाजीवविभत्ति सुणे

कहितां मतें एकाग्र मन थका कहि तां पांत्रीसकसा अध्ययनते एवि वत्रीसमो अध्ययन कहे छे
जे अध्ययन सांभलीने साधु चारित्रीउ
सम्यक् प्रकारें यतनक रें सावधान थाइ संजम नें विषे १
सचेतन ते जीव चेतना रहित ते अजीव कही यइ

उत्रा सू० ८ इमेएगमामणाइउ जं जाणेऊण भिक्खू सम्मं जयइ संजमे १ जीवा चेव अजीवा य

एह जीवाजीवमय एह लोक क हिउ वीतरागे चौदराजरूपें करीनइ
अजीवनो जे देश आकाशरूप तेहवें परं धर्मास्तिकायादिवी जानथीज
तेहनें अलोक कहिउ तीर्थं करगणधरें कहिउ ते सा चोछें २
द्रव्य थी जेए तला भव ए हना णेत्रथा

२०५ एस लोग वियाहिए अजीवदेस आगासे अलोगे से वियाहिए २ दव्वउ खि

जे एतलो आका शनें अवगाही रहिउ छइ
काल थी एवला स्थिति
भाव थकी जे हना एतला निर्वाहक पर्याय छे
तेहनी ए छिउं प्रकारें प्ररूपणा जेहवि भज नाहोइ
जीव एकेंद्रियादिकनी अजी व धर्मास्तिकायादिकनी ३
अजी वनी प्र रूपणा

त्तउ चेव काला उ भावउ तहा परूवणा तेसिं भवे जीवाणमजीवाण य ३ रूवि २०५

थोडा छे ते माहिं इ प्रथम कहीये छे रूपादिकसहित ते रूपी कहीयइ
रूपादिकनइ रहित ते अरूपी इम अजी व विहुं भेदें छइ तेहमांहि अरूपी
ते दशप्रकारें कहिउ तीर्थंक रइ
अनें रूपी ४ भेदें क ह्या तीर्थंकरादिकें

णो अरूवी य अजीवा दुविहा भवे अरूवी दसहा वुत्ता रूविणो वि चउव्वि

ते प्रकार कहें छइ ४
धर्म इम गतिपरिणित जीव पु द्गलनें गतिपरिणित पणें अनु कूल छइ ते धर्मास्तिप्रदेश तेहनो कायसमूह
ते विभागादिकनो असंजे हनो वलतो विभाग न छइ ते हस्कंधसंबंध तेहनें प्रदेश कहिउ तेहनो
धर्मास्तिकाय थी विपरीतल क्षणसहित स्थितिनो उपष्टं भकाम अधर्मास्तिकाय ते हनो मोटो
तेहदेश नो विभा ग न थया विभागते

विभागते देशक हीइ उइ
देशकहीयइ

हा ४ धम्मत्थिकाए तद्देसे तप्पएसे य आहिए अहम्मे तस्स देसे य तप्पएसे

इ एहवो जे विभागते प्रदेश कहीयइ ५
मर्यादासहित आपणप इरूप इ छेजे पदार्थ जि हां रह्या ते आका शास्तिकाय ७ जाणिवा
तेहमांहि जे हनो भाग न थाइ एहवो जे अंश ते प्रदेश कही यइ
अद्धा कालरूप समय ते अद्धासमय तेहनो वि भाग न थाइ ते नली देश प्रदेश जा णवा

य आहिए ५ आगासे तस्स देसे य तप्पएसे य आहिए अद्धासमए चेव अ

द्रुमअरूपीदसेभेदका रइ   धर्मास्तिकायअधर्मास्तिका यएहबेद्रव्य   लोकमात्रलोकप्रमाणश्रऊदराज व्यापीपरंअलोकमांहिनथीएहबेलोक स्यातीर्थंकरइ   लोकचौदराजप्रमा णअनइअलोका चौदराजबाहिरित

उत्रासू१२ एवं दुवालसविहे ६ । धम्माधम्मे अदो वेए । लोगमित्ता वि आहि आ । लोगालोगे अ

विहुनइं विषेआ ग्रास्तिकायजाणि वउ   समयादिककालनेसमयक्षेत्रअढा इद्वीपव्यापीपरंबाहिरिनथीसइस मयआवलीदिवसमादिकमनुष्य लोक   धर्मास्तिकायअधर्मास्तिका यआदिकहीनसकीयइ॥   त्रिणिइहवाअनादिछइजेहन नीएहनीआदिकहीनसकीयइ

२०१

आगासे समए समयखित्तिए ७ । धम्माधम्मागासा । तिन्निवि एए अणाई आ अ

अपर्यवसानजेहनुछेइहनउन कहवाछ्त जेअनंताजाणवा   सर्वकाललगइहुतइकहीयइआय णतरूपबांनइनहीआस्तताएहवाक स्यातीर्थंकरादिकइ   समयकालनिरंतरउत्पत्तिनी अपेक्षाइंनीपजइतिवारइ   एहनीपरिइंप्रवित्ति परिक्रमादिकअ नइअपर्यवसानछ

पज्जवसिआ चेव । सव्वद्धं तु विआहिआ ८ । समए वि संतइं पप्प । एवमेव विआ   २५१

रूपरहितनीर्थं कारइंकहिउ॥   ओदराकायादिकजेआरंभीइं तेआश्रीसादिआदिसहितछे   सपर्यवसितअंतसहितछइएहवउं तीर्थंकरइंकहिउ   जिनेपरमाणुआदिमांगलि कुरुअधिकापुद्गलकइविवर वइसघलइतेहस्कंध   तेह स्कंध नाजे

हिआ । आएसं पप्प साई ए । सपज्जवसिए वि आ ९ । खंधा य खंधदेसा य । तप्पएसा ए

निर्विभागअंशअत हनत्यदेशकही यइ   तथापरमाणुयाबोधव्वाजाणिवाजेहप रमाघणुअणुनारूपनेपरमाणुआश्रे शरहितस्कंधपणइपरिणमइनहीएक कलाएहवा   एलूरूकाररूपीद्रव्यविज्ञ मकारजाणिवा १०   एकचकतिपरमाणुआ सिउ एकपरिणामइपरण मवो तणेकरीनें अने

तहेव य परमाणुणो । बोधव्वा रूविणो वि चउव्विहा १० । एगत्तेण पुहुत्तेण खं

एथकपतलेपरमाणुआनुक ठामिल्याथकाअनंतालगइतेप भजन्नआनपरमाणुआजाण वा   लोकनाएकदेशनेविषेपरमा णुआरसाठस्कंधलोकनें विषेवकारथीलोकतेस्कंध पेबआकाशआश्रीजिवानो   अनेकनेदेकहिवाविऊभईप्र पाणिएकआकाशप्रदेशहइरहि इअसंख्यातप्रदेशेतथाअचित्तमहा स्कंधसर्वलोकव्यापीरहेपिणतजनगज।   एतलाकल्पा अनंतरल हथितिनो विनागविक

धाय परमाणुणो । लोएगदेसे लोए अ । भइअव्वा ते उ खित्तिउ ११ एत्तो कालवि

ते तं धादिक नो सादि १ अनादि २ सपर्य एगाथाथाय संतति प्रवाह आश्री ते अनादि सित अनंतपलि वि
वसित ३ अपर्यवसित ४ एम्या रिप्रकारेक इ एदबइ त्रिलिसयऊंतात अपर्यव त्रिलिसइऊम्ये ति

उत्रा०सू०।८ मग्गेणं तेसिं वुच्छं चउव्विहं १२ पदूपदं संतइं पप्प तेणाई अपज्जवसिआ विय

नियत सेत्र नें विषे रहिवो अनें सपर्यवसिता अंत सहित जे असंख्यातो काल नी उत्कृष्टी एकश्र
तेहा आश्री सादि आदि स जाणी तव न वेता मे ऊपजइं १३ स्थिति मयज
हितवै

२०८ ठिइं पडुच्च साईआ सपज्जवसिआ विअ १३ असंखकालमुक्कोसं एकंस

घन्यस्थिति अजीव ने रूपी द्रव्य पुद्गल एहनी एहस्थिति कही तीर्थंकरें एतलो काल अनंत काल नो
वी आदिक ते ही थकी थानक पालटे जगनि संदेह १४ उ

मयंजहन्नयं अजीवाण य रूवीणं ठिई एसा विआहिआ १४ अणंतकाल २०८

एक समय जघन्य थी अंतर पडें तो वली अजीव पुद्गलास्तिका आंतरें एतलो सर्वज्ञ
वली तिहां नो तिहां आवइ यरूप वइ ते हनो दिउ तीर्थंकरादिकइ १५

मुक्कोसं एक्कं समयं जहन्नयं अजीवाण य रूवीणं अंतरेअं विआहिअं १५

वर्ण थकी पुद्गल गंध थी पुद्गल रस थी पुद्गल फरिस थी पुद्गल संस्थान थी पु ते जाणे परिणाम ते पुद्गलास्तिका
परिणम्या छे जपरिणम्या पपरणम्या परिणम्या छे गलपरणम्या वो यनो ५ प्रकारे

वण्णउ गंधउ चेव रसउ फासउ तहा संठाणउ अ विन्नेउ परिणामो तेसिं पंचहा

१६ वर्ण थकी वर्ण नइ परिणामें पांचे प्रकार ५ ने दते अतिशा काला कालो नीला सुलो राता हींगला पी
परिणम्या छे जे पुद्गल यस्फंकस्यां तीर्थंकरइ लसरीया १ नीपरें २ नीपरइ ला

१६ वण्णउ परिणया जेउ पंचहा ते पकित्तिया किण्हा नीला य लोहिआ हालि

हरीआल धवला ज्यापना परिइं गंध थकी गंधनें परिणामें परि बिहुं भेदे ते कह्या तीर्थंकर सुगंध परणे
नीपरिइं एहवा पांच प्रकार णम्या छे जे पुद्गल इ परणम्या छे सु

द्दा सुक्किला तहा १७ गंधउ परिणया जेउ दुविहा ते विआहिआ सुब्भिगंध

काळिनीपरइ दुर्गंधपणेपरिणम्याबेल रसथकीरसनेंपरिणम्याछै पांचेप्रकारेतेआतिशायमस्के
मणादिक १८ तेपुद्गल कह्यो

अस्रा०टा०प० परिणामाऊविगंधतहेवय ॥१७॥ रसउ परिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया ति

तीषाकडुवि कडूआनी कसायला षाटातेआं मीठातेसाकर फरिसथकीफरिसनेंपरिणमे तेआठेने
नीपरइ वकानीपरि कोवनीपरै मलवेतस रनीपरै १८ परिणम्याछै तेपुद्गल देआतिशा

३०८ त्तकडुआकसाया अंबिला महुरा तहा ॥१८॥ फासउ परिणया जे उ अठहा ते

यस्कंक षरषरापाषाण सुहाळासंमहूतथा भारेलोह हळुआआकडाति नाढाकमलनीपरै चो
स्या ना रूपानापरिइ २ नीपरै ३ यानीपरि २० उन्हाअग्निनीपरै प

पकित्तिया कक्खडा मउआ चेव गरुआ लहुआ तहा ॥१९॥ सीआ उण्हा य णि

णाघीय तिमजवलीलूषारावनीपरइ १८ एणेप्रकारेफरिसथकीफरिस पुद्गलच्यारिरंगति समुद्धस
नीपरिइ कसातीर्थकरइ पणे परिणम्याछै कहुस्वभावछेजेहनो कारेकह्यु

द्धाय तहा लुक्खा य आहिआ इइ फासपरिणया एए पुग्गला समुदाहिआ ॥२०॥ ३०९

संस्थानआकारपणेपरि तेपांचप्रकारेकह्यावीतरा परिमंडलचूडी वाटलालाडू त्रिकूणसिंघोडा
णम्याछै तेपुद्गल गइ तेआकारे तेआकारि तेआकारिचोष

संठाणपरिणया जे उ पंचहा ते पकित्तिया परिमंडला य वट्टा तंसा चउरं-

णोवोरसातेआकारिआ वर्णथकीजेछेकाळोकाज तेहगंधथकीभजिवोसुगंध रसफरिसथकीपिण
यतलांबापेरसाळाकसनें लसरीषापुद्गल हुइअनेंदुर्गंधपिणहुइतेम भजिवोरसमांहिकोइक

आकारे णाभजना

समायया ॥२२॥ वन्नउ जे भवे किण्हे भइए से उ गंधउ रसउ फासउ चेव

हुइ तथाफरिसमां हिकोइकहुइजति णिभजनाजाणवी

वळीसंस्थानथीभजिवोसंस्थान वर्णथकीजपुद्गलनीपरिइ तेगंधथीभजिवोसुगंधअनें रसपमां
पांचमांहिइकोइकहुइ २३ नीलोहोइ नाल दुर्गंधपिणहोइतिणिभजना हिकोई

भइए संठाणउ विअ ॥२२॥ वन्नउ जे भवे नीले भइए से उ गंधउ रसउ फास

हुइ फरिसमांकोइकहुइजे तिणिरसफरसथी वर्णथीरातोजेहनो तेहगंधथीसुगंधहुइअनेरे
भजना भजिवो संस्थानथीपुणसंस्थानपमांकोईकहुइ दुर्गंधपिणहोइविणगंधथी भ

उ चेव भइए संठाणउ विअ ॥२४॥ वन्नउ लोहिए जे उ भइए से उ गंधउ रस-

जणवो

५मां दिकोइकसेइनथाफरि संस्थान५मां दिकोइकइ वर्णथकीपीयलोहरी तेहपीयलोदुगंधपणेकइ
स८मां दिकोइकइइतिणिर जतिणिसंस्थाननीभजना म्मालसरीषोजेहुइ सगंधपिणकोइतिणिगंध
स करसथकीभजिवो भाणवी २५ व थाभजवी

उत्रा०सू०॥ फासेउचेव भईएसंठाणउविअ २५ वन्नउपीअएजेउ भईएसेउगंधउ र

रस५मांदिलेकोइकइइफर संस्थान५मांदिकोइकलेइतिणि वर्णथकीशुकिलधवलोसपस तेहगंधरस
स८मांदिकोइकलेइतिणिफर संस्थाननीभजना २५ रीषोजेहहुमज गंधपिणहे
सनीभजना

३१०

सउफासउचेव भईएसंठाणउविअ २६ वन्नउसुक्किलेजेउ भईएसेउगंध

इउगंधपिण रस५मांकोइकइइफरिस८मांदिकोइकइइ गंधथकीजेतेइसुगंधसूकमि तेहवर्ण५मांदिको
इइतिणिगंध तिणिरसफरसथीभजिवुं संस्थान५मांदिकोइक नीपरिहंपुजल इकवर्णकइतिणि
थी भजना कइतिणिसंस्थानथीभजिवउ २७ वर्णहुइथकोस

उ रसउफासउचेव भईएसंठाणउविअ २७ गंधउजेभवेसुब्भी भईएसेउव

जिव रस५मांदिकोइकइइकोइनकइइफ संस्थान५मांदिकोइकइइको गंधथकीजेकइइ तेदुर्गंधिवर्ण५मांकोइकइ
उ रस५मांदिकोइकइनकइइतिणिरस इनकइइतिणिसंस्थानेथका गंधलसणनीपरि इकोइनकइइतिणिवर्ण
फरसथीभजिवउ

२८ ३१०

न्नउ रसउफासउचेव भईएसंठाणउविअ २८ गंधउजेभवेदुब्भी भईसेउव

थिका रस५मांकोइकइनकइइफरस संस्थान५मांकोइकइइकोइनकइइ रसथकीतीषउसुंठिमरिचउजे तेवर्ण५मां
भजि ८मांकोइकइजतिणिरसफरसथी तिणिसंस्थानथकीपणिभजिवउं हुइजेहइ दिकोइकइ
वउ भजिवउ २९ कोइनकइइति

वणउ रसउफासउचेव भईएसंठाणउविअ २९ रसउतित्तएजेउ भईएसे

णिवर्णथीभ गंधरमांदिकोइकइइनकइइफ जिहांस्पर्शनीवनितेहांसंस्थान५ रसथकीकडूउनीब वर्णथी
जिवउं सि८मांकोइकइइनकइइतिणि मांदिकोइकइउइकोइकनकइइति नासरीषउजेहहुइजेते कीभजि
गंधफरसथीपिभजिवउ णिसंस्थानथकीपणिभजिवउं ३० हु

उवन्नउ गंधउफासउचेव भईसंठाणउविअ ३० रसउकडुएजेउ भईएसे

वउनेहरलीव गंध२नथाफरिस८मांकोइ संस्थान५मांदिकोइकइइकोइकनकोइन रसथकीकसा वर्ण
५मांदिकोइकइ कइकोइकनकइइतिणिर तिणिसंस्थानथकीपणिभ इलउकाथाक ५मां
रसकइ सपरसथकीभजिवउ जिवउ उअसरीषउजेहहुइजेतइ दिको

उवन्नउ गंधउफासउचेव भईएसंठाणउविअ ३१ रसउकसायएजे भईए

इकहवउइतिणि गंधरसफरिसपमांहिकोइ संस्थानपमांहिकोइकहइति रसथकीमधुररसमाकहीइ तेहवणी
नर्यबकीनजिव इकहइतिणिगंधफरिस णिसंस्थानथीनजिवउ रिसजेहवउकउ पमांहि
उ थीनजिवउ ३२ काइकि

गा सू । टा ५ सेउवणउ गंधउफासउचेव भईएसंठाणउविय ३३ रसउमहुरएजेउ भइएसे
३ इकोइनहउइ गंधरसपमांहिकोइ संस्थानपमांहिकोइकहइ फरिसथकीहासधुलीपरि तेहवर्णपमांहिकाइ
३१२ तिणिवर्णथकी कहइनकहइतिणिगंधर तिणिसंस्थानथीनजिवउ इसुंहालउथउपुहउजेह कहइकोइनकहइतिणि
नजिवउ सथकीनजिवउ ३४ वर्णथकीनजिवउ

उवणउ गंधरसउचेव भईएसंठाणउविय ३४ फासउमउएजेउ भइएसेउवणे
गंधरसपमांकोइकहइति संस्थानपमांहिकोइकहइनकहइ फरसथकीपाषाणनीपरि तेवर्णपमांहिकोइकहइन
णिगंधरसथीनजिवउ तिणिसंस्थानथकीनजिवउ इंककर्कसकठिनपुहउजेह इकोइनकहइतिणिवर्ण
थीनजिवउ

उ गंधउरसउचेव भईएसंठाणउविय ३५ फासउगरुएजेउ भईएसेउवणउ ३११
सथकीघाटउआपणउबहुमनी तेहवर्णपमांहिकोइकहइकोइ गंधरसफरिसपमांहिकोइकहइकोइ संस्थानपमांइकहइकोइनकहइ
परिजेपुहउ नकहइतिणिवर्णथकीनजिवउ नकहइतिणिगंधफरिसथकीनजिवउ तिसंस्थानथकीपणिनजिवउ=२
रसउअंबिलेजेउ भइएसेउवणउ गंधउफासउचेव भईएसंठाणउविय ३२=३०२

गंधरसपमांहिकोइक संस्थानपमांहिकोइककहइ फरिसथकीहलुअआकतूलि तेवर्णपमांहिकोइककहइ गं
इकोइनकहइतिणिगंधथकी तिणिसंस्थानथकीपणिनजि यानीपरिइजेपुहउ तिणिवर्णथकीनजिवउ ध
पणिनजिवउ वउ
३६

गंधउरसउचेव।भईएसंठाणउविय।३५।फासउलहुएजेउ।भईएसेउवणउ।गं
धरसपतेहमांहिकोइक संस्थानपमांहिकोइकहउइ फरिसथकीताढउकमलनी वर्णपमांहिकोइकहइनक
कहइतिणिगंधथकीनइरस इतिणिसंस्थानथकीनजिवउ परिइजेपुहउजेवइतउ इतिणिवर्णथीनजिवउ
सथीनजिवउ
३७

धउरसउचेव।भईएसंठाणउविय।३७।फासउसीअएजेउ।भइएसेउवणउ।
गंधरसनइरसपमांहि संस्थानपमांहिकोइकहइकोइ अथफरिसथकीवइहुतअ तेहवर्णपमांहिकोइकहइ
काइककहइकोइनकहइति नकहइतिणिसंस्थानथीपणि गनिसरिषउजेहउपुहउगाल काइनकहइतिणिवर्णथ
णिगंधथकीनजिवउ नजिवउ ३८ थीनजिवउ

गंधउरसउचेव।भईएसंठाणउविय।३८।फासउउण्हएजेउ।भईएसेउवणउ।

१

गंध२रस५मांकोइकहुइनहु संस्थान५मांकोइकहुइनहइ फरिसबकीबाप८उछउछूते नहवर्ण५मांहिकोइकु
इनिलिरसगंधबीनजिवउ निलिसंस्थानबीवलिसजिवउ नीपरिइजदहइ इकोइनकुइनिलिवर्ण
बकीसजिवउ

३८

उत्रा०सू०टी० गंधउरसउचेवाभइएसंठाणउविय॥३९॥फासउनिद्धएजेउ।भइसेउवण्णउ

२१५

३१२

गंध२फरस५मांहिकोइहुइ संस्थान५मांकोइहुइकोइन फरसबकीलूखउरासरीषिउ नेहवर्ण५मांकोइहुइकोइ
हकोइनहुइनिलिगंधरस हुइनिलिसंस्थानबकीसजि जेहउहउलहउइ नहुइनिलिवर्णबकीसजि
बीसजिवउ वउ ४० वउं

गंधउरसउचेवाभइएसंठाणउविय॥४०॥फासउरुक्खएजेउ।भइएसेउवण्णउ उ

गंध२रस५मांहिकोइहुइको संस्थान५मांहिकोइहुइकोइ वृत्तीनीपरिइंपरिमंडलसंस्था नेहसोनीवर्ण५मांहिका
इनहुइनिलिगंधरसबकीन नहुइनिलिसंस्थानबीवलि नवइजेहनुनेहउहल इहुइकोइनहुइनिलि
जिवउं सजिवउं ४१ वर्णबकीसजिवउं

गंधउरसउचेव।भइएसंठाणउविय॥४१॥परिमंडलसंठाणे।भइसेउवण्णउ ३१२

गंध२रस५मांहिकोइहुइ फरस८मांहिकोईहुइकोईन संस्थानबकीजाहयानीपरिइ नेवर्ण५मांहिकोइहुइकोइ
कोइनहुइपलिनिलिगंध हुइनिलिफरसबकीसजिवउ वाटलउवडइजेहउहल नहुइनिलिवर्णबकीनहुइ
रसबीसजिवउं ४२ सजिवउ

गंधउरसउचेव।भइएफासउविय॥४२॥संठाणउभवेवट्टे।भइएसेउवण्णउ

गंध२अनइरस५मांहिकोइ फरस८मांहिकोईनहुइ संस्थानबकीसीघोडानीपरिइं नेवर्ण५मांहिकोइहुइका गं
हुइकोइनहुइनिलिगंधरस निलिफरिसबकीवलि त्रंबत्रिखूणउवडइजेहउहल ईनहुइनिलिवर्णबकीस ध
बीसजिवउ सजिवउ ४३ जिवउं

गंधउरसउचेव।भइएफासउविय॥४३॥संठाणउभवेतंसे।भइएसेउवण्णउगं

२अनइरस५मांहिकोइहुइ फरिस८मांहिकोइहुइकोइन संस्थानबकीचुरसानइआकारइंघ नहवर्ण५मांहिकोइहु
इकोइनहुइनिलिगंधरस हुइनिलिफरसबकीसजिवउ चउरसउवइजेहउहल इकोइनहुइनिलिवर्ण
बकीसजिवउ बकीसजिवउ

धउरसउचेव।भइएफासउविय॥४४॥संठाणउयचउरंसे।भइएसेउवण्णउ

गंधथरसपर्मांहिकोइकुइक फरसपर्मांहिकोइकुइकोइभजइ जेहवुफजजावउदावरठाजाकहानइ तेहवर्णपर्मांहिकोइ
भजइनिणिगंधरसथकीभजि तिणिफरसथकीपणिभजिवउं आकारइआयतसंस्थानइंपरिणम्य कुइकोइभजइनि
वउं ४५ उवइ णिवर्णथकीभजिवउं

उत्रा.सू.८ उ। गंधउ रसउ चेव। भइए फासउ विअ ४५ जे आययसंठाणे। भइए से उ वन्नउ

गंधरसपर्मांहिकोइकुइभजइ फरसपर्मांहिकोइकुइकोइ एहपूर्वोक्तअजीवनीधर्मास्तिकाय
उ इणिणिगंधरसथकीभजिवउं भजइनिणिफरिसथीभजि पुद्गलपर्यंतनीविसक्तिविवारण्या संक्षेपइकरीन

२१३

वउं ४६

उ। गंधउ रसउ चेव। भइए फासउ विअ। ४६। एसा अजीवविभत्ती। समासेण वि

एहअजीवनीविभक्तिकहीअनंतर संसारीकएकेंद्रीआदिकजीवत्र
इ कही रजीवनीविभक्तिविचारसुविचार तेकहिसुउअनुक्रमइ जीवनइंसिद्धसिद्धिवुकुतानेह

आहिआ। इत्तो जीवविभत्तिं। वुच्छामि अणुपुव्वसो। ४७। संसारत्था य सिद्धा

२१४

॥४७॥श्रीपन्नवणासूत्रहर्त्तिनीगाथिवइपुद्गलनापरउसेहकहेहे॥गंधरसफरसपंसंस्थानपरावे२०काला२०नीला२०राता
ना२०पीला२०धवला२०एवंवर्णपरिवर्तननासमस्तफरिसपवर्णपसंस्थानपरव२३सुगंधनाएवंधहगंधरफरसउसंस्थानपरवं२० नावर्णपगंध
तीखाना२०कडूयाना२०कसायलाना२०खाटाना२० मधुराना२०एवं१०रसनावर्णपगंधररसपफरसउसंस्थानपरवं२३ष
रखराना२३सुहालाना२३सारेना२३हलूआना२३ताढना२३कहाना२३चोपडाना२३लूखाना२३एवं१८४फरसनाफरसइ
गिण्याते२३सीजिणिकारणिखरखरासेंफरीयइनिंहांसुहालउनगिणीयइचोपडउगिणीयइतिहांलूखउ॥
॥सिद्धनासरभेदलिखीयइछइ॥१तीर्थंकरसिद्धअसिद्ध॥२तीर्थंकरसिद्धपुंडरीकादिअतीर्थसिद्धगणधर॥४अतीर्थसिद्धम
रुदेवीगृहलिंगसिद्धसहदेवसनअन्यलिंगसिद्धवल्कलचीरीस्व॥लिंग॥७सिद्धसाधु॥८स्त्रीलिंगसिद्धचंदनबाला॥९नरसिद्ध
गौतम॥१०नपुंसकसिद्धगांगेयप्रमुखप्रत्येकबुद्ध॥११सिद्धकरकंडू॥१२बुद्धसिद्धकपिल॥१३बुद्धबोधितसिद्ध॥१४॥१स
मयइएकसिद्ध॥१५॥२समयइअनेकसिद्धएवंभेदपन्नरजाणिवा॥

तेसिद्धनाअनेकभेदमुझकहितांथकि
गविकुंधकारेइंजीवकह्यानीद्वेकरइं तेहसिद्धकेहवाअनेकभेदइवपाधिभइवि इंसांभलउअहोशिष्य ४७
सहिक जीकहा नीर्थक २इ

य। दुविहा जीवा विआहिआ। सिद्धाणेगविहा वुत्ता। तं मे कित्तयउ सुण। ४८।

स्त्रीथकीमरीसिद्धथाइतेस्त्री तथावलीनपुंसकथकउंसिद्धथा स्वलिंगयती बाबाहिकअनेरइ गृहस्थनइलिंगइ
सिद्धपुरुषथकीमरीसिद्धथाइ इतेनपुंसकसिद्धकहीइतदकुतेइ नइसिद्धविषइ लिंगइसिद्धथाइतेह वेसइसिद्धथाइतं
नपुरुषसिद्ध नपुंसकपरउन्मनपुंसकनहीं सिद्धतसलिंग अन्यलिंगसिद्धक
सिद्ध ही इ

इत्थीपुरिससिद्धा य। तहेव य नपुंसका। सलिंगे अन्नलिंगे अ गिहिलिंगे

नगिणीयइतिणि २८धसर्वे क्रयाफरसनावर्णपगंधनार२रसपफासिमदा २० परिमंडलसंस्थाननार २० वाटला २० त्रिखूणा २० चू
खूणा २० आयतना २० १०० संस्थाननाधइ गंधना १०० रसना १०० फरसना १०० संस्थाननापवं ५ उपनेव कुलना।। श्रीपनवणा
सूत्रवृत्तिनासाक्षिजाणिवी।। अनइ श्रीउत्तराध्ययननीवृत्तिपर कयाउइतविगतिलिखीयइ बइ वेर्णनार १०० गंधनाधइ रसनार १०० प
संस्थाननार १०० फरसनार २ऊह एवंधपरजिणि कारणिवर्णपगंधर २ रसपसंस्थानप एवं २० आठफरसमूसितगुणतार २ इथोइ एवंआ
णियोयदनासमफिउहवीजदेवी तिणिएमकयातिणि कारणिवीतरागनावचनसहदीइ प्रमाणकरीमानीइत उआपणनइवाक
उनपरदइतेनसहीजाणिवो।। बः बः श्रीः बः बः बः बः २।।

उत्रासा८

२१४

मेरुनीचूलाइ ऊर्द्धलोकेके तथासमु
द्रहितुलिंगइसि जेहजीवअवगाहीरहेतेअवगाह बिहांघनीतेजघन्यअवगाहनाति तेणासीझइ उत्कृष्टमाणग्र इनइवि
हरुदीयइतथाव नातेहनाटहतेहनउत्कृष्टीअवगाह तिर्केतजाणकसीझइतिविषा जोजाकेकेतलासीझइ उर्द्धी थइकृत
जी नाधनुषप०० नीकेतलासीझइ एकइसम लइतेमध्यमअवगाहनानिणि तीपइतिर्द्धइ लोकिइकेत लाईक

५० यइ केतला इकसीझइ लासीझइ

नेवइया ५०। उक्कोसोगाहणाए अ जहन्नमज्झिमाइ अ उड्ढे अहे अ तिरिअं च समकं।

सीझ नदीशेषकालीन दसनपुंसकनइविषइरा वीसस्त्रीनइविषइवली पुरुषनइविषइएकसमअआठ एकइस
इ इविषइकेतलाई कइसमयइ
कसीझइ

सिज्झंति अ ५१ दस य नपुंसगाण वीसइ इत्थिआण अ पुरिसे अ अट्ठसयं समं। २१५

मइसीझइउत्कृष्टीविनिपणिसी गृहस्थनालिंगनइविषइच्यार बोधादिकअनेकलिंगविशेष यतीनइलिंगइए
झइजाणिवा नइविषइदश

५२

एणगेण विसिज्झई।परं चत्तारि अ गिहिलिंगे।अन्नलिंगे दस य सलिंगेण।

पांचसइधनुषनीउत्कृष्टीअवगाहना युगपत्साधिइंसीझइं
कसउआठ एकसमयइंसीझइसिद्धथाइ शरीरनइंमानिइंप्रवर्त्ता तथएकमइसमयइर

५३

अट्ठसयं समएणेगेण सिज्झई।परं उक्कोसागाहणाएउ सिज्झंतिजुगवं

सिद्ध जघन्यअवगाहनाइंसीझइतथा जवनापमध्यनीपरिमअस्वअवगा मेरुचूलादिकऊर्द्धलोकेए उवणसमुद्रका पक्षसमआठसीझइ
थाइ उएकसमयइ धसिद्धथाइ हनारेवइंप्रवर्त्तनाएकसमयइ= केसमयइंच्यारिसीझइसि लोदधिनइवि सिद्धथाइ= ७० ३=

५४ इथाइ।। बेबइर

दुवे चत्तारि जहन्नाए जवमज्झहुत्तरं सयं ५४। चउरो उड्ढलोएअ दुवे समुद्दे।

लोषपाणीनजावादि अधोलोकिअधोग्रामादिक एकइसमयएकसमउनइआठतिरिछइ पकपसमयइंध्रुवनिश्चइ
क नइंविषइवली नइविषइतिमवली लोकेकइग्रउर्द्धपमांहिइ

तओ जलेवीसमहे तहेव य।सयं च अट्ठुत्तरं तिरियलोए समएणेगेण उ।

७

किहां सिद्ध प्रतिहत रह्या छइ तिम अनइं ते सिद्ध बोंदी शि
करीनइं सीझइ किहां सिद्ध प्रतिहत छइ खलाना पामा लयपणइ स्थाप्या छइ अनइं अनंतकाल जे शरीर किहां तजीबोंदीनें
५५ छइ ॥ गी

उ।अ।ट।पत्र। सिझ्झई॥५५॥कहिंपडिहयासिद्धा।कहिंसिद्धापइठिआ।कहिंबोंदिंचइत्ताणं

अनइं ते सिद्ध किहां जई नइ सीझी अलोक केवल आकाश छइ धर्मास्ति लोकनइं अग्रभागइं रह्या छइ इहां तिर्यग् लोकनइं अनंतकाल जगं
२१५ जइ सिद्ध थाइ ५६ काय नरशीतिहां तूणा पजनाय प्यासि कनइ मस्तकइं रह्या छइ अग्र रिबा मिन ॥२

कत्थगंतूणसिज्झई॥५६॥अलोएपडिहयासिद्धा।लोअग्गेअपइठिआ।इहंबो

लोकनइं विषे रह्या छइ तिहां लोकनइं अग्रइं जईनइं सीझी बारे योजन बारे योजन ऊपरि सर्वार्थसिद्धि नामा विमा
गीरतिजीनइं बोंदी नइं जइ सिद्ध थाइ शाश्वतां सुख भोगवइ थमार्थिइं नथकी ऊपरि छइ

५७
दिंचइत्ताणं।तच्छगंतूणसिज्झई॥५७॥बारसहिंजोअणेहिं।सव्वट्ठस्सुवरिंभवे

इषत् प्राग्भारा नामइं छइ नामि पृथिवी पाषाण मयी छत्राकार छत्र पंचतालीस सय तेसहस्र गुणा
सिद्धसिला नइं संस्थानइं संस्थित छइ ५८ करीइ पृथुलपणइ पंचितालीसलाष योजन आय

ईसीपब्भारनामाउ।पुढवीछत्तसंठिआ॥५८॥पणयालसयसहस्सा।जोअणाणं २.१५

घनलांबीजा अनइं ते तजीज विछिन्ना पिहुली पहुलि तेहनी त्रिगुणी अधिक परिरय छइ कहितां परिधि गणता एकको आयया
लिखी पंचितालीस लाष योजन पिहुली छइ एक कोडि बइतालीस लाष त्रीस सहस्र बिसइ ओगणपंचास योजन जननांबा
काइंक जाजेरउ ५९

णंउआयया।तावइअंचेववित्थिण्णा।तिउणोसाहिअपरिरउ॥५९॥अठजोअण

पृथ्वी छइ थोडइं थोडइं हानि पामती पातलीथई माषीनी पांषथकी पातली तणुयरी कहि
हलुजाडपणइ तेसिद्धसिलामध्य प्रदेशइं कहीतीर्थंकरे छेहरइ परिमितहुइ तो अंतना पातली जाणवी ६०

बाहल्ला।सामज्झंमिविआहिआ।परिहायंतीचरमंते।मछिअपत्ताउतणुअरी॥६०॥

ते ईषत् प्राग्भारा निर्मल ऊजली स्वभावइं छइ पुनरपि ऊंधा छत्रना संस्थानइं संस्था क
अर्जुन नामा धवल सुवर्ण सोनानी परि तेमयी छइ सिद्धसिला उपानइं किणही कीधी नथी कारइ रहीछइ री

।अज्जुणसुवण्णगमई।सापुढवीनिम्मलासहावेणं।उत्ताणयछत्तयसंठिआयभ

तेह सिद्धसिला शंष अनइं कर्करत्न अनइं पांडुरी निर्मल शुभ ते छइ कहयो जनइं
जिणवरइं तीर्थंकरइं कुंदनउ फूल तेहसरीषा धउली आछी भली तिहां थकी गुजइं मि

णिआजिणवरेहिं॥६१॥संखंककुंदसंकासा।पंडुरानिम्मलासुहा।सीआएजोअ

छिसिलायकीए लोकनउअढक्षकादिक तहलोयोज उद्दनिद गककास ऊपरिलउठइ तेहणकेका
कहियाजनइ तीर्थकरइ ६२ ननेते समाबैगरा

उ।सू।८।५। णतत्तो। लोअंतो उ विआहिओ। ६२। जोअणस्स उ जो तत्थ। कोसो उवरिमो भवे। तस्स छ्छे

गनइविषइएनलइ सिद्धनीअवगाहना तेहसिद्धनइविषइसिद्धलगवंतस
इइइधनुषफाओनइविषे हउइ ६३ विस्तारोकेतायणीमहाभागपवेत लोकनाअग्रनइविषइ

२५ कोसस्स छब्भाए। सिद्धाणोगाहणा भवे। ६३। तत्थ सिद्धा महाभागा। लोअग्गंमि पइट्ठि

रहा नारकीआदिकनाउकअवता सिद्धिमोक्षनेरूपिणीसलीगति अंवपणेजेहसिद्धिनेमनुष्य वरिमनोहला
ढइ रनावपवबिकीविस्तारपकीमुं गयापकुनावइ ६४ नासवनइविषइजेहवउजेनलइष सवनइविष
कायावका मात्राइ हउइ

आ। सव्वप्पवंचउम्मुक्का। सिद्धिं वरगइं गया। ६४। उस्सेहो जस्स जो होइ सव्वंमि चर

इमाहजावाना त्रीजइभागइहीलीनिहरवेल्या श्रीसिद्धनीअवगाहन कोइककालनइविषएककोइनामलेइकंटइ
अगानानेविष सर्वानांकषेयणाबिकी नाजालिवी जन्ममुकबसीधतनिवारस्थादिकतिनोआदिसाति

मंमिआ। तिभागहीणा तत्तो आ। सिद्धाणोगाहणा भवे। ६५।

२१८

कहीइवुणमोक्षबिकीइहांनदीआ अनइंवुइद्धपणासमस्तजा अनइंजेहनबपर्दवमानवेह तेहसिद्धअरूपीरूपरसगं
वइतेणइअपर्दवसितअनंत श्रीजाइयुइवुआदिदिहितअता नउनबीएतलइअनंत ६६ धस्पर्सनबीजेहमाहिलेइण
दिकालनाजाणिवा

अपज्जवसिआ वि अ। पुहत्तेण अणाइआ। अपज्जवसिया वि अ। ६६। अरूविणो जीव

ग्रहितघनप ज्ञानकेवलज्ञानदर्शनकेवल अतुलजेहनउमांननहीएह जेहनासुषनीउपमानबीअ लोकबोदराजना
एकअंतरक्षि दर्शननहीजसंज्ञाकहैइत्वइ वउधलवसुंपपाम्याबइ नेनासुषलोगवइछइइमती एकुदेशनइवि
नजीब्बदेशयेम जेहनइ र्थकरकहेइ ६७ थइतेसिद्धइइए

घणा। नाणदंसणसन्निआ। अउलं सुहसंपत्ता। उवमा जस्स नत्थि उ। ६७। लोएगदेसे

नलइसध केवलज्ञानकेवलदर्शनेतेहज बारिगतिसंसारनउपारनिवा सिद्धिरूपिणीसलीगतिइं संसारसंबधि
लइनवी संज्ञाहवइजेहनइंवली स्थिवयाउबइलेणइसिद्ध गयांउकुताकर्मथयावीहुए

ते सव्वे। नाणदंसणसन्निआ। संसारपारनित्थिन्ना। सिद्धिं वरगइं गया। ६८। संसार
नकेहाएकसंतेजअनइं तेहथावरजीवत्रिकपकारइतहविरूमा
याजसंसारीजीव बिहुपकारइंतकरयातीर्थकरे बीजाथावर त्रसथावरमाहिह ६९

त्था य जे जीवा। दुविहा ते विआहिआ। तसा य थावरा चेव थावरा तिविहा तहिं। ६९।

तहत्र्लिकह्यएकपृथिवीनाजी तथावलीवनस्पतीना एहथावरजीव त्रिप्रकार तहनासेदसांभलजनमुकहितो
बबीजाअपकायेनाजीव जीव ३ ए तिहबिसर्ववणइगाम गतेतनु
वत्तन ७०

उ।सू।२।प। पुढवीआउजीवाय तहेव य वणस्सई इच्चेएथावरा तिविहा। तेसिंभेए सुणेहमे ७०

एकसूक्ष्मनासूक्ष्मकेवलीगम्य बलीतेहमाहिएकपर्यो पमण हवित्रिप्रकारव सूक्ष्मीहर्षिप्रकानड
द्विप्रकारेंपृथवीकायनाजीवजाणिवा बीजाबादरमोटादेषीतानाप्य= प्याएकअपर्याप्ता जीकह्या ७१ तेहवा =२

२७

दुविहापुढवीजीवाउसुहुमाबायरातहा। पज्जत्तमपज्जत्ता। एवमेएदुहापुणो ७१

एकपूर्ण बीजाअपूर्णकविनरूा तहिंकहितोनेबेहुंसजू
बादरजेपर्याप्तापृथिवीकाय द्विप्रकारेतेकह्यातीर्थंकरइ जावृष्णरूप करातेहजाणिवा षरामांहिसुंहातसातप्र
७३

बायराजेउपज्जत्ता दुविहातेविआहिआ सण्हाखराय बोधव्वा सण्हासत्तविहात

कालजाण कालीपृथ्वि नीलीपृ रातीपृथिवी ३ पीलीपृथ्वि धउलीपृथवी मोटउंध सूक्ष्मपृथिवीआकाशडक
वा ७२ वी२ थिवी२ वी४ तिम५ उजीते६ इहंतपणगमहीएतला
६ सहानाभेद

हिं ७२। किण्हानीलायलोहिआय। हालिद्दासुक्किलातहा। पंडुपणगमट्टीआ य

२८

२४

षरकहितोकठिनपृथिवी कुलीपृथिवी परठीया काक वेलुनदीपमु पाषाणनाकटक मोटीपा समुद्रादिक लोह रणाधपतेहकोडबा
कायभित्रीसप्रकारकहीतो थीपणमाटी१ हि२ वीरूप बसंबंधिनी३ डाध छुलनी नीलवणी६ लोट८ हकिसुपामाहिगिप्रतु
र्थंकरइबत्रीसइकहिवो= ७२ उलाप५ उसमी बोटमाटी१ रसवइवहिलिउइते
हर्बा बांधलोडीनवा
गनावधनसयुहा
लिवा बयसवानानो
विघरइमु= ७० १=

रावत्रीसईविहा ७३ पुढवीअसकरावालुआयाउवलेसिलाय। लोणूसेअय।

तम्बउ त्रउवं सीसउं रूपउं सुवर्णएउलिहा हीरानीजा हरियालो१५ हींगलउ१६ मणसिल१७
९ १० ११ १२ उविशेष१३ तिश१४ ७४

तउंयतंबीसीसगारूप्पासुवण्णेयवइरेया ७४। हरिआलेहिंगुलुएमणोसिला

सासगरत्न सरस तवाधवा आभ्रकानउ आभ्रकानुबंपडउ एहबादरपृथवीक मणिनाभेदतेह गोमिज
विशेषपे १९ ल२० पडउ२१ मिश्रबधुलि २२ मनाभेदकह्या नानामकहइहइ रत्न२३
७५

।सासगंजणपवाले।अब्भपडलब्भवालुआ।बायरकाएमणिविहाणा। ७५ गोमे

रुचकरत्न२४ अंकर स्फटिकरत्न लोहिताष्यरतन २७ मसारगल्लर मरगतरत्न२९ भुजमोचक
त्न२५ २६ त्न२८ रत्न३०

ज्जएअरूयए।अंकेफलिहेअलोहिअक्खेअ।मरगयमसारगल्ले।भुअमो।

हंसगर्भ पुलक सोगंधिक एहजाति बोधव
इंद्रनीलरत्न ३१ १६ चंदनकरत्न३२ गेरुकरत्न३३ रत्न३४ रत्न३५ रत्न३६ चंद्रप्रभ रत्न३७

७।सू॰।प॥ अ इंदनीले अ ॥७६॥ चंदण गेरू अ हंसगप्भ पुलए सोगंधिए अ बोधव्वे । चंदप्प

वैडूर्यरत्न जलकांतरत्न सूरकांतरत्न
३८ ३९ ४० ७७ एहसर्वखरपृथिवीनां भेदछत्रीसकह्याश्रीतीर्थंकरइं

२१८

ह वेरुलिए जलकंते सूरकंते अ ॥७७॥ एए खरपुढवीए भेआ छत्तीसमाहिआ

सूक्ष्मपृथिवीनाजीवतेएकजसूक्ष्मबादर सूक्ष्मजेपृथिवीकायनाजीवतेहसर्व अ
एकप्रकारेपणघणेप्रकारेनही रह्यांछिंकह्यातीर्थंकरइं ७८ लोकनेदेशमांहिबादरछइं ने

एगविहमनाणत्ता सुहुमा तत्थ विआहिआ ॥७८॥ सुहुमा सव्वलोगंमि लोअदे

पृथिवीकायनाजीवनी लोकमांहिएकदेशइं एहनोअनंतरकालनाविभाग तेहनइंकहिसिचंसादिसपर्यव संतनिप्रवाहमार्गेअ
इहांगइंबादरछि ग सितरअनादिकअपर्यवसितथ श्रीजिनराइंजोईयइ

से अ बायरा इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥७९॥ संतइं पप्पणा

२१८

तृहपृथिवीकाय निवा अपर्जवसितवेह्नकउनथीएह्पृथिवी सबस्थितिनआश्रइंरहिवउका अनइंसपर्यवसितविसंतगुण
नाजीवअनादि रहसू कायनाजीवनउजेहसणीकहीइं ए थस्थितिकायाइंरहिवंते कहीइएहवंतीर्थंकरइक बावी
हजार नहीहवएइमकहीनसकीयइ आश्रीआदिवुणछइं हिवे ८०

ईआ अपज्जवसिआ वि अ ठिइं पडुच्च साईआ सपज्जवसिआ वि अ ॥८०॥ बावी

समहस्त्र वरसनी उत्कृष्टीनउ केहतइ आयानीस्थितिपृथिवीकायनी अंतर्मुहूर्तनीजघन्यस्थितिवारंधी

सहस्साइं वासाणुक्कोसिआ भवे आउठिई पुढवीणं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ।

तेपृथिवीनीकाया
३ ८१ असंख्यातकालनउअंतरपडइ अंतर्मुहूर्तनुंअंतरपडइजघ एहकायस्थितिपृथिवीनी तेहनुंमुकइंतुएन
उत्कृष्टउ न्यपडइ कहीयइ जउसंपूर्णाकजेम

॥८१॥ असंखकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं कायठिई पुढवीणं तं कायं तु अ

लीनि हांपीमरी अनंताकाळनऊंतरउनकृष्टउ अनेअंतर्मुहूर्तनउऊंतरजघ येतानइहपृथ्वीकायन पृथिवी
नेहइहपृथिवीकाय घणामयनइनउजरुणीअसपती ग्रथाकउनउजेदरुणीयनहरी इंशरीरइविजढमिवा कायना
कयजइवीरवारमि मांहितकृष्टउअनंतोकाळरहर. रकायाइंजईननकाळआवइ. छिंइपिकाइ. जीवनेइ.

उ।सू।टी। मुहूत्तं।८२।अणंतकालमुक्कोसं।अंतोमुहुत्तंजहन्नयं।विजढंमिसएकाए पुढवी

पृथिवीपणइअंतरपकइ. विधाननेद
उत्कृष्टउजघन्यसर्वेकहि एहपृथिवीकायनावर्ण्णथी गंधथकीरसथकीफरस संस्थाननाआदेशथकी सहस्रगमे
अंतरनउपकइर पइ थकी पणि इहइसंख्या

२१८ जीवाणअंतरं।८३।एएसिंवन्नउचेव।गंधउरसफासउसंठाणादेसउवावि।विहा।
तअनंतपणिकुपइयइपिवर्ण नेकेहाएकसूक्ष्मअपकाय नेहवलीएकपर्या
पगंधरसपफरिसइहनाथा विहुनेदेअकायनाजीव बीजाबादरअपकाय मारीजाअपर्यापा
पिनरहमयोगइंपणानेदइउइ.

णाइंसहस्ससो।८४।दुविहाआउजीवाउ।सुहुमाबायरातहा।पज्जत्तमपज्जत्ता। २१८।

मपजउपर्याताथा उसवा
एमएहविकुंसेदपुणकहीइ बादरअपर्याप्ताअपकायना पांचप्रकारेतकह्यातीर्थंकरइं समुद्रनउपाणी र
८५
एवमेएदुहापुणो।८५।बायराजेउपज्जत्ता।पंचहातेपकित्तिया।सुद्धोदएयउस्से
हरीकपरिज महीआ हिम एकजएकारिपरंनानाएकारें इसूक्ष्मअपका तिहांकह्यातीर्थंक सहलाअउ
लविहइआ धूंअरी ८६ नदी यनीजीव २ह कायनाजी
हरतणूमहियाहिमे।८६।एगविहमणाणत्ता।सुहुमातत्थवियाहिया।सुहुमा
वकइंतेसर्वलोकमाहिछइ लोकनाएकदेशनइविषइबादरजीवकायनाछइ संततकाळप्रवाहमार्गसंसारनउ अपर्यवसितअन
रजमांहिवापरिस्थितिछइ नहिविषइबादरअकायनाएणी नेआश्रीअप्कायनाजीवअनादिछइ
८७
मासव्वलोगंमि।लोगदेसेयबायरा।८७।संतइंपप्पणाईया।अपज्जवसिया।
इंपणि स्थिनेकहितांसविस्थितिकाय अनइसपर्यवसितअंनसहित सातसहस्र वरिसनी
न स्थितिआश्रीपांमिसइहिंसहित जाणवा
विय।ठिइंपडुच्चसाईया।सपज्जवसियाविय।८८।सत्तेवसहस्साइं।वासाण

उत्कृष्टी २२ हजार आउषानीस्थितिअपकायाना अंतर्मुहुर्त्तजघन्यथोडी अंसख्यातउकाल उत्कृष्टीथकीउ ७९

॥उत्रा॰सूत्र॥ कोसिआसवा आउविईआऊणं अंतोमुहुत्तंजहंनियं।८०। असंखकालमुक्कोसं

अंतर्मुहुर्त्त जघन्यथोडीतउ कायस्थितिअपकायनी तेअपकायअपकायपणउनमूं अनंताकालानउअंतर उत्कृष्टउअंतरउकालरहइ ८०

३२०

अंतोमुहुत्तंजहंनिआ। कायविईआऊणं। तंकायं तुअमुंचओ।८१। अणंतकालमु

कृष्टउ अपकायछांडयापछिविचालइ अपकायनाजीवनउअंतरपडइ वलीअपका यनउजीवर्स्वीकारइ अंतर्मुहुर्त्तजघन्यथोडुंतउ नानीकाय वनस्पतीमांहिजईवलीआवइनउ= अणाजीव आनउअंतरजाणिवउ =३

क्कोसं। अंतोमुहुत्तंजहंनयं। विजढंमि सए काए आऊजीवाण अंतरं।८२। एएसिं

नावर्णउतउ तिमगंधथकीरसथीक तिमसंस्थाननाआदेशथकीप विधानतेसहस्रगमेथायईसंस्थानआस हादिकथी रसी तिआदेशाकहितानाम भ्यानाअनंतायणिवाइ ८२

वण्णओचेवा गंधओरसफासओ संठाणादेसओवावि विहाणाइंसहस्ससो।८३।दुवि

३२०

विकुंप्रकारिइंवनस्पतिना एकमुलइ बीजाबादर तेपर्याप्तएकअनावि एमएहविहुंप्रकारवली जाइरजेपर्या जीवतकहवा हिणबरीनावइ बलइदीसइ विप्रकारअपर्याप्ता जाणिवा ९३

हावणस्सईजीवा। सुहुमाबायरातहा। पज्जत्तमपज्जत्ता। एवमेएदुहापुणो।९४।बाय

सावनस्पतीकाय विकुंप्रकारकह्यातीर्थंकरइ अनंताजीवनइंसाधरणसामा न्यएकजइंआशरीरजेहना तेमां शरीरअनंतकायक न्यशरीरवंजहनातेसाधारणशरी= तेपलेककहीयइतिमजं फिर हीयइ=३०२

राजेउपज्जत्ता। उविहातेविआहिआ। साहारणसरीराय। पत्तेगायतहेवय।९५।पत्तेग

त्यकशरीरनांधणी तेहअनेकप्रणारेप्रकारेणतलइ सहकाये रीगणा नवमालती चंपादि त्रिकुंसिराप्र जीऊ वनस्पतीनाजीवहइ बारप्रकारकह्यातीर्थंकरइ दिकरूपंड्१ प्रमुषगु प्रमुषगुजा कहलनाथ मुषवेलि ५ आदि ३२

सरीराउ।णेगहातेपकित्तिया। रुक्खागुच्छायगुम्माय। लयावल्लीतणातहा

करुल नालकरीवलया में लडीवा मुहकाल कमलादिक शालिप्रमुषक तेकुजेयकादिकारुरीकाय१२जा ६ २५ करितेवलया७ प्रमुषतप दिकहल जलरुह१० षधी ११ लिका ९८ २

।९५। वलयापव्वयाकुहणा। जलरुहाओसहीतहा। हरिअकायायबोधव्वा।

१९१

प्रत्येकवनस्पतीकायनाजीवएह अनंताजीवनइसाधारणशरीरछइ घणाभेदकह्यातीर्थं आलूकंद मूलउ
कह्यातीर्थंकरइ ९६ नसाधारणशरीरअनंताकायकही करइ जातिर शृंगबे
इवेर

१उ।सू।३।७। पत्तेआइइआहिआ।।णंतसाहारणसरीराउ।णेगहातेपकित्तिया।।आलुएमूलए
कंदवे सिंगबेरआदूंरतथावली हिरिलीना सिरलीना सिस्सिरलीना जावईकेअकंदलीएएहसर्व
ग्रीबर ९७ मा४ मा५ मा६ कंदनीजाति

३२१ वेवासिंगबेरेतहेवया।।९७।।हिरिलीसिरिलीसिस्सिरिलीजावईकेअकंदली
पलंडुलसणकंदानहपुणकंदनी कंदलीयकुडुंबएएहपुणकंदनी लोहिणी हुअथीहुयएणइनामइ उह
जाति जाति ९८ कंदनीजाति गाथ

।पलंडुलसणकंदेआकंदलीअकुडुंबए।।९८।।लोहिणीहुअथीहुआकुहगा।
एहवएनामइवधा कृष्णकंदवज्रकंदएपुणकं सूरणकंदनामाकंदएपुण अश्वकर्णीनामाकंदनीजातिजा
वली दनीजाति अनंतकायनीजाति ९९ णवी

गायतहेवया।कण्हेअवज्रकंदेआकंदेसूरणएतहा।।९९।।अस्सकन्नीअबोध २०२

सीहकर्णीनामातेहइकंदनीजा मुसंढीनामातथाहलदएहवी घणाप्रकारनीएवमादिक एकप्रकारिपरंघ
ति जाणिवी
१००

व्वासीहकन्नीतहेवय।।मुसुंढीअहलिद्दाय।।णेगहाएवमाइओ।।१००।।एगविह
सूक्ष्मवनस्पती निहांकह्यातीर्थंक सूषमजेवनस्पतीनिगोदछइ लोकमांहेराजनइएकरेशइवि वीरहाछइ=२.
णाप्रकारेनही कायनाजीव २६ तेहसर्वलोकमांहराजमांहिव्या= नागइबादरवनस्पतीकायपा
१०१
मणाणत्ता।सुहुमातत्थविआहिआ।।सुहुमासव्वलोगमि।लोगदेसेअबायरा।।१
मीय प्रवाहमार्गआश्रीआदिनाथ स्थितिभवस्थितिकायस्थिति अनइसपर्य
६ अनादिछइअनइ अपर्यवसितिअंतपणिछइ आश्रीवशरीरइछउसादिछइ वसितअतर

०१।।संतइंपप्पणाइआ।अपज्जवसिआविअ।।विइंपडुच्चसाईआसपज्जवसि

ऽतछइ १०२ निश्चइ दसमहस वरिसनी उत्कृष्टी थितिदइए वनस्पतिकायनअंअंतर्मुहूर्त

आविआ।।१०२।।दशचेवसहस्साइं।वासाणुक्कोसिआभवे।।वणस्सईणआउं।

अंतर्मुहूर्त्तजघन्यथी एतलो तेउनो अवस्थ अनंतकाल उत्कृष्टी अंतर्मुहूर्त्तनी स्थिति माहेली जघन्य एकायस्थिति
तीनकुंत्राउयने जाणिवुं १९३ गीते माहिन नीजिक्क लिनि

उत्रा॥ सा॥ २॥ ९॥ अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥१९३॥ अणंतकालमुक्कोसं ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ काय विई

ते काल अनंतकायनिगोदनो असं
गोदनी कनो अबांकनानई १९४ असंख्यातपकालनंतउत्कृष्टपणुं अंतर्मुहूर्त्तनीस्थितिमाहेली जघ
न्यथाउत्ते

२२२ पणगाणं ॥ तं कायं तु अमुंचओ ॥१९४॥ असंखकालमुक्कोसं ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्नयं

छठी यादिकमांहि पोतानी कायाअनंतकायनी पनकजीवनइ अनंतकायनइं एत एहवनस्पतीसूषिमबाद गंधरसथी फरिस
आइअमइं पवइं आ बांदसूकइ अनइंबीजाए= लअंत्रतिरंतपडइ १९५ रादिकनावर्णथकी
वडतने=३

विजढंमि सए काए ॥ पणगजीवाण अंतरं ॥१९५॥ एएसिं वन्नओ चेव गंधओ रसफा

संस्थानना आदेशथकी विधानप्रकारसहस्रगमे १९६ एहसर्वइंकह्याते थावरपृथिवी पाणीवन
थकी थायएतले अनंताजगइ पणिथायइ स्पतीनेत्रणिप्रिहंप्रकारे

सओ संठाणदेसओ वावि ॥ विहाणाइं सहस्ससो ॥१९६॥ इच्चेए थावरा तिविहा समा २२२

संक्षेपथकीकह्याजीवक एतलाकह्याथकाअनंत कहीइअनुक्रमइं एहकह तेउअग्निना वाउवायक
रई त्रसनिकुंभेदे णनीवकरनें १९७ जीव नाजीवजाणि

सेण वियाहिया ॥ इत्तो उ तसे तिविहे ॥ वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९७॥ तेऊ वाऊ य बोध

उदारमोटिकोवेइंद्रियादिक इमएहत्रसजीवत्रिकुं तेहनाभेदप्रकारसांभलजोअहो बिहुंप्रकारतेउ
वा त्रसजीवरलथात्रिप प्रकारई शिष्यमुखकदितोवतिइ १९८

व्वा ॥ उराला य तसा तहा ॥ इच्चेए तसा तिविहा ॥ तेसिं भेए सुणेह मे ॥१९८॥ दुविहा तेउ

नाजीवजा एकसूक्ष्मतेउकायबीजबा एमपलीएकेकनाबिविभेद एहएमबिहुंभेदेक बादरदेषीनाजेअ
लिवा दरतेउकाय एकपर्याप्ताबीजाअपर्याप्ता थावली १९९ ग्निकायनाजीवअ

जीवा य ॥ सुहुमा बायरा तहा ॥ पज्जत्तमपज्जत्ता ॥ एवमेए दुहा पुणो ॥१९९॥ बायरा जे

नइहजीतप दीपनाबलना अग्निकण अग्नितकया मुलसहितनअविकदीइज्या
र्योप्ता अनेकप्रकारिकहांतजीवकह्या बाहअग्निना सहितप्रथ बीविपरीत ज्वालनेजकपरिदीसइतइकइ
बलइनथावली २००

उ पज्जत्ता ॥ णेगहा ते वियाहिया ॥ इंगाले मुम्मुरे अगणी ॥ अच्चिजाला तहेव य ॥२००॥

नारानीपरिहंबीपरतीदीसइ अनेकसेदगहस्यादिदई एकषकार बीजउसेद सूक्ष्मअग्निकायनेकहातीथेकरइ
उतेएका विजुवीजलीनजाणिवी नइ बइपर नथी
१११

उत्रासू॥२॥ उक्काविज्जुअबोधव्वाणेगहाएवमाइआ। एगविहमणाणत्ता। सुहुमातेवियाहिआ। १

२२२

तेहसूक्ष्मअग्निकायसर्वलोकवि लोकनाएकदेसमाहिं बादरअग्निकायनाजीव तेहअग्निनउकालविभाग
कहाजमाहिप्याबाइ विसागकहइबादरअग्निनइजातीएकसमा वरकालनउविसाग सादिसपर्यवसितरड
लिडइ नादिअपर्यवसितथ
११२॥ सुहुमासव्वलोगंमि लोगदेसेअबायरा। एत्तोकालविभागंतु। तेसिंवुच्छंचउव्वि

एहवकारया संततिप्रवाहमाश्रीनइ अनाद्यनंतअपर्यवसितिअंतउ थितिआश्रीसादिसपर्यवसित अनंद
तिहजाणिवा अनंतकालतांईअग्निकाय एतलीसदाअग्नितिसिइजनासिनहीहवइ वथितिकायथितिआश्री थुणकइ
हं।।११३।।संतइंपप्पणाईआ। अपज्जवसिआविअ। ठिइंपडुच्चसाईआ। सपज्जवसि

नवथितिकायथिति थितिअहोरात्रपरलइरि उतकृष्टी सउकहीनीर्वकरइ आउषानीथितिअग्निकाय अंत
थकीमूंकाणइथिकइ नउमराबउवीसउदर नी मुहुर्त्त
आविआ।।११४।। तिन्निवअहोरत्ता। उक्कोसेणवियाहिआ। आउठिईतेऊणं। अंतो

२२२

जघन्यथाकीनउनवसमयथि अंतर्मुहुर्त्तजघन्यनवसमयथ अग्निमांहिथकीपरीअग्नि
कीधारंसीमावेरीविचलगी असंख्यातउकालउतकृष्टी कीआरंसीमावेरीविचलीलगी मांहिरहइतेकायथिती
११४ कहीइतेकाय थिति
मुहुत्तंजहन्निआ।।११५।। असंखकालमुक्कोसं। अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। कायठिईतेऊ

नउकायनइं नअग्निनीकायानमूंकइ अनंताकालनउअंतरउतकृ नवसमयथकीआरंसीमावेरी कांहीइथि
एतलीरहइं तउएतउउकालरहइ११५ थकनउ बिचलीअंतर्मुहुर्त्तथाहुंतउ कहइछातान
णं।तंकायंतुअमुंचओ।।११६।। अणंतकालमुक्कोसं। अंतोमुहुत्तंजहन्नयं। विजढं

इकायशरीरतजइ तेऊकायनाजीवनइंएतलुं एहअग्निकायनावर्णथ गंधथकीरसथकीफरि संस्था
अंतर ११६ की सथकी
मिसएकाए।तेऊजीवाणअंतरं।।११७।। एएसिंवण्णओचेव। गंधओरसफासओ। सं

नेहएकसहस्र
ननाआदेसथकीपुण विधानप्रकारसहस्रगमेघणाहुइ ११७ बिहुंप्रकारिवायुकायनाजीवछ वायुकायना
ठाणादेसओवावि।विहाणाइंसहस्ससो।।११८।।दुविहावाउजीवाउ।सुहुमा।

जीवबीजाबादरवायु तेहवलीपर्याप्तापर्याप्ता एमएहवेकेहनिइबिहुप्रका बादरजवायुकायनाजीवप पांचप्र
कायनाजीव ना अपर्याप्ताजाणिवा रइजाणिवा ११८ कीधा

उत्ता सू० ८॥ बायरा तहा पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥ बायरा जे उ पज्जत्ता पंच

कारेते कह्या तीर्थंकर रहीनइ वाइ ते वंटोलीयारूप घनोदधिरूप ते घनवात गुंजतावायते शुद्धिक अनइ
इकेह्या उक्कलिकावायु तेमंडलिका गुंजावातवाउइरवाइते शुद्धवात ११९ इत्यादिकईनाप्र

३२४ हा ते पकित्तिया। उक्कलिआ मंडलिआ घणगुंजा सुद्धवाया य ॥११९॥ संवट्टगवा

इत्यसंव अनेकप्रकारे इह आदि एकजजेहन परघणाप्रकार सूक्ष्मते कह्या तीर्थंकरइं १२० सूक्ष्म
ते क देईनइ प्रकार नही वायुका

ए आ णेगहा एवमाइउ। एगविहमनाणत्ता सुहुमा ते विआहिआ ॥१२०॥ सुहु

यनाजीव सर्वलोक बादरा लोकप्रदेशजनइ देशइ विभागइ एतलानंतरकालनउ तवायुकायनउ कहीसिइं
जमांलिंगापाछइ बादरवायुकायनाजीवछइ विभागदेसेद साहिसपर्यवसित अनादि

हुमा सव्वलोगंमि। लोगदेसे अ बायरा। एत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विह ३२४

अपर्यव संततिप्रवाहमार्गआश्रीए अनइआगलिपणिजेप्रवाहका सवधितिकाय थितिआश्रीसा अनइस
मितधा१२१ वायुकायनाजीवअनादिछइ अनाजीवनउअंतनथी दिक्षरसे तितपुणछइ पर्यवसि

॥१२१॥ संतइं पप्पणाईआ अपज्जवसिआ वि आ। ठिइं पडुच्च साइआ सपज्जव

नआगजिपुणसवधिति
कायथितिआश्री अंतछइ त्रिणि सह स्र वरसिनी उत्कृष्टी हुइ आउषानीथितिवायुकायनी
२२

सिआ वि अ॥१२२॥ तिन्नेव सहस्साइं वासाणुक्कोसिआ भवे। आउठिइ वाऊणं

वनसमय पहकी मांहीमाठेरी थिति अनइ
अंतर्मुहूर्तजघन्यथोडीनउ १२३ असंख्याताकालनी उत्कृष्टी सर्वइकढिउ तनअंतर्मुहूर्तनी जघन्यथोडीनउ

अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१२३॥ असंखकालमुक्कोसं। अंतोमुहुत्तं जहन्निया।

वायुकायथीपरी वायुकाय मांउप तेवायुनी कायामूकइनही नवसमयप्रथकी पा नहीहउइ=४
जवार बारि कायथितिवायुकाय= अनंतामांहि जाइतउ १२४ अनंतकालउत्कृष्टी अंतरएह रंसीनइ थिनही।

कायठिई वाऊणं। तं कायं तु अमुंचउ ॥१२४॥ अणंतकालमुक्कोसं। अंतोमुहुत्तं

सामावरीलगीउं फलानीवायुनीकायाना वायुनाजीवनइं गतलउअंतरय एहवायुकायनावर्णवकी गंधवकी
नर्मकृतेजघमातउ ऽइविकूर ऽइ
२५

उक्ता स्थावरा जहसंभवं विजाणं मिसरकाणवाऊ जीवाणअंतरं ॥२५॥ एएसिं वन्नउवेवा गंधउ
रसवकीफरसवकी संस्थाननाआदेशथकी विधानप्रकारसहस्रगमवाइ उदारमोगजेत्रसजीवतेविद्याहि
२६

३२५

रसफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो ॥२६॥ रहाउरगलायतसाते
कायारजिकारए कायाजिकारना कायर काइनेत्रउइधएग्गरिइंद्रिअ बेंदि नासिकाइनेत्रश्वकान
क विकंवकारेतेकह्यातीर्थंकरइ दवइइंदियबेजहने सिकाइत्रिणिइ जिह्वा छइजेहनइकायाजिह्वार- च पएहपइंद्रियवइजेह
डियवइजेहनइ रसासि नइतपांचेंद्रियकहीय
डावो विहातेपकित्तिआ बेइंदिअतेइंदिआ चउरोपंचेंदिआ वेवा ॥२७॥ बेइं ऽ-३
एहणइप्रकारिइंद्रियकह्या
छइ जेहजीव तहविहुंप्रकारकह्यातीर्थंकरइं नपर्याप्तानइअपर्याप्ता तसांसलनमुणकहितावतिइ
दिआयतेजीवाउविहातेपकित्तिआ पज्जत्तमपज्जत्ता एवमेएसमोहेमा ३२५

असुविविष्टादिकइंक्र सामंगलबेंद्रिय अलसीआवर्षा जकाष्ठनापंडकं कासलीनासरी वंसजीवहट संघा
पऊइकृमिसरमीया जीवविशेष कालिकपऊइते टाएकवाबाधीरह चामुषजेहनांन मांहिमातीक संघ
२८ अलस इतमाइवाहक वासीमुह पऊइतेसीप नक
रणाकिमिणोसोमंगलावेव अलसामाइवाहया वासीमुहायसिप्पीअ संखा
एहवाउणसिप्पाजीवादिकनइंसा पत्नुकनामा अणुक्रुयतेवुणवे तथावलीवराटकउठना जलोअनइंजाजकबे
कारइबेंद्रियजीवनासेद २९ बेंद्रियजीव ड्रियजीवविशेष बेंद्रियजीव

संखणगातहा ॥२९॥ पल्लोआणहियावेव ातहेवयरोवेडगा जलूगजाल
ड्रियजी वंदनकहितांअक्षपनांइंमांहीइतेबेंदि पणइप्रकारइबेंद्रियएह अनेकप्रकारिएहआदिदे जाकव
व आहमांहिंकोइभसिहकोइअ सिक ३० सर्वइंकह्यातेह ईनइं वदरा
गोवेव्रु चंदणायतहेवय ॥३०॥ इइबेइंदिआणएणेगहाएवमाइउ ोगए
जनइएकदेशाइविना परंनथीसघ जइयोदराजमांहिबे संनतिवताहमार्यआग्रीकहीइं अनइआगलिजहन
गइतेसर्वबेंद्रियछइंप ड्रियएहवनंकहिबेतीर्थंकरइ तिवारइंबेंद्रियअनादिनाबइ उत्रेनबइहकुनथीजे
लीनइधानके ३१ बेंद्रिय मराकुसइ
गदेसतेसवे ॥ नसवछाविआहिआ ॥३१॥ संतेपथणाईया ॥ अपज्जवसिआवि

सवबितिकायथितिआश्रीआ अपर्यवसितअंतसहितछुत्त वरिस बारनी उत्कृष्टीतउकृष्टीवीतराग इं
दिसहितछइछुत्त छई युर

अ विइंपज्जवसाईआ सपज्जवसिआविआ २२ वासाइंबारसेवउ उक्कोसेणविआ।

नवसमबधीबारंहीकावेरीबिषधी
बेंद्रियजीवनाआउषानीथिति जघन्यथीअंतर्मुहूर्त बेइंद्रियजीव २३३ संख्यातकाळनीउत्कृष्टीभाटीनउ अनइंअंत

३२८ हिआ बेइंदिअआउविई अंतोमहुत्तंजहन्निआ।२३।संखिज्जकालमुक्कोसं अंतोमु

मुहूर्तजघन्यथीअंतउ बेंद्रियनीकायथितिकहीतीर्थ तहबेंद्रियनीकायथीतरइगउ अनंतकालनउउत्कृष्टउअंतर नवस
करइबेंद्रियनुबेंद्रियमांहिरहिवुं लमूकइनानइ २३४ मथथि

हुत्तंजहन्नयं बेंदियकायठिईतंकायं अमुंचउ।२४।अणंतकालमुक्कोसं अंतो

कीघारंनीमाडेरीबिषधीत बेंद्रियजीवरां अंतरएकहिवतीर्थंकरइंएतलइबेंद्रियजीवपोता एकेंद्रियजीवनावलीबकी
अंतमुहूर्तजघन्यथीहुतउ थाहिकनउ नीकायामांहीवनस्पतिमांहिजाइतउअनंताकाळ
नर नवअंतरपडइ २३५

मुहुत्तंजहन्नयं बेइंदियजीवाणं अंतरंतं विआहिअं २५ एएसिंवण्णउवेव गं ३२८

गंधथकीरसथकीफर संस्थानआश्रीकोथलि विधानउकारसहस्रगमेषड तेइंद्रियसंसारीकालीकउ
सथकी ३६ णी

धरसउफासउ संठाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो।२६।तेइंदिआउजेजीवा

बिहुप्रकारइंतेकह्यातीर्थंकरइं तेपकउपर्याप्ताबीजाअ तेहनाभेदसांभळउअम्होतिम कहुंआ कीडीनी उद्द
पर्याप्ता मुझकहितांथतिइतेकेहा ३२ नीजाति जाति मांतं

दुविहातेपकित्तिआ पज्जत्तमपज्जत्ता।तेसिंभेएसुणेहमे।२७।कुंथुपिपीलि

इंद्रजीव उकलिआअनइंउद्देहीवीजउट ऊन्हारक्रष्टहणएतेंद्रिय माकडपत्रहारकापहतेंद्रिय कपासअठिमिं
विशेष पुल्लतेंद्रियजीवविशेष जीवलोकथीजाणिवा जीवतुरुगमथकीपीडिवा ३५ जाएहजीवलोक

उउद्दंसाउद्देहिआतहा।तणहारकट्ठहारामालुगापत्तहारगा।२८।कप्पासट्ठि

म्मिंथकी तिंदुकतउसमिंजकगुरुगमथी सदावरीतं कुथहरदीनीजा जाणिवाइंद्रियकाइयोतंद्रीय इंद्रगा
पीडिवा पीडिवा डिय नि जीव २३९ गन

मिंजाइ तिंदुगा तउसमिंजगा।सदावरीअगुम्मीअ।बोधवाइंदगाइआ।इयाइं

इंद्रगोपमाखमलरूवर्षाकालि अनेकतेंद्रियादिकआदिदे लोकनाएकदेसमाहिछे परंनहीसर्वलोकमाहि संति
इंद्रगोपआदिदेईनइ ईआणिवा गतिरिक्षालोकइअढाईद्वीपमांहि नइविषइ गुरुते कहितेतीर्थंकर
बइतेसघला करइ १४०

उत्रा।सू।टा।प। दगोवगमाईआ णेगहा एवमायउ। लोगेगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वियाहिया॥१४०॥ संत

प्रवाहप्रतिआश्री अनइअनादिकतिमआगलि सपर्यवसितकायस्थितिआश्री अनइते सपर्यवसितकायस्थितिआश्री
इंद्रियअनादिकालनी ... विचारीयइतिवारइ सादि सपर्यवसितअंतसहितवुलाइ १४१

३२७

इं पप्प णाईया अपज्जवसिया वि य। ठिइं पडुच्च साईया सपज्जवसिया वि य॥१४१॥ एगू
एगुणपंचासअहो उत्कृष्टीतउकहीआउखौ तीर्थंकरे तेइंद्रियजीवना आउखानी ... जघन्यआउखानी स्थितितेहनी
रात्रि करइं स्थिति अंतर्मुहूर्त ...

१४२

णपण्णहोरत्ता उक्कोसेण वियाहिया। तेइंदियआउठिई अंतोमुहुत्तं जहन्नियं॥१४२॥ सं
तेइंद्रियपणतउ ... असंख्यातउ अंतर्मुहूर्त ... तेहनइ ... कालनउ
कालसंख्यातउकालउत्कृष्टी जघन्यथी ...

खिज्जकालमुक्कोसा अंतोमुहुत्तं जहन्नयं। तेइंदियकायठिई तं कायं तु अमुंचउ ३२८

अनंताकालउत्कृष्टउ ... अंतर्मुहूर्त तेइंद्रीजीवकुंथुआदिकनइ अंतरएहकहितुं
१४३ तर जघन्यतउ

॥१४३॥ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं। तेइंदिअजीवाणं अंतरेयं विया

तीर्थंकरइं १४४ एतेंद्रियजीवनावर्णथिकी गंधथकी रसथकी फरिसथकी संस्थाननाआदेसथकी विधानप्रकारसहस्र

हिअं॥१४४॥ एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ। संठाणदेसओ वावि विहाणाइं सहस्

तेह एक पर्याप्ताबीजा अप तेहना
भेद कहूं १४५ चउरिंद्रियजीवते लोकमांहि बिहुप्रकारि कह्या तीर्थंकरे ... इंद्रियना

स्ससो॥१४५॥ चउरिंदिआ य जे जीवा दुविहा ते पकित्तिआ। पज्जत्तमपज्जत्ता तेसिं भे
... अंधिया चउरिंद्रीजातिविशेष ... माखी अनइ मसा ... भमरा ... कीडा
... १४६ ... चउरिंद्रीजाति ... तिविशेषअनइ पतंगीया

ए सुणेह मे॥१४६॥ अंधिआ पोत्तिआ चेव मच्छिआ मसगा तहा। भमरे कीडपयंगे

भुणवउ टिंकणअनइंकुंकणउउरि कुक्कडनामासिंगिरीडीनामा नंदावर्त्तनामावींछीनामा डोलनामइ भिंगरीडना
रिंडिय डियजाति १४७

।उत्त।सू।ट।पा। य टिंकणोकंकणेतहा ॥१४७॥ कुक्कडे सिंगिरीडी य ॥ नंदावत्ते य विछिए डोले भिंगिरीडी

मा विरलीनामा अक्षिविधकनामा अक्षिलनामा तथा मागधनामा अक्षिरोडनामा विचित्रपत्रना उहिंजलियानामा
१४८ मा

३२८

य विरली अछिवेहए ॥४८॥ अछिले माहए अछि ॥ रोडए विचित्तपत्तए उहिंजलिया

जलकारीनामा नीयानामा तंबकानामा एहसर्वेचउ रिंदिय इत्यादि अनेक प्रकार लोकना
रिंडियजाति लोकनइ एकदेशि जोणवा कहिइ इकुसा जाणिवा उदराज
१४९

जलकारी य नीआ तंबगाइआ ॥४९॥ इय चउरिंदिया एए णेगहा एवमाइउ ॥ लोग

नाएकदेश विभाग तेहचउरिंदियकह्यां तीर्थंकरइं प्रवाहमार्ग आश्री जोअइ तिवार अनाअपर्यवसित कहि
नइ विष्ह इं सघलइ लोकइ व्यापीनथी रह्या ५० इह चउरिंडीअनादिकाल नाबेतो अनंतपणि हुवइ

सएगदेसंमि ॥ तेसव्वेपरिकित्तिया ॥५०॥ संतइं पप्पणाइआ ॥ अपज्जवसिआवि अ वि

३२८

अवस्थितिकाय थिति आश्री सादि सपर्यवसित निश्चइं भव सर्वां प्राणी उतकृष्ट छ मासइ कही वीतराग चउरि
श्रीमादि आदिस हितिछइ तआंत सहितपणिछइ ५१ ६

इं पडुच्च साईआ सपज्जवसिआवि अ ॥५१॥ छचेव यमासाऊ ॥ उक्कोसेण विआहिया ॥ चउ

दियजीवना आउखानी तेह समय बकी थोड़ थी माहेरी विषरीतु अ संख्याता कालनी उतकृष्ट अंतर्मुहूर्त्त नी जघन्य
थिति तर्मुहूर्त्त जघन्य चउरिंदियनी थितिछइ थी
५२

रिंदिअ आउठिई ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥५२॥ संखिज्जकालमुक्कोसं ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्ना

थीतीन चउरिंदियजीवनी कायथिति कही तेह चउरिंदी आपणिकायामुं अनंताकाल उत्कृष्ट अंतर उत सर्वनइ कहि
उ चउरिंदि नुं चउरिंदी मांहि इं नजायइ तु कीनइ बीजामांहि जाइ तउ कष्ट थउ तेहवउ अंत

णिआ ॥ चउरिंदियकायठिई ॥ तं कायं तु अमुंचउ ॥५३॥ अणंतकालमुक्कोसं ॥ अंतोमुह

मुहुर्त्त जघन्यथी तह चउरिंदी पोतानी कायामुं प्रति अनंतकाल उत्कृष्ट तीर्थ एह चउरिंदियजीवना वर्ण गंध कीर
हुतउ कीनइं अनेरीकायाइ जाइ तु करइं ५४ वकी सपकी

त्तंजहन्नयं ॥ विजढंमि सए काए ॥ अंतरेयं विआहियं ॥५४॥ एएसिं वण्णउ चेव गंधउर

फरिसइकी संस्थाननां आदेशअकीहुण विधानइकारसहस्रगमेछायइएतला पंचेंद्रियजेजीवपाणीया तिहुंप्रकार
बनाअसंख्यातलगइंछाइं १५५ बइ

उयासाइया ॥ सफासआसंवाणादेसउवावि विहाणाइंसहस्ससो ॥ १५५ ॥ पंचिंदियायजेजीवा चउव्वि
इंद्रिकयानी तेकेहानारकी तिर्यंचनीजा मनुष्यनी देवतानीति एहच्यारिइंद्रकयांश्री नारकीसातप्रकारछइं
ईकरइ नीतिकाअ१ तिर२ जातिइ३ कायथ वीतरागइं १५६ तेकेहा

२२९

हातेविन्नादिया नेरइयातिरिक्खाय मणुयादेवायआहिया ॥ १५६ ॥ नेरइयासत्तवि
रत्नप्रभादिकसातइपृथिवीतइविष एकअर्यामावीजा तेहनारकीनाभेदसांभ रत्नकांतसरवनपतितासवननीआ
इतिपाइंअसिलाघइहअइतेह अपर्याप्ता उवभुक्तिकनेतोवतिइ साकांतिसरीषीकांतिजेहनीरत्नप्रभानामा

हा ॥ भरदवीसुसत्तसुसवे पज्जतेमयज्जत्ता तेसिंलएफणाहमो ॥ १५७ ॥ रयणाभा १ ॥

तेसर्कराप्रभाकहीय ३=४

नानापाषाणतइरूपकं वेलुआनासरीषीआकांतेप्रपदङकहि पंककादमसरीषी धूमनाबुहलस अंधकाररूप जेहनीतेधूमप्रभा५
इसरीकाईजेहनीते= साकांतिजेहनीतेवालुकाभा ३ तेथीअकरेथ आभाकांतिभइ४ शीषीआभाकांति तेतमाप्रभावीउ
इहनीआ५ तम=६

सक्कराभा २ ॥ वालुआभाय ३ ॥ आहिया ॥ ४ ॥ पंकाभा ४ धूमाभा ५ तमा त
तेपकाप्रभा

२२९

अत्यंतअंधकाररूपते घर्मानामइं वंशानाम शैलाना शिमत अंजनारिष्टानामइय मघाना माघवतीनामइ
तमप्रभाकहीयइ ७ १ २ मा३ ४ मा६ ७

मतमा तहा ॥ १५८ ॥ घम्मा ॥ वंसा सेला ॥ तहा ॥ अंजणा रिट्ठा ॥ मघा माघवई ॥ चेव ॥
नरकनाहरणहारनारकीतेहप्रथम रत्नप्रभादिकगोत्रथकीनरक तथा घर्मावंसाशैलाइत्यादि एणइप्रकार
इणिनामइहवइ ५ पृथिवीजाणिवी कनामथकीनरकपृथिवीजाणिवी

णारयायपुणासवे ॥ १५९ ॥ रयणायणाहउवेव ॥ तहा धम्माइणामउ एएनेरइया
इनारकी सातप्रकारइकह्यातीर्थंकरइं लोकअइदराजनाएकदेशअ तेहसर्वनारकीकह्यातीर्थंक पतला
एह १६० धोकिसागनइविषइ इहफरंवीजोवामनथी कसांअ

एए ॥ सत्तहापरिकित्तिया ॥ १६० ॥ लोगस्सएगदेसंमि तेसवेपरिकित्तिया इत्तोका
तेतरकालनवि तेनारकीनुंकहिसुसादिसपर्य संभतिप्रवाहमार्गआश्रीविचारीइं अनइअपर्यवसितते
साजविचार वसितरअनादिअपर्यवसतिथ तिवारइएनारकीअनादिकालनोछइ हलवेअतनथीसदाकुंसइ

लविभागंतु तेसिंवुच्छंचउव्विहं ॥ १६१ ॥ संतइंपप्पणाइया अपज्जवसियाविय

सवथितिकायथिति आश्रीसा अनइं सपर्यवसित ग्रतसहित सागरोपम एकपहिलीनरकइ उतकृष्टीतउकहीतीर्थं

हि   पुलबइ   १६२   बीनानेरमाउतरनीअपेक्षाइ   करइ

उत्रा सू।दाप। ठिइ पढुवसाईया सप्तत्रवसिा आ विआ दससागरोवमा मगेद्धा उक्कोसेण विआहि

बीजीनरकनी नरकपृथ्वीनइ दससहस्रवरसनीथितिजइ त्रिणिसागरोपमनुं आउ उतकृष्टउ तउकहि

थियइजघन्यथकीतउ   पतरि १६३   ह

३३० आ। पढमाए जहन्नेणं दसवाससहस्सिआ ॥१६३॥ तिन्नि सागरा उ उक्कोसेण वि

उतीर्थंकरइ बीजीनरकपृथ्वीइंना एकसागरोपमपहिलाउत सातसागरोपमनुं आउ उतकृष्टउकहु त्रीजी

रकीनउ बेहलइ उतरि जघन्यथकी तु रनीअपेक्षाइं जाणिवउ १६४   ह

आहिआ। दोच्चाए जहन्नेणं एगं तु सागरोवमा ॥१६४॥ सत्तेव सागरा उ उक्कोसेण

त्रीजीवालुकाप्रभानारकीनु त्रिणिसागरोपमपहिलाउतरनीअ दससागरोपमनउं आउ

श्रीतीर्थंकरइ बोहिउं इउतरि जघन्यथकी तु पंकाइ   १६५

विआहिआ। तइआए जहन्नेणं। तिन्नेव उ सागरोवमा ॥१६५॥ दस सागरोवमा उ। ३३४

उतकृष्टपणइं कहिउं तीर्थं बउथीपंकप्रभापृथ्वीइंनारकी सातसागरोपमनउं पहिलाउ उतर सत्तरसागरोपमनउं

करइं   नुं बहूलिहं उतरि जघन्यथकी तु नीअपेक्षाइं जाणिवउं १६६

उक्कोसेण वियाहिआ। चउत्थीए जहन्नेणं। सत्तेव सागरोवमा ॥१६६॥ सत्तरस साग

आउ उतकृष्टउं कहिउं श्रीतीर्थंकरइ पांचमीधूमप्रभापृथ्वीइंनार दससागरोपमनउं पहिलाउतस बावीसमा

हं   गणधरइ   कीनुं बहलइ उतरि जघन्यथकी तु रनीअपेक्षाइं जाणिवउं १६७

रा उ उक्कोसेण विआहिया। पंचमाए जहन्नेणं। दस सागरोवमा ॥१६७॥ बावीस सा

गरोपमनुं आ उतकृष्टपणइं कहिउं श्रीतीर्थं छठीतमप्रभानि हं नारकीनुं उ सत्तरसागरोपमनउं तेहपहिला

उरु   करइ   हिलइ उतरि जघन्यथकी तु उतरनीअपेक्षाइं जाणवउ १६८

सागरा उ उक्कोसेण वियाहिया। छट्ठीए जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमा ॥१६८॥ ति

तेत्रीससागरोपमनुं उतकृष्टउं कहिउं श्रीतीर्थंक सातमीतमतमाप्रथिवीइंना बावीससागरोपमनुं आउ

आउ   रइ   रकीनउ जघन्यथकी तु नउ   ह

त्तीस सागरा उ उक्कोसेण विआहिआ। सत्तमाए जहन्नेणं। बावीसं सागरोवमा

तेहजतेनारकीनइंकायस्थितिजा जघन्यपणइम नारकीमांहिंतउपजे
१६९ जेतलीआउषानीस्थिति नारकीनइंकहीतीर्थंकरदेवइं तेवीतेहसलीनारकीमरीनइ= नइंउतकृष्टपण इ=१
इणइजकायस्थि
उत्रा सू ८।८ १६९॥ जावेव य आउठिई, णारईआणं विआहिआ सा तेसिं कायठिई जहण्णुक्कोसि
तिआउषाजेतली अनंताकालनउंउत्न नवसमयथीबारसीमोहूर्तीवृषदीएह विजढंमिकहितांछांडिइंथिकइ नारकी
जकहीइ १७० कृष्टउ वउंअंतर्मुहूर्तजघन्यथाइउतवे आपणीनारकीसबंधिनीकायाइं
३३२ आ भवे ॥१७०॥ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहण्णयं ॥ विजढंमि सए काए नेरइ
नइंउवलीअंतरआंतरउंएम एहनारकीनावर्णथकी गंधथकीरसथकीफरस संस्थाननाआदेशथकी विधानथ
तउंजाणवुं १७१ थकी
आणं तु अंतरं ॥१७१॥ एएसिं वण्णओ चेव गंधरसफासओ संठाणदेसओ वावि विहा
तिर्यंचजेह
कारसहस्रगमेथाइ १७२ पंचेंद्रिय तिर्यंचजीव बिहुंप्रकारइंकह्यातीर्थंकरइं एकसमुर्छिम नइंमननी
णाइं सहस्ससो ॥१७२॥ पंचेंदियतिरिक्खाओ दुविहा ते विआहिआ समुच्छिमति ३३१

पर्याप्तान बीजागर्भजतिर्यंचजेहनगर्भतइवि समुर्छिमगर्भजजेतिर्यंचबेक जलचरमछादिकतेसंमूर्छिमगर्भजपु मुणकइ=१
हवइ षट्कपजेवुतथाजेहनइंमननीपर्या प्तातहवलीत्रिहुंप्रकारइं णकुहजेलचरपंखिथलचरथोका
मिकुइ १७३ गाइअमुषतसमूर्छिमकुइगर्भज=
रिक्खा य गब्भवक्कंतिआ तहा ॥१७३॥ दुविहा ते भवे तिविहा जलयरा थलयरा तहा ॥
षआकाशिंचालइतेषेचरपं तेहजलचरजीवनासेदथका माछिला कछभकाछसा ग्राहनांद्रया मगरमा छिमगर्भजपुणहउ
बीयाभिनकलाअमुषतेहसमू= रसांभलजेमुजकहितापनिइं बीजाति बीजातिजलच रूपजीवरूपमाछिनी यइ=२
१ १२ जातिध
खहयरा य बोधव्वा तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७४॥ मच्छा य कच्छभा य गाहा य मगरा तहा
सुसुमारजलचरजीवनीजाति इमपांचभेदजलचरजीवक लोकनोएकदेशनाएक देशमांहिं परंनहीसघलइंए नेसघला=३
तहजजाणिवी सा १७५ सागनेविषेजलचरजीवछइ=अहराजनइविषइ
सुसुमारा य बोधव्वा पंचहा जलयराहिआ ॥१७५॥ लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ वि
एहथकिकहि एतलाअनंतरजलचरनइ कहिस्यउंसादिसपर्यवसितइ संततिप्रवाहमार्गआश्रीतेजलच
उतीर्थंकरइं कालनोविभागविवरिउ अनादिअपर्यवसितथकिछेहइ रजीवनादिकाजनावइ
आहिआ इत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउव्विहं ॥१७६॥ संतइं पप्प णाईआ अप

ॐ

अपर्यवसित अंतर रहित कायस्थिति भवस्थिति आश्री अनइं सपर्यवसित आगलि पक्ष तिर्यंकायनी अंतर कहइ प्र-
थम कहइ अनइ इस आदि सहित थम जइ तनइ अंतर कहइ २७७

उत्त॰ सू॰ ट॰ ॥ ऊवसिआ वि आ विइं पडुच्च साइआ सपज्जवसिआ वि आ ॥ २७७ ॥ इकाय पुव्वकोडी उक्को-
पाइ कही अनी तीर्थंकर आउषानी स्थिति समूर्छिम गर्भज तउ समकइ पंचानी विरा स्थिति आश्रीनइं अंतर्मुहूर्त सर्वकाल इ पंचेंद्रिनी का-
३३२ रइ जलचर कर्त्तनी जघन्य स्थिति जाणिवी २७८ थिति एक वीआरवी

सेण विआहिआ । आउठिई जलयराणं । अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ २७८ ॥ पुव्वकोडीपुहुत्तं
नवजीगी उत्कृष्टी कही तीर्थंकरइं कायस्थिति जलचरनी जलचर नउ सर्वि इक हिवं ते सर्व हिव उ अंतर्मुहूर्त अनंताका-
लचरमांहि रहइ उत्कृष्टि स्थिति जाणिवी कर्त्त जघन्य बोलीनउ २७९ लकउत

तु उक्कोसेण विआहिआ । कायठिई जलयराणं । अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ २७९ ॥ अणंत
कृष्ट अंतर निगोद अंतरमुहूर्त्तनउं अंतर जघन्य पतानी जलचर संबंधिनी काय फिरीनइं जलचरनउ जलचरमां
मांहि आइतउ सणी पणइ पाछ्य फिरि इस्थिकइ हिव आवइतउ एतलउ अंतर इत्या वइ

कालमुक्कोसं । अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढंमि सए काए । जलयराणं तु अंतरं ॥ २८० ॥ ३३२

III

एजलचरना वर्ण थकी गंध थकी रस थकी फरिस थकी संस्थानना आदेशथकी विधान प्रकार सहस्र गमे भेद इं २८
पणि

एएसिं वण्णओ चेव गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि । विहाणाइं सहस्ससो ॥ ८२ ॥
आरि पगनाधणी परिसर्प तिभुजप रिबिंकु पकार इथलचर कुइ चउःपद बिकुं पका तेहमुहुर्तकिहितांफर्सा-
तकउःपदक ही इ रिसर्प उरपरिसर्प थलितु इंथाजइ ते थलचर २८३ सनुक्रहोशिषा

चउप्पया य परिसप्पा दुविहा थलयरा भवे । चउप्पया चउविहा ते । ते मे कित्तयओ सु- कन
एकखुरी बांधी वइ बिखुरी जिन्हइं फाटी गंडीक हितां कमल नामोका घोडा आदि गाइ बलद आ हाथी गेंडा आदि तृपदनपस हितप-
जइ नइ तेगार कुर दीसइ बइ हिखुर सरीषा बेन जासाय गजेंद्रना = इंगकपुर दिई विखुर दइगमीपइ गनसनपपदका-
ही इ = ३

णा । एगखुरा दुखुरा चेव गंडीपय सणप्पया । हयमाई गोणमाई गयमाई सीह-
वाघ सिंह कुन्तिरा सुबहा चिहुवा लइ ते भुजपरिसर्प इसपरिसर्प बिकुंपकारे गोह गिरोली सर्प आदि इटइ तेहमुज
आदि इंसनपपद पेटइ हीडइ उरपरिसर्प वा लइ २८३ भमुषभुजपरिसर्प नइ उरपरिसर्प पा गिम पंजालि बा = ४

माइणो ॥ भुओरगपरिसप्पा य । परिसप्पा दुविहा भवे । गोहाई अहिमाईआ । इक्कि-

पंकह्यातेहनाएकेकाना लोकव्यवहारजनायकेदेखाड नथीसर्वत्रसघलाइव्यवहार एतलानंतरकालजनउ तेथलवर
अनेकरलेदउइ १८४ तेविषइतेहबलवरसघला गतमांहिकह्याश्रीतीर्थंकरा विलागविवरउ नउकहिसा
हवइ हिकइ
उद्यास्थाराधा कालोगदासवे।८४। लोगदेसेतसबेनसब्बविआहिआ एत्तोकालविभागंतेसिं एसाहिमकारह=२
उसादिःसपर्यवसितनर संततिवादमार्गआश्रीए अनइअपर्यवसितपणिउइ सवथितिकायथितिआश्री अन पानीइ=२
२२२ अनादिइअपर्यवसितथः थलवरअनादिकालनाछे लवरनउआगलिग्रंतकहेवः सादिआदिइसहितछइ इस
वुच्छंचउव्विहंतु।८५। संतइंपप्पणाईया अपज्जवसिआविआ।ठिइंपडुच्चसाईआसप।
पर्यवसितअंतसहितप रेमथंजसरिषकु उतेपल्यकहीइतेहनी उतकृष्टीपणइकहीश्री आउथानीथितिथल
ितिछइ १८६ तुपमाइंकुउतेपल्योपमतेपल्योपमत्रिकनी तीर्थंकरइं
ज्जवसिआविआ।८६। पलिओवमाइंतिन्निउ उक्कोसेणविआहिआ। आउठिईथल
वरजीव नवसमयथीआरंभीमांडीविघडीन
नी तेअंतर्मुहूर्तजघन्यथोडीलउ १८७ पल्योपमत्रिकंनी उतकृष्टी कहीतीर्थंकरइं
यराणं।अंतोमुहुत्तंजहन्नयं।८७। पलिओवमाइंतिन्निउ उक्कोसेणंउसाहिआ २२२

सर्विकोडिपृथवीकवइअधिक नवसमयथीमांडीमांडीविघडीपर्यंतु कायथिति थलवरनीव अनइंअंतरउंत
जघन्यउत्पल्योपमनाआउखानु अंतर्मुहूर्तजघन्यतुजहन्नणी अंतर्मुहू हतइंहइतउए
लोमाथइ=१ षणामुवीकोडिवाघुपसवकरीने तेनिहुआंतरइतुणआवइ ८८
पुव्वकोडीपुहत्तेणं।अंतोमुहुत्तंजहन्निया।८८। कायठिईथलयराणं।अंतरंतेसि
नलइ तेमांहिंथीनीकलीवनस्पतीआदिक जघन्यतउअंतर्मुहूर्तनउंअ बोलिइंथिकइआपणीपोतानी थलवरनइ
मांहिआइउअनंताकालनुंउतकृष्टउ नरउं थलवरसंबंधिनीकायाइ
अंतरउं
मंभवे।कालंअणंतमुक्कोसं।अंतोमुहुत्तंजहन्नयं।विजढंमिसएकाएथलयरा।
णनलउंआंतरउ
८९ एहथलचरनावर्णथकी गंधथकीरसथकीफरसथकी संस्थाननाआदेशथिकी विधानसका
णंअंतरं।८९। एएसिंवन्नउचेव।गंधउरसफासउ।संठाणादेसउवावि।विहा
बांमनारूपपांखतेचर्मपंखीवागलीप्रमु बांधीपांखइकाहइतेसमुद्गपंखीय विस्तरीपिंख
रसहस्सगमथायइ ९० चरोमरूपपांखतेरोमपंखीहंससोरवदि नुष्यलोकबाहिरिकारमडरात्रीजुसमुग लीपांखइर
लोमप्रमुख पंखी
णाइंसहस्ससो।९०। चम्मेउलोमपक्खीय तइआसमुग्गपक्खीआ।विययप

ए ते तिर्यंचपंखीमनुष्यलोक इम पंखी चिहुंभेदा लोकना एकदेशवि षे पर सर्वत्र सघलइ चउदराजमां
व्यापि रहिवइ नाणिवा नहवइ सागरइ ते विषते वर्मपंखी सर्वेवइ इत्रिनथी इम कहिइं भगवंतइ
१८२

उत्ता०सू०ए५। स्कीअबोधव्वा पक्किणो य चउव्विहा। लोएगदेसे ते सव्वे न सव्वत्थ विआहिआ।१८२। इत्तो २

एतलोकस्यानंतरकालन ते वर्मपंखीनिउ कहिस्युं संतति प्रवाहमार्गआश्री ग्रहइ अनइ अपर्यवसित अंतर नव
उ विभागविवरउ चउव्विहकार सादि परंपंखी अनादिकालइनाव छिनवइ थिति

२२४ कालविभागं तु तेसिं वुछं चउव्विहं। संतइं पप्पणाईआ अपज्जवसिआ वि अ ठिइं

कायथितिआश्रीसा अनइं सपर्यवसित अंतसहि नवइ १८२ पल्योपमनउ भागनउ असंख्यातमउ उतकृष्टी ए
दि उइ

पडुच्च साईआ सपज्जवसिआ वि अ।१८३। पलिओवमस्स भागो असंखिज्जइमो भवे

आयुषानी थिति षचरपंखीयानी अनइ अंतर्मुहूर्त नी जघन्य थानीनउ असंख्यातमउ भाग पल्योपमनउ उत

आऊठिई खहयराणं। अंतोमुहुत्तं जहन्निआ।१८४। असंखभागो पलिअस्स। उक्को २२४

कृष्टपणइ सा पूर्वकोडिपृथुकत्वइं कहितो सातनवां अंतर्मुहूर्त जघन्य थानीनउ पूर्वइं कहि पहवीकायथिति षचरपंखी सवकरी असंख्यातमा
अधिक पणे करउ कालइ एतावतापूर्वकोडिवालासात = उ अंतर्मुहूर्त १८४ यानी उपानउ सवकरइ तउ
= १

सेण उ साहिउ भवेकोडीपुहत्तेणं। अंतोमुहुत्तं जहन्निआ।१८५। कायठिई पहय

अनइ अंतरते षचरपंखीआनइं उतकृष्टपणइ अनंताकालनउ पूर्वइं कहितें तिहवें अंतरमुहु षचरपंखीना
पहइउइतकदहइ अंतर उत्कृष्ट सपतीमाहि जाइ समाटइ जघन्य थाइ तउ अंतरउ ८५

राणं। अंतरं तेसिमं भवे। अणंतकालमुक्कोसं। अंतोमुहुत्तं जहन्नयं।१८६। एएसिं व

वर्णथकी गंधथकी रसथकी फरिसथकी संस्थाननाआदेशथकी विधानप्रकार सहस्रगमे थायइ एह मनुष्य

ण्णओ चेव गंधओ रसफासओ। संठाणादेसओ वा वि विहाणाइं सहस्ससो।१८७। एह म

एक समुर्छिममनुष्यमनइ विनाठ बीजागर्भइ उपजइ मन
द्विविधप्रकारइ हवइ तमुहनइ कहइं दतांमांगलउ हवउ दसेदेइं जाणिवां सहिवतेगर्भमुक्रांतिक

णुआ दुविहभेआ उ ते मे कित्तयओ सुण। समुच्छिमा य मणुआ गब्भवक्कंतिआ त

जाणवा गर्भजमनुष्यछइ जेह त्रिहुं प्रकारइं तेह कह्या नी र्थंकरइ करमभूमापाधरि कर्मभूमादिक अंतरसमुद्र कर्मनहीनेत्र कर्मकरइतेक इमध्यविभाग कर्मभूमिका अकर्मभूमिका इनद्वीपमविसि 33

२१७

॰ग्रासूत्रपा। हा ॥२२१॥ गब्भवक्कंतिया जे ते तिविहा ते विआहिआ । अकम्म कम्मभूमा य अंतरद्दीवगा

वनावामछइने भरतादिकर्म हेमवतादिकअ रुछकद्वीपादिकअंतरद्वीप एहसंख्याअनुक्रमइं पनरइहमनु मनुष्यनइअंतरद्वे भूमिनाभेदरे कर्मभूमिनानी अठावीसभेदहेमवतनइ द्वर्व तेहमनुष्यनी भरहिवोनी विभागद्वीपइ भेदर पश्चिमविदिमछइ

२२५ तहा ॥२२२॥ पन्नरस तीसइ विहा भेया अट्ठवीसई । संखा उ कमसो तेसिं इइ एसा

ठामविनिकद्वीश्री समूर्छिमजमनुष्यवउदेसदे गर्भजनउसेहकहिउकर्मभूमा लोकवोहएछनाएक तेहम वीतरागइं एए कपजइतेहमनुषपणिएहजे दिकएटुर्वुकहिउतीर्थंकरइ देशविभागनेविषइ वेलोइ

विआहिआ ॥२२३॥ संमुच्छिमाण एमेव भेओ होइ आहिओ । लोगस्स एगदेसम्मि ते सव्वे

संमूर्छिमअनइंगर्भजमनु संतानिप्रवाहमार्गआश्रीने अपर्यंतनइअपर्यवसितअनवे थितिआश्रीसादिकर छकह्याश्रीतीर्थंकरइ २७० समूर्छिमगर्भजमनुष्यअ हननउप्पनथीसदाकाजहुस्स पालिछइज नादिकालनाछइ ज

अ विआहिआ ॥२२४॥ संतइं पप्पणाईआ अपज्जवसिआवि आ । ठिइं पडुच्च साईआ २२५

अनेसपर्यवसितछेहकुंअंतवुल पल्योपम त्रिहुनी उतकृष्टपणइं तउकहीवीतरागइं आउखानीथिति छइज २७१

सपज्जवसिआवि आ ॥२२५॥ पलिउवमाइं तिन्नि उ । उक्कोसेणं वियाहिया । आउठिई म

आश्री आदिकर

मनुष्यगर्भजनी अनइजघन्यतउअंतर्मुहूर्तनीथिति पल्योपम त्रिहुंनी उतकृष्टीतउ कहीवीतरागइ

णुआणं । अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥२२६॥ पलिउवमाइं तिन्नि उ । उक्कोसेणं तु साहिआ

सर्वकोडिपुहुत्तअधिकीनवलगी अनेइअंतर्मुहूर्तजघन्यथीनउसर्व कायथितिमनुष्यनी जाणवी तेहमनुष्य लोकरीनइ वलिप नणइअधिकमानसर्वकोडिवा इंकहउतेहवअंतर्मुहूर्त २७२ जेसणीतेसर्वमाहिरहऽएसवे नासवनइ ल्योपमनउआठमं भागवइतउ २ २८८

। पुव्वकोडीपुहत्तेणं । अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥२२७॥ कायठिई मणुआणं । अंतरं तेसि

आनरउं अनंताकालनउउतकृष्टउअंतरपद अंतर्मुहूर्तजघन्यथाकउतुमनु एहमनुष्यनावर्णथकी गंधथकी र एकहीजइ इजहरणीवनस्पतीमाहिरहीआ थानइअंतरपदइ २७४ जाणवउ पडनउ

मं भवे । अणंतकालमुक्कोसं । अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥२२८॥ एएसिं वण्णओ चेव गंधओ र

सपर्शकी करिस्र संस्थाननादेशयकी पणि विधान प्रकार सहस्रगमे थाइ देवताविऊं प्रकारे कह्यानी वि तेह सांभलु
की करइ

उत्रा.सू.टा.१ सफासउ,संठाणादेसउवावि।विहाणाइंसहस्ससो।२०५ देवाचउव्विहावुत्ता तेमि

भुवन करि तेहुप ति भूमिकाइ थिकी नइ विषइ उपनाते ज्योतिषी वंतर वि विशेष वागन विषइ भुहतमा इत्यादि प्रकारे ।कनइ विषे क्रुपन
इत्यादि होतिष्या भूमिज्ञ भवनपति वमरे वदि कवि मानइ रुपजे तेवइ कलेजि ते वैमानिक ति [illegible] वनपती कहा इत वाणमंतर=२
विभुत्र नरइ पर्वत गुफा वनादि= मादिक ज्योतिषी जे वेवेमानक कहीइ सौधर्मवादिक यइ

२२८

कित्तयउसुण।भोमिज्जवाणमंतर।जोइसवेमाणिआतहा।२०६।दसहाउभवणवा

आठप्रकारइ वाणमंतर कहीइ कोउ विकुं प्रकारइ वैमानिक कुमार नी परिवर्तन असुरकु
कइ भवन इत्यादि वाणइ तेव नवारी पांचवे ७ कारे ज्योतिषी कहीयइ देवता कहीयइ मारसाणा असु आनवाहनादि
कैंकीना करे तेहणी सघलाइकुं

सी।अट्ठहावणचारिणो।पंचविहाजोइसिआ।दुविहावेमाणिआतहा।२०७।असुर

मा नागकु सुवर्णकुमा विद्युतकुमा अग्निकुमा कहाओ द्वीप द्वीपकुमा उदधिकुमा दिशिकुमा
२१ मार२२ २३ २४ २५ गगंतीर्थंकरे २६ २७ २८

रा।२नाग।२सुवन्ना।३विज्जू।४अग्गीअ।५।आहिआ।दीवा।६।उदहि।७।दिसा।८। २२८

वायुकु स्तनितकुमा एहनवनपती भवनवासीदेव पिशाच१ भूत२ यक्ष३ राक्षस४ किंनर५
मार२९ १२० नाइराप्रकार २०८

वाया।१०।थणिआ।२०।भवण,वासिणो।२०८।पिसायभूआजक्खायरक्खसा।किन्नरा

किंपुरुष६ महोरग७ गांधर्व८ एहआठप्रकारे वाणवंतर जाणिवा चंद्रमा१ सूर्य२ नक्षत्र३ [illegible]

यकिंपुरिसा।महोरगायगंधव्वा।अट्ठविहावाणमंतरा।२०९।चंदासूरायणक्खत्ता

ग्रह४ तारा तास मूह पंचमा मनुष्यक्षेत्रबाहिरि जे ज्योतिषी ते थिर इम पांचप्रकारे ज्योतिषी ला विमानिवासी वेमा
तेवंध वंजी रमनुष्यक्षेत्रमांहि जे ज्योतिषी ते चर णिका

गहातारागणातहा।ठिआविचारिणोचेव।पंचहाजोइसालया।२१० वेमाणिआ

निकदेव जे ते द्विकुं प्रकारे कह्या छीती तिहां प्रथम भेद कहइ छइ कल्पोपग कल्पने अतिक्रमी वर्त्तइ ते कल्पातीत वासीदेवता तिमा=
देवता थे कहइ कल्प कहीइ मर्यादा इन्द्र सामानि= तेह देवता नवग्रैवेयक पंच अनुत्तर विमान= ४

उजेदेवाउविहातेविआहिआ।कप्पोवगायबोधव्वा। कप्पाईआतहेवय

कादिक व्यवस्था रूप ते कल्प उपगत पामिया छइ जेणइ ते कल्पोपगत बारमा देवलोकना देवता= उत्तीर्ण छीनी थोट छइ=४

कल्पदेवलोकिकल्पनातेदेवता साधर्मदेवलोकनादेवता ईशान सनत्कुमारदेवलोकनादेव ब्रह्मनामादेवलोक
नाबारप्रकारजाणिवा देवलोकनादेवता२ तथावली ताश्माहेंद्रदेवलोकनादेव नादेवतापलांतकदे
११ ताध

उन्नास्राटाप ।११।कप्पोवगाबारसहा।सोहम्मीसाणगातहा।सनंकुमारमाहिंदा।बंभलोगालंग

वलोकनादे महासुक्रदेवलोकनादेवता७ आनतनदेवलो प्राणतदेवलोकना आरणदेवलो अच्युतदेवलो
वता६ सहस्रारदेवलोकनादेवता८ कनादेवता९ देवतानथावली१० कदेवलोक११ कनादेवता१२

२२७

लं॥तगा।९।१०।महासुक्कोसहस्सारा।आणयापाणयातहा।आरणअच्चुआवेवा।इइ

एणीपरकारेइशहकल्पदेवलो कल्पातीतनवग्रैवेकनादे बिहुप नेकृषा लोकरूपपुरुषनइग्रीवाकाटसमानतग्रैवे नवीसुनजीतेअनुत्र
कल्पवासीदेवताजाणिवा७ वता काइ तीर्थंकर एकतेहनादेवतातथाजेहवकीउत्तरपक्षः= रहवाविमानतेह
नानामीदेवता=३८

कप्पोवगासुरा।१३।कप्पाईआयजेदेवा।इविहातेविहाआहिआ।गेविज्जाणुत्तरावे

ग्रैवेयकनादेवतानवप्रकारमांहिइं एकलामांहिदेवलुनवनीअपेक्षाइंएतले हेठलिनीअपेक्षाइंमध्यविचलाउदेवता
तहविल्मांहिं १४ पहिलवग्रैवेयकतेहनादेवता१ पुरुषिनुपतलइबीजग्रैवेयक

वा।गेविज्जानवविहातिहो।१४।हिट्ठिमाहिट्ठिमावेव।हिट्ठिमामज्झिमातहा।हिट्ठि

२२७

लइबउपरेग्रैवेयक तेहनादेवता४=१

हेठिलानीअपेक्षाइंउपरिलउ मध्यविचालात्रिकनीअपेक्षाइंहे मध्यत्रिकनीअपेक्षाइंमध्यमविचलिउ मध्यत्रिकनी
एतलेत्रीजउग्रैवेयकतेहनादेव हिठुतेमध्यमहिठिमकहीइएतलं= एतलइपांचमउग्रैवेयकतेहनादेवता५ अपेक्षाइंक
ता३ १५ पलिउएतले

ट्ठिमाउवरिमावेव।मज्झिमाहिट्ठिमातहा।१५।मज्झिमामज्झिमावेवा।मज्झिमाउ

इछठउग्रैवेयकवे कपलात्रिकनीअपेक्षाइंहेठिलइ कपिलात्रिकनीअपेक्षाइमध्यमविच कपिलात्रिकनीअपे
ठिनादेवता६ त्रीकएतलेसातमुग्रैवेकतेहनादेवता उउएतलेआठमुग्रैवेयकतेहनादेवता क्षाइंउपलिउएतलेउ

वरिमातहा।उवरिमाहिट्ठिमावेव।उवरिमामज्झिमातहा।१६।उवरिमाउवरि

नादेवता=३

नवमग्रैवेयक पणेप्रकारछइग्रैवेयक विजयानामा वेजयंतनामा अनु जयंतनामात्री अपराजितनामव
तेहनादेवता९ नोवमासुरदेवताकह्या अनुत्तरविमा अखप्रनविमान जवंअनुत्तरविमा चउथुअनुत्तरविमानतेहनादेवता
वीतरागइ पहिलउतेह= बीजुतेहनादेवता नथह नादेवता

मावेव।इइगेविज्जगासुरा।विजेया।१।विजयंतायार।जयंताइ।अपराजिआ।

सर्वार्थसिद्धिनामापांचमो एहपांचपंचअनुत्तरविमाननासुर पणेप्रकारिवेमा अनइकल्पकारहआदि
देवलोकअनुत्तरविमानतेहनादेवता देवलोकसर्वार्थकरइ निकदेवताएजाणि वेईनइदेवलोक१२ग्रैवे
वा

१७।सव्वट्ठसिद्धिगा।५।वेवा।पंचहाणुत्तरासुरा।इइवेमाणिआणएरोगहाएवमा

यकरूप अनु लोकवरदेश जनायकदेश तेहिसर्वे अतिशयसिउंक परलोकसाअनंतरकालनउ तेदेवतानउ ववान्धव ७१७० ३ वि
त्तरपतेहनी विभागइ तेविषइ वैमानिक स्तालीइकरइ विभागचिवर उविगतिमाउं कहिसु अना मननी अपहाइ २
अपहाइ अ देवता हि अपर्यवमि

उत्रा॰सू॰ ३६ इआ ॥१७॥ लोगस्स एगदेसंमि ते सव्वे परिकित्तिआ ॥ एत्तो कालविभागं तु तेसिं वुच्छं चउ

नरसादि संपर्ये संततिप्रवाह मार्ग आश्रीद अनेजेहनोछेह नथी उत्पत्ति काय स्थिति नवस्थिति आश्री वि अनइ अ
वसितधपवि कं वताअनादिकालनाछइ यनहीजेहनी सदाकु सरूअ बारी यइतउसादि आदिसहि तसहित
३३८ छकाइइ १८ नछइ पुणछइ

उव्विहा ॥१८॥ संतइं पप्पणाईआ अपज्जवसिआवि य ॥ ठिइं पडुच्च साईआ सपज्जवसि

जहसणीकालिते काय साधिक सागरोपम उत्कृष्टइ पणइस्थिति आउ सवनपति वलीआदिकनीजय सुम
स्थिति नवस्थिति नउछे जाणेवी एक सउकुमार म्वोदीनउ दस
दकुमार २०

आविअ ॥२०॥ साहिअं सागरं इक्कं उक्कोसेण ठिई भवे ॥ भोमिज्जाण जहन्नेणं दसस

मंतरइंद्रादिकदेवतानीजघन्य
वास हिसनी २१ पल्योपम एकनी उत्कृष्टपणइ स्थितिआउखुं हाए घोदीनउ

हासवासिआ ॥२१॥ पलिओवममेगं तु उक्कोसेण ठिई भवे ॥ वंतराणं जहन्नेणं द ३३८

दससहस्रवरिसनीस्थिति २२ पल्योपम एक तेहवरिसलाखएकइं अधिकउत्कृष्ट पल्योपमनउ आठमउ
हीयोतिषीचंद्रमादिकनीआउस्थिति

सवाससहस्सीआ ॥२२॥ पलिओवममेगं तु वासलक्खेण साहिअं ॥ पलिओवमठ्ठभा

ज्योतिषीनेइविषेताराणी बहीजसागरोपमनी उत्कृष्टीआउखानीस्थितिह सौधर्मीदेवलोकनइविषइछा
भाग देवीनीजजघन्यघोडीनउ उग हीजघन्यतउ
जाणवी २३

गो ॥ जोइसेसु जहन्निया ॥२३॥ दो चेव सागराइं ॥ उक्कोसेण ठिई भवे ॥ सोहम्मंमि जहन्नेणं ॥

ईशानदेवलोके जघन्य
एकवलीपल्योपम २४ सागरोपमबिइफाजेराएरजी उत्कृष्टीतोआउखानीस्थितिहउइ तेविषेदेवताना घोडीउ

एगं च पलिओवमं ॥२४॥ सागरा साहिआ दुन्नि ॥ उक्कोसेण ठिई भवे ॥ ईसाणंमि जहन्नेणं

सनतकुमारनामाद
अजेराएकपल्योपमएकनी २५ पल्योपम सातनी उत्कृष्टीस्थितिआउखानीहउइ वलोकनइविषइ

॥ साहियं पलिओवमं ॥२५॥ सागराणि अ सत्तेव ॥ उक्कोसेण ठिई भवे ॥ सणंकुमारे जहे

जघन्य छिद्रसागरोपमनी जाण अढारसागरोपमसमाननी उत्कृष्टीस्थितिआउषानी हुवइ माहेन्द्रदेवलोकनेवि
घातीनत्र वी षइदेवतानी

२६

उत्रा०सू०टाप स्मिणं दुन्निउसागरोवमा २२६ साहिआसागरासत्ता उक्कोसेण विईभवे माहिंदंमि जह

जघन्यथी ब्रह्मनामापांचमोदेवलो
हीनत्र अढारबइसागरोपम २७ दशसागरोपमनी उत्कृष्टीस्थितिआउषानी हुवइ कनेविषेदेवतानी

२२७ स्मिणंसाहिआदुन्निसागरा २२७ दसचेवसागराइं उक्कोसेण विईभवे बंभलोएजह

जघन्यथी लांतकनामादेवलोक
हीनत्र सातसागरोपमनीजाणिवी २८ चउदहसागरोपमनी उत्कृष्टीस्थितिआउषानी होइ नेविषइदेवतानी

स्मिणं सत्तउसागरोवमा २२८ चउदहससागराइं उक्कोसेण विईभवे लंतगंमिजह

जघन्यथी महासुक्रनामासातो
हीनत्र दससागरोपमनीस्थिति २९ सत्तरसागरोपमनी उत्कृष्टीस्थितिआउषानी हुवइ मादेवलोकनेविषेदेवतानी

स्मिणं दसउसागरोवमा २२९ सत्तरससागराइं उक्कोसेण विईभवे महासुकेजह २२९

जघन्य सहस्रारआठमोदे
थांति चउदसागरोपमनीस्थिति २३० अढारसागरोपमनी उत्कृष्टीस्थितिआउषानी हुवइ वलोकनादेवतानी

स्मिणं चउदससागरोवमा २३० अठारससागराइं उक्कोसेणं विईभवे सहस्सारेज

जघन्यथाकी
नत्र सत्तरसागरोपमनीस्थितिजाणवी २३१ सागरोपमएगुणवीसनी उत्कृष्टीस्थितिआउषानी हुवइ

हन्नेणं सत्तरससागरोवमा २३१ सागराअउणवीसंउ उक्कोसेणं विईभवे सह

आनतनामानवमेदेवलोकने
विषेदेवतानीजघन्यथकीनत्र अढारसागरोपमनीस्थिति २३२ वीसनीसागरोपमनी उत्कृष्टीस्थितिआउषोंहुवइ

आणयंमिजहन्नेणं अठारससागरोवमा २३२ वीसंउसागराइं उक्कोसेणविईभ

प्राणतनामादशमोदेवलोक
इ नेइविषेदेवतानीजघन्यथाकीनु सागरोपमएगुणवीस २३ सागरोपमएकवीसनी उत्कृष्टीस्थितिआउ

वेपाणयंमिजहन्नेणं सागराअउणवीसई २३ सागराइक्कवीसंउ उक्कोसेणंविई

उत्कृष्ट आरणनामादेवलोकइ वीससागरोपमनी थिति बावीससागरोपमनी उत्कृष्टी थिति आउषानी हुवइ
इग्यारमानेविषइदेवतानी जघन्यथोकीनउ २४

उत्रा।सू।१८। सवे।आरणंमि जहन्नेणं।वीसई सागरोवमा।२४।बावीस सागराइं।उक्कोसेण ठिई भवे

अच्युतनामाबारमादेवलोक नेविषइदेवतानीजघन्यथोकी नउ सागरोपमएकवीसनी थिति २५ तेवीससागरोपमनी उत्कृष्टी थिति आउषानी हुवइ

२५० अच्चुयंमि जहन्नेणं।सागरा एक्कवीसई।२५।तेवीस सागराइं।उक्कोसेण ठिई भवे

पहिलाग्रैवेयकनइविषइ देवतानीजघन्यथोकीनउ बावीससागरोपमनी थिति २६ चउवीससागरोपमनी उत्कृष्टी थिति आउषानी हुवइ

पढमंमि जहन्नेणं।बावीसं सागरोवमा।२६।चउवीस सागराइं।उक्कोसेण ठिई भ

बीजाग्रैवेयकनइविषइदेवतानीजघन्यथोकीनउ तेवीससागरोपमनी थिति २७ पंचवीससागरोपमनी उत्कृष्टी थिति आउ

वे बेईयंमि जहन्नेणं।चउ तेवीसं सागरोवमा।२७।पणवीसं सागराइं।उक्कोसेण ठि २५०

षानी हुवइ त्रीजाग्रैवेयकनइविषइदेवता नीजघन्यथोकीनउ चउवीससागरोपमनी थिति २८ छवीससागरोपमनी उत्कृष्टी थिति

ईभवे तईअंमि जहन्नेणं।चउवीसं सागरोवमा।२८।छवीस सागराइं।उक्कोसेण

आउषानी हुवइ चउथाग्रैवेयकनइविषइ देवतानीजघन्यथोकीनउ सागरोपमनी पचवीसनी थिति सागरोपमसत्तावीसनी उत्कृष्टी थिति

ठिईभवे।चउत्थंमि जहन्नेणं।सागरा पणवीसई।२९।सागरा सत्तवीसंतु।उक्कोसे

आउषानी हुवइ पांचमीग्रैवेयकनइविषइदेवतानीजघन्यथोकीनउ सागरोपमछवीसनी थिति सागरोपमअठावीसनी उत्कृ

ण ठिईभवे।पंचमंमि जहन्नेणं।सागरा छव्वीसई।४०।सागरा अठवीसंतु।उ

ष्टी थिति हुवइ छठाग्रैवेयकनइविषइदेवतानीजघन्यथोकीनउ सागरोपमसत्तावीसनी थिति सागरोपमओगणत्रीसनी

क्कोसेण ठिईभवे छठ्ठंमि जहन्नेणं सागरा सत्तवीसई।४१।सागरा अउणतीसं

उतकृष्टीथितिआउषानोहवइ सातमाग्रैवेयकनइविषइदेव सागरोपमअठावीसनीथिति त्रीससागरोपमनी
तानीजघन्यथोडीतउ

उवरिमहेटिम उ उक्कोसेण ठिईभवे सत्तमंमि जहन्नेणं सागरा अठवीसई ४२ तीसं उ सागराइं

आठमाग्रैवेयकनइविषइ
उतकृष्टीनउथितिआउषउंहवइ जघन्यथोडीतउ सागरोपमगुणतीसनीथिति ४३ सागरोपमएकत्रीस

२४२ उक्कोसेणे ठिईभवे अठमंमि जहन्नेणं सागरा अउणतीसई ४३ सागराएकती

नवमाग्रैवेयकनइविषइदे
नी उतकृष्टीनउथितिआउषउंकुइं वतानीजघन्यथोडीतउ त्रीससागरोपमनीथिति ४४ तेत्रीससागरोपम

संउ उक्कोसेण ठिईभवे नवमंमि जहन्नेणं तीसई सागरोवमा ४४ तित्तीससा

आदिविजयादिककहितांविजय१ एवविमाननइविषइदेवतानुंआउ जघन्यथो
नी उतकृष्टीनउथितिआउषउंकुइं वैजयंत२जयंत३अपराजित थोडूंतउएकत्रीससागरोपमनु हीवुतनही
२४५

गराइं उक्कोसेण ठिईभवे चउसुपि विजयाईसुं जहन्नेणेक्कतीसई ४५ अज २४५

अनइउतकृष्टीवुतन तेत्रीससागरोपमनीथिति महामोटाविमानसर्वार्थसिद्धिनामा थितिआउषऊकेल्कहीनगवं
ही तहनइविषइदेवतानी

हन्नमणुक्कोसं तित्तीसं सागरोवमा महाविमाणे सव्वठे ठिई एसा वियाहिआ

तेजजेतेदेवतानीकायथितिकही जघन्यपणइ
नइ २४६ अआउषानीथिति देवतासघलानीकहीतीर्थकरइं जहवणीदेवतामरीदेवताथाइ उतकृष्टपणइ

४६ जाचेवउ आउठिई देवाणं उवियाहिआ सातेसिंकायठिई जहन्नुक्का

जेतलीकायथितितेत आयणीपोतानीकायाइवां जसवथितितेतलीज
तीजतवुथितितेतलीः अनंतउकालनउउतकृष्टउं अंतर्मुहूर्तनउंजघन्यथोडउंतउ फिरिथिकइंदेवनस्वनीमांजा कायथितिह३५-३

सिआ सवे ४७ अणंतकालमुक्कोसं अंतोमुहुत्तं जहन्नयं विजढंमि सए का

इतिवा देवताथिकीमरीनइंवलीदेवता विइषकीयारंसीनववरसतगीज आनत
थइ थाइतेआंतरलेजअंतर २४८ अनंतोकालनउउतकृष्टउं जघन्यथोडउंतेतउ वयांदेव

ए देवाणं हुज्ज अंतरं ४८ अणंतकालमुक्कोसं वासपुहुत्तं जहन्नयं आ

लोकआदिदईनइंसर्वदेवता नव नवग्रैवेयकनादेवतानइएतलउंअं नरकइंसंसारमांहिजाईनिगोदमांहि जईआवइतउ २४९ सागरोपमनउअनकष्टअंतरजेह अणीतिहांथीच्यवीदेवतामांहि केतलाइंकसागरलोगवीतिहां आवइ अनइनववरस तउजघन्यजेह अणीतिहांथी

उत्ता०स०३६ णईयाईणदेवाणं।णोविज्जाणंतअंतरंधवे।संखेजसागरुक्कोसं।वासपुहत्तं

२४२

च्यवीमनुष्यथई देवताथाइतउ अनुत्तरविमाननावासीदेव तायवीनइवलीअनुत्तरवि मानवासीनववरसेंउपसमंश्र लिवडीवलीथाइ तदेवतानइएतलउअंतर कहिउभगवंतइं २५० एहदेवतायाविनिकायनासे दनातेहनावर्णथिकी

जहन्नयं।णुत्तराणयदेवाणं।अंतरंतवियाहियं।५०।एएसेवन्नउचेवागं

गंधथकीरसथकीफरिस थकी संस्थाननाआदेशथकी विधानप्रकारसहस्रगमेथइ २५१ संसीरकजीवअनइंसिद्धाजी

धउरसफासउ।संठाणादेसउवाविविहाणाइंसहस्ससो।५१।संसारत्थाय २४२

इमजीवविह्नंप्रकारइंकह्यातीर्थंकरइं रूपीजअजी वविह्नप्रकारे अरूपीअजीवजे दशप्रकारइंतेपुण एहअजीवविह्नंप्रकारिजाणवा

सिद्धाय।एएजीवाविआहिआ।रूविणोचेवरूवीआ।अजीवाउविहाविअ

एणइप्रकारइंएहजीवनाअजी वनाप्रकारश्रीगुरुकहइं २५२ सांभलीसद्दहीजेहतुमेहक हिउंतेप्रमाणइप्रतिछेदीव जी समस्तनयनइंअनुमतमान्यनैगमादिकसातइं नयतेह्ज्ञानक्रियानयमांहिअंतर्भवनाजाणीने इज्ञानसहितथकउ रमइ रूपसं

।५२।इइजीवमजीवेअ।सुच्चासद्दहिऊणय।सव्वनयाणमणुमए।रमिज्जासं

यनइविषइरतिआ णइमुनिसाधु २५३ तिवारपछीघणांकालीधाअनंतरघ णइकवरसलगी श्रामण्यचारित्ररूपेडीपरिइंपाली नइंतपसंयमक्रियादिकइंकरी एणइआगलिकहीं सइतणइअनुक्रमे

जमेमुणी।५३।तउबहूणिवासाणि।सामन्नमणुपालिआ।इमेणकम्मजो

योगइ आपणुंआपापउंशरीरसंलेषेहबुजउ बारवरिसलगीपरवरसंका नइवीसंलेषनाउत्कृष्टी वरसरनी
करी करइइमघिकीकायादीणीयाइइसाव ईउद्यानहीअधिकापुणनही हवइ
घकीकषायपातलाकरइ २५४

उत्रा।सू।टाप एणं।अप्पाणंसंलिहेकमसो।५४।बारसवउवासाइंसंलेउक्कोसिआसवेसंवछ

२४२ तउमध्यमसंलेषना छमासनीजघन्यपणइसंलेषना पहिलांवरसच्यारिलगीनउ विगइंयनउपरित्यागक
जाणवी इमसावरसरइंकहीसगवंतनइ ५५ रतजइंआंबिलनीवीप्रमु

रमज्झिमिआ।छमासायजहन्निआ।५५।पढमेवासचउक्कंमि।विगईनिज्जूहणं

षकर बीजाआगलाच्यारवरसच्यारि विचित्रपणइउपवासछठअठमादिकप्र एकउपवासअनइंपा कहीतेहसाधुसं
इ लगीतउ णतउतपकरइउपवासादिक ५६ रणइआंबिलपहवउ वरसरवरसबि

करे।बिईएवासचउक्कंमि।विचित्तंतुतवंचरे।५६।एगंतरमायामं।कट्टुसंवछ २४२

इलगी निवारपछीसंवछरअ अतिविकृष्टतपछठअठमादि निवारपछीअर्द्धसंवछर विकृष्टआकरउं
तपजइ ईयनजइछम्मासलगइ करकरइएतजइसाढांदसव एतजइछम्मासजगी। छठअठमादिकत
दछावरिसहवां रसव्या २५७ पकरइनिहांवलीप

रेदुवे।तउसंवछरद्धं।नाइविगिठंतवंचरे।५७।तउसंवछरद्धं।विगिट्ठंत

तलउ परिमितथोडंआयामकहितांआंबि सर्वजाडमासरहवलीछम्मा पंचरकालतइफरिआंबिउकरइवि
विशेष लकरइएतलइउपवासकरइपार सएतजइतेइग्यारमांवरिसन काजइतेअनेरउतपकरइछेहइव
णइआंबिलकरइ इविषइएमकरइ २५८ लीआंबिलकरइतेकोडीसहितआंबिलकरी

वंचरे।परिमिअंचेवआयामं।तंमिसंवछरेकरे।५८।कोडीसहियमायामं।

संवछरवरिसलगीमुनिवा पछेछेहडेजेडइमासषमणअर्द्ध आहारादिकपरिहरीनइतक कंदर्पीभावना
रित्रियअदतइ वरिसबारइ मासषमणकरिवइकरी परिज्ञानइअनुसारइअणसणरू आभियोगीभाव
वा पहवकरइ २५९ नावली

कट्टुसंवछरेमुणी।मासद्धमासिएणंतु।आहारेणंतवंचरे।५९।कंदप्पमाभि

५५

किल्बिषीनी मोहनी आसुरभावना एह पांचइ भावना दुर्गतिना का मरणनइ अवसरि एहवी भावना भावइ
भावना वना रणची दुर्गति कहीइ तेअ सम्यक्त्वनी आज्ञाना विराधक जाणवा
इ

अथ सूत्र॥ उग्गं किब्बिसिअं मोहमासुरत्तं च एआउ दुग्गईओ मरणंमि विराहया हुंति॥

असारनइं सार करी जाणइ एहवो मिथ्यात्वं कहिवइ मरणकाले कृष्णलेश्या एणइ प्रकारइं जे मरइ जीव तेह जीवनइ
मिथ्यादर्शननइ रागइ रातारागना वपवे डियादिकेनां घातक वे वली दुर्लभ बो
धरणहार समकितना विराधक

२५५

२

२५६ मिच्छादंसणरत्ता सनिआणा कण्हलेसमोगाढा इय जे मरंति जीवा तेसिं पुण

धि हतइ परलोकि पर भवि देव तत्व गुरु तत्व धर्म तत्व एह नीयाणाना शुक्ललेश्या निर्मल परिणामना एणइ प्रका
जिनधर्मपांमतां दोहिलुं वा समकितनइं विषइं जे रातारा णकरणहार धरणहार वा वा अध्यवसायना रइ एहवी कर
२६२ गी धणी णीना धणीम

दुल्लहा बोही॥ २५६॥ सम्मदंसणरत्ता अनिआणा सुक्कलेसमोगाढा॥ इय जे मर २५७

रणकरइ तेह जीवनइ आगलि भवइं सुलभ वली अरिहंत गुरु देव धर्म एह भि तेपवेचीनइं सोगादि इहमूलक
जीवना बोधि बीज जिनधर्मनउ पामिवउं पणउं थ्यादर्शननइ विषइं जे रातातिक नाना नीयाणाना कर कीड दिव
णी दोहिलउं जाणिवउ २६२ णिरंग रंगाणा वइ जेन णहार जेनवा गामनगस

ति जीवा सुलहा तेसिं भवे बोही॥ २५८॥ मिच्छादंसणरत्ता सनिआणा किण्हले

घातनइ दृष्टि एणइ प्रकारइं जे हमरण करइ तेह जीवनइ वली आगलि दुर्लभ जगनाथना वचननइ श्री सिद्धांत न
लइ जे कृष्ण पहुवी करणीना धणी जीवघाती बोधिबीज जिनधर्म पुणामिवउं इ विषइ इकेरागी रागना धरणहार
लेश्या अध्यवसा या एवं दोहिलउं जाणिवउ २६२
इसम्यक्

समोगाढा॥ इय जे मरंति जीवा तेसिं पुण दुल्लहा बोही॥ २५९॥ जिणवयणे अ

अनइं जगनाथना वचनने जे कोई करइ भइ भावइं करीन मिथ्यात्व रूप पंक मल निवारी कुजला वली ते हवइ संक्षे
इ पतलइ तेहवचन सद्दहइ भइ सूपइ पई करीनइं का थइ रागद्वेष मोह मत्सर रूप क्लेश थी संसारना धणीनता
थइ फासिइ बइ अलगा थायइ थोडा काल मांहि संसा

णुरत्ता जिणवयणं जे करंति भावेण। अमला असंकिलिट्ठा ते हुंति परित्त

रवडीनइ माहृ बालकमरणमंदरणादिक बारवका अनइ अकामनी वांछा विना तादि तापरणादि जेकोइ मरइ णी
ऊतिइं जाइ ह्य रवो ज्यावइ रनइ वइ बालमरणे घणी कसदीनइ अकाममरण घणीवार मरतउ थिकि विधिइं ते बापडा
वारमरउ उ वरांकपणाउ रङ्क

उत्राध्या० संसारी ह्यं बालमरणाणि बहुसो अकाममरणाणि चेव बहुआणि मरिहि

नासो गवणहार घणा परंतेक उणजे जिननाव चनजाणइ जग घणा आगमश्री सिद्धांतसूत्र अर्थी देशथी कालथी म
२४५ नइ दयाना कपरिजा नावना वचनरूडां करी जाणइ नहीं वली नउ विज्ञान बइजेहकनइ एतले धरवचन बोलि
वणहार थाइ ज्ञानक्रियानां फल जाणीनइ गुण ह्य सूत्र अर्थनां जाण वइ आलोअणने
कहइ नहीं

ति ते वराया जिणवयणं जे न याणंति २६१ बहुआगमविण्णाणा समाहिउप्पा

लवइस आलोतानें आस्तातय गुणंग्रहीले कारणं नेआचार्य उपाध्याय थविर आगमिनीआ घणउहास्यव
माधिसुख उइरएहवा साधासम्य गुणकारी सहीत आयणसांभलिवा ने जोग्य जाणवा ने पापसे कूयणइ बोली
नाकुपजा क्रादिगुणनाह बेजेह ताछिवाएहवा पासि आलोयण लेई वी ह्द कामकथाकर
वणहार इकायाइं बुधाक

यगा य गुणगाही एएण कारणेणं अरिहा आलोयणं सोउं २६२ कंदप्पकु

२४५

रीविविस तथा सीलकहता फलउ पाषें निरर्थक वहुत्नि सदावतेश्र विस्मावंतो कहितां विस्मयउक कंदर्पनी भावना कहितां
कारीवचन नइ हानइ विषइं कपजावे वानतेना वहासने परिहास पजावइ आश्चर्य उपजानइ परन कंदर्पयाहे वतानेहना
वाणीआम्बु अथवा अदेह हस्तादिक विकथा तपरनेजं परवाप बंध ज्ञानइ पमाड भावनाथो ग्पवासना भ
र्य लाइकरीनइ दकरे एड कंदर्पी थाद

क्कुआइं तह सीलसहावहासविगहाहिं विम्हावेंतो अ परं कंदप्पभावणकं

वतामांहिजइ मंत्रपणा उकारना पतिते भूतिराख इमाटीय इ थासिइ सूत्र इक माताउपजावि वादे तिकरेछइ नइजी
कपजे निहंगुण सिद्धजागुलीउमुष अनेरा गीन कर्म रक्षानिमत्ते घरमांहि बाहिरि क्रहि नइ अरुधि सिरसव रक्षा वा
नेहवी वेष्टा करी गकरहतदवाणइ अभनीसया कातिकादिक जेकोइ पउंजइ भिवासणी मिलु
दवतानइ २६९ गजजनमूर्तादिकरीनइ

णइ २६३ मंतंजोगं काउं भूईकम्मं च जे पउंजंति सायरसइड्ढिहेउं अभि

गीसावनाअलिउगीदवतानाश ऋतज्ञानादिक केवलीनो तथा धर्माचार्य गुरुनीआ एहमंघथी या एहसोगी
थनइयो ग्पभावना करें पछे मरीआ बंतनाअवर्णना केवलज्ञानद्वी ज्ञानना करइ एहजानि अनाबाजास अनाहुमानी
मिलगी दवतामांहिजइ इंपजतिहां बाजसहार तथा नताअवर्णउ हीनमुख एहवउ केलिव लिया एहवीसाक्षनी
पुणतदवा २६५ वे उ लिदांकरता

ओगं भावणं कुणइ २६४ नाणस्स केवलीणं धम्मायरियस्स संघसाहूणं।

मायावंत आपणपनी अवर्ण बोलनहार किल्बिषी संबंधिनी भावना किल्बिषी देवता घणा काल लगी रीस नी बाहराबीर निम निमि
गुणदोषकहनहार आ प्रकारेआ भावना करइ पांच बाकी ने वी अथवा आ ध्यानी करइ ६४ ते ऊपर करे निमित्त सहित बली तसो
नाअवगुण बोलनहार जीवताकिल्विषी देवता माहि उपजइ न दइ जीवात करीआ गणी न दरीसण दर्शन बांध मांत्र
आठ बोल अवर्ण बोलावनहार पड्ड ६८ डाबद ड़

मांईअवण्णवाई । किव्बिसिअं भावणं कुणई २६९ अणुबद्धरोसपसरो तहय

निमित्तादिक तेहनइ विषइ
पडिसेवी अनुष्ठाता जेह ए एहवे कि विषइ कारण एहवी असुरनी भावना असुर देवता ना भव आरंभ नि
न पणि मंत्र तंत्र सेवणहार वे किंघ कारइ जीव ते योग्य भावना करे मरीने असुरमांहे उपजइ ७० धारदार

२४६

नमित्तंमि होई पडिसेवी एएहिं कारणेहिं आसुरिअं भावणं कुणई २७० सत्थग्ग

इंकरी तेपंट आपणी मरेवूं ता जलण अग्नि ते जलजे पाणी मांहि पड़ीना आचार ना भारवांड उपगर पड़ीघणा जन्मत्र
जुदो विषविष्ठा नाग आणी पा इम् हइ पड़सी पवेशकरीबु हीम अ परहरीने हास्य मोहादिकना ने घणा मरणबांध
इम रंतो मरतो थको रतो थको उपजाव पहार उपगरण सेवत उपराजइ एत्ते

हणं विसभक्खणं च जलणं च जलपवेसो अ अणायारभंडसेवा जम्मणमरण २४६

ज्ञाननाउपजा एहवे कथान बुद्ध कहंता पछी निर्वाण पाम्या श्रीमहावीर छत्रीस उत्तर प्रधान विनय तमजी
वणहार अनंता कारस तद थकी केवली धर्मना माय जालरूप अग्नि उपसम श्रुतादिक अध्ययन कुलबइ
सवबोधमा ६- अर्थथकी एगट करइ बीसीन उपइ सोहपाह्नता नेडना

करतो मरी नीना तनाउपराजइ ७१

णिबंधंति ७१ इइ पाउकरे बुद्धे णायए परिणिव्वुए छत्तीसं उत्तरज्झाए भव

स्वामी जेवा व बनसमयजाणीवा छत्रीस उत्तरा
ध्ययन भवना भारवासं क तेहनइ श्री सुधर्मा स्वामी एहवो जीवाजीव विभक्ती नामा अध्ययन नो अर्थ कहिउ छत्रीस
जंबू प्रति कहइ २७२ वमु अमा त्र थकी

सिद्धीअसमए त्ति बेमि २०७२ जीवाजीवविभत्ती अज्झयणं सम्मत्तं छत्ती

मा अध्ययन : ३६ अथ आदरछत्रीसमे अध्ययन एह ग्रंथ नो महिमा वखाणइ छइ सर्वार्थ एह आगलि
कह्या अनंतर निर्युक्तिना कारणहार

सइमं ३६ अथ निर्युक्तिकार एतद्धर्माहात्म्यमाह । छ: छ: छ: श्रीः

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

३४७

३४७

ना·३५·५